

भारत के सबसे ज्यादा बिकने वाले लेखक
वेद प्रकाश शर्मा

मि. चैलेंज

संशोधित संस्करण

पृष्ठ संख्या 288

comicsmylife.blogspot.in



टहकों के बाद आवाज गूँजी----“देखा इस्पैक्टर! देखा? इसे कहते हैं चमत्कार! अपने अगले शिकार की हत्या मैंने तेरे हाथों से करा दी। सबके सामने करा दी। और करना क्या पड़ा मुझे? सिर्फ तेरे रिवाल्वर से छेड़छाड़! उसमें तेरे द्वारा डाली गयीं नकली गोलियां निकालकर असली गोलियां डालना कितना आसान था। मुझे पकड़ने के लिए साजिश रचने चला था। मुझे पकड़ने के लिए गुल्लू को मृत घोषित करके उसे मेरी खोज में लगाना चाहता था। चाल तो अच्छी सोची तूने! आदमी खुद को जिन्दा लोगों की नजरों से छुपाने का प्रयत्न करता है, मरे हुए लोगों की नजरों से नहीं! तेरी चाल कामयाब हो जाती तो मुमकिन है गुल्लू के हाथ मेरे नकाब तक पहुंच जाते। मगर देख----वो बेचारा तो खुद मरा पड़ा है। सचमुच मर गया वह।”

मि. चैलेंज

उपन्यास में लिखे गए हर शब्द के पीछे मि. चैलेंज छुपा है, इसके बावजूद वेद प्रकाश शर्मा का दावा है कि मेरा कोई भी पाठक अंतिम पृष्ठ पढ़ने से पूर्व मि. चैलेंज को नहीं पहचान सकता! दावे में कितना दम है, इसे आप उपन्यास पढ़ना शुरू करके खुद जान सकते हैं!

उपन्यास के नाम, पात्र, स्थान, घटनाएं सभी काल्पनिक हैं। समानता संयोग से हो सकती है। किसी भी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इसका कोई संबंध नहीं है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है। उपन्यास में प्रकाशित सामग्री के प्रति किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायिक क्षेत्र मेरुट होगा।

एक चैलेज है मेरा यह उपन्यास—

वेद प्रकाश शर्मा

मेरे प्रेरक पाठकों,

हाजिर है—'ट्रिक'!

कुछ प्रथाएं ऐसी हैं जिनकी नींव आपके इस प्यारे लेखक ने रखी है। वे आगे बढ़ीं! फली-फूलीं और आज लगभग हर लेखक उन्हें 'अपनाकर' आपका दिल जीतने की कोशिश कर रहा है। परन्तु कुछ प्रथाएं ऐसी भी हैं जिन्हें मैंने कभी 'हवा' नहीं दी बल्कि हमेशा विरोध किया और बीच में बंद होने के बाद अब वे फिर चल निकली हैं। ऐसी एक प्रथा है—'सेक्स बेस उपन्यास'! करीब पैंतीस साल पहले जब मैंने उपन्यास लेखन क्षेत्र में कदम रखा तब 'सेक्स बेस' जागूरी उपन्यासों की भरमार थी। इसलिए यह साहित्य बदनाम भी था! जैसा कि आप जानते हैं—मैंने सेक्स रहित उपन्यासों का चयन शुरू किया अर्थात् सेक्स को अपने किसी उपन्यास में कभी प्रधानता नहीं दी! और शायद इसीलिए आपने मुझे हाथों-हाथ लिया, अपने सिर-माथे पर बैठाया, और उन लोगों की अकल ठिकाने लगाई जो कहते थे कि सेक्स के बिना उपन्यास बिक ही नहीं सकते! आज तीन दशक से आप मुझे सबसे ज्यादा पढ़ते हैं और इसके अनेक कारणों में से एक में ये भी मानता हूँ कि मेरे उपन्यास साफ-सुथरे हैं। इसके बावजूद जाने कैसे एक बार फिर 'सेक्स बेस' उपन्यासों की बाढ़-सी आ गई है। मैं देख रहा हूँ—अधिकांश लेखक 'नंगे सौन' लिखकर अपना अस्तित्व बनाने के लिए जुझ रहे हैं। एक बार फिर हमारा साहित्य बदनाम होने के कगार पर है। ऐसे लेखकों से मेरा निवेदन है—वे इस सच्चाई को समझें कि जो वे लिख रहे हैं उसे एक सीमित वर्ग पढ़ता है, छुपाकर पढ़ता है, इसलिए ऐसा उपन्यास 'लार्ज स्कूल' पर सेल नहीं हो सकता है। अगर उन्हें वास्तव में आगे आना है तो पूरे परिवार में पढ़े जा सकने वाले उपन्यास लिखें। भरोसा रखें अपने दिमाग और कलम पर! जो कलम के धनी होते हैं उन्हें चमकने के लिए सेक्स का सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ती। जो लिखेंगे यदि वह दिलचस्प होगा तो जरूर पढ़ा जायेगा। ये सारी बातें शायद मुझे इसलिए याद आ गयीं क्योंकि 'विभा जिन्दल' ऐसी करेक्टर है जिसका 'लेडी' होने के बावजूद सेक्स से कुछ लेना-देना नहीं है, इसके बावजूद पाठक इसे इतना पसंद करते हैं कि इस सीरीज का ये तीसरा उपन्यास मुझे लिखना ही पड़ा।

जब मैं लेखक नहीं था, आपकी तरह केवल एक पाठक था, तब मर्डर मिस्ट्री वाले उपन्यास बहुत पसंद करता था, परन्तु उन उपन्यासों का 'अंत' पढ़कर अक्सर झुंझला उठता था। कारण था—अंत में लेखक द्वारा किसी भी ऐसे किरदार को अपराधी बता देना जिसका मुख्य कहानी से कुछ लेना-देना नहीं होता था। अन्त में एक नई ही कहानी पाठकों को 'पढ़ा' दी जाती थी! उस वक्त मैं सोचता था—यह तो लेखक द्वारा पाठकों को बेवकूफ बनाना हो गया! जब कहीं कोई 'क्लू' ही नहीं छोड़ा गया! असली कहानी ही कुछ और थी तो पाठक अपराधी को पहचानता कैसे? केवल चौंकाने की गर्ज से लेखक द्वारा किसी ऐसे किरदार को अपराधी खोल देना मुझमें हमेशा खीझ भर देता था जिसके खिलाफ उपन्यास में कहीं कोई इशारा तक न किया गया हो। मैं नहीं चाहता वह खीझ आपमें पैदा हो। भरपूर तौर पर कोशिश मेरी भी यही रहती है कि जब अपराधी खुले तो पाठक चौंके परन्तु खीझे नहीं। अंत पढ़कर उन्हें लगे—'हां, उपन्यास में जगह-जगह ऐसे प्वाइंट छोड़े गए हैं जिन पर ध्यान देने पर अपराधी को पहचाना जा सकता था, नहीं पहचान पाये तो ये हमारी चूक है। जो पकड़ लेते हैं, उन्हें खुशी होती है कि हां, हमने उपन्यास ध्यान से पढ़ा है। तो मि० चैलेज को ध्यान से पढ़ें! अपराधी की तरफ इशारे किए गए हैं, क्लू छोड़े गए हैं। अगर आप रहस्य खुलने से पहले रहस्य को पकड़ सके तो मुझे खुशी होगी।

आपके उसी प्यार, विश्वास और सहयोग का इच्छुक जो पैंतीस साल से लगातार मिल रहा है! वही मेरी असली ताकत है!

आपका अपना

वेद प्रकाश शर्मा

'तुलसी'

मि. चैलेंज

दिन निकलते ही मैं लेखन-कक्ष में बंद हो जाता।

सूरज ढलने पर बाहर निकलता तो चेहरा लटका हुआ होता, दिमाग पर सवार होती थी----अजीब सी झुंझलाहट।

कारण?

पिछले तीन दिन से मैं मि० चैलेंज लिखने की कोशिश कर रहा था, परन्तु शुरू नहीं कर पा रहा था।

ऐसा नहीं कि दिमाग में कोई 'प्लॉट' न था।

प्लॉट एक नहीं कई थे।

और शायद मेरी असली समस्या भी यही थी।

निश्चय नहीं कर पा रहा था उन कई प्लॉट्स में से किस पर मि० चैलेंज के कथानक की इमारत खड़ी करू।

चौथे दिन!

कक्ष का दरवाजा खुला। आहट बहुत हल्की थी, इसके बावजूद मेरी तंद्रा भंग कर गयी। पलकें उठाकर देखा।

दरवाजे पर मधु खड़ी थी! मेरी पत्नी।

होटों पर मुस्कान, हाथों में शाम का अखबार।

उसकी मुस्कान के जवाब में मुस्करा नहीं सका मैं। दिमाग पर चिड़चिड़ाहट सवार थी परन्तु जानता था, वह बगैर 'एमरजेंसी' के मुझे डिस्टर्ब नहीं कर सकती थी। अतः स्वयं को नियंत्रित रखकर पूछा----“क्या बात है?”

“अखबार लाई हूँ।” उसके होठों पर शरारत थिरक रही थी।

मेरे दिमाग का मानो फ्यूज उड़ गया। लगभग 'गुर्रा' उठा मैं----“मधु, क्या तुम नहीं जानतीं जब मैं लिख रहा होता हू तो अखबार नहीं पढ़ता।”

“देखू तो सही, क्या लिख रहे हैं जनाब?” कहती हुई वह अपने करेक्टर के विपरीत आगे बढ़ी और मेज से कोरा कागज उठाकर मेरी आंखों के सामने नचाती बोली----“तो ये है चार दिन की सिरखपाई का फल?”

“ओफफो मधु, तुम्हें कैसे समझाऊं कि...”

“समझने की जरूरत मुझे नहीं, आपको है पतिदेव।”

“मतलब?” मैंने उसे घूरा।

“अच्छा लिखने के लिए अखबार पढ़ते रहना जरूरी है।”

“मधु, क्या पहेलियां बुझा रही हो तुम? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।”

“करेक्ट!” वह उचककर मेरे सामने टेबल पर बैठ गयी----“पहेली ही पूछने आई हूं! अगर एक लड़की का मर्डर हो और मरने से पहले वह ‘चैलेंज’ शब्द लिख जाये तो क्या मतलब हुआ उसकी इस अंतिम हरकत का?”

“क्या तुम मुझे मि० चैलेंज की कहानी बताने आई हो?”

“वात अगर जंची, तो इस उपन्यास की रायल्टी मेरी।”

“रायल्टी तो मैं सभी उपन्यासों की तुम्हें सौंपता आया हू देवी जी मगर, बेसिर-पैर की बकवास पर उपन्यास नहीं लिखा जा सकता। साइक्लोजी कहती है मर्डर हुए व्यक्ति को यदि मरने से पूर्व कुछ लिखने का मौका मिल जाये तो सबसे पहले हत्यारे का नाम लिखेगा। नाम नहीं जानता होगा तो हत्या की वजह लिखेगा। ‘चैलेंज’ जैसा, निरर्थक शब्द ‘मरने वाला’ कभी नहीं लिख सकता।”

“आपकी सभी दर्तालों की हवा निकालने के लिए पेश है ये अखबार।” कहने के साथ मधु ने अखबार खोलकर मेरी आंखों के सामने लहरा दिया। नजर हैडिंग पर चिपकी रह गयी----

आई.ए.एस. कॉलिज में हत्या
मरने वाली ने CHALLENGE लिखा।

मैंने मधु के हाथ से इस तरह अखबार झपटा जैसे भूखे ने रोटी झपटी हो। जल्दी-जल्दी खबर पढ़नी शुरू की। लिखा था----

मेरठ, 10 नवम्बर। आज दिन-दहाड़े हजारों आंखों के सामने आई.ए.एस. कॉलिज की लोकप्रिय प्रोफेसर कुमारी सत्या श्रीवास्तव की हत्या कर दी गयी मगर, एक भी आंख हत्यारे को नहीं देख सकी।

घटना सुबह नौ बजे की है। सत्या श्रीवास्तव आई.ए.एस. कॉलिज में इंग्लिश की प्रोफेसर थीं। कहते हैं कॉलिज में स्टूडेंट्स के दो ग्रुप हैं। इनमें से एक ग्रुप को प्रिंसिपल महोदय का वरदहस्त प्राप्त है। यह ग्रुप छोटा परन्तु आवाय किस्म के स्टूडेंट्स का है। इस ग्रुप के लीडर का नाम चन्द्रमोहन बताया जाता है। कहते हैं कॉलिज के ज्यादातर स्टूडेंट्स और प्रोफेसर प्रिंसिपल से चन्द्रमोहन का ‘रेस्ट्रिक्शन’ करने की मांग कर रहे थे। परन्तु प्रिंसिपल महोदय ने ध्यान नहीं दिया। इस मांग का नेतृत्व सत्या श्रीवास्तव कर रही थीं।

आज सुबह साढ़े आठ बजे कॉलिज प्रांगण में एक मीटिंग होने वाली थी। उसमें विचार किया जाना था कि प्रिंसिपल महोदय चन्द्रमोहन को कॉलिज से नहीं निकालते हैं तो क्या किया जाये?

सवा आठ बजे से स्टूडेंट्स और प्रोफेसर इकट्ठा होना शुरू हो गये। साढ़े आठ बजे तक लगभग सभी लोग कैम्पस में पहुंच चुके थे। मगर सत्या आठ पैंतीस तक भी उन लोगों के बीच नहीं पहुंची। स्टूडेंट्स और प्रोफेसर में बेचैनी फैलने लगी। कुछ स्टूडेंट्स सत्या को देखने हॉस्टल में स्थित उसके कमरे में गये। सत्या वहां भी नहीं थी। बेचैनी सवालिया निशानों में तब्दील होने लगी। सत्या को सारे कॉलिज में तलाश किया जाने लगा। उस वक्त हर दिमाग में केवल यही एक सवाल था----खुद मीटिंग कॉल करके सत्या आखिर चली कहां गयी? अचानक कैम्पस में मौजूद हजारों कानों ने एक जोरदार चीख की आवाज सुनी। बदहवास आंखें ऊपर की तरफ उठीं। कॉलिज के टैरेस पर सत्या नजर आई। वह लहुलुहान थी। चीख रही थी। अगले पल उसका जिस्म टैरेस पर लगा रेलिंग तोड़कर हवा में लहरा उठा। एक लम्बी चीख के साथ वह कैम्पस की तरफ आई। वहां मौजूद भीड़ चीखों के साथ पलक झपकते ही ‘काई’ की तरह फट गयी! सत्या ‘धम्म’ से प्रांगण की कच्ची जमीन पर गिरी। सभी दहशतज्वा और हकबकाये हुए थे। एक बार गिरने के बाद सत्या ने उठने की कोशिश की, परन्तु लड़खड़ाकर पुनः गिर गई। स्टूडेंट्स और प्रोफेसर की भीड़ किर्कतव्यविमूढ़ अवस्था में उसे देख रही थी और फिर अपनी अंगुली की नोक से सत्या ने प्रांगण की जमीन पर कुछ लिखा। लिखने के बाद दम तोड़ दिया। भीड़ की तंद्रा भंग हुई। कुछ स्टूडेंट्स लाश की तरफ लपके। कुछ टैरेस की तरफ! हत्यारा किसी को नजर नहीं आया। सत्या ने प्रांगण की जमीन पर लिखा है----CHALLENGE.

इस अनोखे शब्द का मतलब किसी की समझ में नहीं आ रहा है। हमारे संवाददाता ने जब केस के इन्वेस्टिगेटर इंस्पेक्टर जैकी से बात की तो उन्होंने केवल इतना कहा----“हत्यारे अक्सर हम लोगों को चैलेंज देते रहे हैं मगर, मक्तूल द्वारा इस शब्द के इस्तेमाल की यह पहली घटना है। अभी तक मैं कुछ नहीं समझ सका हूँ।”

खबर पढ़ते ही मेरे जिस्म में चींटियाँ सी रेंग गई।

जहन में विस्फोट सा हुआ----“क्यों न इस बार मैं सत्य घटना पर उपन्यास लिखूँ?”

मुझे मि० चैलेंज लिखना है और.... मेरे अपने शहर में एक लड़की चैलेंज शब्द लिखकर मर गई है। कैसा अनोखा संयोग है? मुझे इस मर्डर की तह में जाना चाहिए। मुमकिन है उन सभी कथानकों से बेहतर कथानक हाथ लगे जो मि० चैलेंज के लिए मेरे जहन में उमड़ रहे हैं। इन्हीं सब विचारों से ग्रस्त मैंने मधु की तरफ देखा।

उसने शरारती अंदाज में आंख मारी।

मैं सकपकाया।

उसने कहा----“कहिए जनाब? कैसी रही?”

“मधु!” मैंने कहा----“यह कथानक मि० चैलेंज के लिए जबरदस्त साबित हो सकता है।”

“ऐसे ही थोड़ी अखबार हाथ में लिए यहां घुस आई?” पूरे मूड में मधु कहती चली गयी----“खबर पर नजर पड़ते ही चौंकी! पढ़ी! सोचा सत्या चैलेंज लिखकर मर गयी और हमारे सैया मि० चैलेंज लिखने के लिए मरे जा रहे हैं....? दोनों घटनाओं के तार जोड़ दिये जायें तो करेंट जरूर पैदा होगा। उस करेंट को इस वक्त मैं आपके थोबड़े पर देख रही हूँ।”

“सच मधु.... सच!” खुशी की ज्यादाती के कारण मैं खुद पर काबू न रख सका। झपटकर बांहों में भर लिया उसे, बोला----“तुम ग्रेट हो! हमेशा मेरी ही प्रॉब्लम हल करने में लगी रहती हो। मुझे पूरा यकीन था वगैर बड़ी बात के तुम मुझे डिस्टर्ब नहीं कर सकती।”

“करेंट कुछ ज्यादा ही आ गया लगता है!” कहने के साथ उसने खुद को मेरी बांहों से मुक्त कर लिया। बोली----“उस पहली का क्या हुआ जो मरने वाली कॉलिज प्रांगण में जमीन पर लिख गई है? क्या आप बता सकते हैं सत्या ने चैलेंज क्यों लिखा? क्या मरने वाली खुद कहना चाहती है कि मेरे हत्यारे का पता लगाओ तो जानूँ?”

“ऐसा है तो बड़ी अजीब बात होगी ये।” क्राइम के उपन्यास लिखने वाला मेरा दिमाग सक्रिय हो उठा। आंखें शून्य में स्थिर हो गयीं। बड़बड़ा उठा मैं----“मेरे ख्याल से इस बंद कमरे में कल्पनाओं के घोड़े दौड़ाते रहने से मेरे हाथ कुछ नहीं लगेगा, बाहर निकलना होगा। एक सुलझे हुए जासूस की तरह इन्वेस्टिगेशन करनी होगी।”

“मैं भी यही कह रही हूँ जनाब!” मधु के होठों पर मुस्कान थी----“मि० चैलेंज आपको कमरे में बैठकर नहीं, फील्ड में उतरकर लिखना चाहिए।”



और मैं फील्ड में उतर पड़ा।

सबसे पहले थाने पहुंचा। हट्टे-कट्टे इंस्पेक्टर जैकी से मिला। अपना परिचय दिया। मुझसे मिलकर उसने खुशी जाहिर की। काग----“मैंने आपके ज्यादा तो नहीं परन्तु कुछ उपन्यास जरूर पढ़े हैं।” मैंने आने का कारण बताया तो जैकी के पतले होठों

पर मुस्कान फैल गयी। बोला-----“अच्छा विचार है आपका! पाठकों को कुछ नया मिलेगा।”

“तुम्हारे ख्याल से सत्या ने चैलेंज क्यों लिखा?”

“यह गुर्खा सुलझ जाये तो हत्यारे का पता लग जाये।”

“नाम तो किसी का चैलेंज हो ही नहीं सकता।” मैंने कहा-----“लेकिन.... क्या तुमने मालूम किया, कॉलिज में ऐसा कोई शख्स तो नहीं जिसे चैलेंज शब्द के उपनाम से पुकारा जाता हो?”

“मैं समझा नहीं।”

“कई बार ऐसा होता है----मजाक में या किन्हीं और कारणों से लोगों के उपनाम पड़ जाते हैं और फिर, ज्यादातर लोग उसे उसके वास्तविक नाम की जगह उपनाम से पुकारने लगते हैं।”

“गुड!” जैकी कह उठा-----“अच्छा प्वाइंट है। मैंने इस ढंग से नहीं सोचा।”

“तब तो इस ऐंगिल से पूछताछ भी नहीं की होगी। क्यों न हम कॉलिज चलकर पता लगाने की कोशिश करें?”

होटों पर मुस्कान लिए जैकी ने कहा-----“समझ सकता हू-----जय इन्वेस्टिगेटर बनकर आप निकल ही पड़े हैं तो घटनास्थल का निरीक्षण जरूर करना चाहेंगे। मगर उससे पहले आपको कुछ ऐसी बातें बता दूं जो अखबार में नहीं छपीं।”

“जैसे?”

“चन्द्रमोहन को गिरफ्तार कर लिया है।”

“कौन चन्द्रमोहन?”

“आपने अखबार में पढ़ा होगा। कॉलिज में स्टूडेन्ट्स के दो ग्रुप हैं।”

“हां.... याद आया।” मैं उसकी बात बीच में काटकर बोला-----“चन्द्रमोहन शायद वही लड़का है जिसके रेस्ट्रिकेशन के मसले पर मीटिंग बुलाई गई थी। उसे किस बेस पर गिरफ्तार कर लिया तुमने?”

“जय में घटनास्थल पर पहुंचा तो ज्यादातर स्टूडेन्ट्स और प्रोफेसर्स उत्तेजित अवस्था में चीख-चीखकर उसे सत्या का हत्यारा बता रहे थे।”

मैंने चकित स्वर में कहना चाहा-----“और तुमने केवल उनके कहने पर....

“नहीं! ऐसा कोई इन्स्पेक्टर नहीं कर सकता।”

“फिर चन्द्रमोहन की गिरफ्तारी की वजह?”

“मैंने सारे कॉलिज और हॉस्टिल की तलाशी ली थी। चन्द्रमोहन के कमरे से उसके बेड पर तकिये के नीचे रखा खून से लथपथ वह चाकू मिला जिससे हत्या की गई है।”

“ओह! इतना बड़ा सुबूत?”

जैकी की मुस्कान गहरी हो गयी। बोला-----“मगर मैं दावे के साथ कह सकता हू-----कातिल वह नहीं है। इस केस में अपने

उपन्यास के लिए आपके हाथ भरपूर मसाला लगने वाला है।”

“यजह?”

“मेरे साथ आइए।” कहने के बाद वह कुर्सी से खड़ा हो गया। मुझे भी खड़ा होना पड़ा। हाथ में रूल लिए वह लम्बे-लम्बे कदमों के साथ दरवाजे की तरफ बढ़ा।

मैं पीछे लपका। दिमाग में रह-रहकर सवाल कीच रह रहा था कि वह क्या दिखाना चाहता है?



जैकी मुझे लोकअप में ले गया।

वहां का दृश्य देखते ही मेरे जिस्म में झुरझुरी दौड़ गयी।

बीस-बाइस बरस का एक लड़का लैटर में लगे कुंडे के साथ रस्सियों से जकड़ा उल्टा लटका हुआ था। उसका जिस्म लहनुवान था। कपड़े जगह-जगह से फटे हुए थे। मैं समझ सकता था----जैकी ने उसे थर्ड डिग्री से गुजाग है। जैकी पर नजर पड़ते ही उसके चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे कसाई को देखकर बकरे के चेहरे पर उभरते हैं। मिमिया उठा वह----“म-मुझे और मन मारना इंस्पेक्टर साहब! जो जानता था----बता चुका हूँ। कह चुका हूँ----वही करूंगा जो आपने कहा है।”

“ध्यान से देख इन्हें!” जैकी ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा----“और पहचान।”

उल्टे लटके लड़के ने सहमकर मुझे देखा।

“पहचाना?” जैकी ने गुराकर पूछा।

“स-सारी! म-मैं इन्हें नहीं जानता।”

और मुझे न जानना जैसे कोई गुनाह था।

जैकी के हाथ में दबा रूल ‘सांय’ की आवाज के साथ घूमा।

लड़का डकरा उठा।

रूल का निशान उसकी पीठ पर पड़ता चला गया।

“इन्हें नहीं जानता साले! ये हिन्दुस्तान के सबसे ज्यादा विकले वाले लेखक हैं। अपने नये उपन्यास के कथानक की तलाश में इस केस की इन्वेस्टिगेशन के लिए निकले हैं।”

“लॉज इंस्पेक्टर!” मैं चन्द्रमोहन के कुछ बोलने से पहले कह उठा----“मेरे सामने यह सब मत करो! किसी का मुझे न जानना अपराध नहीं है।”

“आप नहीं समझ सकते।” जैकी इस तरह हंसा जैसे मेरी अवस्था पर तरस खा रहा हो----“बगैर निचोड़े कपड़े से पानी नहीं निकलता। इस मामले में काफी बदनाम हूँ मैं। बड़े-बड़े घुटे खुराट मुजरिमों से सब उगलवाये हैं। एक बार मेरे चंगुल में फंसा पत्थर भी सब उगले बगैर नहीं छूट सकता। ये बेचारा तो है क्या चीज! सुबह से इसी हालत में है। काफी खातिर कर चुका हूँ। एक ही बात बके जा रहा है----‘सत्या की हत्या मैंने नहीं की।’ और अब.... अपने एक्सपॉरिपंस के बेस पर कह

सकता हूँ----हथियारा ये नहीं है।”

मैंने पूछा----“वो खून सना चाकू?”

“पता नहीं किसने मेरे तकिये के नीचे रख दिया....।” रोते कलपते चन्द्रमोहन ने कहा।

मैंने जैकी से पूछा----“क्या तुम भी इसी ढंग से सोच रहे हो?”

“कह चुका हूँ----इस हालत में यह झूठ नहीं बोल सकता।”

“फिर ये टाचर बंद क्यों नहीं करते?”

“हवलदार का इंतजार है।” जैकी ने कहा----“वह फिंगर प्रिन्ट्स डिपार्टमेंट में गया है। मुझे पूरा यकीन है----चाकू की मूठ पर इसकी अंगुलियों के निशान नहीं होंगे।”

“हवलदार हाजिर है सर!” लॉकअप के दरवाजे से आवाज उमरी----“आपका यकीन चौबीस कैरेट के सोने की तरह खरा है। चाकू पर इसकी अंगुलियों के निशान नहीं हैं।”

हम दोनों ने पलटकर दरवाजे की तरफ देखा। वह थुलथुल तौंद वाला ऐसा हवलदार था जो शक्ति से ही कामेडियन नजर आता था। अपने हाथ में एक कागज लिए वह जैकी के नजदीक पहुंचा।

जैकी ने कागज लेते हुए पूछा----“किसके निशान हैं?”

“किसी के नहीं।” हवलदार ने कहा----“रिपोर्ट में लिखा है----निशान मिटा दिये गये।”

जैकी ने हवलदार को हुक्म दिया----“लड़के को सीधा करके कुर्सी पर बिठाओ।”

हवलदार को मानो पसंदीदा हुक्म मिल गया था।

वह स्टूल पर खड़ा होकर चन्द्रमोहन के बंधन खोलने लगा।

जैकी ने मुझसे पूछा----“क्या आपको ये लड़का कुसूरवार लगता है?”

मुझे क्योंकि इंस्पेक्टर को क्राँस करना था, इसलिए कहा----“मुमकिन है चाकू रखने से पहले इसी ने निशान साफ किये हों?”

“अगर उस वक्त इसका दिमाग इतना काम कर रहा था तो यह भी सोचना चाहिए था कि चाकू अपने नहीं, किसी और के कमरे में छुपाना चाहिए।”

चाहकर भी क्राँस करने के लिए मुझे तर्क न मिला। अतः चुप रहा।

“ये वो बात है जो खुद को बचाये रखने के लिए हथियारे ने सोची।” जैकी कहता चला गया----“उसने चाकू से अपने निशान मिटाये। उसे किसी और के.... बल्कि उसके कमरे में रखा जिस पर सबको सत्या का हथियारा होने का शक होना ही होना था।”

“सबका शक चंद्रमोहन पर होने का कारण?”

“इस सवाल का जवाब कॉलिज पहुंचने पर आपको खुद मिल जायेगा।”

मैं चुप रहा।

उधर, जैकी की बातें सुनकर चन्द्रमोहन की रुकी हुई सांसें मानो पुनः चलने लगीं। हवलदार उसे सीधा करके लॉकअप में पड़ी एकमात्र कुर्सी पर बैठा चुका था। होशो-हवास कावू में आते ही चन्द्रमोहन ने कहा----“मैंने तो पहले ही कहा था इंस्पेक्टर साहब कि....

“शटअप!” गुर्राता हुआ जैकी कुर्सी की तरफ झपटा। दोनों हाथों से उसका गिरेबान पकड़कर गुर्राया----“अगर कॉलिज में रिपोर्ट के बारे में किसी से कहा तो चमड़ी उधेड़ कर रख दूंगा।”

चन्द्रमोहन सहम गया। मुंह से बोल न फूट सका।

“गौर से मेरी बात सुन!” चेहरे पर आग लिए जैकी कहता चला गया----“जहां ये बात सच है कि तूने हत्या नहीं की----वहीं यह बात, इससे भी बड़ा सच है कि कोई तुझे फंसाना चाहता है।

जाहिर है, वही हत्यारा होगा! बोल----तेरे ख्याल से, तुझे फंसाने की कोशिश कौन कर सकता है?”

“यह कोशिश राजेश की हो सकती है। संजय भी कर सकता है। या उनके ग्रुप का कोई और स्टूडेंट भी हो सकता है। सब साले दुश्मनी रखते हैं मुझसे।”

“इनमें से कोई सत्या की हत्या क्यों करेगा? ये सब तो उसी के ग्रुप के थे।”

“मुमकिन है अंदरखाने किसी की....

“तिगड़में मत जोड़। कोई ठोस कारण बता।”

चन्द्रमोहन चुप रह गया।

जैकी ने कहा----“कुछ देर बाद मैं तुझे कॉलिज छोड़कर आऊंगा। सबसे साफ-साफ कहूंगा कि तू कातिल नहीं है! समझ रहा है न?”

चन्द्रमोहन ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई।

“अगर कोई पूछे... कि इंस्पेक्टर ने तुझे किस वेस पर छोड़ दिया तो एक ही जवाब दोगे----यह कि कुछ नहीं जानते! हत्यारा जो भी है, तुझे आजाद देखकर बीखलायेगा! अपनी चाल पिटती देखकर हर शख्स बीखलाता है। बीखलाहट में वह गलती करेगा। ये गलती किसी भी किस्म की हो सकती है। अपने चारों तरफ पैनी नजर रखनी है। ताड़ने की कोशिश करनी है कि कौन तुझे फंसाना चाहता है? याद रहे----वह तेरा कोई नजदीकी भी हो सकता है। ऐसा शख्स----जिसे तू हमदर्द और शुभचिंतक समझता हो। इतना ही नहीं, अपने ढंग से दूसरे स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स को वांच भी करना है। अगर किसी की भी, जरा-सी भी संदिग्ध हरकत देखे तो फौरन मुझे इस पर सूचित करना।” कहने के साथ जैकी ने अपनी बैल्ट में फंसा मोबाइल फोन निकालकर उसे दिखाया----“ये सेल्यूलर है! चौबीस घंटे मेरे साथ रहता है। किसी भी वक्त फोन कर सकता है। हवलदार, इसे एक कागज पर मेरा ‘सैल’ नम्बर लिखकर दो।”

हवलदार ने आदेश का पालन किया।

जैकी का खेल पसंद आया मुझे। यह एक तरह से चन्द्रमोहन को अपना मुखबिर बनाकर उस परिसर में छोड़ रहा था जहां हत्यारा हो सकता था। चन्द्रमोहन के दिमाग पर और ज्यादा दबाव बढ़ाने के लिए जैकी ने कहा----“एक बात याद रखना----चाकू पर तेरी अंगुलियों के निशान नहीं हैं, ये बात केवल हम तीन आदमियों को मालूम है। मैं पुलिसवाला हूँ। चाहूँ

तो कोर्ट में चाकू वाले प्वाइंट का जिक्र ही न करूं। उस हालत में तेरे खिलाफ मेरे पास अनेक गवाह और सबूत हैं। फांसी का फंदा सीधा तेरी गर्दन में होगा। फांसी से बचने का एक ही रास्ता है----यह कि असल हत्यारे को पकड़वाने में मदद कर। उसकी गिरफ्तारी ही तुझे इस जंजाल से निकाल सकती है।”

“म-मैं पूरी कोशिश करूंगा इंस्पेक्टर साहब।”

“क्या तुम्हारे कॉलेज में मजाक ही मजाक में किसी को चैलेंज भी कहा जाता है?” मैंने पूछा।

उसका उत्तर था----“नहीं।”



ड्राइवर ने पुलिस जीप कॉलेज गेट के सामने रोकी।

मैं, जैकी और चन्द्रमोहन बाहर निकले।

गेट पर खड़े चौकीदार ने गहरे ब्राऊन कलर का पटानी सूट, कार्ती जैकेट और कलफ के कारण खड़ी पगड़ी पहन रखी थी। खल बगल में दबाये वह अपनी दोनों हथेलियों को हिले-हिले रगड़ रहा था। हम पर नजर पड़ते ही हाथ रुक गये।

हम उसके नजदीक पहुंचे।

“अरे! चन्द्रमोहन बाबा?” उसने गहन आश्चर्य के साथ पूछा----“साबुत के साबुत?”

जैकी गुराया----“क्या मतलब?”

चौकीदार ने सकपकाकर कहा----“ब-वो साब.... बात ये है कि थाने से निकलने वाले लोगों के हैण्ड में अक्सर मैंने उनके अस्थि पंजर देखे हैं।”

मैं मुस्करा उठा।

जैकी दहाड़ा----“शटअप!”

चौकीदार ने मुंह लटका लिया।

“क्या नाम है तुम्हारा?” जैकी ने पूछा।

“गुल्लू कहा जाता है हुजूर।”

“हाथ में क्या है?”

गुल्लू ने दाया हाथ बांई हथेली से हटा लिया। उस पर भांग का एक बड़ा सा गोला रखा था। जैकी ने उसे डपटा----“नशा करते हो?”

“भोले बाबा का प्रशाद है साब! इसे लिये बगैर....

गेट के उस तरफ से आवाज उभरी----“अरे! गुरु आ गये!”

हम सबकी तबज्जो उधर चली गयी।

सात-आठ लड़के और चार-पांच लड़कियों का ग्रुप उत्साहित अंदाज में चन्द्रमोहन की तरफ लपका। चन्द्रमोहन उनकी तरफ! जैकी पर नजर पड़ते ही वह ग्रुप जहाँ का तहाँ रुक गया। चन्द्रमोहन ने कहा----“डरो नहीं, इंस्पेक्टर साहब को यकीन हो गया है कि सत्या मैडम की हत्या मैंने नहीं की।”

आधुनिक कपड़े पहने लड़के-लड़कियों ने जैकी की तरफ देखा।

जैकी ने होले से मुस्कराकर चन्द्रमोहन के कथन का समर्थन एकाध ने फिकरा भी कस दिया। सभी लड़के-लड़कियों ने एक साथ हुंरे का नारा लगाया और लपककर चन्द्रमोहन को अपने कंधों पर उठा लिया। अगले पल वे ‘चन्द्रमोहन जिन्दावाद’ के नारे लगाते कॉलेज के प्रांगण की तरफ बढ़ गये।

एक पेड़ के नीचे खड़े दूसरे ग्रुप के लड़के-लड़कियाँ उन्हें देखने लगे। उस ग्रुप के स्टूडेंट्स के चेहरों पर हैरत के भाव थे। उनके सामने से गुजरते वक्त चन्द्रमोहन के दोस्त कुछ ज्यादा ही जोर-जोर से उछलकर खुशियाँ मनाने लगे।

एकाध ने फिकरा भी कस दिया।

उस ग्रुप से एक स्मार्ट-सा लड़का लपकता हुआ हमारी तरफ आया। मारे गुस्से के उसका चेहरा तमतमा रहा था। नजदीक आते ही गुराया----“ये सब क्या है इंस्पेक्टर?”

“क्या जानना चाहते हो?” जैकी के होठों पर मुस्कान थी।

एक लड़की ने पूछा----“क्या आपने इसे छोड़ दिया?”

“हाँ।”

“मगर क्यों?” दूसरे लड़के ने पूछा।

“हत्या इसने नहीं की।”

“आप कैसे कह सकते हैं?”

एक ने गुराकर कहा----“इसके कमरे से चाकू मिला है।”

“चाकू उसे फँसाने के लिए असल हत्यारे ने भी रखा हो सकता है।”

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। मगर ये सन्नाटा ज्यादा देर कायम नहीं रह सका। सभी स्टूडेंट्स के चेहरे गुस्से की ज्यादाती के कारण सुलग रहे थे। भीड़ में से कोई चीखा----“ये नाइंसाफी है! इंस्पेक्टर बिक गया है।”

“हां-हां।” एक साथ सभी कह उठे----“इंस्पेक्टर घूस खा गया!”

“खामोश!” जैकी दहाड़ा----“खबरदार! जो मुझे रिश्तखोर कहने की कोशिश की!”

स्टूडेंट्स डरने की जगह कुछ ज्यादा ही भड़क उठे।

किस्ती ने नारा लगाया----“नाइंसाफी!”

“नहीं चलेगी।” अनेक मुट्ठियाँ हवा में उछलीं।

“चाकू-छूरे!”

“बंद करो!”

“गुंडागर्दी!”

“बंद करो!”

“चन्द्रमोहन को!”

“बाहर निकालो।”

“हमारी मांगें!”

“पूरो करो।”

वातावरण में बार-बार उपरोक्त नारे गूँजने लगे। इधर-उधर से आकर अन्य स्टूडेंट्स भी उनमें शामिल हो गये। देखते ही देखते कॉलेज का शांत वातावरण अगधे खासे हंगामे में बदल गया। भीड़ प्रतिपल बढ़ती चली जा रही थी। इधर चन्द्रमोहन के दोस्तों ने भी जवाबी नारेबाजी शुरू कर दी। जैकी ने ऐसा न करने का इशारा किया।

चन्द्रमोहन ने अपने साथियों को रोका। अब वे केवल हंगामे के दर्शक थे।

“तुमने जानबूझकर उन्हें उत्तेजित किया है।” मैंने जैकी से पूछा-----“क्या फायदा हुआ इसका!”

“इस वक्त आप एक इन्वेस्टिगेटर हैं।” मेरी तरफ देखते हुए जैकी के होठों पर मुस्कान थी-----“सत्या के कातिल तक पहुंचने के लिए कॉलेज के वातावरण को रीड करना बेहद जरूरी है। अपनी आंखों से देख रहे हैं कि दोनों ग्रुप किस कदर एक-दूसरे के दुश्मन हैं?”

“तो क्या तुमने मुझे यह नजारा दिखाने के लिए....

“चन्द्रमोहन की वापसी पर इतना तो होना ही था।” जैकी ने मेरा वाक्य काटकर कहा-----“वे प्रिंसिपल निवास की तरफ जा रहे हैं। आइए, आपकी मुलाकात प्रिंसिपल से कराता हूँ।”

नारे लगाती भीड़ सचमुच जुलूस की शक्त में एक तरफ को बढ़ गई थी।

हम जुलूस के पीछे लपके।

नारों की आवाज सुनकर प्रिंसिपल पहले ही अपने बंगले के बरांडे में आ चुका था।

उत्तेजित स्टूडेंट्स की भीड़ लॉन में इकट्ठी होने लगी।

नारेबाजी निरंतर जारी थी।

हॉस्टल की तरफ से भी लड़के-लड़कियां दौड़कर इधर आ गये थे। ज्यादातर स्टूडेंट्स के ग्रुप में थोड़ा ही इजाफा हो पाया था। मुझे समझते देर न लगी कि ज्यादातर स्टूडेंट चन्द्रमोहन के खिलाफ हैं। उसके अपने ग्रुप में चंद ही लड़के-लड़कियां हैं।

कई प्रोफेसर्स भी वहां पहुंच गये थे।

प्रिंसिपल काफी देर से हाथ उठा-उठाकर स्टूडेंट्स को चुप होने के लिए कह रहा था। सफेद वालों वाला वह एक आकर्षक व्यक्ति था। आंखों पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाये जब वह बरांडे में पड़े एक स्टूल की तरफ बढ़ा तो मैंने उसकी चाल में लंगड़ाहट महसूस की। बंगले के बाहर लगी नेम प्लेट पर उसका नाम पढ़ चुका था। उस पर लिखा था----“जे.के. वंसल!”

वंसल की नजर चन्द्रमोहन के साथ-साथ हम पर भी पड़ चुकी थी। वह स्टूल पर खड़ा हुआ और अपनी करारी आवाज में जैकी को सम्बोधित करके बोला----“इंस्पेक्टर, चन्द्रमोहन कॉलिज में क्यों नजर आ रहा है?”

नारे लगाते स्टूडेंट्स की भीड़ शान्त हो गयी। यह भीड़ इस वक्त जैकी की तरफ देख रही थी। कुछ कहने के स्थान पर जैकी भीड़ को चीरता लम्बे-लम्बे कदमों के साथ वंसल की तरफ बढ़ा। वह चन्द्रमोहन की बांह पकड़े हुए था। उसे लगभग घसीटता हुआ जैकी वंसल के नजदीक ले गया।

मैं उसके पीछे था।

जैकी ने वंसल से कहा----“मैंने अब तक की इन्वेस्टिगेशन में इसे बेगुनाह पाया है।”

“ये झूठ बोलता है। रिश्त ख़ा गया है। इंस्पेक्टर भ्रष्ट है।” भीड़ में से ऐसे अनेक वाक्य कहे गये और फिर जमकर जैकी के विरुद्ध नारेबाजी शुरू हो गयी। जैकी बरांडे में पड़ी कुर्सी पर खड़ा हो गया। बार-बार कहने लगा----“उत्तेजित होने और नारेबाजी से कुछ नहीं होगा। शांति से मेरी बात सुनें।”

देर जरूर लगी लेकिन ऐसा वक्त आया जब स्टूडेंट्स शान्त हो गये।

हालांकि उत्तेजना में किसी किस्म की कमी नहीं आई थी।

“आप सब मेरे छोटे भाई-बहनों के समान हैं। वादा करता हूँ----कोई नाइन्साफी नहीं होगी।” उस क्षण जैकी का लहजा और आवाज बेहद प्रभावशाली थे----“और ये नाइन्साफी किसी के भी साथ नहीं होगी।” शब्द ‘किसी के भी’ पर उसने खास जोर देने के बाद कहा----“चन्द्रमोहन भी उन किसी में शामिल है। मैं जानता हूँ तुम लोग सत्या मैडम से बहुत प्यार करते थे। सारे कॉलिज की चहेती थी सत्या मैडम!” कहते वक्त जैकी की आंखें भर आईं। मैं समझ गया----ये एक्टिंग उसने स्टूडेंट्स को प्रभावित करने के लिए की थी। और स्टूडेंट्स प्रभावित नजर आये भी। मैं मन ही मन जैकी के अभिनय की तारीफ़ कर उठा। वह बगैर रुके, भराये गले से कहता चला जा रहा था----“ऐसे मामलों में जो पुलिस वाला रिश्त ख़ाता है, वह रिश्त नहीं खाता! गू खाता है----गू! मैं थूकता हूँ उस पर! मुमकिन है किन्हीं कारणों से सत्या मैडम और चन्द्रमोहन में लगती हो। ये भी सच हो सकता है उत्तेजना के किन्हीं क्षणों में चन्द्रमोहन ने सत्या पर चाकू ताना हो मगर इसका मतलब ये नहीं कि हत्या चन्द्रमोहन ने ही की है। मैं समझ सकता हूँ----तुम लोगों में यह उत्तेजना सत्या के प्रति बेइन्तिहा मुहब्बत और चन्द्रमोहन के प्रति नफरत के कारण उपजी है। मगर मैं.... इंस्पेक्टर जैकी हत्या के इस केस को भावनाओं में बहकर नहीं देख सकता! मैंने ऐसे अनेक केस देखे हैं जिनमें हत्यारे ने दो व्यक्तियों के मनमुटाव या दुश्मनी का लाभ उठाकर, यह सोचते हुए क़ादम किया कि मुझ पर किसी का शक नहीं जायेगा। क्या इस केस में भी तुम ऐसा ही चाहते हो? क्या तुम चाहते हो बगैर मुकम्मल तहकीकात के चन्द्रमोहन को सजा मिल जाये और सत्या का असल हत्यारा कालर खड़े करे इस परिसर में घूमता रहे?”

“नहीं! नहीं! हम ऐसा नहीं चाहते।” चारों तरफ से आवाज़ें उठीं।

“तो मैं इंस्पेक्टर के नाते नहीं बल्कि तुम्हारा बड़ा भाई होने के नाते वादा करता हूँ कि सत्या के हत्यारे को.... वास्तविक हत्यारे को तुम सबकी आंखों के सामने सजा दूंगा। जरूरत है तो केवल तुम्हारे सहयोग की! मुझे पूरा यकीन है कि सत्या का हत्यारा इस वक्त भी इसी परिसर में मौजूद है और मेरी इस चेतावनी को सुन रहा है। मुझे तो उसकी तलाश में जमीन

आसमान एक करना ही है, लेकिन तुम लोग देश की भावी पीढ़ी हो। अगर नजर पैनी रखो तो अपने बीच घुपे हत्यारे को मुझसे बेहतर ढूंढ सकते हो। यह काम जज्बातों में बहकर नहीं बल्कि दिमाग से करो। यदि वाकई सत्या के हत्यारे को सजा दिलाना चाहते हो तो छोटी-मोटी घटनाओं से उपजी आपसी रंजिश को भूल जाओ। मिलकर काम करो! एक दूसरे की हरकतों पर नजर रखो।”

ऐसी अनेक बातें कहीं जैकी ने।

उसने न केवल उत्तेजना शान्त कर दी बल्कि स्टूडेंट्स को हत्यारे की तलाश में भी लगा दिया! मेरे नजदीक खड़ा प्रिंसिपल बड़बड़ाया----“मेरा भी तो बार-बार यही कहना है। चन्द्रमोहन लाख नालायक सही, हत्या नहीं कर सकता।”

मैंने पलटकर उसकी तरफ देखा।

उसने पूछा----“आपकी तारीफ!”

“नावल्चो!” जवाब हवलदार ने दिया।



कॉलिज के लम्बे-चौड़े प्रांगण में उस स्थान के चारों तरफ चौक से एक दायरा बना हुआ था जहां सत्या श्रीवास्तव ने अंतिम सांसें ली थीं।

दायरे के अंदर खून बिखरा पड़ा था। मगर मेरी निगाह खून पर नहीं CHALLENGE पर थी। यही शब्द मुझे यहां तक खींच लाया था। इस शब्द का अर्थ जितना अंधेरे में मेरे लेखन कक्ष में था, उतना ही इस वक्त भी था।

जैकी ने अपनी स्पीच के अंत में मेरा परिचय दे दिया था। ज्यादातर स्टूडेंट्स मेरे पाठक और प्रशंसक थे।

मुझे अपने बीच पाकर बेहद रोमांचित और खुश हुए थे। कई ने ऑटोग्राफ लिये। कई ने कहा----“आप बेहद दिमागदार उपन्यास लिखने हैं। अब... जबकि आप इस केस की इन्वेस्टिगेशन के लिए निकले हैं तो हमें पूरा विश्वास है, सत्या मैडम का हत्यारा चाहे जितना चालाक हो----आप उसे खोज निकालेंगे।”

आई.ए.एस. कॉलिज के मेरे पाठकों ने जो आशाएं मुझसे बांधी थीं----मेरी पूरी कोशिश उन पर खरा उतरने की थी। मगर अभी तक मेरा दिमाग यह सोचने से ज्यादा और कुछ नहीं सोच पा रहा था कि----मरते वक्त सत्या ने CHALLENGE क्यों लिखा?

हमारे चारों तरफ स्टूडेंट्स की भीड़ थी। मैंने चेहरा उठाकर उस टैरेस की तरफ देखा जहां से सत्या का नीचे गिरना बताया जा रहा था। वहां से एक स्थान का रेलिंग उखड़ा हुआ था। रेलिंग पूरी तरह टूटकर सत्या के साथ नहीं गिरा था बल्कि दीवार, के सहारे लटका रह गया था। मैंने प्रिंसिपल से पूछा----“जिस वक्त सत्या वहां से गिरा, उस वक्त आप कहां थे?”

“प्रांगण में ही।” वंसल ने अंगुली से एक तरफ इशारा किया----“वहां!”

“आप प्रांगण में क्यों थे?”

“हम इस सवाल का मतलब नहीं समझे!”

“सुना है जो मीटिंग यहां होने वाली थी, वह आपके खिलाफ थी। इस समस्या पर विचार किया जाना था कि यदि आप

चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन नहीं करते हैं तो क्या कदम उठाया जाये? मेरे ख्याल से ऐसी मीटिंग में आपको आमंत्रित नहीं किया गया होगा?"

"आपका ख्याल दुरुस्त है। हमें नहीं बुला गया था।"

"इसीलिए सवाल किया, आप यहां क्यों थे?"

"हमने सोचा----स्टूडेन्ट्स और प्रोफेसर्स को यह बताना जरूरी है कि चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन किसी समस्या का हल नहीं है। चन्द्रमोहन थोड़ा बिगड़ा हुआ सही, लेकिन हम सबकी नजर में वह वैसा ही होना चाहिए जैसे दूसरे स्टूडेन्ट्स हैं।"

"इस बारे में विस्तार से बाद में बात करेंगे। फिलहाल ये तय है कि आप यहीं थे।"

"वहां!" प्रिंसिपल ने फिर उसी तरफ अंगुली उठाई जिस तरफ एक बार पहले भी उठा चुका था।

"क्या देखा आपने?"

"वही, जो सबने देखा।"

मैंने अपना लहजा थोड़ा सख्त किया----"मैं आपसे पूछ रहा हूं।"

प्रिंसिपल ने लगभग वही दोहरा दिया जो अखबार में छपा था। मैंने यह जांचने की कोशिश की कि वह सुनी-सुनाई बातें दोहरा रहा है या घटना का प्रत्यक्षदर्शी था? मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सका। इसलिए सवाल किया----"जब आपने टेरेस पर चीखती-चिल्लाती लहुलुहान सत्या को देखा तो उसे क्यों नहीं देख सके जो उस पर चाकू से हमला कर रहा था?"

"जब किसी ने नहीं देखा तो हम कैसे...."

"मैं किसी की नहीं, आपकी बात कर रहा हूं। आपने क्यों नहीं देखा?"

"सीधा-सी बात है, वह नजर नहीं आ रहा था।"

मेरे कुछ कहने से पहले जैकी बोल उठा----"वेद जी, मैं पूछताछ कर चुका हूं। प्रिंसिपल साहब उस वक्त प्रांगण में ही थे। काफी लोगों ने गवाही दी है।"

"जैसे मैं!" इस नई आवाज ने मुझे अपनी तरफ पलटने पर मजबूर कर दिया।

मैंने देखा----वह लड़की अत्यन्त सेक्सी ड्रेस में थी। ऊंची एड़ी के सैंडिल्स! जांघों के दर्शन कराती स्कर्ट और टॉप ऐसा कि गोलाईयों का ऊपरी आधा हिस्सा झांकता नजर आ रहा था। उनमें होता कम्पन साफ बता रहा था उसने ब्रा नहीं पहन रखी है। वह सुन्दर और आकर्षक थी। मैंने पूछा----"आपकी तारीफ?"

अपने होठों पर जीभ फिराने के साथ वह कोयल सी कुंकी----"हिमानी बर्मा! आपकी फैन!"

"कौन-सी क्लास में पढ़ती हैं?"

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। कुछ इस तरह जैसे मैंने कोई जबरदस्त लतीफा सुनाया हो! और उसकी मधुर खिलखिलाहट में मक्स हुए थे एक पुरुष के ठहाके। मैंने पुरुष की तरफ देखा। वह धोती कुर्ता पहने हुए था। गंजा सिर। गांठ लगी लंबी चोटी। नाक पर गांधी ऐनक। हिटलरी मूंछें। पेट पकड़-पकड़कर बेसाबता हंसते हुए उसने कहा----"कुमारी हिमानी विद्यालय की छात्रा नहीं, अध्यापिका हैं, अंग्रेजी का पठन-पाठन करती हैं। अंग्रेजी ढंग के वस्त्र धारण करती हैं।"

मैं भिन्ना उठा। पूछा----“आप कौन हैं?”

“ऐरिक! ऐरिक डिमूजा!” वह यांत्रिक ढंग से हंसना बंद करके गंभीर स्वर में बोला----“क्रिश्चियन हूँ। परन्तु पढ़ाता देवनागरी लिपि हूँ। देवनागरी वस्त्र धारण करता हूँ।”

मैं यह सोचने पर विवश हो गया कि इस कॉलिज में एक से बढ़कर एक नमूना है।

“मैं उस वक्त यहां था सर!” हिमानी अपनी बड़ी-बड़ी आंखों को नचाती बोली----“प्रिंसिपल साहब के नजदीक खड़ी थी।”

“अच्छा बताइए।” मैंने पूछा----“सत्या मैडम टैरेस से खुद कूदी या किसी ने धक्का दिया था?”

हिमानी सकपका गयी।

ऐरिक बोला----“स्वयं क्यों कूदती? किसी ने धकेला था।”

“किसने?”

“वह दीखा नहीं।”

“धक्का देने की अवस्था में दीखना चाहिए था।”

“हमारे ख्याल से न वह कूदी थी, न ही धकेली गयी थी।” बंसल ने कहा----“जिस वक्त वह चीख रही थी, तब विपरीत दिशा में यानी टैरेस की तरफ देख रही थी। शायद उस तरफ हमलावर था। उससे बचने के लिए पीछे हटी और रेलिंग तोड़ती हुई यहां आ गिरी।”

“इंस्पेक्टर, मैं टैरेस का निरीक्षण करना चाहता हूँ।” मैंने जैकी से कहा।



जहां से सत्या गिरी थी, वह लेडीज हॉस्टल की इमारत का टैरिस था।

वहां पहुंचने से पहले मैंने सैंक्रिड फ्लोर पर स्थित सत्या के कमरे का निरीक्षण किया। परन्तु ऐसी कोई चीज नहीं मिली जो घटना के अंधेरे पहलुओं पर रोशनी डाल सकती। टैरेस पर एक जगह ढेर सारा खून पड़ा था। खून सूख चुका था। रंग काला पड़ चुका था। उस पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। खून की टेढ़ी-मेढ़ी लकीर टूटे हुए रेलिंग तक चली गयी थी। एक स्थान पर चौक से बना दायरा देखकर मैंने पूछा----“ये निशान कैसा है?”

“यहां सत्या की सैंडल पड़ी थी।” जैकी ने बताया।

“और दूसरी सैंडल?”

“काफी तलाश करने के बावजूद नहीं मिली।”

“सत्या के कमरे में भी नहीं?”

“नहीं।”

“यही सोच रहा था मैं!” मैं दूटे हुए रेलिंग की तरफ बढ़ता हुआ बोला----“जिस वक्त सत्या को प्रांगण में होना चाहिए था, उस वक्त टैरेस पर क्यों थी? मगर नहीं----वह टैरेस पर नहीं थी! हमला यहां हुआ जरूर लेकिन असल में हमलावर से बचने की कोशिश में कहीं और से भागकर यहां पहुंची। हमलावर उसका पीछा कर रहा था। वार करने का मौका यहां आकर मिला। दूसरा सैडिल वहां गिरा जहां से सत्या और हत्यारे के बीच भागदौड़ शुरू हुई।”

“क्या जरूरी है?” जैकी ने कहा----“रास्ते में भी तो कहीं गिरा हो सकता है?”

“रास्ते में गिरा होता तो हमलावर को उसे गायब करने की जरूरत नहीं थी।” मैं जैकी की तरफ पलटता हुआ बोला----“गायब करने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि जहां वह गिरा वहां से उसकी वरामदगी हत्यारे को फंसा सकती थी अर्थात् भागदौड़ हत्यारे के अपने परिसर में शुरू हुई।”

जैकी कह उठा----“तर्क में दम है।”

“मैं लेंडीज हॉस्टल की वार्डन से मिलना चाहता हूं।”

“नगेन्द्र।” प्रिंसिपल ने अपने नजदीक खड़े चपरासी को हुक्म दिया----“ललिता को बुलाओ।”

चपरासी सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

मैंने दूटे हुए रेलिंग के नजदीक से नीचे झांका। वहां जहां सत्या गिरी थी। जैकी मेरे नजदीक आता बोला----“यदि सत्या को धकेला गया होता या वह खुद कूदती तो शायद कुछ और दूर जाकर गिरती। लगता है वह हत्यारे से बचने की कोशिश में ही गिरी।”

मैं जैकी से सहमत था इसलिए कोई तर्क-वितर्क नहीं किया। दरअसल मेरे दिमाग में दूसरी की बातें घुमड़ रही थी। उन्हीं को उगलने के लिए कहा----“जितने उपन्यास मैंने लिखे हैं, उनके अनुभव के बेस पर कह सकता हूं यदि हत्या का उद्देश्य समझ में आ जाये, तो ऐसे केस खुलने में टाइम नहीं लगता।”

“उद्देश्य पता लगाना आसान नहीं होता।”

“सवा आठ बजे! या ज्यादा से ज्यादा साढ़े आठ बजे सत्या को प्रांगण में होना चाहिए था।” मैंने अपने दिमाग में भरा मलूदा निकालना शुरू किया----“यकीनन सत्या सवा आठ और साढ़े आठ के बीच तैयार होकर अपने कमरे से निकली होगी। पता ये लगाना है कि साढ़े आठ से नौ बजे तक वह कहां रही? क्या करती रही? ऐसा उसने क्या देखा या सुना जिसकी वजह से मरना पड़ा?”

“वह रही इसी विल्डिंग में थी, बाहर किसी ने नहीं देखा।”

मेरे कुछ कहने से पहले ललिता आ गयी।

वह तीस साल के आस-पास की साधारण कद-काठी वाली महिला थी।

सूती साड़ी और उसी से मैच करता ब्लाऊज पहने हुए थी।

दस-बारह साल की एक लड़की भी थी उसके साथ। रंग-विरंगे प्रॉक पहने हुए थी वह।

वह ललिता की बेटी थी और हॉस्टल में साथ ही रहती थी। बातचीत में उसने उसका नाम चिन्नी बताया! यह भी बताया कि उसका पति गांव में रहता है। मैंने उससे कई सवाल किये मगर उल्लेख करना इसलिए जरूरी नहीं है क्योंकि उनसे वर्तमान

कंस पर कोई खास रोशनी पड़ने वाली नहीं है। उससे ध्यान हटाकर मैंने जैकी से कहा-----“एक बात तय है। सत्या के मरने की वजह साढ़े आठ से नौ बजे के बीच पैदा हुई। इस बीच उसे कोई ऐसा राज पता लगा जिसे हत्यारा नहीं चाहता था कि किसी को पता लगे।”

जैकी भेदभरी मुस्कान के साथ बोला-----“इतनी देर से आप बेकार दिमागी कसरत कर रहे हैं।”

“मतलब?” मैं चौंका।

“जो कसरत मैंने सुबह की थी, उसी का फायदा उठा लेते।”

“मैं अब भी नहीं समझा।”

“मैं भी इसी नतीजे पर पहुंचा था जिस पर आप पहुंचे हैं।”

और फिर.... हम दोनों एक-दूसरे की तरफ देखकर ठहाका लगा उठे।

अब मुझे इस बात की तह में जाना था कि सत्या की हत्या का शक सब चन्द्रमोहन पर क्यों कर रहे थे? अतः जैकी से कहा-----“तुम जाना चाहो तो जा सकते हो, मैं अभी यहीं रहूंगा।”

जैकी ने ‘जैसी मर्जी’ वाले अंदाज में कंधे उचका दिये।



स्टूडेन्ट्स के दूसरे ग्रुप का लीडर वह स्मार्ट लड़का था जो चन्द्रमोहन को परिसर में देखकर सबसे पहले तमतमाता हुआ जैकी के नजदीक आया था।

उसका नाम राजेश था। राजेश तोमर।

मैं उसे कैन्टीन में ले गया। साथ में उसके नजदीकी दोस्त अल्लारक्खा, एकता और दीपा भी थे। थोड़े ही समय में मैंने महसूस किया कि दीपा और राजेश दोस्त से ज्यादा कुछ थे।

कॉलिज की तरह कैन्टीन भी शोक में बंद थी। फिर भी हम एक मेज के चारों तरफ कुर्सियों पर बैठ गये। मैंने मतलब की बात पर आते हुए कहा-----“राजेश, तुम लोगों की चन्द्रमोहन से क्या दुश्मनी है?”

“दुश्मनी जैसी तो कोई बात नहीं है।” राजेश ने कहा-----“हमारा मिजाज उससे और उसके ग्रुप के लड़के-लड़कियों से नहीं मिलता।”

“वजह?”

“वह बदतमीज है।” दीपा ने कहा-----“लड़कियों तक से तर्माज से पेश नहीं आता!”

मैंने सीधा सवाल किया-----“क्या तुमसे भी कोई बदतमीजी की?”

दीपा ने जवाब देने की जगह राजेश की तरफ देखा। भाव ऐसा था जैसे पूछ रही हो, जवाब दे या न दे? मैंने वातावरण को हल्का बनाये रखने के लिए कहा-----“दीपा, हिचको नहीं। मेरे किसी भी सवाल का मतलब सत्या के हत्यारे तक पहुंचने की कोशिश से ज्यादा कुछ नहीं है। शायद यह कॉलिज की पिछली किसी छोटी-मोटी घटना के पीछे छुपा हो।”

“दीपा से उसने इस बात से पहले ही दिन बहुत बद्तमीजी की थी।” राजेश से कहना शुरू किया----“मैं और वो एक ही क्लास में हैं। दीपा हमसे जूनियर है। उस वक्त रैगिंग चल रही थी जब दीपा वहां आई। चन्द्रमोहन ने इससे कहा----‘तुम्हें मेरे होटों का किस लेना होगा।’ दीपा ताव खा गई। झगड़ा बढ़ा। मैं बीच में पड़ा। चन्द्रमोहन से कहा रैगिंग और बद्तमीजी में फर्क होता है। किसी लड़की से किस लेने के लिए कहना रैगिंग नहीं है। चन्द्रमोहन मुझसे भिड़ गया। शायद उसी वक्त मारपीट शुरू हो जाती, लेकिन दूर से आती सत्या मैडम नजर आई। हम सब उनकी इज्जत करते थे। रैगिंग के वे सख्त खिलाफ थीं, अतः पलक झपकते ही तितर-बितर हो गये।” “उसके बाद?”

“एक दिन यहीं, यानी कैटीन में मेरे और चन्द्रमोहन के बीच फाइटिंग भी हुई।”

मैंने शरारत की----“और उसके बाद तुम दोनों में ईलू-ईलू शुरू हो गया?”

दीपा झेंप गई। एक बार राजेश की तरफ देखकर पलकें झुका ली उसने।

मैंने हौले-हौले मुस्कुरा रहे राजेश से कहा----“कॉलिज लाइफ में ईलू-ईलू कुछ इसी तरह शुरू होते हैं.... सत्या मैडम चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन क्यों कराना चाहती थी?”

राजेश ने कहा----“क्योंकि चन्द्रमोहन और उसके साथी स्मैक लेते हैं।”

मेरे दिमाग में धमाका सा हुआ! संभलकर बैठ गया। लगा----मैं सत्या की हत्या के कारण के आसपास पहुंचने वाला हूं। बोला----“जरा खोलकर बताओ इस बात को!”

“एक दिन चन्द्रमोहन और उसके साथी लेडीज टायलेट में छुपे स्मैक ले रहे थे। सत्या मैडम ने रंगे हाथों पकड़ लिया। प्रिंसिपल साहब के पास ले गयीं लेकिन प्रिंसिपल साहब ने कोई खास पनिशमेन्ट नहीं दिया। थोड़ा समझा-बुझाकर और यह वादा लेकर छोड़ दिया कि अब वे स्मैक नहीं लेंगे।”

“ये क्या बात हुई?”

“सत्या मैडम और प्रिंसिपल साहब के बीच ऐसी ही बातों को लेकर विवाद था।”

“कॉलिज में स्मैक आई कहां से?”

“यही सवाल सत्या मैडम का था। उन्होंने प्रिंसिपल साहब से कहा----इस घटना को हल्के ढंग से लेकर आप गलती कर रहे हैं। आज चार-पांच स्टूडेंट स्मैक पीते पकड़े गये हैं, कल ये जहर सारे कॉलिज में फैल जायेगा। कम से कम यह तो पूछा ही जाना चाहिए कि कॉलिज में स्मैक लाया कौन?”

“बंसल साहब का रुख क्या रहा?”

“एक कान से सुनना, दूसरे से निकाल देना!”

“और वो चाकू वाली घटना क्या थी?” मैंने पूछा----“सुना है, चन्द्रमोहन ने सत्या मैडम पर चाकू खोल लिया था। नीबत इतनी आगे कैसे पहुंची?”

“यह कल सुबह की बात है। सारे कॉलिज में हंगामा मच गया। वजह थी----कॉलिज की दीवारों पर लगे नंगे फोटो! ये फोटो दीपा के थे।” मैं चौंक पड़ा। मुंह से निकला----“दीपा के नंगे फोटो?”

दीपा चेहरा झुकाये बैठी थी।

राजेश कहता चला गया----“वे पोस्टर एक सेक्सी मैग्जीन में छपे नंगी लड़कियों के फोटोओं के चेहरों पर दीपा का चेहरा चिपकाकर तैयार किये गये थे। तैयार करके बिपकाने वाला चन्द्रमोहन था। लेकिन यह भेद खुलने में पहले सवने दीपा के ही ममझा। दीपा तो इतनी एक्साइटिड हो गयी कि अगर सही वक्त पर मैं रोक न लेता तो टैरेस में कूदकर सुसाइड कर ली होती। वह तो भला हो सत्या मैडम का जिन्होंने चन्द्रमोहन के कमरे से वह मैग्जीन बरामद कर ली जिसमें नंगे फोटो काटे गये थे। हकीकत जानने के बाद तो सत्या मैडम जैसे पागल हो गयीं। कॉलिज प्रांगण में सबके सामने चन्द्रमोहन के गालों पर चांटे पर चांटे बरगमाती चली गयीं वे! प्रिंसिपल साहब ही नहीं, कॉलिज का हर शख्स दापरे की शक्ति में उनके चारों तरफ खड़ा था। कुछ देर तक चन्द्रमोहन पिटाता रहा लेकिन फिर जब से लम्बा चाकू निकालकर खोल लिया और गर्ज----“बस मैडम----बस! बहुत हो चुका! अब अगर एक भी चांटा मारा तो अंतड़ियां निकालकर बाहर फेंक दूंगा।”

“ओह!”

“सत्या मैडम का हाथ जहां का तहां रुक गया। स्तब्ध रह गयीं वे! और वे ही क्यों, हर शख्स स्तब्ध रह गया था। मैं और दीपा टैरेस पर थे। मैं नीचे होता तो शायद जान में मार देता चन्द्रमोहन को लेकिन, प्रिंसिपल महोदय ने सिर्फ इतना किया कि लपककर आगे बढ़े। चन्द्रमोहन की चाकू वाली कलाई पकड़ी। हाथ से चाकू छीना और गुर्गवे----तुम्हारी बदतर्माजियों की हद हो चुकी है चन्द्रमोहन! मैडम पर चाकू खोलने की तुम्हारी हिम्मत कैसे पड़ी? चन्द्रमोहन चुपचाप खड़ा मैडम को घूरता रहा। भाव तब भी ऐसे थे जैसे कच्चा चूना जाने का इरादा रखता हो। प्रिंसिपल महोदय ने हुक्म दिया----“चलो! माफ़ी मांगो सत्या मैडम से! सारी बोलो।” चन्द्रमोहन तब भी चुप खड़ा रहा। प्रिंसिपल महोदय ने डपटकर कहा----“माफ़ी मांगो।” और चन्द्रमोहन लट्टमार भापा में ‘सारी’ कहकर वहां से चला गया।”

“उसके बाद?”

“उत्तेजना तो फैल ही चुकी थी।” अल्लारक्खा ने कहा----“चन्द्रमोहन के चंद स्मैकिये दोस्तों को छोड़कर सारा कॉलिज उसके खिलाफ था। उसी वक्त चन्द्रमोहन को कॉलिज से निकालने के लिए नारे लगने लगे। राजेश और दीपा भी प्रांगण में आ चुके थे। दीपा तो बेचारी हिचकियां ले-लेकर रोये जा रही थी। राजेश बहुत ज्यादा उत्तेजित था। प्रिंसिपल महोदय अपने ऑफिस में जा चुके थे। उत्तेजना को शान्त करने वाली भी सत्या मैडम ही थीं। राजेश को खास तौर पर शान्त किया उन्होंने। बोली----“राजेश, अब हद हो चुकी है! मैं प्रिंसिपल साहब से मिलती हूं। उन्हें इस कॉलिज रूपी स्वच्छ तालाब से चन्द्रमोहन नाम की गंदी मछली को निकालकर फेंकना ही पड़ेगा।”

“स्टूडेंट्स को शान्त करके सत्या मैडम, हिमानी मैडम, ऐरिक सर और लविन्द्र सर प्रिंसिपल के रूम में गये थे।” अल्लारक्खा के चुप होते ही एकता ने बोलना शुरू कर दिया था----“बाकी सभी लोग ऑफिस के बाहर खड़े रहे। वे चारों करीब तीस मिनट ऑफिस में रहे। इस बीच सत्या मैडम के चीखने-चिल्लाने की आवाज बाहर तक आई थी और फिर सबसे पहल वे ही बाहर निकलीं। ऐरिक सर, हिमानी मैडम और लविन्द्र सर उनके पीछे थे। गुस्सा तो सभी के चेहरे पर झलक रहा था। मगर सत्या मैडम बहुत ज्यादा उत्तेजित थीं। ऑफिस के बाहर इकट्ठी भीड़ से उन्होंने चीख-चीखकर कहा----“पता नहीं क्यों, प्रिंसिपल महोदय चन्द्रमोहन को इस कॉलिज के भविष्य से भी ज्यादा चाहते हैं! वे उसका रेस्ट्रिकेशन करने के लिए तैयार नहीं हैं। मगर, हमने भी सोच लिया है----अब इससे कम पर कोई फैसला नहीं होगा! सोचने के लिए मैं उन्हें पूरी रात देकर आई हूं। कल सुबह साढ़े आठ बजे प्रांगण में एक मीटिंग होगी। या तो उस वक्त तक प्रिंसिपल महोदय चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन कर चुके होंगे या उस मीटिंग में तय करना होगा कि हमें क्या करना है?”

“बस!” दीपा ने कहा----“इसके बाद वे अपने कमरे की तरफ चली गयीं।”

“प्रिंसिपल के ऑफिस में क्या बातें हुई थी?”

“पूरी बातें पता नहीं लग सकीं! हां, उड़ती-उड़ती यह सूचना जरूर मिली कि तत्काल आदेश के जरिए प्रिंसिपल महोदय ने चन्द्रमोहन को एक हफ्ते के लिए कॉलिज से निकाल दिया था। यह एक हफ्ता आज सुबह से शुरू होने वाला था।”

मैंने महसूस किया----उपरोक्त बातें बताते वक्त राजेश कुछ ज्यादा ही उद्धेलित नजर आ रहा था।



वारदात सत्या के मर्डर तक सीमित रहती तो शायद मि० चैलेंज में आपको यह कथानक पढ़ने को न मिलता। यदि यहां पर इस बात को भुला दिया जाये कि मरने से पूर्व सत्या ने CHALLENGE लिखा था तो यह घटना, आम हत्याओं सी घटना ही थी और मैं एक आम घटना को अपना कथानक बनाने के मूड में नहीं था।

लेकिन आई.ए.एस. कॉलेज में एक के बाद एक घटी घटना ने मुझे झकझोर कर रख दिया।

जो कुछ हुआ, वह सनसनीखेज और पेचीदा था। शायद मेरी कल्पनाएं वहां तक नहीं पहुंच सकती थीं। उन पेचीदगियों की शुरूआत हुई रात के दो बजे से।

मधु सोई हुई थी। कमरे में नाइट बल्ब का मद्धिम प्रकाश था। मैं जाग रहा था। दिमाग में सत्या की हत्या से सम्बन्धित सवाल सरसरा रहे थे।

टेलीफोन की घंटी बजी।

मैंने लपककर साइड ड्राज के ऊपर रखे फोन का रिसीवर उठाया।

माऊथपीस से मुंह सटाकर धीरे से कहा----“हैलो!” “इंस्पेक्टर जैकी बोल रहा हूँ वेद जी!” दूसरी तरफ से हड़बड़ाहटयुक्त स्वर में कहा गया----“मैंने कहा था, इस केस में आपको भरपूर मसाला मिलेगा। शायद वो बात सच होने जा रही है। अगर वाकई कुछ लिखना चाहते हों तो फौरन यहां आ जाइए।”

“कहां?”

“कॉलेज में।”

मैंने चौंकर पूछा----“क्या हुआ?”

“चन्द्रमोहन का मर्डर!”

“क-क्या?” मेरे हलक से चीख निकल गई।

मधु हड़बड़ाकर उठ बैठी मगर अब भला मेरा ध्यान उस तरफ कहां था? मैं फोन पर चीख पड़ा था----“कब? किसने मार डाला उसे?”

“इन सवालों के जवाब यहीं आकर लें तो बेहतर होगा!”

“ओ.के.! मैं आता हूँ।” कहने के तुरंत बाद मैंने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।

मधु ने कहा----“क्या हुआ?”

“किसी ने चन्द्रमोहन को मार डाला।” मैंने एक स्विच ऑन करते हुए कहा।

कमरा तेज प्रकाश से भर गया।

मधु के चेहरे पर हैरत का सागर उमड़ा पड़ रहा था। मैं उसे अपनी दिन भर की गतिविधियों के बारे में बता चुका था। इस नई वारदात की कल्पना शायद उसने भी नहीं की थी। उसे इसी हालत में छोड़कर मैंने नाइट गाऊन उतारा और बाहर जाने की लिए कपड़े पहनने लगा।



क्या आप सोच सकते हैं एक आदमी मरने के बावजूद कैसे खड़ा रह सकता है?

कम से कम मैं चन्द्रमोहन की लाश को देखने से पहले ऐसी कल्पना नहीं कर सकता था।

जी हां!

लाश ठीक मेरे सामने खड़ी थी।

आंखें फाड़े घूर रही थी मुझे।

दृश्य स्टॉफ रूम का था। एक मेज पर रखे फोन का रिसीवर नीचे झूल रहा था। उसके नजदीक दीवार के सहारे खड़ी थी----चन्द्रमोहन की लाश! एक बल्लम उसके सीने के आर-पार होकर पीछे मौजूद प्लाई की दीवार में धंस गया था। फर्सी चन्द्रमोहन की लाश दीवार के सहारे खड़ी की खड़ी रह गयी थी। उसकी अवस्था देखकर मैं जैसे बोलना तक भूल गया।

“चन्द्रमोहन अभी तक दरवाजे की तरफ देख रहा है।” जैकी की आवाज मेरे कानों में पड़ी----“बल्लम की पोजीशन बता रही है, इसे ठीक वहां से फेंका गया जहां इस वक्त आप खड़े हैं।”

मेरी तंद्रा भंग हुई। स्टॉफ रूम के दरवाजे के बीचो-बीच से हटा। हवलदार की आवाज गूंजी----“लेकिन सर, रात के इस वक्त ये स्टॉफ रूम में क्या कर रहा था?”

“फोन पर बात कर रहा था किसी से!” मैंने जासूसी झाड़ी।

“किसी से नहीं, मुझसे बात कर रहा था।” जैकी ने बताया।

मैं चौंका----“तुमसे?”

“इस पर!” जैकी ने अपनी बेल्ट में लगे मोबाइल की तरफ इशारा किया----“आप जानते हैं ही मैंने इससे क्या कहा था?

शायद उसी को फालो कर रहा था बेचारा।”

“तो क्या इसे हत्यारे का कोई क्लू मिला था?”

“ऐसा ही लगता है।” जैकी ने कहना शुरू किया----“फोन पर अपना नाम बताने के बाद यह केवल इतना ही कह पाया था कि मैंने हत्यारे का पता लगा लिया है इंस्पेक्टर साहब! वो कारण भी पता कर लिया है जिस वजह से सत्या मैडम की हत्या की गई। मेरे पास सुवृत्त भी...। और बस! इतना कहकर चुप हो गया। फिर फोन पर इसकी ऐसी आवाज उभरी जैसे अपने सामने किसी को देखकर चौंका हो----‘तुम! तुम यहां?’ दूसरी तरफ से मैं फोन पर चीखा----‘हेलो! हेलो! क्या हुआ चन्द्रमोहन? लेकिन जवाब में इसकी जोरदार चीख के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया। मैं काफी देर तक ‘हेलो... हेलो...!’ चिल्लाता रहा। अनिष्ट की आशंका उसी क्षण हो गयी थी। जीप लेकर भागा। यहां आया तो...

“इसके चीखने की आवाज ने कॉलिज परिसर को झकझोर कर रख दिया था।” प्रिंसिपल कह उठा----“अपने बंगले में सोये पड़े हम और हॉस्टल में सोये ज्यादातर स्टूडेन्ट्स और प्रोफेसर हड़बड़ाकर उठे। हंगामा सा मच गया। सभी एक-दूसरे से पूछ रहे थे, यह चीख कैसी और किसकी थी। तभी वातावरण में गुल्लू के चीखने की आवाज गूंजी----“पकड़ो! पकड़ो! हत्यारा भाग रहा है।”

“गुल्लू कौन?” मैंने पूछा।

“चौकीदार!”

“ओह हां!”

“उसकी आवाजें सुनकर हम सब चारों तरफ से आवाज की दिशा में दौड़े।”

“सबसे पहले मैं गुल्लू के नजदीक पहुंचा।” आई साइट का चश्मा लगाये करीब तीस वर्षीय व्यक्ति ने कहा----“उस वक्त वह कॉलेज की दाहिनी वाउन्ड्री वाल के नजदीक एक पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे पकड़ा। पहले तो शायद मुझे ही हत्यारा समझकर हड़बड़ा गया, लेकिन पहचानते ही चीखने लगा----‘उसे’ पकड़ो सर! वह पेड़ पर चढ़कर चारदीवारी के उधर कूदा है। मैं पेड़ पर चढ़ा भी, मगर बाहर कोई नजर नहीं आया। तब तक काफी स्टूडेन्ट्स और प्रिंसिपल साहब भी वहां पहुंच चुके थे।”

मैंने पूछा----“आपकी तारीफ?”

“लविन्द्र भूषण! कॉलेज में प्रोफेसर हूं।” कहने के साथ उसने अपने हाथ में मौजूद सुलगी हुई सिगरेट में कश लगाया।

“गुल्लू ने हत्यारे के बारे में और क्या बताया?”

जैकी ने कहा----“वह सब गुल्लू के मुंह से ही सुनें तो बेहतर होगा।”

मुझे जैकी की राय जंची। अतः चुप रहा।

स्टॉफ रूम ज्यादा बड़ा नहीं था। चन्द्रमोहन की लाश के अलावा वहां केवल मैं, जैकी, हवलदार, प्रिंसिपल और लविन्द्र ही थे। बाकी सब स्टॉफ रूम के बाहर खड़े थे। लाश की तरफ बढ़ते जैकी ने कहा----“मेरे पहुंचने तक ये सब लोग गुल्लू की निशानदेही पर यहां पहुंच चुके थे। मैंने फौरन आपको फोन किया। आगे की कार्यवाही आपके सामने करना मुनासिब समझा।”

“थैंक्यू इन्स्पेक्टर!” मैंने उसका आभार व्यक्त किया।

“प्लीज!” उसने कहा----“किसी चीज को हाथ मत लगाइएगा।”

मैं थोड़ा खीझ उठा। बोला----“ऐसी बातें मैं रोज लिखता हूं।”

मेरी खीझ पर जैकी मुस्कराया। लार्शें देखना उसका रोज का काम था। कम से कम मैं एक लाश की मौजूदगी में नहीं मुस्करा सकता था। लाश भी ऐसी जो लगातार मुझे घूरती महसूस हो रही थी।

जहां बल्लम गड़ा था, यानी सीने से अभी तक खून की बूंदें टपक रही थीं। उसके कपड़ों को गंदा करता खून फर्श पर गिर रहा था। मैंने कहा----“क्या हत्यारे का पता इसने जरूरत से कुछ ज्यादा जल्दी नहीं लगा लिया था?”

लटके हुए रिंसावर का निरीक्षण करता जैकी बोला----“मेरे ख्याल से जल्दबाजी के चक्कर में इसने कोई बेवकूफी की! उसी वजह से हत्यारे की नजर में आ गया।”

“क्यों न तलाशी ली जाये? मुमकिन है सुबूत इसकी जेब में हो।”

“हुआ भी होगा तो हत्यारे ने निकाल लिया होगा।”

“ये बात इस पर डिपेन्ड है कि गुल्लू यहाँ चीख के कितनी देर बाद पहुंचा?” मैंने कहा----“यदि फौरन पहुंच गया होगा तो हत्यारे को इसकी तलाशी लेने का मौका नहीं मिला होगा।”

“बात में दम है।” कहने के साथ जैकी ने अपना हाथ धीमे से चन्द्रमोहन की पैंट की वाई जेब में डाला। हाथ बाहर आया।

उसमें सौ-सौ के विल्कुल नये करेंसी नोटों के साथ एक कागज भी था।

कागज पर खून लगा था।

सूखा हुआ खून!

अर्थात् चन्द्रमोहन का खून नहीं था वह।

कागज इस तरह गोला-सा बना हुआ था जैसे कसकर मुट्ठी में भींचा गया हो।

मेरा दिल धक्क-धक्क करने लगा।

क्या यही वह सुवृत्त था जिसका जिक्र चन्द्रमोहन ने किया था?

क्या है कागज में?

जैकी ने कागज खोला। यह सब प्रिंसिपल, हवलदार और लविन्द्र भी देख रहे थे। उत्सुकता से वंधे वे हमारे नजदीक आ चुके थे। कागज पर नजर पड़ते ही प्रिंसिपल कह उठा----“अरे! ये तो पेपर है।”

“कैसा पेपर?” जैकी ने पूछा।

“आगामो एग्जाम में आने वाला इंग्लिश का पेपर।”

मैंने पेपर को ध्यान से देखते हुए कहा----“पेपर ऑरिजनल नहीं, उसकी फोटो कॉपी है।”

“लेकिन ये यहाँ आई कैसे?” प्रिंसिपल की आवाज में रोष था। पेपर किसी कम्प्यूटराइज कागज की फोटो कॉपी थी। जैकी ने सवाल किया----“इसे किसने तैयार किया था?”

“हिमानी मैडम ने।”

“चन्द्रमोहन की जेब में कैसे पहुंच गया?”

प्रिंसिपल झुंझला उठा----“यही तो हम पूछ रहे हैं!”

“मैं बताता हूं।” यह कहते वक्त जैकी के जबड़े भिंच गये----“वेद जी, आपने कहा था----हत्यारे का उद्देश्य पता लग जाये तो आधा केस हल हो जाता है। हत्या का उद्देश्य आपके सामने है! ये पेपर! मुझे पूरा यकीन है----इस पर लगा खून सत्या का है। आपका सवाल था----साढ़े आठ से नौ बजे के बीच सत्या क्या करती रही? जवाब ये पेपर दे रहा है----वह उसके पास थी जिसके पास यह पेपर था। और वो... वो है जिसने सत्या और चन्द्रमोहन की हत्या की! आप तो कल्पनाएं करने में माहिर हैं! जरा सोचिए----सत्या का जो करेक्टर हमारे सामने आया है, उसके मुताबिक यदि उसने यह पेपर किसी के पास देखा होगा तो क्या प्रतिक्रिया हुई होगी उसकी?”

“सिद्धान्तों की पक्की सत्या भड़क उठी होगी।” यह सब कहने के लिए मुझे जरा भी सोचना नहीं पड़ा----“जो रैगिंग तक

वरदाशत नहीं करती थी वह भला पेपर आऊट होना कैसे वरदाशत कर सकती थी?"

"और वो जो भी था, मुमकिन है सत्या के सामने पहले गिड़गिड़ाया हो। रिक्वेस्ट की हो कि इस बारे में किसी से न कहे!

मगर सत्या भला इतनी बड़ी गलती माफ करने वाली कहाँ थी?" जैकी कहता चला गया----"यकीनन उसके बाद सत्या उसके हाथ से पेपर छीनकर भागी! चाकू खोले हमलावर उसके पीछे दौड़ा। यह वरदाशत साढ़े आठ और नौ घंटे के बीच की है। हमला करने का मौका हत्यारे को टैरेस पर मिला। तब तक पेपर सत्या की मुट्ठी में ही था। कम से कम पहले हमले के बाद ये उससे छीना गया।"

"अगर पेपर पर लगा खून सत्या का है तो ये यही कहानी कह रहा है।" मैं जैकी से सहमत होता बोला----"लेकिन चन्द्रमोहन के हाथ कहाँ से लगा?"

"वह पता लग जाये तो हत्यारा बेनकाब हो जायेगा।"

"मतलब?"

"सीधी सी बात है। यही वह सुवृत्त है जिसके बारे में चन्द्रमोहन मुझे फोन पर बताना चाहता था। सुवृत्त अपने आप में हत्या का कारण है और चन्द्रमोहन जानता था कि ये उसे कहाँ से मिला? इस बीच चन्द्रमोहन से कोई गलती हो गयी। उसी का खामियाजा भुगतना पड़ा इसे।"

"काश! चन्द्रमोहन फोन पर एकाध लफ्ज और बोल पाता।"

प्रिंसिपल ने कहा----"हद है! पेपर आऊट हो रहे थे। हिमानी मैडम से पूछा जाना चाहिए कि उसके द्वारा तैयार किया गया पेपर किसी और के हाथ में कैसे पहुँचा?"

"उससे पहले मुझे तलाशी की कार्यवाही पूरी करनी होगी।" कहने के साथ जैकी ने लाश की दाईं जेब में हाथ डाला। वापस आया तो इस बार भी उसके हाथ में एक कागज था।

सबके दिल बाकायदा धक्क-धक्क की आवाज करके बजने लगे।

जैकी ने कागज खोला, और ये सच है, उस क्षण मेरा दिल तक धड़कना भूलकर कागज को देखने लगा। टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखा था----CHALLENGE

पेपर के बारे में सुनते ही हिमानी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। अपने होंठों पर जीम फिराने के साथ प्रिंसिपल की तरफ देखती बोली----"मैं इस बारे में क्या कह सकती हूँ, सर? मैंने तो पेपर तैयार करते ही आपको सौंप दिया था।"

"और हमने दूसरे पेपर्स के साथ यूनिवर्सिटी भेज दिया।"

"यूनिवर्सिटी?" मैंने पूछा।

"हां।" वंसल ने कहा----"अकेले इस कॉलिज के लिए तैयार थोड़ी हुआ था पेपर? यूनिवर्सिटी से जुड़े सभी कॉलिजों के लिए था।"

"यानी काफी मोटा गेम था ये?" जैकी ने कहा----"इसे आऊट करने वाला काफी मोटी रकम कमा सकता था?"

"जी हां!"

मैंने पूछा----“दूसरे पेपर्स से मतलब?”

“देवनागरी लिपि का प्रश्नपत्र मैंने और रसायन शास्त्र का लविन्द्र भूषण ने बनाया था।” नजदीक खड़े एरिक डिसूजा ने बताया----“शेष प्रश्न पत्र सम्भवतः अन्य विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा तैयार किये गये होंगे।”

“मगर आऊट यही पेपर क्यों हुआ?” मैंने सवाल उठाया।

“मैं इस बारे में कुछ नहीं जानती सर!” मारे भय के मैंने हिमानी की आवाज में कंपकपाहट महसूस की----“वैसे भी मैंने पेपर तैयार करके अपनी हैंडराइटिंग में दिया था, ये किसी कम्प्यूटर पर कम्पोज हुआ है!”

जेकी ने बंसल से पूछा----“आपने पेपर कम्पोज कराकर यूनिवर्सिटी भेजे थे या....

“ज्यों के त्यों! हैंडराइटिंग में।”

मैंने नजदीक खड़े गुल्लू से सवाल किया----“जब तुमने चन्द्रमोहन की चीख सुनी, उस वक्त कहाँ थे?”

“मेन गेट पर स्टैण्ड था सर।” उसने हिन्दी में अंग्रेजी बोली।

जेकी ने अक्खड़ स्वर में पूछा----“पूरी बात बताओ!”

“हम अपनी ड्यूटी पर मुस्तेद थे सर! क्लाइमेट में चन्द्रमोहन बाबा की चीख उभरी। हमने इधर की तरफ रन किया। आप देख ही रहे हैं। मून निकला हुआ है। चांदनी इसी तरह बिखरी हुई थी। हमने दूर से देखा। वन मैन स्टाफ रूम के गेट से निकलकर भागा।”

“क्या पहन रखा था उसने?”

“ओवरकोट। जूते। और शायद पतलून भी थी, हेलमेट भी पहन रखा था। उसे हमने ललकारा! वह दम दबाकर भागा। हम पीछे लौटे। साथ ही चीखे भी----पकड़ो! पकड़ो! हत्यारा भाग रहा है। भागने के मामले में हम फर्स्ट आये। उस पेड़ तक पहुंचते-पहुंचते दबोच ही लिया उसे मगर, पावरफुल वह ज्यादा था। उसके एक ही झटके में हम फिरकनी की तरह घूमकर दूर जा गिरे। फुर्ती से उठे। वह पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। हमने फिर झपटकर दबोचने की कोशिश की! उसने बूट की टोकर हमारी छाती पर मारी। हम फिर चारों खाने चित्त! जब तक उठे, तब तक वह पेड़ पर चढ़कर चारदीवारी के उधर जम्प मार चुका था। उस वक्त हम पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे जब लविन्द्र सर पहुंचे। ये पेड़ पर चढ़े भी परन्तु वह नाइन टू इलेविन हो चुका था।”

“कैसा था वह?”

“कैसा मतलब?”

“मोटा या पतला? गुट्टा या लम्बा?”

“न मोटा। न पतला। न गुट्टा, न लम्बा। बीच वाला था।”

उसके बाद हम चन्द्रमोहन के कमरे में पहुंचे। वहां मौजूद उसकी नोट बुक्स देखीं। जिस कागज पर CHALLENGE लिखा था, उसकी राइटिंग नोट बुक्स की राइटिंग से मिलाई। मेरे मुंह से बरबस निकल पड़ा----“ये राइटिंग तो चन्द्रमोहन की है।”

“यानी इस कागज पर CHALLENGE लिखकर उसने खुद जेब में रखा?”

“मगर क्यों?”

“इस क्यों का जवाब फिलहाल न मेरे पास है वेद जी, न आपके पास।”

“पहेली और उलझती जा रही है। पहले सत्या उस अवस्था में CHALLENGE लिखती है जिस अवस्था में किसी भी व्यक्ति को हत्यारे का नाम या हत्या की वजह लिखनी चाहिए। फिर यही शब्द चन्द्रमोहन लिखकर जेब में डाल लेता है। क्या सत्या की तरह वह भी जान गया था कि वह मरने वाला है?”

“कम से कम फोन पर बात करने तक नहीं लगता।” कहने के बाद जैकी कमरे की तलाशी में जुट गया। अभी तक मैं एक दीवार के सहारे खड़ा था। वहां से हटकर चन्द्रमोहन की राइटिंग टेबल की तरफ बढ़ा ही था कि राजेश की चीख ने वातावरण को झकझोर दिया----“सर! ये क्या?”

सभी चौंककर उसकी तरफ पलटे। मैं भी। चेहरे पर खौफ के साये लिए वह मुझ ही से कह रहा था----“स.... सर ! आपकी पीठ पर।”

मैं उछल पड़ा----“क्या है मेरी पीठ पर?”

इस वक्त मेरी पीठ उसकी आंखों के सामने नहीं थी। हां, जैकी के सामने जरूर थी, वह मेरे पीछे था। उसने झपटकर मेरी पीठ से कुछ छुड़ाया। मैं बौखलाकर उसकी तरफ घूमा। उसके हाथ में एक बड़ा सा कागज था। कागज पर कुछ लिखा था। चेहरे पर आश्चर्य का सागर लिए उसने मुझसे पूछा----“ये आपकी पीठ पर किसने लगा दिया?”

मारे उत्तेजना के जैसे मेरा बुरा हाल था। यह कहता हुआ एक तरह से जैकी के हाथ में मौजूद कागज पर झपट ही जो पड़ा कि----“क्या लिखा है इस पर?” पलक झपकते ही कागज मेरे हाथ में था और मैं फटी-फटी आंखों से कम्प्यूटर पर कम्पोज किये गये उन मोटे-मोटे हफ्ते को देख रहा था, जिनके द्वारा लिखा गया था----“खेल अभी शुरू हुआ है----मि.चैलेंज!”



“लेकिन किसने?” हकबकाई मधु ने पूछा----“वह कागज किसने लगाया आपकी पीठ पर?”

“कुछ कह नहीं सकता। तब तक मैं वहां मौजूद हर शांख की रेंज में आ चुका था। ये तय है मधु हत्यारा उसी कैम्पस में मौजूद है।”

“सवाल ये है----उसने कागज आप ही की पीठ पर क्यों लगाया?”

“फिलहाल हमारे पास किसी सवाल का जवाब नहीं है।”

“पता नहीं क्यों----मुझे तो डर लगने लगा है। ‘खेल अभी शुरू हुआ है’ का मतलब साफ है! कॉलेज में और मर्डर होंगे?”

“स्लोगन के नीचे ‘मि० चैलेंज’ लिखा है। यानी हत्यारा खुद को ‘मि० चैलेंज’ कह रहा है। मरने वाले भी यही शब्द लिखकर मर रहे हैं। पेंच कुछ समझ में नहीं आ रहा।”

“मुझे यह झमेला खतरनाक प्वाइंट की तरफ बढ़ता नजर आ रहा है।” मधु ने कहा----“आप विभा से कॉन्टैक्ट क्यों नहीं करते?”

“वि-विभा?” बिजली सी गिरी मेरे दिमाग पर। हमेशा की तरह यह नाम जुवां पर आते ही दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

गहराईयों से एक मीठी-सी कसक उठी। यह वह दर्द था जो हर शख्स को बड़ा प्यारा लगता है।

हालांकि मेरे वे पाठक विभा के नाम से अच्छी तरह परिचित हैं जिन्होंने 'साढ़े तीन घंटे' और 'बीबी का नशा' नामक उपन्यास पढ़े हैं। परन्तु उनके लिए संक्षेप में विभा के बारे में बताना जरूरी है जिन्होंने ये उपन्यास नहीं पढ़े।

वह एल.एल.बी. में मेरे साथ पढ़ी थी। मैंने उससे मुहब्बत की थी----एकतरफा मुहब्बत! तीन साल के लम्बे धैर्य के बाद जब मैंने विभा से कहा, 'मैं तुमसे प्यार करता हूं' तो उसने मुझे कितने सुन्दर शब्दों में समझाया था कि मैं कितना गलत करता हूं! उसने साफ कहा था----'मैंने तुम्हें एक अच्छे दोस्त के अलावा कभी किसी नजर से नहीं देखा, और वेद, तुम भी दोस्ती के पवित्र रिश्ते को मुहब्बत की स्याही से कलंकित मत करो। यह भावना तुम्हें भटका देगी। तुम्हें लेखक नहीं बनना बल्कि हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा लेखक बनना है।'

उसकी शुभकामनाएं आज फल रही थीं।

कॉलिज लाइफ के बाद मैं अपने लेखन में डूब गया।

मधु से शादी हो गयी।

सौभाग्य से ऐसी पत्नी मिली जो मेरे अंदर के लेखक को कभी असावधान नहीं होने देती। मैं और मधु मेरिज एनीवर्सरी मनाने जिन्दलपुरम गये।

वहां विभा से मुलाकात हुई। यह किस्सा मैंने 'साढ़े तीन घंटे' नामक उपन्यास में लिखा है।

उसकी शादी जिन्दलपुरम के मालिक अनूप जिन्दल से हुई थी।

इतने दिन बाद एक दूसरे से मिलकर हम बहुत खुश हुए मगर ये खुशी बहुत छोटी साबित हुई। बड़ी ही रहस्यमय परिस्थितियों में अनूप ने आत्महत्या कर ली।

विधवा के लिबास में जब विभा सामने आई तो मेरा दिल हाहाकार कर उठा।

उसके बाद जिस ढंग से उसने अपने पति की मौत की इन्वेस्टिगेशन की, उसने मुझे और मधु को चमत्कृत कर दिया। बेहद ब्रिलियेन्ट है वह! उलझी हुई गुत्थियों और पहेलियों को हल करने में तो उसे महारथ हासिल है। उसने अपने पति के हत्यारों को ऐसी सजा दी जिसके बारे में सोचकर आज भी मेरे तिरपन कांप जाते हैं।

उसके बहुत दिन बाद मेरे पास एक दोस्त आया। संजय भारद्वाज! बड़ी अनोखी समस्या थी उसकी। ऐसी जैसी न उससे पहले किसी के सामने आई थी, न बाद में आई। अपनी बीबी को नेकलेस पहनाने की खातिर उसने एक मर्डर किया था। परफैक्ट मर्डर कि उसे कोई 'पकड़' नहीं सकता था। उस मर्डर के इल्जाम में उसकी बीबी पकड़ी गयी। उसे बीबी को बचाने की खातिर कानून को बताना था कि हत्या उसने की है मगर खुद उसी के पास इस बात का कोई सुबूत नहीं था। मैं उसे लेकर विभा के पास पहुंचा। विभा ने कहा----'मैं एक बहुत बड़े घराने की बहू हूं वेद। लम्बा-चौड़ा बिजनेस मुझे ही देखना पड़ता है। पेशेवर इन्वेस्टिगेटर नहीं हूं मैं जो किसी भी केस को सॉल्व करती फिक्स! वह मामला मेरे पति का था। तब संजय के बार-बार गिड़गिड़ाने और मेरी रिक्वेस्ट पर वह तैयार हुई और उस वक्त खुद संजय भी हैरत से उछल पड़ा जब विभा ने साबित किया कि असल में वह हत्या संजय ने की ही नहीं थी।

"कहां खो गये जनाव?" मधु ने मेरे विचारों के शान्त सागर में अपने वाक्य का कंकर फेंका।

"आ! हां!" मैं चौंकर वर्तमान में वापस आया।

मधु ने मुझे तिरछी नजर से देखते हुए छोड़ा----“क्या बात है, विभा का नाम आते ही किसी और दुनिया में पहुंच गये आप? मैं ये फरमा रही थी हुजूर, इस केस की उलझी हुई गुत्थियों को केवल विभा वहन सुलझा सकती हैं।”

“सुलझा तो सकती है लेकिन.....

“लेकिन?”

“वह नहीं आयेगी।”

“क्यों?”

“क्योंकि.... खैर, छोड़ो मधु! ये मामला मुझे ही हल करना होगा। जहां इतने सारे पेंच हैं, वहां एक सवाल ये भी है कि इतने दबाव के बावजूद प्रिंसिपल ने चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन क्यों नहीं किया? शायद इसी सवाल के पीछे हत्यारा छुपा हो। जवाब केवल प्रिंसिपल दे सकता है। कल उससे मिलना पड़ेगा।” यह निश्चय मैंने कर तो लिया परन्तु उस वक्त सोच तक नहीं सकता था कि----इस बार कॉलेज में इतनी हैरतअंगेज घटनाओं से गुजरना होगा।



एकता ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि सब बुरी तरह चींके।

अचानक गर्ल्स हॉस्टल की तरफ से लड़कियों के जोर-जोर से चीखने चिल्लाने की आवाजें आने लगी थीं।

हम उधर भागे।

हॉस्टल में लड़कियां इस तरह चीख रही थीं जैसे आफत आ गयी हो!

कई लड़कियां चीखती चिल्लाती बाहर की तरफ दौड़ती नजर आईं। राजेश ने उनमें से एक को जबरदस्ती रोकते हुए पूछा----“रवीना! रवीना! क्या हुआ?”

“मुझे नहीं पता!” कहने के साथ रवीना उसके बंधन से निकलकर भाग गई।

हम हॉस्टल के फर्स्ट फ्लोर की गैलरी में पहुंच चुके थे। चीखों के साथ भागती-दौड़ती लड़कियों के चेहरों पर दहशत सवार थी। उनके अस्त-व्यस्त कपड़े बता रहे थे, कि जो जिस हाल में थी, उसी में भाग ली थी। अल्लारक्खा ने एक लड़की को रोका। पूछा----“आखिर हुआ क्या है? कुछ बोलो तो सही।”

“ह-हिमानी मैडम! हिमानी मैडम!”

“क्या हुआ हिमानी को?” आशंका का मारा मैं दहाड़ उठा।

एक दूसरी लड़की ने खुद हमारे नजदीक रुकते हुए कहा----“वे अपने कमरे में चीख रही हैं....।”

“मगर क्यों?” राजेश ने पूछा।

“प-पता नहीं! हम तो उनकी चीखें सुनते ही...

उसका वाक्य बीच में छोड़कर तीर की तरह भागा राजेश। मैं लपका। बल्कि सभी उसके पीछे थे। हिमानी के रूम के बाहर तक

पहुंचते-पहुंचते मैंने देखा----कई लड़कों के हाथों में हॉकी, क्रिकेट का बैट, विकेट और मोटर साइकिल की चेन जैसे हथियार नजर आने लगे थे।

कमरे के अंदर से बराबर हिमानी के चीखने की आवाज आ रही थी----“बचाओ! बचाओ! बचाओ!”

लड़कों ने झपटकर कमरे का दरवाजा खोलना चाहा।

वह अंदर से बंद था।

“दरवाजा तोड़ दो!” राजेश चीखा।

जवान और हट्टे-कट्टे लड़के कहर बनकर दरवाजे पर झपटे।

दो तीन हमलों में ही दरवाजा ‘भड़ाक’ की जोरदार आवाज के साथ कमरे के अंदर जा गिरा। हथियार लिए लड़के बाढ़ के पानी की तरह कमरे में घुसे। उस वक्त पर दुश्मन सामने होता तो मुझे यकीन है वे लड़के उसकी हड्डियों का चूरा बना देते।

युवा शक्ति की शक्ति मैं अपनी आंखों से देख रहा था। परन्तु----दुश्मन सामने नहीं था। कमरा खाली था।

अटेंच वाथरूम का दरवाजा अंदर की तरफ से जोर-जोर से भड़भड़ाया जा रहा था। रोती हुई हिमानी की चीखें सुनाई दे रही थीं----“बचाओ! बचाओ! खोलो।”

एक लड़के ने लपक कर बाहर से बंद दरवाजा खोल दिया।

अर्ध-नगनावस्था में हिमानी नजर आई। वह बुरी तरह से रो रही थी। जिस्म पर सिर्फ एक बड़ा सा टॉवल था। हम सबको देखकर वह वहीं, एक दीवार के सहारे बैठकर रोने लगी।

अपना चेहरा घुटनों में छुपा लिया उसने।

कई लड़कों ने वाथरूम में घुसकर देखा----कोई नहीं था वहां। मैंने पूछा----“क्या हुआ मैडम? बात क्या है?”

“किसी ने मुझे वाथरूम में बंद कर दिया था।” होठों पर जीभ फिराते हुए उसने कहा----“मैं बहुत डर गयी थी। इतनी देर से चीख रही हूँ। किसी ने दरवाजा नहीं खोला।”

“लेकिन आपको बंद किया किसने?”

“म-मुझे नहीं पता! नहाने के बाद जब बाहर निकलना चाहा तो दरवाजा बाहर से बंद था। मैं बीखला गयी। दरवाजा पीटा! चीखी! मगर किसी ने नहीं खोला। लगा----इस बार मेरा ही नम्बर है! पता नहीं कहां मर गये थे सब लोग?”

राजेश ने पूछा----“कमरे का दरवाजा अंदर से आपने बंद किया था?”

“नहीं!”

मैंने सारे कमरे में नजर घुमाई। कहीं कोई ऐसा चिन्ह नहीं था जिससे लगे कि किसी वस्तु के साथ छेड़खानी की गई है! ड्रेसिंग टेबल पर मौजूद मेकअप का छोटा-मोटा सामान तक पूरे सलीके से रखा था।

मैं एक खुली खिड़की के नजदीक पहुंचा। उसके पास झांका। वह सर्विस लेन थी। बोला----“वह जो भी था! शरारत करके इधर से भागा।”

“ये शरारत नहीं थी सर!” अल्लारक्का ने कहा----“ऐसा नहीं कि इस कॉलिज में शरारतें नहीं होती। एक से एक बड़ी शरारत की है हमने लेकिन घटिया शरारत नहीं की! और तीन दिन से तो शायद ही कोई शरारत के मूड में हो। ये हरकत उन्हीं वारदातों की कड़ी है----जो कॉलिज में सत्या मैडम की हत्या से शुरू हुई!”

“लेकिन!” एक स्टूडेंट ने कहा----“मैडम को वाथरूम में बंद करने के अलावा कोई नुकसान नहीं पहुंचाया उसने! इस हरकत का मतलब क्या हुआ?”

“आतंक फैलाना!” मैं बोला----“दहशत का माहौल क्रियेट करना।”

“इससे उसे फायदा?”

“फिलहाल वही जाने।”

तब तक काफी लड़कियां कमरे में घुस आई थीं। मैंने लड़कों को बाहर निकलने की सलाह दी ताकि हिमानी कपड़े पहन सके।

गैलरी में मेरे साथ-साथ चल रहे राजेश ने कहा----“गर्नीमत है सर! मैं तो डर ही गया था! लगा था----कहीं हत्यारे ने एक और हत्या तो नहीं कर दी।”

“पहला ख्याल खुद मेरे दिमाग में भी यही आया था!”

तभी सामने से दीपा आती नजर आई। उसने राजेश से पूछा----“हुआ क्या था?”

“तुम कहां थी?”

“बाहर गया था। ब्रेड लाने।”

राजेश उसे घटना की डिटेल बताने लगा। तभी, तेज चाल से चलता लविन्द्र भूषण मेरे नजदीक पहुंचा। उसके हाथों में सुलगी हुई सिगरेट थी। हकबकाया सा नजर आ रहा था वह। जो सवाल दीपा ने किया था, वही उसने भी किया और मैंने राजेश की तरह स्वाभाविक सवाल किया----“आप कहां थे?”

“ग्राऊन्ड में पिच टीक कर रहा था। वहां पहुंचकर कुछ लड़कों ने बताया....

“इतना हंगामा मचा! वहां आवाजें नहीं पहुंचीं?”

“नहीं।”

मैंने उसे संक्षेप में घटना के बारे में बता दिया।

उसने पूछा----“अब कहां है हिमानी मैडम?”

“अपने रूम में।”

वह बगैर कहे हिमानी के कमरे की तरफ बढ़ गया। राजेश से बात करती दीपा यह कहकर उधर गयी कि----“मैडम से मिलकर आती हूं।” पुनः राजेश के साथ चलते मैंने कहा----“एक सवाल कैटीन में ही तुमसे पूछना चाहता था। फिर जाने क्या सोचकर टाल गया। दीपा को देखकर फिर सवाल दिमाग में कौंधने लगा है।”

“ऐसा क्या सवाल है?”

“क्या सत्या को तुम्हारे और दीपा के ईलू-ईलू का इल्म था?”

“था।”

“कभी कुछ ऑब्जेक्शन किया?”

“नहीं।”

“क्यों?”

“मतलब?”

“क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है, जो सत्या स्टूडेंट्स की रैगिंग तक को पसंद नहीं करती थी, उसने तुम्हारे अफेयर पर कभी एतराज नहीं किया?”

राजेश ने जवाब नहीं दिया मगर उसके होठों पर हल्की सी रहस्यमय मुस्कान उभर आई। उस मुस्कान को लक्ष्य करके मैंने कहा----“जवाब नहीं दिया तुमने?”

“उनका भी चक्कर चल रहा था।”

“सत्या का?” मैं चौंका।

“क्यों? टीचर्स के सीने में क्या दिल नहीं होता?”

“किससे?”

“जिनसे कुछ देर पहले आप बात कर रहे थे।”

“ल-लविन्द्र से?”

“हां।”

हंगामा शान्त होने पर मैं लविन्द्र के कमरे में पहुंचा। उसका कमरा ब्यायज हॉस्टल में था। कमरे में घुसते ही सिगरेट के धुवे की तीव्र दुर्गन्ध मेरे नथुनों में घुसी। बायें हाथ की अंगुलियों के बीच सुलगी हुई सिगरेट लिए वह उस वक्त राइटिंग टेबल के साथ वाली कुर्सी पर बैठा ब्राऊन कलर वाली एक डायरी पढ़ रहा था। मुझे देखकर चौंका। सिगरेट हाथ से कुचली। मुझे कुर्सी पर बैठाया और खुद बेड पर बैठ गया। डायरी मेज पर पड़ी रह गयी थी। मैंने अपना हाथ उस पर रखने के साथ बातें शुरू कीं----“चन्द्रमोहन द्वारा चिपकाये गये पोस्टर्स के बाद हंगामे को लेकर सत्या जब प्रिंसिपल के कमरे में गई, तब आप, हिमानी और ऐरिक भी साथ थे न?”

“हां।” लविन्द्र ने एक ठंडी सांस ली----“मैं वहीं था।”

“मैं वहां हुई बातें जानना चाहता हूं।”

“काफी जबरदस्त तकरार हुई प्रिंसिपल से!” उसने कहना शुरू किया----“हम सबकी एक ही मांग थी----चन्द्रमोहन को अब एक पल भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। उसने सारे कॉलिज का वातावरण बिगाड़ रखा है। फौरन रेस्ट्रिकेशन कीजिए उसका।”

मैंने डायरी उठाते हुए पूछा----“प्रिंसिपल की प्रतिक्रिया?”

“वर्क की तरह टंडा पड़ा रहा वो आदमी! कोई फर्क नहीं पड़ा। उल्टा मुस्कराने लगा। मुस्कान ऐसी थी जैसे हमें मूर्ख कह रहा हो।”

“उसके इस व्यवहार की आप क्या वजह समझते हैं?” मैंने डायरी अपने दोनों हाथों के बीच लेकर घुमानी शुरू कर दी थी। लविन्द्र थोड़ा उत्तेजित नजर आने लगा। शायद इसीलिए मेरी हरकतों पर ध्यान नहीं दे पाया। कहता चला गया वह----कॉलिज में पॉलिटिक्स चलाये रखना! विवाद खड़ा रखना! चन्द्रमोहन को उसकी शै थी ताकि कॉलिज में उसकी धाक बनी रहे। उस आवारा लड़के को बार-बार माफ करने के पीछे और हो भी क्या सकता है?

मेरे ख्याल से यह आदमी एक पल के लिए भी प्रिंसिपल की कुर्सी पर बैठने काबिल नहीं है। उस दिन तो सारी हड्डें टूट गयी थीं----इसके बावजूद कोई एक्शन नहीं लिया गया।”

मेरा पक्का यकीन है कोई भी आदमी सामान्य अवस्था में अपने असली रूप में नहीं होता। असली रूप में तब आता है जब उसे गुस्सा दिला दिया जाये। लविन्द्र को उसी अवस्था में लाने की गर्ज से मैंने कहा----“ये तो गलत है। मैंने सुना है----एक्शन तो उसके खिलाफ लिया था प्रिंसिपल ने।”

“क्या एक्शन लिया था?” वह मुझ ही पर भड़क उठा। मानो मैं ही प्रिंसिपल था।

उसे और भड़काने के लिए मैंने कहा----“चन्द्रमोहन को हफ्ते भर के लिए कॉलिज से....

“ये कोई एक्शन था?” लविन्द्र का सम्पूर्ण चेहरा भभक उठा----“यही सब सुनकर तो मारे गुस्से के सत्या का बुरा हाल हो गया था। उसने कहा----‘यानी हफ्ते भर बाद वो गंदगी फिर कॉलिज में होगी! ये कोई सजा है? हरगिज नहीं। ऐसा नहीं होने दूंगी वंसल साहव! ये सिर्फ कॉलिज की इज्जत का नहीं, दूसरे सभी स्टूडेंट्स के भविष्य का सवाल है। दीपा ने सुसाइड कर ली होती तो क्या होता? स्टूडेंट्स प्रोफेसर्स पर चाकू खोलने लगे तो कैसे होगी पढ़ाई? कहां रहेगा अनुशासन? कैसे चलेगा कॉलेज?”

“वंसल साहव का जवाब?” मैंने डायरी बीच-बीच में से खोलकर देखनी शुरू कर दी थी।

“‘सत्या! बेहतर है----हम तब बात करें जब आप होश में हों।’ सत्या यह कहती हुई तमतमा कर बाहरी चली गयी कि----‘चन्द्रमोहन के रेस्ट्रिक्शन से कम पर अब कोई फैसला नहीं हो सकता।’ मैं, हिमानी और एरिक भी उसके पीछे बाहर आ गये थे।”

इस बार मैं डायरी में ऐसा खोया कि अगला सवाल करना भूल गया।

मुझे डायरी में मग्न देखकर लविन्द्र मानो पहली बार वर्तमान में आया। झटका सा लगा उसे। लपककर मेरे हाथ से डायरी छीनता बोला----“माफ करो! ये मेरी पर्सनल डायरी है।”

मैंने अपने होठों पर मुस्कान बिखेरी। देख चुका था डायरी में गजल और शेर लिखे थे। बोला----“आप तो मेरी ही लाइन के निकले लविन्द्र जी!”

“मैं समझा नहीं।”

“मैं लेखक! आप शायर।”

“सारी! मैं जो हूँ----अपने लिए हूँ। किसी और के लिए नहीं लिखता।”

“शायद इसीलिए चाहते हैं इसे कोई और न पढ़े। खैर, माफ कीजिएगा—थी तो धृष्टता लेकिन चंद पंक्तियों पर नजर पड़ ही गयी और मैं दावे से कहता हूं आप एक अच्छे रोमांटिक शायर हैं।”

वह चुप रहा।

मैंने पूछा----“शर्दी हो गयी?”

“नहीं!” उससे संक्षिप्त उत्तर दिया।

“कोई खास वजह?”

“ऐसी कोई खास भी नहीं।” उसने बात टालनी चाही। मैंने कुरेदा----“जिसे चाहते थे, शायद मिल न सकी।”

“क्या इन सवालों का सम्बन्ध कॉलेज में घटी घटनाओं से है?” वह रोप में नजर आया।

मैंने कहा----“घर्कानन!”

“मैं नहीं समझ सका कि....

“सोचने वाली बात है----आप सत्या से अपने सम्बन्ध क्यों छुपा रहे हैं?”

“स-सत्या से?” हलक से निकली चीख जैसी आवाज के साथ वह उठ खड़ा हुआ। चेहरे पर असीम आश्चर्य लिए मेरी तरफ देखता बोला----“ये क्या बात कही आपने?”

“कुछ गलत कह गया क्या?”

“प्लीज! जो मैं पूछ रहा हूं उसका जवाब दीजिए! ये बात आपसे किसने कही?”

“एक लड़के ने।”

“नाम?”

“ताकि आप उसकी चमड़ी उधेड़ सकें? नहीं! मैं नहीं बता सकता।”

“बाय करता हूं मैं उस लड़के को कुछ नहीं कहूंगा।”

“फिर नाम जानकर क्या करेंगे?”

“केवल इतना पूछना चाहता हूं ये बात उसे कैसे पता लगी? किस बेस पर कही उसने?”

“इश्क, मुश्क और खांसी छुपाये नहीं छुप सकते।”

“म-मगर!” उसकी आवाज में जज्बातों की ज्यादाती का कम्पन था----“इश्क था ही कहाँ? जो था नहीं वह किसी लड़के ने कैसे कह दिया?”

“आप झूठ बोल रहे हैं। डायरी में कई जगह सत्या का नाम मैं खुद पढ़ चुका हूं।”

‘डायरी मेरी है ! सिर्फ मेरी। सत्या ने इसे कभी नहीं देखा।’

“क्या कहना चाहते हो?”

“मैं सत्या से प्यार करता था। सत्या मुझसे नहीं।”

“ओह! एकतरफा प्यार।”

“क्या कहना चाहते हो?”

“मैं सत्या से प्यार करता था। सत्या मुझसे नहीं।”

“ओह! एकतरफा प्यार।”

“सवाल ये है जो मुहब्बत केवल इस ढांचे में कैद थी----उसका जिक्र आपसे किसने और कैसे कर दिया?”

“प्यार तो शहर है लविन्द्र जी जो दिलचर को सामने देखकर आंखों से टपकता ही टपकता है और वे आंखें उन आंखों को नहीं देख पातीं तो टपकते शहर को देखकर सबकुछ समझ जाती हैं। किसी ने आपको चोरी-चोरी सत्या की तरफ देखते देख लिया होगा।”

वह हकलाया----“मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था।”

“लेकिन----आपने ये टीनएजर वाली क्या हरकत की? सत्या से कहा क्यों नहीं आप.....

“कहा था!”

“फिर?”

“उसने साफ कहा----‘हमें ये सब शोभा नहीं देता लविन्द्र जी। दोनों जवान बच्चों के कॉलेज में प्रोफेसर हैं। हमारा आचरण ऐसा होना चाहिए जो उनके लिए मिसाल बने। जिस कॉलेज के टीचर्स ही आपस में इश्क फरमायेंगे, उस कॉलेज के लड़के लड़की कॉलेज को जुहू बीच बना दें तो कौन, किस तर्क के साथ रोकेगा उन्हें?’”

‘मैं आपसे सहमत हूँ।’ मैंने कहा----‘क्यों न हम शादी कर लें?’

‘सोरी!’

‘इसमें क्या गलत है?’

‘मैं आपसे शादी नहीं कर सकती।’

‘मगर क्यों?’

सत्या ने एक झटके से कहा----‘मैं किसी और से प्यार करती हूँ।’ मैं अवाक रह गया।

‘और मेरी शादी उसी से होने वाली है।’ कहकर वह चली गयी।

‘ऐसा कहा सत्या ने? आपने पूछा नहीं?’ मैंने लविन्द्र से पूछा----“वह कौन था?”

“उस वक्त तो सत्या ने भीका ही न दिया। बाद में एक दिन पूछा तो बोली----‘पहले चर्चा करके मैं स्टूडेंट्स के सामने कोई

गलत मिसाल पेश करना नहीं चाहती। कुछ दिन बाद जब शर्दी हो जायेगी तो सबके साथ आपको भी पता लग जायेगा।' बस उसके बाद हमारे बीच इस टॉपिक पर कोई बात नहीं हुई। मैंने ऐसा व्यवहार रखा जैसे कोई खास बात नहीं हुई थी। मैंने एक प्रपोजल रखा। उसने नहीं माना। बात आई-गई हो गयी।"

"लेकिन उसके बाद आविष्कार हुआ इस डायरी का!" मैंने कहा----"डायरी से मुहब्बत का! शायर बन गये आप?"

"कुछ तो चाहिए था दिल बहलाने को! खैर केवल इतनी सी बात है। पता नहीं अफसाना कैसे बन गयी? आप तक कैसे पहुंच गयी बात?"

"होता है।" मैं उठ खड़ा हुआ----"लोग तिल का ताड़ बना देते हैं।"

"प्लीज!" उसने रिक्वेस्ट की----"डायरी का जिक्र किसी से न कीजिएगा।"

मैं वगैर वादा किये बाहर निकल आया। अब मैं प्रिंसिपल से मिलना चाहता था। मगर नहीं जानता था उस मुलाकात के अंत में मेरी खोपड़ी अंतरिक्ष में तैरने वाली है।



प्रिंसिपल ने मेरा स्वागत गर्मजोशी के साथ किया। ड्राइंगरूम में बैठाया। अपनी मिसेज को बुलाया। मेरा परिचय दिया। चाय लाने को कहा। उधर वह चाय लाने गयी, इधर मैंने पूछा----"इतना शोर-शराबा होने के बावजूद आप गर्ल्स हॉस्टल की तरफ क्यों नहीं आये?"

वह चौंका। उसे पता ही नहीं था गर्ल्स हॉस्टल में क्या हो गया था!

दरअसल बंगला था तो वाकई हॉस्टल से दूर।

मगर यह कल्पना मैंने नहीं की थी कि यह खबर अभी तक किसी ने उसके पास पहुंचाई नहीं होगी। उल्टे वह मुझसे सवाल पूछने लगा। मैंने संक्षेप में मुकम्मल घटना सुना दी। वह हैरान और फिक्रमंद नजर आने लगा। पूछने लगा इस घटना का आखिर मतलब क्या है? मैंने अपने मतलब की बात पर आते हुए कहा----"प्रिंसिपल साहब, आप मुझसे काफी सवाल पूछ चुके! मैं आपसे सिर्फ एक सवाल का जवाब चाहता हूँ।"

"जरूर पूछिए।" बंसल ने विनम्रतापूर्वक कहा।

"इतने दबाव के बावजूद आपने चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन क्यों नहीं किया?"

जितना सीधा मेरा सवाल था, बंसल ने जवाब भी उतना ही सीधा और सपाट दिया----"मुझे प्रिंसिपलशिप अपने विवेक से चलानी है, लोगों के मूर्खतापूर्ण दबाव से नहीं।"

"सत्या की हत्या से जो कुछ एक दिन पहले हुआ, उसके बाद कुछ बचता नहीं था। किसी भी कॉलिज के लिए वह शर्म की बात थी।"

"आप वही भाषा बोले रहे हैं जो सत्या बोला करती थी।" यह कहने के साथ वह सोफे से उठा। चेहरे पर गम्भीरता विराजमान थी। चहलकदमी शुरू की। मैंने एक बार फिर उसकी चाल में लंगड़ाहट महसूस की लेकिन कुछ बोला नहीं। मुझे उसके बोलने का इंतजार था और वह बोला----"दरअसल स्टूडेंट्स को हैडिल करने की नीति को लेकर हमारे और सत्या के बीच गहरा मतभेद था। यह मतभेद पहली बार तब सामने आया जब सत्या चन्द्रमोहन को स्मैक के साथ हमारे पास लाई।"

“क्या उस घटना को हल्के ढंग से लेना उचित था?”

“हाँ!” मेरी तरफ पलटते हुए बंसल ने पूरी दृढ़ता के साथ कहा----“एकदम उचित था।”

“कैसे भला?” मेरी आवाज में व्यंग्य उभर आया।

“ये जनरेशन वो नहीं है जो मां-बाप और गुरुजनों के चरण स्पर्श करके दिनचर्या शुरू करती थी। न इनकी नजर में आज गुरुओं का वह आदर है जो आपके या मेरे युग में होता था। न इनके मां-बाप की नजरों में वो जमाना था जब गुरु शिष्य को अधमरा करके भी डाल देता था तो मां-बाप यह पृष्ठने नहीं आते थे कि बच्चे ने किया क्या था? मगर आज हाथ लगाकर तो दिखाइए स्टूडेंट को! अगले दिन उसके पेरेन्ट्स आकर आपको समझायेंगे----वे बच्चे को पढ़ने भेजते हैं, पिटने के लिए नहीं। कलेजे पर हाथ रखकर जवाब दीजिए लेखक महोदय, हमने कुछ गलत कहा क्या?”

मुझे कहना पड़ा----“बात तो ठीक है।”

“यह हालत स्कूलों की है जहां छोटे-छोटे बच्चे पढ़ते हैं। नर्ताजा? टीचर्स ने बच्चों के साथ सख्ती बन्द कर दी। उस परिवेश में जवान हुए बच्चे कॉलेज में आते हैं। क्या वे हमारी डांट-डपट। सख्ती और मार-पिट्टाई झेल सकेंगे?”

“नहीं!” मेरे मुंह से बरबस निकला।

“बस! हम सत्या को हमेशा यही समझाते थे। उस दिन भी जब चन्द्रमोहन को यह वादा लेकर छोड़ दिया कि अब वह कभी स्मैक नहीं लेगा तो सत्या भड़क उठी! और हमने कहा ‘सत्या, हम जानते हैं वह आगे भी स्मैक पियेगा। हम और तुम उसे नहीं रोक सकते। वह स्कूल में गुरुजनों की बात न सुनने की तालीम लेकर आया है। ये नई जनरेशन है। खुद पर किसी की सख्ती की तो आदत ही नहीं पड़ी इसे। हम मजबूर हैं। इसलिए देखा और अनदेखा कर दो! जैसे हमने किया है। जानती हो क्यों... क्योंकि वह बद्तमीज लड़का है। उसके साथ यही पॉलिसी ठीक है। प्यार और नमी! इन दोनों चीजों की उसे सख्त जरूरत है। वाद रखो----डांट-डपट, धमकी और सख्ती उसे ज्यादा बद्तमीज बना देंगी।”

“क्या आपकी ड्यूटी यह पता लगाना नहीं थी कि कॉलेज में स्मैक कहाँ से आई?”

“कॉलेज में इस किस्म की चीजें आना ऐसी प्रॉब्लम नहीं है जिसमें सिर खपाया जाये।” बंसल जो कह रहा था, पूरी दृढ़ता के साथ कह रहा था----“खुले समाज में आज हर चीज मुहैया है! दस साल का बच्चा भी मनचाही वस्तु हासिल कर सकता है।

इस कॉलेज में तो फिर भी जवान बच्चे पढ़ते हैं! वे.... जो असल में हमारी औलाद नहीं, बाप हैं! बाप!”

इसमें शक नहीं, कटोर हकीकत कहकर बंसल ने मुझे चुप कर दिया था। वह कहता रहा----“उसके बाद भी अनेक बार चन्द्रमोहन की शिकायतें आयीं। अपनी पॉलिसी के मुताबिक हम उन्हें अनदेखा करते रहे और अपनी पॉलिसी के मुताबिक सत्या भड़कती रही। वही हुआ----सत्या की पिटाई से आजिज आकर आखिर चन्द्रमोहन ने चाकू खोल लिया। भले ही आप भी न मानें, लेकिन हमारा दृढ़ विश्वास है ये घटना सत्या की पॉलिसी का दुष्परिणाम थी जिससे हम आगाह करते आये थे। परसों भी जब सत्या भड़की तो हमने कहा आज चन्द्रमोहन ने चाकू खोला है। अगर तुमने खुद को नहीं बदला तो कल इससे ज्यादा कुछ हो सकता है।”

“जो कि हुआ।” मैंने कहा----“सत्या का मर्डर।”

“खीज उन बातों का वह अर्थ मत निकालो जो नहीं था। और फिर, चन्द्रमोहन के मर्डर से पहले आप यह कहते तो बात जमती भी! उसकी हत्या ने कम से कम यह तो साबित कर ही दिया कि सत्या का हत्यारा वो नहीं था।”

“फिर भी आपने तो अपनी तरफ से भविष्यवाणी कर दी थी!”

“हम फिर कहते हैं----शब्दों को तोड़ मरोड़कर पेश मत कीजिए। वह भविष्यवाणी नहीं, केवल एक शंका थी और हमें खुशी है शंका निर्मूल निकली। सत्या के मर्डर का कारण उसके और चन्द्रमोहन के बीच का तनाव नहीं----बल्कि कुछ और था।”

“खैर! मैं फिर वहीं आता हूँ और अपने सवाल को दोहरा रहा हूँ। इतने गुनाहों के बावजूद चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन क्यों नहीं किया आपने?”

“अगर बात अब भी आपकी समझ में नहीं आई तो मेरे सवाल का जवाब दीजिए।” वह ताव खाकर बोला----“क्या होता रेस्ट्रिकेशन से?”

“नशाखोरी बंद होती। चाकू-धुरे नहीं चलते कोलिज में।”

“तो वहाँ चलते जहाँ रेस्ट्रिकेशन के बाद चन्द्रमोहन भटकता।”

“उससे आपको क्या?”

“कम से कम आप जैसे बुद्धिजीवी के मुँह से यह बात शोभा नहीं देती!” अचानक बंसल मेरी आँखों में आँखें डालकर कह उठा----“एक टीचर के नाते हमारा मकसद केवल अपने कोलिज से गुण्डागर्दी खत्म करना नहीं बल्कि चन्द्रमोहन जैसे लड़कों को पैदावार रोकना है। इनके हाथों से चाकू छीनना है। सत्या कोलिज को तालीम का चर्च कहती थी। और हम कहा करते थे कि जब लड़के इस चर्च से बाहर निकलें तो उनके हाथ अपने बुजुर्गों के पैरों की तरफ बढ़ें। चाकू वाले लड़के को समाज के हवाले करना तो अपने फर्ज से मुँह चुराना है। क्या हमें अपनी मुश्किलें आसान करने के लिए समाज को खतरे में डाल देना चाहिए?”

“बात आपने काफी वजनदार कही बंसल साहब.... लेकिन चन्द्रमोहन के हाथ से चाकू छीनने के लिए आप कर क्या रहे थे?”

“बार-बार माफ करके उसकी आत्मा के बोझ तले दबा रहे थे उसे। चाहते थे कि अपराध-बोध से दबकर चन्द्रमोहन खुद ब खुद हमारे सामने नतमस्तक हो जाये। मगर सत्या की सख्ती ने ऐसा नहीं होने दिया। एक के बाद दूसरी घटना चिड़चिड़ा ही बनाती गई उसे। हम एक बार फिर कहते हैं और पूरे विश्वास के साथ कहते हैं, चन्द्रमोहन जैसे लड़के सख्ती, डांट-डपट और मारपीट से और ज्यादा बिगड़ जायेंगे। जबकि क्षमा, नमी और मुहब्बत उन्हें सुधार सकती है।”

बंसल की थ्योरी ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। भरपूर कोशिश के बावजूद ये नहीं ताड़ पाया कि उसके ये विचार दिल की गहराइयों से थे या चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन न करने के अपने गुनाह को खूबसूरत शब्दों की चाशनी में लपेटकर मुझे पिलाना चाहता था?

एक नीकर चाय लेकर आया।

ट्रे रखकर वह चला गया। बंसल अपने हाथ से मेरे लिए चाय बनाने लगा और मेरे दिमाग में बन रही थी स्टोरी।

उसने चाय का कप मेरे सामने रखा।

उसके दिमाग का फ्यूज उड़ाने की खातिर मैंने वो स्टोरी सुनाने की टानी। चाय में पहला घूंट भरा और भूमिका शुरू की----“साबित हो चुका है चन्द्रमोहन और सत्या की हत्या उसने की जिसने पेपर आऊट कराकर लाखों में खेलने के ख्वाब देखे थे। आपके ख्याल से वह कौन हो सकता है?”

“यह पता लगाना जैकी का काम है!”

“अगर मैं कहूँ वो आप हैं।” अपनी समझ में मैंने धमाका किया था, पर वह चौंका तक नहीं। आराम से चाय का घूंट भरने

के बाद पृष्ठा----कैसे?"

अंदाज ऐसा था जैसे बात किसी और के बारे में चल रही हो।

अंदर ही अंदर से तिनमिलाया। बोला----“चन्द्रमोहन का रेस्ट्रिकेशन न करने के लिए आपने जो लम्बी चीड़ी डलीले दी, मैं रद्द करता हूँ। जितनी बातें अब तक मेरे संज्ञान में आई उनके बेस पर कह सकता हूँ सत्या को आपने कभी पसंद नहीं किया। वेइन्तिहा बद्तमीजी के बावजूद चन्द्रमोहन को केवल सत्या पर दबाव बनाने के लिए माफ करते रहे। सत्या उससे घिड़ती थी। माफ कीजिए, आपने खुद कहा----आप जानते थे सत्या और चन्द्रमोहन का टकराव होता रहा तो एक दिन अंजाम क्या होगा? दरअसल आप चन्द्रमोहन के हाथों सत्या को उसी अंजाम तक पहुँचाना चाहते थे जिस तक वह पहुँची। लेकिन हुआ कुछ अलग----आपकी उम्मीदों के मुताबिक चन्द्रमोहन चाकू निकालने तक तो पहुँचा परन्तु हत्या करने की कृत न पैदा कर सका। फिर भी आपको यकीन था एक दिन वह, वह भी कर देगा। यह बात आपने सत्या से कही थी। फिर सत्या ने आपको पेपर के साथ पकड़ लिया। उसे तत्काल मार डालना मजबूरी हो गयी। बलि का बकरा पड़ले ही तैयार था। खून सना चाकू उसी के कमरे में छुपा दिया। नतीजा? चन्द्रमोहन पकड़ा गया। चाकू से अपनी अंगुलियों के निशान आपने भले ही साफ कर दिये थे परन्तु चन्द्रमोहन को छोड़ने को मजबूर कर दिया। उसकी रिहाई आपको बीखलाने के लिए काफी थी और आप बीखलाये। कोई ऐसी गतती की जिसके कारण सारा राज चन्द्रमोहन को इतनी जल्दी पता लग गया। मगर आप स्वयं भी जान गये कि चन्द्रमोहन सबकुछ जान गया है। ऐन मौके पर उसका मुँह हमेशा के लिए बंद कर दिया।”

“आप वो कह चुके जो कहना था?” मेरे चुप होते ही उसने चाय का कप खाली करके प्लेट में रखा। मुझे आश्चर्य था वह जरा भी विचलित या उत्तेजित नजर नहीं आ रहा था। उसी तरह ठंडे स्वर में बोला----“आपने साबित कर दिया कि आप एक अच्छे लेखक हैं लेकिन महोदय, हत्या के केस कहानियों से हल नहीं होते। उसके लिए सुव्रत चाहिए और सुव्रत आप नहीं जुटा सकते।”

“ओह! इतना भरोसा है खुद पर?”

“इससे भी ज्यादा।” कहने के साथ एक बार फिर सोफे से खड़ा हो गया और चहलकदमी करता हुआ बोला----“इस भरोसे का सबसे बड़ा कारण ये है मिस्टर वेद कि जो कुछ आपने कहा, वह केवल आपकी कल्पना है और कल्पना के सुव्रत नहीं हुआ करते।”

मैंने अपना अगला तीर चलाने के लिए मुँह खोला ही था कि बंसल साहब की पत्नी ड्राइंगरूम में आई।

उसकी हालत देखते ही मैं चौंक पड़ा। चेहरा कोरे कागज की तरह सफेद नजर आ रहा था। बुरी तरह हड़बड़ाई हुई थी वह। बोली----“ग-गजब हो गया!”

“क्या हुआ?” बंसल उसकी तरफ घूमा।

निर्मला ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला लेकिन मुझ पर नजर पड़ते ही टिटकी। पसीने से तरबतर अपने चेहरे के साथ बंसल की तरफ लपकी। उसका हाथ पकड़कर एक कोने में ले गयी और जल्दी-जल्दी कान में कुछ कहा।

सुनते ही उछल पड़ा बंसल----“क-क्या? कहाँ गया वह?”

“म-मुझे नहीं पता।” कंठ सूखा होने के कारण वह बड़ी मुश्किल से कह सकी।

बंसल का सम्पूर्ण जिस्म पसीने से इस कदर भरभरा उठा जैसे सभी के सामने शर्त लगाकर पसीना उगला हो। चेहरा ऐसा नजर आने लगा जैसे किसी ने हल्दी का उबटन लगा दिया हो। ये वो शख्स था जो मेरे द्वारा सीधे-सीधे हत्यारा कहने के बावजूद पूरी तरह नियंत्रण में रहा था।

उसकी यह हालत देखकर मारे उत्सुकता के मेरा बुरा हाल हो गया। सोफे से खड़ा होता हुआ लगभग खींच पड़ा मैं----“क्या हुआ मिस्टर बंसल? कौन कहाँ गया?”

“क-कुछ नहीं।” लाख चाहने के बावजूद बंसल अपनी हकलाहट नहीं रोक सका----“हमारी कोई घरेलू प्रॉब्लम है।”

“आप झूठ बोल रहे हैं।”

वह चीखा----“आपको तो हमारी हर बात झूठ नजर आ रही है।”

“क्योंकि आप बोल ही झूठ रहे हैं।” मैं उससे ज्यादा जोर से चीखा----“घरेलू प्रॉब्लम है तो बताइए। उसे बताने में आपको क्या एतराज है?”

“घरेलू प्रॉब्लम बाहर वालों को नहीं बताई जाती।”

मैं वो बात जानने के लिए पागल हो उठा था जिसने इन पति-पत्नी की हवा शंट कर दी थी। अतः झपटकर निर्मला के नजदीक पहुँचा। उसके दोनों कंधे पकड़कर झंझोड़ता हुआ बोला----“आप बताइए मिसेज बंसल। आखिर वो क्या बात है जिसने पहले आपके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ा रखी थीं----अब मिस्टर बंसल को पीला कर दिया है?”

क्रोधित बंसल मुझे जबरदस्ती निर्मला से अलग करता बहाड़ा----“आप हमारे साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते मिस्टर वेद।”

“ऐसा क्या है जिसे आप छुपा रहे हैं?”

“हम आपको हर बात बताने के लिए बाध्य नहीं हैं।”

“ओ.के.।” मैंने भी ताव खाकर कहा----“मुझमें कूबत होगी तो पता लगाकर रहूँगा। उस स्टोरी को मत भूलियेगा जिसे आप मेरी काल्पनिक स्टोरी बता रहे थे।” कहने के बाद तमतमाया हुआ मैं ड्राइंगरूम से बाहर निकल गया।



दिमाग बुरी तरह झन्ना रहा था। छठी इन्द्रिय बार-बार कह रही थी----“हो न हो, बात कोई इसी केस से कनेक्टेड है।” लाख कोशिश के बावजूद समझ नहीं पा रहा था कि आखिर ऐसी क्या बात हो सकती है जिसने पूरी तरह शान्त बंसल में तूफान ला दिया?

बंगले के लॉन से गुजरते वक्त जी चाहा----पलटकर किसी और तरफ से इमारत में पहुँचने की कोशिश करूं। खुली हुई खिड़की या दरवाजे का फायदा उठाऊँ। मेरे निकलते ही वे यकीनन आपस में खुलकर बात करेंगे। वे बातें मुझे बता सकती थीं कि बात क्या है?

लोहे वाले गेट के नजदीक पहुँचकर मैंने पलटकर इमारत की तरफ देखा।

महसूस किया----ड्राइंगरूम की खिड़की के पीछे से चार आंखें मुझे ही देख रही हैं।

मैं चुपचाप निकल आने के लिए मजबूर था।

मुझे जैकी को फोन करना चाहिए।

अपना यह विचार मुझे जंचा।

मुझे तो बंसल ने टरका दिया। मगर जैकी एक पुलिसिया था। उसे नहीं टरका सकता था वो।

वह पुलिस वाले हथकंडे इस्तेमाल कर सकता था।

फिर, हिमानी वाली घटना की जानकारी भी उसे देनी ही थी।

मैं स्टाफ रूम की तरफ बढ़ा। बढ़ा ही था कि चौंका।

प्रिंसिपल की एम्बेसडर उसके बंगले का लोहे वाला गेट क्रॉस करके बाहर निकली।

मैंने तेजी से खुद को एक झाड़ी के पीछे छुपा लिया।

कुछ देर बाद एम्बेसडर ठीक मेरे सामने से गुजरी। मैंने साफ देखा----उसे बंसल ड्राइव कर रहा था।

दिमाग में बिजली की सी गति से सवाल कौंथा----कहां जा रहा है वह?

चन्द मिनट पहले किसी ऐसी बात का पता लगना जिसने उसके होश उड़ा दिये थे मुझसे झड़प और तुरन्त बाद निकलना।

मुझे लगा----वह किसी खास जगह जा रहा है।

कहां?

जानना चाहिए!

यह विचार दिमाग में आते ही मैं कॉलिज के मुख्य द्वार की तरफ दौड़ा।

मारुति दरवाजे के बाहर खड़ी थी।

मुझे भागते देखकर हड़बड़ाए हुए गुल्लू ने कहा----“व्हाट हुआ सर?”

मैंने सड़क के दोनों तरफ देखा----एम्बेसडर नजर नहीं आई।

अपनी गाड़ी का लॉक खोलते हुए चीखकर गुल्लू से पूछा----“प्रिंसिपल किधर गया है?”

“उधर।” गुल्लू ने हाथ के इशारे से बताया।

फिर क्या था?

मैंने गाड़ी दौड़ा दी। उस क्षण मुझे नहीं मालूम था सही कर रहा हूं या गलत? बस जो सूझ रहा था, किये चला गया। गाड़ी की रफ्तार अस्सी से कम नहीं थी।

हापुड़ स्टैंड के चौराहे पर अंततः मैंने उसे पकड़ लिया।

दूसरे व्हीकल्स के साथ एम्बेसडर रेड लाइट पर खड़ी थी।

मैंने मारुति एक मृमो की बैक में छुपा ली।

चौराहे की लाइटें टूटी पड़ी थीं। उनका काम वहां तैनात पुलिसिए और होमगार्ड कर रहे थे। उनके इशारे पर इस तरफ का

ट्रेफिक चला। एम्बेसडर वेगमपुल जाने वाले मार्ग पर मुड़ी।

मैंने थोड़ा फासला बनाये रखकर फालो किया।

अब रफ्तार की न मुझे जरूरत थी, न ही उस गति से गाड़ी चला सकता था। रिक्शों, तांगों, साइकिलों, टैम्पू और बैसा बुग्गी आदि का बेतरतीब ट्रेफिक किसी को भी रफ्तार से ड्राइविंग नहीं करने दे सकता था। अब मेरी एक ही इयूटी थी----प्रिसिपल को पता न लग पाये मैं उसके पीछे हूँ। भरपूर सावधानी बरतता गुलमर्ग सिनेमा और बच्चा पार्क के सामने से गुजरा। वेगमपुल के चौराहे से एम्बेसडर आवूलेन की तरफ मुड़ गयी। मैं पीछे लगा रहा।

और फिर, एम्बेसडर एक बहुमंजिला इमारत के सामने रुकी।

प्रिसिपल बाहर निकला। गाड़ी लॉक की और इमारत में दाखिल हो गया।

वह तनाव में नजर आ रहा था।

उस इमारत की हर मंजिल पर ढेर सारे ऑफिस थे। जानता था, अगर एक पल के लिए भी वह आंखों से ओझल हो गया तो नहीं जान सकूंगा कि इमारत में किससे मिला? क्या बात की?

अतः कार जहां थी, वहीं छोड़कर इमारत में दाखिल हो गया।

वह लिफ्ट में दाखिल होता नजर आया। लिफ्ट का दरवाजा बंद हुआ। मैं दौड़कर उसके नजदीक पहुंचा। लिफ्ट एक ही थी। एक विचार आया----सीढ़ियों के जरिए पीछा करने की कोशिश करूं। अगले पल मैंने यह मूर्खतापूर्ण विचार दिमाग से छिटका।

नजरे लिफ्ट के दरवाजे के ऊपर गड़ाये रखीं।

ऊपर की तरफ सफर करती लिफ्ट चौथी मंजिल पर रुकी।

मैंने उसे ग्राउण्ड फ्लोर पर लाने के लिये बटन पुश किया। लिफ्ट ने नीचे आना शुरू कर दिया। कुछ देर बाद उसका दरवाजा खुला।

अंदर दाखिल होते ही फोरथ फ्लोर के लिए यात्रा शुरू कर दी। चौथी मंजिल पर लिफ्ट रुकी। दरवाजा खुला। मैं बाहर निकला।



अगले दिन के अखबारों में हैडिंग था----

कॉलिज की घटनाओं में नया मोड़!

वेद प्रकाश शर्मा का अपहरण!

इस हैडिंग ने मेरठ के लोगों और मेरे परिचितों में जो हंगामा मचाया सो तो मचा ही, मेरे परिवार की हालत सबसे ज्यादा खस्ता थी। मधु बार-बार कह रही थी ये सब मेरी वजह से हुआ है। मैंने ही उन्हें रियल स्टोरी लिखने के लिए उकसाया था। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि ऐसा होगा। जरूर वे हत्यारे के चंगुल में फंस गये हैं।

फोन की घंटी बार-बार बज रही थी।

दूर-दूर से परिचितों और पाठकों के फोन आ रहे थे।

उस गहन अंधकार में मधु को एक आशा की किरण नजर आई।

विभा! विभा जिन्दल!

और फिर फोन की घण्टी बजी।

रिसीवर मेरी बड़ी बेटी करिश्मा ने उठाया। दूसरी तरफ से कहा गया----“मधु वहन हैं?”

“आप कौन?” करिश्मा ने पूछा।

“जिन्दलपुरम से विभा जिन्दल।”

मारे उत्साह के उछल पड़ी करिश्मा। बगैर माऊथपीस पर हाथ रखे मधु को आवाज लगाकर बुलाया। मधु भागती दौड़ती फोन के नजदीक आई। करिश्मा के हाथ से रिसीवर छीना और बोली----

“मधु बोल रही हूँ विभा वहन, गजब हो गया।”

“हां, मैंने पेपर में पढ़ा!” विभा की उत्तेजित आवाज उभरी----“कैसे हुआ?”

“विभा वहन! मैंने तो इनसे पहले ही कहा था आपको बुला लें मगर ये नहीं माने।” मधु बड़ी मुश्किल से खुद को फफकने से रोक रही थी----“मुर्साबत की इस घड़ी में आप ही मेरी मदद कर सकती हैं। मेरट आ जाइए।”

“मैं निकलने ही वाली थी! सोचा फोन करना मुनासिब होगा। क्या तुम कोई ऐसी बात बता सकती हो जो अखबार में न छपी हो?”

“अखबार पढ़ने का होश ही कहाँ है मुझे!”

“घबराने से काम नहीं चलेगा मधु वहन। हीसला रखो। भगवान ने चाहा तो सब ठीक हो जायेगा। वेद अपना नया उपन्यास उन घटनाओं पर लिख रहा था। एक इन्वेस्टिगेटर की तरह पूछताछ करता फिर रहा था वह और इंस्पेक्टर जैकी के हवाले से छपा है, मेरी इन्फार्मेशन के मुताबिक अंत में वेद जी ने प्रिंसिपल से पूछताछ की। कॉलिज के चौकीदार ने बताया, वह प्रिंसिपल की कार के पीछे निकले थे और वेद की मारुति आवूलेन नामक किसी इलाके में खड़ी मिली है। प्रिंसिपल का कहना है मुझे मालूम नहीं था वेद जी मेरा पीछा कर रहे हैं। मैं आवूलेन गया जरूर लेकिन चाट खाकर लौट आया।”

“हां।” मधु ने कहा----“यह सब मुझे जैकी ने बताया।”

“इसके अलावा कोई और इन्फार्मेशन है तुम्हारे पास?”

“कॉलिज में किसी ने उनकी पीठ पर एक कागज चिपकाया था। मुझे तभी से डर था कि....

“वह सब मैं पढ़ चुकी हूँ।” विभा ने मधु की बात बीच में काटकर कहा----“जो हुआ, उससे जाहिर है वेद की इन्वेस्टिगेशन ने मि० चैलेंज को हिला डाला। तभी उसे अपहरण की जरूरत पड़ी। चिन्ता मत करना, मैं आ रही हूँ। बारह बजे तक पहुंच जाऊंगी।” कहने के बाद दूसरी तरफ से रिसीवर रख दिया गया।

उसके बाद शुरू हुआ----विभा का इंतजार!

इस बीच जैकी खामोश नहीं बैठा था।

अपनी तरफ से मुझे तलाश करने की भरपूर कोशिश कर रहा था वह लेकिन प्रत्येक कोशिश वहां जाकर रुक जाती जहां मेरी गाड़ी खड़ी मिली थी।

मधु घितित जस्तर थी लेकिन हड़बड़ाहट पर नियंत्रण पा चुकी थी।

विभा को पहुंचते-पहुंचते एक बज गया।

जब वह घर पहुंची तो शुभचिन्तकों की भीड़ के साथ इंस्पेक्टर जैकी भी मौजूद था।

अपनी चमचमाती हुई राल्स-रॉयल में आई थी वह।

वह!

जिसका नाम 'विभा' है! विभा जिन्दल!

दूध से गोरे और पूर्णिमा के चांद से गोल मुखड़े वाली विभा!

इन्द्र के दरबार की मेनका सी विभा!

गुलाब की पंखुड़ियों से लौट! सुतवां नाक! कंठ ऐसा जैसे कांच का बना हो। कोल्ड ड्रिंक पिये तो कंठ से नीचे उतरती साफ नजर आये। घने, काले और लम्बे बालों को अपने चौड़े मस्तक के आस-पास से पूरी सख्ती के साथ खींचकर एक जूड़ा बनाये रहती है वह। इसके बायजूद बालों की एक मोटी लट बायें कपोल पर अठखेलियां करती रहती है।

कमान-सी भवों के नीचे उसकी आंखें हैं।

सीप की मानिन्द! मृगनयनी!

उन आंखों में चमक है। ऐसी दिव्य चमक कि अगर एकटक आपकी तरफ देखने लगे तो मेरी गारन्टी है दो सैकिण्ड से ज्यादा आप उसकी तरफ नहीं देख सकोगे। अपनी पलकें झुकानी पड़ेंगी आपको।

दिल में घबराहट होने लगेगी।

ईश्वर ही जाने विभा के व्यक्तित्व में उसने ऐसा क्या जादू भरा है कि उसकी तरफ देखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की आंखों में सिर्फ और सिर्फ श्रद्धा के भाव उभरते हैं।

अथाह श्रद्धा के! दिल रोशनी से भर जाता है।

हमेशा की तरह इस वक्त भी वह अपने परम्परागत लिबास में थी।

सुगठित शरीर पर सफेद साड़ी।

हंस के जिस्म-सी वेदाग!

रेशमी!

उसी से मैच करता, गोल गले का ब्लाउज।

गोरी और गोल कलाईयों में कोहनियों के ऊपर कटा हुआ।

हर शख्स मंत्र-मुग्ध सा उसे देखता रह गया था।

उसके व्यक्तित्व के जादू से लोग अभी बाहर नहीं निकल पाये थे कि मेरी बीच वाली बेटी गरिमा ने अंदर जाकर मधु को उसके आगमन की सूचना दी।

मधु बाहर की तरफ लपकी।

और फिर, विभा के सामने पड़ते ही उससे लिपटकर सिसक पड़ी वह।

“वाह मधु बहन।” विभा के कंठ से मंदिर की घंटियों की घनघनाहट निकली----“ये भी कोई तरीका है मेहमान के स्वागत का? वेद तो बड़ी तारीफ करता था तुम्हारी? कहता था एक बार जो मेरे घर आता है, मधु की मेहमाननवाजी की तारीफ किये बगैर नहीं जाता।”

मधु की सिसकियां रुलाई में तब्दील हो गयीं।

“विश्वास रखो बहन। वेद को कुछ नहीं हो सकता। मैंने तुम्हारे माथे की बिंदिया में हमेशा एक दिव्य ज्योति जगमगाती देखी है।” विभा ने कहा----“आओ! अंदर चलें।”

करिश्मा-गरिमा ने मधु को विभा से अलग किया।

सब लोग अंदर आ गये।

लांबी मे!

छोटी बेटी खुशबू ने हाथ से सोफे की तरफ इशारा करके कहा----“बैटो आंटी।”

विभा धोड़ी झुकी। खुशबू के गाल पर एक चुम्बन अंकित किया। प्यार से उसे थपथपाती बोली----“अकेली नहीं खुशबू बेटी! मैं तुम्हारे पापा के साथ बैठकर चाय पियूंगी।”

उसके वाक्य पर सब चौंके।

खुशबू ने पूछा----“आपको मेरा नाम कैसे पता लगा आंटी?”

“उसे पैर से अपने हाथ पर लिखने की आदत छोड़ दो।” विभा ने मोहक मुस्कान के साथ कहा----“बगैर तुम्हारे बताये कभी किसी को पता नहीं लगेगा।”

खुशबू ने अपनी हथेली देखी। बोली----“पर आंटी, इस पर तो मैंने केवल K लिखा है।”

“और ये बात हमें पहले से मालूम है कि हमारे फ्रेंड की छोटी बेटी का नाम खुशबू है।”

“वेरी गुड।” शगुन कह उठा----“झंड हो गया खुशबू की।”

विभा ने उससे कहा----“तुम मास्टर शगुन हो न?”

“आप विभा आंटी हैं न?” शगुन ने पलटकर सवाल किया।

टहका लगा उठी विभा। बोली----“तुम हो मेरी टक्कर के! मिलाओ हाथ।”

शगुन ने हाथ मिलाया।

बच्चे तो खैर बच्चे थे। गमगीन भाईन में विभा का टहका लगाना सबको अजीब लगा। सब एक दूसरे की तरफ देखने लगे। विभा मधु के नजदीक पहुंची, फिर वहां मौजूद लोगों के लिए अगुवम में भी जबरदस्त धमाका किया उसने----“कमाल है मधु बहन! मैं तुम्हारे लिए खुशखबरी लेकर आई और तुम मुंह लटकाने खड़ी हो।”

“ख-खुशखबरी?” मधु के चेहरे पर चमक आई।

“यूं समझो कि मैं वेद को ढूंढ चुकी हूं।”

“क-क्या?” अकेली मधु के नहीं, वहां मौजूद हर ग्राम के इनक से आश्चर्य मिश्रित चीखें निकल गयीं। मधु तो पागल हो गयीं मानो। विभा को झंझोड़ती हुई चीख पड़ी वह----“य-ये क्या कह रही हो विभा बहन? स-सच बोल रही हो न तुम? मजाक तो नहीं कर रही मुझसे?”

“ऐसा मजाक विभा जिन्दल कभी किसी से नहीं कर सकती।”

“त-तो कहा है वो? कैसे है?”

“फिक्र मत करो! मेरे खयाल से उसे महफूज होना चाहिए।”

“मगर आंटी! पापा हैं कहाँ?” करिश्मा ने पूछा।

उसको वगैर जवाब दिए वह जैकी की तरफ पलटकर बोली----“क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम कर सकते हो मिस्टर जैकी?”

“काम तो आप जितने बतायेगी मैं कर दूंगा।” चेहरे पर हैरत का सागर लिए जैकी कहता चला गया----“म-मगर अभी अभी जो बात आपने कही, उसका मतलब समझ में नहीं आया। क्या आप वास्तव में वेद जी का पता लगा चुकी हैं?”

“अभी ये तो पता नहीं लगा कि वह कहाँ है मगर अपहरण करने वाले को ट्रेस जरूर कर चुकी हूं।”

“कि-किसने?” मधु ने पूछा----“किसने किडनैप किया उन्हें?”

“उतावलेपन से काम मत लो मधु बहन। धैर्य बड़ी चीज है।”

सभी चमत्कृत रह गये थे।

जैकी ने उन सबका नेतृत्व किया----“विभा जी, कमाल की बात कर रही हैं आप। आई हैं नहीं और कह रही हैं किडनैपर का पता लगा चुकी हैं।”

“कौन कह रहा है मैं आई नहीं?” विभा के होठों पर मोहक मुस्कान तैर रही थी----“तुम्हारे सामने आई हुई खड़ी हूं।”

“ल-लेकिन.... आपने पता कब लगा लिया कि....

“एक घण्टा लेट हूँ। कोई तो बात होगी?”

“फ-फिर भी।”

“मैं किसी छोटे से काम का जिक्र कर रही थी।”

“बोलिए।”

“आबूलेन पर स्थित जिस इमारत के बाहर से वेद की कार मिली, मेरे ख्याल से उसमें कुल मिलाकर दो सौ के आसपास ठुकाने और ऑफिस होंगे। क्या मुझे उन सबकी लिस्ट मिल सकती है?”

“लिस्ट में क्या जानकारी चाहिए?”

“कौन सा ऑफिस किस चीज का है और वहां क्या काम होता है?”

“वामुशिकल एक घण्टे में लिस्ट मिल जायेगी।”

“ये काम खुद करोगे या किसी से कराओगे?”

“जैसा आप चाहेंगी।”

“मुझ फौरन कहीं जाना है! चाहती हूँ साथ चलो।”

“अभी इन्तजाम किये देता हूँ।” कहने के साथ जैकी ने अपने सेल्यूलर से थाने का नम्बर डायल किया। एक सब-इंस्पेक्टर को वह करने का हुक्म दिया जो विभा चाहती थी। यह विभा के व्यक्तित्व और आते ही उसके द्वारा किये गये धमके का जादू था कि इंस्पेक्टर जैकी उसके मातहत की तरह काम करने लगा। सेल्यूलर आफ करते हुए उसने कहा----“मैं फ्री हूँ विभा जी।”

“आओ।” वह दरवाजे की तरफ बढ़ी----“वेद को लेकर आते हैं।”

मधु और दूसरे लोगों ने उसे रोकना चाहा। चाय नाश्ते के लिए कहा परन्तु विभा रुकने वाली कहां थी? मधु से कहा----“मुझे चाय में चीनी नहीं, तुम्हारी मुस्कान की मिठास चाहिए और वह केवल तब मिल सकती है जब वेद साथ हो!”

शगुन कूदकर विभा के सामने आता बोला----“आंटी, मैं चलूँ?”

एक सेकिण्ड कुछ सोचा विभा ने! फिर होठों पर मुस्कान लाती बोली----“जासूसी सीखनी है।”

“यस।”

“कम आँन!”



रॉल्स रायल वर्दीधारी शोफर ड्राइव कर रहा था। विभा और शगुन पीछे थे। जैकी शोफर की बगल वाली सीट पर। विभा शगुन से इस तरह बातें कर रही थी कि जैकी को लगा----उसे कोई टेंशन नहीं है। ऐसा विल्कुल नहीं लग रहा था जैसे वह किसी अपहरण केस पर काम कर रही है। अपहरण भी उसका जो उसका दोस्त है। जिसकी खातिर जिन्दलपुरम से भागी-भागी मेरठ आई है। गाड़ी जब तेजगद्दी के चौराहे पर पहुंची और शोफर ने रास्ता पूछने वाले अंदाज में जैकी की तरफ देखा तो जैकी ने

गर्दन धुमाकर विभा से सवाल किया-----“हम जा कहाँ रहे हैं विभा जी?”

“वो बल्लम कहाँ है जिससे चन्द्रमोहन की हत्या हुई?” विभा ने उल्टा सवाल पूछा।

“पुलिस के फिंगर प्रिन्ट्स डिपार्टमेंट के कब्जे में।”

“वहीं चलो।” कहकर विभा पुनः शगुन के साथ खेल में लग गयी।

जैकी के जहन में जबरदस्त खलबली मच चुकी थी। दिमाग में ढेर सारे सवाल सर्प बनकर सरसराने लगे। अंततः स्वयं को यह कहने से वह रोक न सका-----“बात समझ में नहीं आई विभा जी, वेद जी के गायब होने का बल्लम से क्या सम्बन्ध?”

“देखने होने की जरूरत नहीं है। कुछ देर बाद सब समझ में आ जायेगा। मेरे ख्याल से बल्लम से भी चाकू की तरह किसी की अंगुलियों के निशान नहीं मिले होंगे।”

“जी।” जैकी ने धाड़-धाड़ बज रहे अपने दिल पर काबू पाने की चेष्टा करने के प्रयास में कहा-----“लगता है हत्यारा ग्लक्स पहनकर वैपन इस्तेमाल करता है।”

“ग्लक्स इस्तेमाल करना कोई खास चतुराई नहीं है। आजकल की फिल्मों और वेद जैसे लेखकों के उपन्यासों ने लोगों को काफी शिक्षित कर दिया है। अखबार के मुताबिक कॉलिज के चौकीदार से हत्यारे की मुठभेड़ हो चुकी है। क्या कहना है उसका? हेलमेट वाला दरताने पहने था या नहीं?”

“सारी मैडम! यह सवाल हमने नहीं किया।”

“सबसे बड़ी कमी यही होती है पुलिसियों में। दिमाग पर जोर नहीं देंगे। वह नहीं पूछेंगे जो पूछना चाहिए। उन सवालों पर जोर देंगे जिनके जवाब मिल भी जायें तो आगे बढ़ने में कोई मदद नहीं मिलती या फिर, थर्ड डिग्री पर जोर देंगे। ये बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती कि यदि दिमाग खुला रखकर सामने वाले को अपने सवालों से तो सामने वाला किसी भी तरह कतराकर नहीं निकल सकता। उससे वे बातें उगलवा सकते हो जो तुम लोगों के फेमस थर्ड डिग्री तरीके से नहीं जानी जा सकती।”

जैकी-----जो बकौल अपने, थर्ड डिग्री का घुरंघर था, कुछ बोल न सका।

शायद अपनी झोंप मिटाने के लिये पूछा-----“आपने वाकई किडनैपर का पता लगा लिया है या घर पर मधु भाभी को सांत्वना देने की खातिर....

“मैं किसी को झूठा सांत्वना नहीं दिया करती जैकी।”

“आपने तो चमत्कृत कर दिया है मुझे। इतनी जल्दी किडनैपर का पता कैसे लगा लिया?”

“आदमी दिमाग की आंखें खुली रखे तो सफलता जल्दी मिलती है।”

“लगता है आपसे कुछ सीखने को मिलेगा!”

“मुझे खुशी है तुममें सीखने की भावना है।”

“उस इमारत में मौजूद दुकानें और ऑफिसों की लिस्ट का क्या करेंगी आप? काफी दिमाग घुमाने के बावजूद नहीं समझ पाया कि उससे वेद जी तक पहुंचने में क्या मदद मिल सकती है?”

“पक्का नहीं है मदद मिल ही जाये। मगर उम्मीद है। एक अच्छे इन्वेस्टिगेटर को हर वह काम करना चाहिए जिससे आगे बढ़ने का रास्ता मिलने की संभावना हो। वैसे तुमने सब-इंस्पेक्टर से कह दिया न कि लिस्ट बनते ही सैल पर सूचित करे।”

“जी! कह दिया था।”

“समझदारी की।” कहने के साथ विभा मुस्कराई।

रॉल्स रॉयल जेल चुंगी के चौराहे पर पहुंच चुकी थी। शोफर ने पूछा----“किथर साहब?”

“सीधे।” जैकी ने कहा।

विभा बोली----“फिलहाल अपना दिमाग शोफर को रास्ता बताने में खर्च करो। यह हैड्रेक जहन में रखने की जरूरत नहीं कि केस कैसे हल होगा? बस यूं समझो केस में हल कर चुकी हूं।”

“आंटी!” शगुन ने कहा----“आप जादूगरनी हैं क्या?”

बरबस ही खिलखिलाकर हंस पड़ी विभा। बोली----“शैतान! तुम्हें ऐसा क्यों लगता?”

“कल से पता नहीं कितने लोग पापा का पता लगाने में जुटे हैं। भागदौड़ मची हुई है मगर पता नहीं लगकर दे रहा! और जब से आप आई हैं, एक ही बात कहे जा रही हैं----यह कि आपको पता है पापा कहाँ हैं। कहीं आप ही ने तो नहीं छुपा रखा उन्हें?”

शगुन का अंतिम वाक्य सुनकर टहाका लगाकर हंस पड़ी विभा।

“और ये वेद-वेद! पापा के लिए आप बोलती कैसे हैं? इस तरह तो मम्मी भी नहीं बोलती।”

हंसती हुई विभा ने कहा----“यही तो फर्क है पत्नी और फ्रेंड में।”

“मतलब?”

“तुम्हारी क्लास में कोई लड़की है?”

“बहुत हैं।”

“कौन-कौन ?”

“श्वेता! मंजरी। काजोल! रुचि और....

“सबके नाम क्यों ले रहे हो?”

“और कैसे बताऊं? वे मेरी दोस्त हैं।”

“उसी तरह वेद मेरा दोस्त है। दोस्तों के नाम ही लिये जाते हैं।”

“अच्छा! ये बात है। तब तो पापा भी आपको सिर्फ विभा कहते होंगे?”

“नहीं तो क्या तेरी तरह आंटी कहेगा?”

इस बार शगुन खिलखिलाकर हंस पड़ा।

“बड़ा वेवाक। बड़ा पवित्र। और सभी औपचारिकताओं से दूर है ये रिश्ता----दोस्ती! तभी तो अपनी पढ़ाई के आखिरी दिन मैंने वेद से कहा था कोई और नाम देकर इस रिश्ते को कलंकित मत करो। और मुझे खुशी है वेद ने उसी निभाया। आज कोई तो है जिसे मैं पूरी वेवाकी के साथ नाम लेकर पुकार सकती हूँ। कोई तो है जिसका नाम जितनी ज्यादा बदतर्माजी के साथ लूँ उतना ही अपनापन छलकेगा। दोस्तों को कभी मत खोना बेटे। बड़े होने के बाद ये नहीं मिल पाते। दुर्लभ हो जाते हैं। जो मिलता है, चेहरे पर लाख-लाख मुखौटे लगाकर मिलता है।”

“अरे! आप तो सीरियस हो गई आंटी।”

झटका सा लगा विभा को। खुद को संभाला उसने।

राल्स-रॉयल एक इमारत की चारदीवारी के अंदर दाखिल होकर जैकी के बताये स्थान पर रुकी। विभा ने कहा----“हम लोग यहीं बैठे हैं। तुम बल्लम ले जाओ।”

जैकी यह सोचता हुआ उतरा कि खेल आखिर चल क्या रहा है?



राल्स रॉयल कॉलेज में दाखिल हुई। सेल्यूलर बजने लगा।

जैकी उसे ऑन करने की प्रक्रिया में जुट गया। विभा ने कहा----“सब-इंस्पेक्टर का फोन हो तो कहना लिस्ट लेकर प्रिंसिपल के बंगले पर पहुंच जाये।”

फोन उसी का था और जैकी ने वही कहा जो विभा चाहती थी।

गाड़ी बंगले के पोर्च में खड़ी एम्बेसडर के पीछे रुकी।

जैकी ने पूछा----“क्या प्रिंसिपल ही किडनेपर है?”

“तेल देखो और तेल की धार देखो।” कहने के साथ विभा शोफर द्वारा खोले गये गेट से बाहर निकली। जैकी ने पूछा----“बल्लम लेना है क्या?”

“गाड़ी में रहने दो।” कहने के साथ उसने शोफर की आंखों से कुछ संकेत किया।

अगला गेट खोलकर जैकी बाहर निकला।

“आंटी।” शगुन ने पूछा----“आपने ड्राइवर अंकल को क्या इशारा किया?”

“चुप शैतान।” विभा ने अपना हाथ उसके मुंह पर रख दिया।

ड्राइवर होटों ही होटों में मुस्कुरा उठा।

ड्राइंगरूम में जब जैकी ने बंसल को विभा का परिचय दिया तो वह बोला----“आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई! बैठिए।”

विभा एक सोफा चेयर पर बैठ गयी।

बंसल ने पूछा----“क्या लेंगी?”

“आपसे अपने सवालों के जवाब।”

सकपकाया बंसल। बोला----“काफ़ी अजीब हादसा हुआ! और यही क्यों? बड़ी-बड़ी भयानक घटनायें घट रही हैं। हमने तो पिछली मुलाकात में मिस्टर जैकी से कहा भी----इनके लिए यह केस, अनेक केसों में से एक हो सकता है मगर हमारे कैरियर पर तो धब्बा बन गया है। हमसे ज्यादा ईमानदारी के साथ और कोई नहीं चाह सकता कि हत्यारा जल्द से जल्द पकड़ा जाये। अब आप आ गयी हैं। जितना आपके बारे में सुना है, ईश्वर करे वह सच हो। हम अपने दामन पर कोई धब्बा लिए रिटायर नहीं होना चाहते।”

“मेरे बारे में आपने किससे क्या सुना है?”

“आपके सामने मिस्टर जैकी ने बताया।”

“बस?” विभा निरन्तर उसकी आंखों में झांक रही थी----“इतना ही सुना है या कुछ ज्यादा?”

आंखें घुराने की कोशिश करते बंसल ने कहा----“इ-इतना ही।”

“वो उतना नहीं था जिसके आधार पर मुझसे यह उम्मीद बांध लें कि मैं आपको आपके कैरियर पर लगे धब्बे से निजात दिला सकती हूं। यकीनन आपने कहीं और भी जाकर मेरे बारे में कुछ सुना है।”

“कहीं और भला किससे सुनते?”

“मुमकिन है वेद ने कहा हो! बहरहाल, दोस्त है मेरा।”

“नहीं।” बंसल एक्स्ट्रा एलर्ट नजर आया----“वेद जी ने तो आपका नाम भी नहीं लिया।”

“सुना है अंतिम बातचीत उसने आप ही से की थी?”

“हां। इस संबंध में मिस्टर जैकी हमसे पूछताछ कर चुके हैं। इन्होंने बताया वेद जी ने आवूलेन तक हमारा पीछा किया था। हमने तो ध्यान ही नहीं दिया। आवूलेन चाट खाने गये थे, खाकर आ गये।”

“वो सब बाद में। विभा ने कहा----“सबसे पहले यह बताइए, वेद ने आपसे क्या बातें कीं?”

“इंस्पेक्टर को बता चुके हैं।”

“और वो सब अखबारों में भी छपा है। अखबार मैंने पढ़े हैं।” वगैर किसी कटोरता के विभा एक-एक शब्द नाप तोलकर बोल रही थी----“इसके बावजूद आपसे पूछ रहा हूं तो कोई वजह जरूर होगी। क्या कहता है आपका दिमाग? वजह होगी या नहीं?”

“होगी।”

“क्यों?”

“क्या कह सकते हैं?”

“नहीं कह सकते तो बता दीजिए----क्या बात हुई थी?”

प्रिंसिपल खुद को काफी असुविधा में महसूस कर रहा था। लहजे को संतुलित रखने की भरसक चेष्टा के साथ प्रारम्भिक बातें सच-सच बताने के बाद कहा-----“अचानक वेद जी ने बातों का रुख मोड़ दिया। बल्कि मोड़ देना भी क्या कहे, सीधे-सीधे हमें ही हत्यारा कहने लगे।”

“किस वेस पर?”

“एक ऊटपटांग काल्पनिक स्टोरी बना बैठे थे वे।”

“उसे सुनना चाहती हूं।”

प्रिंसिपल एक ही सांस में बता गया।

“वाकई।” सुनने के बाद विभा ने कहा-----“निहायत की घटिया और अविश्वेकपूर्ण स्टोरी तैयार की थी वेद ने। और अखबार के मुताबिक उसमें तुम भी शामिल हो इंस्पेक्टर। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि तुम और वेद! दोनों मूर्ख हो।”

“म-मे समझा नहीं।” जैकी बौखला गया।

“तुम्हारे मुताबिक सत्या की हत्या हत्यारे ने पेपर की वजह से की और चन्द्रमोहन को इसलिए मार डाला क्योंकि वह हत्यारे का राज जान गया था और फोन पर तुम्हें बताने वाला था।”

“इसमें क्या गलत है?”

“वेद की पीठ से वरामद कागज पर लिखे शब्दों का क्या मतलब निकाला तुमने?”

“यह कि अभी वह और हत्याएँ करना चाहता है।”

“करेक्ट! यही मतलब है उसका। और अगर यही मतलब है तो नतीजा ये कैसे निकलता है कि वह अपना राज जानने वालों के मर्डर कर रहा है? क्या उसकी नजर में कुछ और लोग हैं जो उसका राज जानते हैं? यदि हां, तो धमका क्यों रहा है उन्हें? खत्म क्यों नहीं कर देता? इतना मौका क्यों दे रहा है कि उसके राज को वे किसी और को भी बता सकें? नहीं जैकी----हत्याओं की वजह वह नहीं है जो तुम और वेद समझे। अपना राज जानने वालों की हत्या हत्यारा चैलेंज देकर नहीं करता----बल्कि जल्द से जल्द मार डालना चाहता है ताकि उसका भेद और ज्यादा लोगों को पता न लग सके।”

“आपके ख्याल से दूसरी क्या वजह हो सकती है?”

“चैलेंज देकर हत्याएँ वही करता है जिसकी हिट लिस्ट पहले से तैयार हो अर्थात् जिसने पक्का इरादा कर लिया हो फलां-फलां लोगों को मौत के घाट उतारना है। कारण अनेक हो सकते हैं। मगर ये तय है----यह काम है किसी इरादे के पक्के आदमी का। उसकी हिट लिस्ट में अभी और लोग हैं और यकीनन वे, वे नहीं हो सकते जिनके द्वारा उसे अपना भेद खुलने का डर हो! बल्कि वे होंगे जिन्हें किसी न किसी कारण से वह मार ही डालना चाहता है।”

जैकी को क्रॉस करने के लिए तर्क न मिला।

विभा की बातें सुनकर प्रिंसिपल की आंखों में चमक उभर आई थी।

वह चमक विभा की पैनी नजरों से न छुप सकी। गुलाबी होठों पर हल्की सी मुस्कान लाती बोली-----“मेरे विचार जानकर आपको कुछ खास ही खुशी हुई बंसल साहब।”

“वेद जी ने जिस थ्योरी के आधार पर मुझे हत्यारा बना दिया था, उसकी भविष्य में उड़ते देखकर मुझे खुशी नहीं होगी तो किसे

होगी? आप वाकई जीनियस हैं विभा जी।”

“जब वेद आपको हत्यारा ठहरा चुका, उसके बाद क्या हुआ?”

उसकी बात पर ध्यान दिए बगैर विभा ने सवाल किया।

“होना क्या था? हमने साफ-साफ कहा----आप इस स्टोरी के सुवृत इकट्ठा नहीं कर सकते। स्टोरी काल्पनिक है और कल्पनाओं के सुवृत नहीं होते।”

“उसके बाद?”

“वो सुवृत इकट्ठा करने की धमकी देकर चले गये।”

“गलत।” विभा ने पूरी दृढ़ता के साथ कहा----“आप झूठ बोल रहे हैं। रील काट रहे हैं।”

“क-क्या मतलब?” बौखलाहट सी हावी होती नजर आई प्रिंसिपल पर।

“अच्छी तरह सोचकर बताइए। क्या वेद के जाने और इन बातों के बीच और कुछ नहीं हुआ?”

“क-क्या होता?”

“आपको बताना है।”

“क-कुछ नहीं हुआ।”

“मैं एक मौका और देती हूँ प्रिंसिपल साहब।” शब्दों से लग रहा था वह चेतावनी दे रही है लेकिन फेस पर ऐसा कोई भाव नहीं था। अपनी सदाबहार सौम्य मुस्कान के साथ वह कहती चली जा रही थी----“या तो बता दीजिए अन्यथा मुझे बताना होगा।”

“क-कहना क्या चाहती हैं आप?” आतंक की ज्यादाती के कारण वह चिल्ला उठा----“क्या हुआ था? हो भी क्या सकता था? आप बता सकती हैं तो बता क्यों नहीं देती? हमसे क्या पूछ रही हैं?”

हड़बड़ाई हुई निर्मला ड्राइंगरूम में दाखिला हुई। प्रिंसिपल की तरफ लपकती बोली----“आप चीख क्यों रहे हैं? बात क्या है?”

विभा से पूछा----“आप कौन हैं?”

“बार-बार एक ही बात रिपीट करके विभा जिन्दल नाम की ये शख्स पता नहीं कहना क्या चाहती है?” कभी उत्तेजित न होने वाला बंसल झूठ पकड़ा जाने के खौफ से अपने सारे औसान खो चुका था----“कहती हैं वेद जी के हमें हत्यारा कहने और उनके जाने के बीच यहां कुछ हुआ था। धमकी दे रही हैं। हम नहीं बतायेंगे तो खुद बता देंगी। अजीब धमकी है। देवग्रह डराना चाहती हैं हमें! पता नहीं हमारे मुंह से क्या सुनने की ख्वाहिशमंद है।”

“वह।” विभा अब भी मुस्कुरा रही थी----“जो मिसेज बंसल ने आपके कान में कहा था?”

और जैसे जादू हो गया।

बंसल ही नहीं, निर्मला भी पत्थर की स्टैच्यू में बदल गयी।

जैकी ने बुरा तरह हैरान होकर विभा की तरफ देखा। उस विभा की तरफ जिसके फेस पर किसी किस्म की सख्ती का भाव नहीं था। फिर उसने बंसल और निर्मला नाम के स्टेच्युओं की तरफ देखा---- जो किसी अंजाने जादू के प्रभाव से पीले पड़ते जा रहे थे।

चेहरे निस्तेज! निर्जीव! राख की मानिन्द!

पलकें तक झपकाना भूल गये थे वे, विभा अपने स्थान से उठी। चहलकदमी करती बोली----वेद ने पूछा----क्या बात है? आपने कहा----हमारी कोई घरेलू प्रबल्लम है। वेद को यकीन नहीं आया। आप दोनों में झड़प हुई। वेद झड़प के बाद यहां से गया।”

“अ-आप तो यूँ बता रही हैं जैसे उस वक्त यहीं कहीं थीं?” बंसल के होंठ हिले।

चेहरे पर आश्चर्य की पराकाष्ठा लिए जैकी ने विभा की तरफ देखा। विभा ने बंसल के नजदीक टिठकते हुए कहा----“मैं उस वक्त जिन्दलपुरम में थी। वेद इसी कमरे में था। वह नहीं सुन सका मिसेज बंसल ने आपके कानों में क्या कहा----मगर वो आवाज जिन्दलपुरम में मेरे कानों तक पहुंच गयी थी। इजाजत दें तो फरमाऊं।”

चीख सी निकल गयी बंसल के हलक से----“अ-आप यह भी बता सकती हैं?”

“ऑफकोर्स?”

हैरान और परत बंसल ने कहा----“बताइए।”

“यानी आप कुछ बताने के मूड में नहीं हैं?”

“अब तो यूँ कह लो, हम यह देखना चाहते हैं कि एक शख्सियत कितने चमत्कार दिखा सकती है।”

तभी बंगले के बाहर मोटर साइकिल की आवाज आई।

विभा ने कहा----“तुम्हारा सब-इंस्पेक्टर आ गया लगता है जैकी।”

किसी के जवाब देने से पहले सब-इंस्पेक्टर ड्राइंगरूम में दाखिल हुआ।

उसके द्वारा तैयार की गई लिस्ट विभा के हाथ में पहुंची। विभा ने उसे देखना शुरू किया। देखते ही देखते आंखों में दिव्य ज्योति सी चमकी। चुटकी बजाकर कह उठी----“अब मैं दावे के साथ कह सकती हूँ मिस्टर बंसल, आवूलेन पर आपने घाट नहीं खाई।”

“पता नहीं आप क्या देखकर क्या जान जाती हैं?”

इसी सवाल का जवाब जैकी लिस्ट में हूँढने की कोशिश कर रहा था। लिस्ट अब उसके हाथ में थी मगर लाख सिर खपाने के बावजूद नहीं जान पाया था कि इससे ये बात कैसे पता लग सकती है कि बंसल आवूलेन घाट खाने गया था या कुछ और करने? उसने विभा की तरफ सचमुच ऐसे अंदाज में देखा जैसे जादूगरनी को देख रहा हो।

विभा ने सब-इंस्पेक्टर से पूछा----“क्या मेरा शोफर बाहर है?”

“जी।”

“प्लीज! उसे बुला दीजिए।”

सब-इंस्पेक्टर उसके जरखरीद गुलाम की तरह बाहर चला गया।

बंसल ने कहा----“आप कान वाली बात बताने वाली थी....।”

“सोच रही हूँ क्यों न वह बात आपके बेडरूम में चलकर बताई जाये?”

“बेडरूम में?” बंसल और निर्मला एकदम उछल पड़े। चेहरों पर जलजला लिये एक-दूसरे की तरफ देखा उन्होंने। सब-इंस्पेक्टर और शोफर अंदर दाखिल हुए। आंखों ही आंखों में शोफर और विभा की बातें हुई विभा ने बंसल से कहा----“इजाजत हो तो अंदर चले?”

“जैसी मर्जी।” बंसल ने हथियार डालने वाले अंदाज में कहा।



बेडरूम कॉफी बड़ा था।

बेड के अलावा एक सोफा सेट और ड्रेसिंग टेबिल अति सलीके से रखी थी।

“अरे!” बेड के पीछे वाली दीवार पर नजर पड़ते ही जैकी उछल पड़ा----“विभा जी, वैसे ही बल्लम!”

उससे भी बुरी तरह चौंके थे बंसल दम्पति।

विभा के होठों पर चित्ताकर्षक मुस्कान थी।

बेड के ठीक पीछे वाली दीवार पर दो बल्लम एक दूसरे को क्रास करते हुये लगाये गये थे। उनके बीच सजी थी एक चौड़ी ढाल। चेहरे पर हैरत के असीमित भाव लिये निर्मला ने बंसल से कहा----“ये क्या जादू हो रहा है? दूसरा बल्लम कहां से आया?”

बंसल ने विभा की तरफ देखते हुए कहा----“इन्हीं की कारस्तानी लगाती है।”

“क्या बताने की जरूरत रह गयी कि मिसेज बंसल ने आपके कान में क्या कहा था?”

“नहीं!” बंसल परत चुका था।

जैकी कह उठा----“आखिर मामला क्या है? मुझे भी तो कुछ समझाइए विभा जी।”

“मिसेज बंसल ने प्रिंसिपल साहब के कान में कहा था बेडरूम से एक बल्लम गायब है। सुनते ही प्रिंसिपल साहब की हवा शंट होनी थी! हुई। क्योंकि ये जानते थे कि चन्द्रमोहन की हत्या बल्लम से की गयी है। करेला नीम चढ़ा इसलिए बन गया क्योंकि ठीक उसी समय ड्राइंगरूम में बैठा वेद इन्हें कातिल बता रहा था। यह सोचकर इनकी हालत खस्ता हो गयी कि यदि वेद को बल्लम के बारे में पता चल गया तो वह तुमसे कहकर इन्हें हथकड़ी लगवा देगा। उस अवस्था में वेद को ये बल्लम के बारे में न बता सकते थे, न बताया।”

“लेकिन ये बातें आपको कब और कैसे पता लग गयीं?”

विभा ने शोफर को इशारा किया।

शोफर कमरे में पड़े सोफे के पीछे पहुंचा और किसी भारी वस्तु को खींचकर निकालने का प्रयास करने लगा। वस्तु बाहर आई तो जैकी ने देखा----वह एक बूढ़ा शख्स था। बंसल के मुंह से निकला----“अरे! रामदीन? ये तो सब्जी लेने गया था।”

“वहां हमने पकड़ लिया।” विभा ने बताया----“जो कुछ हुआ था, इसके मुंह से वह उगलवाने के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी।”

“लेकिन ये आपने किया कब?” जैकी ने पूछा।

“अखबार में साफ-साफ लिखा था और मधु वहन को फोन करके मैंने पुष्टि भी कर ली थी। वेद अंतिम बार प्रिंसिपल साहब के साथ देखा गया तथा उसके बाद इनका पीछा करता आवतून पहुंचा। इतना सुनना यह समझने के लिए काफी था कि यकीनन वेद और प्रिंसिपल साहब के बीच और भी बात हुई थी जिसके कारण वेद को पीछा करना पड़ा। पीछा करता हुआ ही वह गायब हो गया। अतः जिन्दलपुरम से सीधा यहां आई। उस वक्त रामदीन सब्जी लेने निकला था। मैंने सीधे प्रिंसिपल से बात करने से बेहतर रामदीन से बात करना समझा। पुराना नौकर घर का भेदिया होता है। यही हुआ। मौका देखकर मेरे इशारे पर शोफर ने इसे सड़क से गाड़ी में खींच लिया। इसे बताना पड़ा इनकी वेद से क्या बातें हुई और वेद के जाने के बाद पति-पत्नी के बीच क्या बात हुई? वे बातें बल्लम के बारे में थीं। प्रिंसिपल साहब मिसेज बंसल से बार-बार कह रहे थे----बल्लम गायब होने की बात हमारे कान में कहकर तुमने समझदारी दिखाई। इस लेखक के बच्चे को तो पहले से ही हम पर शक है। बल्लम के बारे में भनक लग जाती तो तत्काल फांसी पर चढ़ा देता।”

“लेकिन इस मुर्सीवत से निकलेंगे कैसे?” मिसेज बंसल ने पूछा।

“यही सोच रहे हैं।” दिमाग पर जोर डालते हुए प्रिंसिपल साहब ने कहा----इसके बाद इन्होंने क्या फैसला किया----यह रामदीन न सुन सका। रामदीन से जहां मुझे इतनी बातें पता लगीं वहां यह भी पता लग गया कि वास्तव में चन्द्रमोहन की हत्या इन्होंने नहीं की। ये बेचारे तो खुद बल्लम के गायब होने से परेशान थे।”

विभा की बातें सुनकर बंसल दम्पति ने राहत की सांस ली।

बंसल ने पूछा----“लेकिन बल्लम पुनः यहां कैसे आ गया?”

“रामदीन और बल्लम को हमारे शोफर ने ठीक उस वक्त किचन लॉन में खुलने वाली खिड़की के जरिए यहां पहुंचाया जिस वक्त मिसेज बंसल भी ड्राइंगरूम में पहुंच चुकी थीं। आपको मैंने उत्तेजित ही इसलिए किया था कि आप घीखने चिल्लाने लगे और मिसेज बंसल वहां पहुंच जायें। बहरहाल, अपने शोफर को रास्ता तो क्लियर देना ही था। उसके बाद मैं बातों को थोड़ा लम्बा खींचकर समय गुजारती रही ताकि शोफर काम पूरा करके वापस गाड़ी पर पहुंच जाये। यहां आने की बात हमने तभी कही जब सब-इंस्पेक्टर से शोफर के बाहर होने की पुष्टि कर ली।”

“हद है।” जैकी बोला----“आपने सारा काम इतने योजनाबद्ध तरीके से किया, हमारे सामने किया और हमें इतम तक नहीं हो पाया?”

“तुम दिमाग के खिड़की-दरवाजे बंद रखते हो जैकी, इसलिए नहीं जान पाये। वरना सोचते, हम बल्लम साथ क्यों लाये और फिर उसे गाड़ी में छोड़ने की क्या तुक हुई?”

“रामदीन कहां था हमारे पास?”

“गाड़ी की डिकी में।”

“ओह!”

“आओ, आवूलेन चलते हैं।” विभा ने कहा।



जैकी, बंसल, शगुन और विभा उस इमारत की लिफ्ट के जरिए फोर्थ फ्लोर पर पहुंचे जिसके बाहर मेरी गाड़ी खड़ी मिली थी। सब-इंस्पेक्टर को वापस थाने भेजा जा चुका था और शोफर नीचे गाड़ी में था। फोर्थ फ्लोर की गैलरी में बढ़ते जैकी ने कहा----“आप तो इस तरह चली आ रही हैं जैसे हन्डरेड परसेन्ट मालूम हो वेद जी कहां हैं?”

“वेद का तो फिलहाल नहीं लेकिन यह मालूम है बंसल साहब कहां आये थे?”

“प्लीज।” जैकी ने कहा----“अब तो बता दीजिए। कैसे पता चला आपको?”

“आप सब-इंस्पेक्टर द्वारा बनाई गई लिस्ट पर गौर करो----साथ ही गौर करो मिस्टर बंसल की उस वक्त की मानसिकता पर। हमें मालूम है----इनकी सबसे बड़ी समस्या बल्लम की वजह से अपना संदिग्ध हो उटना था। जाहिर है, इन्हें किसी ऐसे शख्स की तलाश होगी जो उस समस्या से निजात दिलाने की क्षमता रखता हो।”

“अब बंसल साहब की जगह खुद को खड़ा करके, सोचो। तुम्हारे सामने यह प्रॉब्लम होती तो किसके पास जाते?”

जैकी ने चंद सैकिण्ड सोचने के बाद कहा----“शायद किसी वकील के पास।”

“बिल्कुल सही सोचा तुमने। लेकिन लिस्ट देख चुके हो, इस बिल्डिंग में कोई वकील नहीं है। लिस्ट पर गौर करो जैकी। जवाब खुद मिल जायेगा।”

“प्राइवेट डिटेक्टिव।” जैकी चुटकी बजा उठा----“इस बिल्डिंग में ऐरो डिटेक्टिव एजेन्सी का ऑफिस है। वकील के अलावा प्राइवेट डिटेक्टिव भी इस समस्या में मददगार हो सकता है।”

“हम वहीं खड़े हैं।” विभा रुकती हुई बोली।

जैकी ने देखा----वे सचमुच ऐरो डिटेक्टिव एजेन्सी के ऑफिस के गेट पर खड़े थे।

होठों पर मुस्कान लिए विभा ने बंसल से पूछा----“हम लोग गलत जगह तो नहीं आये?”

“हम यह दावे के साथ कह सकते हैं।” बंसल बोला----“आपसे जिन्दगी में कभी कोई गलती नहीं हो सकती।”

“ये गलत है।” विभा ने कहा----“इन्वेस्टिगेटर का सारा खेल तर्कपूर्ण तिगड़मों पर होता है। और तर्क कभी-कभी इतना तगड़ा धोखा देते हैं कि इन्वेस्टिगेटर अंधेरे में ही हाथ-पांव मारता रहता है।”

“फिलहाल इस मामले में आप केवल रोशनी में नहीं रहें बल्कि रोशनी की मीनार बनकर आई हैं।” कहने के साथ बंसल अंदर दाखिल हो गया। विभा, जैकी और शगुन उसके पीछे थे।

‘ऐरो डिटेक्टिव एजेन्सी के संचालक का नाम रमेश गौतम था। एजेन्सी का प्रमुख जासूस भी वह था। अपने क्लाइन्ट के साथ पुलिस इंस्पेक्टर और एक अति प्रभावशाली महिला को देखकर थोड़ा सतर्क नजर आने लगा। बंसल ने विभा का परिचय दिया। वह प्रभावित हुआ।

विभा ने पूछा----“क्या आप वेद प्रकाश शर्मा को जानते हैं?”

चंद सैकिण्ड सोचने में गंवाकर उसने कहा----“हां-हां, क्यों नहीं! हिन्दुस्तान भर में प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं वे। अपने मेरठ के

रहने वाले हैं।”

“कमाल है। कृदकर उन तक कैसे पहुंच गये आप? इस नाम के और भी बहुत लोग हो सकते हैं।”

“वेशक हो सकते हैं। गौतम ने कहा----“लेकिन सुबह के अखबार में उनके किडनैप की खबर छपी है। उस कालिज के प्रिन्सिपल, एक पुलिस इंस्पेक्टर और आप डिटेक्टिव एजेन्सी में आकर यह नाम लेती हैं तो मुझे समझ जाना चाहिए चर्चा किसके बारे में हो सकती है।”

विभा होने से मुस्कुराकर बोली----“चतुर्गई भग जवाब देकर साबित कर दिया कि तुममें जामूसी के मैदान में काम करने के टेनेन्ट हों या न हों मगर ग्राहक को चंगुल में फंसाने के टेनेन्ट निसन्देह हैं। बराबेमेहरबानी, अब जल्द से जल्द वेद से मिला कीजिए।”

“म-मै?” वह बीखलाया----“मैं आपको वेद जी से मिला दूँ?”

“एक्टिंग बेकार है मिस्टर गौतम! मैं समझ चुकी हूँ कि बंसल साहब के लिए वेद का अपहरण तुमने किया है।”

गौतम चौंका। हड़बड़ाकर बंसल की तरफ देखा उसने। वैसे ही भाव बंसल के चेहरे पर भी थे। विभा की तरफ देखते उसने कहा----“ये आप क्या कह रही हैं विभा जी? वेद जी का अपहरण हमने किया है?”

“नहीं किया?” विभा की आंखें मुकड़कर गोल हो गयीं।

गौतम बोला----“हरगिज नहीं किया।”

जैकी गुर्गया----“स्मार्ट बनने की कोशिश तुम्हारा लाइसेंस रद्द करा सकती है मिस्टर गौतम। प्राइवेट डिटेक्टिव एजेन्सी चलाने के लिए लाइसेंस का मतलब ये नहीं कि तुम्हें लोगों के अपहरण करने का लाइसेंस मिल गया है।”

“बही तो कहना चाहता हूँ।” गौतम ने कहा----“मैं प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ! अपराधी नहीं। किसी का अपहरण करना आपराधिक कार्य है। मैं ऐसा नहीं कर सकता। पता नहीं यह वहम आपको कैसे हो गया? सीधा बात ये है, मिस्टर बंसल मेरे पास आये। इन्होंने कहा मिस्टर वेद इन पर कालिज में हो रही हत्याओं का शक कर रहे हैं। संयोग से एक हत्या हुई भी इनके पुर्तनी बल्लम से। पता नहीं उस बल्लम को इनके बेडरूम से किसने गायब किया। मेरे पास ये उस चोर का पता लगाने का केस सौंपने आये थे। अपनी फीस लेकर मैंने केस लिया भी। इससे ज्यादा इस केस में मेरा अभी तक कोई इन्वाल्वमेन्ट नहीं है।”

विभा ने बंसल से पूछा----“तुम्हारा पीछा करता वेद यहां नहीं पहुंचा था?”

“यकीन कीजिए विभाजी, मुझे नहीं मालूम वे मेरे पीछे थे।” बंसल कहता चला गया----“मैंने सिर्फ अपने बचाव की कोशिश की थी। अपहरण जैसे जुर्म के बारे में सोच भी नहीं सकता।”

जैकी गुर्गकर पुलिसिया भाषा पर उतरने वाला था कि विभा ने इशारे से रोका। बोली----“कुछ देर पहले मैंने कहा था इन्वेस्टिगेटर अंधेरे में ही हाथ-पांव मारता रहता है। लगता है इस मामले में मेरे साथ वैसा ही कुछ हो गया है। रामदीन के बयान से निकले तक्रों के आधार पर मैं आश्वस्त हो गयी थी कि अपने लिए मुसीबत बने वेद को मिस्टर बंसल ने ही गौतम की मदद से कहीं कैद कर लिया है। मैं यह सोचकर भी सुकून की दुनिया में थी कि इस अवस्था में वेद किसी खतरे में नहीं हो सकता लेकिन अगर ये सच है तो, वेद खतरे में है।”

जैकी बोला----“विभा जी, ये लोग झूठ भी तो बोल सकते हैं?”

विभा ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि जैकी का सेल्यूलर बज उठा।

जैकी ने उसे बेल्ट से निकालकर ऑन किया। बोला----“कौन?”

“मि० चैलेंज।” दूसरी तरफ से आवाज उभरी।

जैकी चौका----“मि० चैलेंज!”

“शायद तुम्हारे साथ विभा है।” दूसरी तरफ से कहा गया।

“हां है! क्यों?”

“फोन उसे दो।”

उद्वेलित सा नजर आ रहा जैकी गुराया----“पहले अपना असली नाम बताओ।”

“वेवकूफनी बातें छोड़कर फोन विभा को दो जैकी।”

जैकी के बोलने से पहले विभा ने फोन उसके हाथ से ले लिया कहा----“विभा हीयर!”

“मि० चैलेंज।”

“मतलब की बात बोलो। फोन क्यों किया?”

“प्रिंसिपल एक नम्बर का झूठा है।” दूसरी तरफ से एक ही सांस में सब कुछ कहने की कोशिश की गयी----“वह आवृत्तेन चाट खाने नहीं, ऐरो डिटेक्टिव एजेन्सी में गया था।”

“जानती हूं। कोई नई बात बताओ?”

“जानती हैं?” थोड़ा आश्चर्य व्यक्त किया गया----“इस वक्त आप कहां हैं?”

“ऐरो डिटेक्टिव एजेन्सी के ऑफिस में।”

“तब तो सही जगह पहुंच गयीं। वाकई ब्रिलियेंट हैं आप।” कहने के बाद फोन डिस्कनेक्ट कर दिया गया। मोबाइल ऑफ करते वक्त विभा के चेहरे पर जलजले के से भाव उभर आये।

उसने ध्यान से सेल्यूलर की स्क्रीन पर चमक रहा नम्बर पढ़ा। अंगुलियों ने तेजी से मेरठ के कोड के साथ वह नम्बर डायल किया। दूसरी तरफ से एंजे टोन उभरी। विभा ने रिडायल किया। स्वागत पुनः एंजे टोन ने किया। जब बार-बार कोशिश के बावजूद दूसरी तरफ रिंग नहीं गई तो थोड़े उद्वेलित स्वर में बोली----“एक कागज पर नम्बर नोट कीजिए मिस्टर गौतम।”

“बोलिए!” गौतम ने पैन संभाला।

नम्बर नोट कराने के बाद विभा ने कहा----“पता लगाइए कि नम्बर कहां का है?”

गौतम ने टेलीफोन डिपार्टमेंट में अपने सूत्र को फोन किया। निर्देश देकर रिसीवर क्रेडिल पर रखता बोला----“पांच दस मिनट में पता लग जाता है।”

“यह बात तो आप सेल्यूलर पर ही रिडायल करके मालूम कर सकती हैं विभा जी।” जैकी ने कहा।

“वही कोशिश कर रही हूँ।” विभा ने पुनः रिडायल वाला बटन दबाते हुए कहा—“लगातार एंजेज लग रहा है।”

“ओह! शायद वह किसी और से बात कर रहा हो।”

“मेरे ख्याल से वह फोन खराब कर चुका है।”

“मतलब?”

विभा कहती चली गयी----“बच्चा भी जानता है कि यदि सेल्यूलर पर फोन किया जाये तो स्क्रीन पर उसका नम्बर आ जाता है। मि० चैलेंज द्वारा किसी ऐसे फोन से तुम्हारे सेल्यूलर पर बात करने का सवाल ही नहीं उठता जिस पर उसे पकड़ा जा सके। हन्डरेड परसेन्ट ये फोन किसी पी०सी०ओ० से किया गया होगा। वह यह भी जानता था कि उसके द्वारा फोन काटे जाते ही मैं रिडायल करके सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश करूंगी। यह कोशिश कामयाब न हो, इसके लिए उसने फोन ही डेड कर दिया।”

“इससे क्या फायदा?”

“हम वो नहीं कर सकते जो कर सकते थे।”

“क्या कर सकते थे?”

“मैं संचालक से यह कह सकती थी, उस शख्स को रोक ले जिसने अभी-अभी इस फोन से फलां नम्बर डायल कर मोबाइल पर बात की है।”

जैकी के जवाब देने से पहले गौतम की टेबिल पर रखे फोन की घंटी बजी। गौतम ने रिसीवर उठाया और बातें करने के बाद कहा----“आपका शक ठीक है विभा जी। ये नम्बर मोदीपुरम के एक पी०सी०ओ० का है।”

“आओ।” विभा एक झटके से खड़ी हो गयी।



गाड़ी में जैकी ने पूछा----“कह क्या रहा था वह?”

विभा ने बतला दिया। सुनकर बंसल ने कहा----“विभा जी, कोई हमें फंसाना चाहता है! पहले हमारे बल्लम से चन्द्रमोहन की हत्या करना और अब ये कहना कि आप गौतम के ऑफिस तक पहुंच जायें। यह अलग बात है आप उसके द्वारा दी गई इन्फॉर्मेशन से पहले ही पहुंच गई मगर.... उसका ये फोन क्या इस बात का गवाह नहीं है कि वह हमें आपकी नजर में झूठा और संदिग्ध साबित करना चाहता है?”

जैकी गुराथा----“वह तो तुम हो ही।”

“यह बात वाकई सोचने वाली है जैकी।” विभा ने कहा----“बंसल ने गौतम से अपनी भेंट को हमसे छुपाने की कोशिश की, इसमें शक नहीं। परन्तु मि० चैलेंज क्यों चाहता है यह बात हमें पता लगे?”

“आपके ख्याल से फोन के पीछे उसका क्या मकसद था?”

“शायद वही जो मिस्टर बंसल कह रहे हैं। इन्हें संदिग्ध बनाना। बल्कि हमारे दिमाग में यह दूंसना कि वेद के अपहरणकर्ता

यही हैं। मगर जरूरत से ज्यादा चालाकी का दूसरा नाम ही दरअसल बेवकूफी है। फोन करने की बेवकूफी करके मि० चैलेंज बता गया कि अभी वह कच्चा खिलाड़ी है।”

“मैं समझा नहीं विभा जी।”

“पका हुआ खिलाड़ी हर वक्त इन्वेस्टिगेटर को अपनी नॉलिज में रखता है, मि० चैलेंज को इतना तक मालूम नहीं था मैं गौतम के ऑफिस में पहुंच चुकी हूं।”

किसी के कुछ पूछने से पहले राल्स रॉयल गौतम के निर्देश पर एक पी०सी०ओ० बूथ पर रुकी।

विभा के साथ सब लोग बाहर निकले।

पी०सी०ओ० का संचालक बीस-बाइस साल की उम्र का था।

वह खाली बैठा उपन्यास पढ़ रहा था।

पुलिस के साथ घड़घड़ाते लोगों को अंदर प्रविष्ट होते देख थोड़ा घबराया।

जैकी ने कड़क आवाज में पूछा, फलां नम्बर कौन सा है? लड़के ने एक केबिन की तरफ इशारा कर दिया। जब पूछा गया कि अंतिम बार उसका इस्तेमाल किसने किया तो लड़के ने कहा----“एक औरत ने।”

“औरत?” जैकी उलझा।

गौतम ने पूछा----“जवान थी या बूढ़ी? हुलिया क्या था?”

“ज-जी। मैं देख नहीं सका। वह बुर्के में थी।”

“कहां फोन किया था?”

“अभी बताता हूं।” कहने के साथ उसने रजिस्टर देखना शुरू किया। अगले पल उसमें दर्ज जैकी के मोबाइल का नम्बर बता दिया। जैकी उसे अपना मोबाइल दिखाता हुआ गुर्राया----“इसका नम्बर है ये। वह एक अपराधी था। सुना तूने----थी नहीं। एक मर्द अगर बुर्का पहनकर आ जाये तो तू इतना भी नहीं जान सकता कि वह औरत नहीं मर्द था?”

लड़का ऐसा हकबकाया कि जवाब नहीं सूझा उसे।

विभा के होठों पर जैकी का रवैया देखकर मुस्कान उभर आई। बोली----“इस बेचारे को हड़काने से कोई फायदा नहीं जैकी। एक बार फिर कहूंगी----अपनी ये पुलिसिया हरकतें छोड़ दो। काम वो करो जिससे आगे बढ़ने का रास्ता मिले।”

जैकी चुप रहा।

विभा ने उसे लड़के के सामने से हटाया और स्वयं उसका स्थान ग्रहण करती बोली----“घबराओ नहीं, मैं जानती हूं तुम्हारा कुसूर नहीं है। अपना रजिस्टर देखकर बताओ----क्या बुर्के वाले ने मोबाइल पर फोन करने से पहले कोई और नम्बर भी मिलाया था।”

“जी नहीं।” कहने के साथ डरे सहमे लड़के ने सुबूत के तौर पर रिकार्ड का रजिस्टर उसकी तरफ सरका दिया। विभा ने उस पर नजर मारने की कोशिश नहीं की। वह तेजी से मुड़ी और उस केबिन में घुस गई जिसमें उस नम्बर का फोन था। तार टेलीफोन इंस्ट्रुमेंट से अलग पड़ा था।

विभा चौकी।

चौकने का कारण वह कागज था जो क्रेडिटल पर रखे रिसीवर और क्रेडिटल के बीच फंसा था। कागज किसी की पॉकेट डायरी का था। विभा ने उसे निकाला। लिखा था---- “वेलकम विभा जिन्दल! वेलकम! हा...हा...हा....।”

मि० चैलेंज।

विभा के जबड़े भिंच गये।

कागज लिए कैबिन से बाहर निकली।

मि० चैलेंज के चैलेंज को पढ़कर जैकी, गौतम और प्रिंसिपल भी दंग रह गये। प्रिंसिपल के मुंह से तो टिप्पणी भी निकल पड़ी----“मि० चैलेंज तो हमसे खेल रहा है।”

उस वक्त कागज जैकी के हाथ में था और वह मि० चैलेंज द्वारा लिखी गई एकमात्र लाइन को बार-बार पढ़ रहा था जब विभा कागज पर इस तरह झपटी जैसे बाज कबूतर पर झपटा हो। अगले पल वह कागज को अपनी आंखों और ट्यूब के बीच किए बोली----“एक नम्बर नोट करो जैकी।”

जैकी ने लड़के की मेज पर रखा रजिस्टर उठाते हुए कहा----“बोलिए।”

बहुत ध्यान से पढ़ रही विभा ने एक नम्बर बताया।

जैकी ने लड़के के रजिस्टर के ऊपरी किनारे पर नोट किया। यह वह नम्बर था जिसका केवल अक्स मि० चैलेंज के कागज पर नजर आ रहा था। विभा ने कहा----“यह नम्बर बाल पेन से डायरी के इससे ऊपर वाले पन्ने पर लिखा गया था।”

जैकी, प्रिंसिपल और गौतम मन ही मन उसकी पैनी नजर की तारीफ कर उठे।

पी०सी०ओ० वाले लड़के ने कहा----“ये नम्बर पल्लवपुरम का है।”

“चलो।” कहने के साथ विभा छलावे की तरह बाहर निकली। बाकी सब उसके पीछे लपके।



पल्लवपुरम की तरफ उड़ी चली जा रही राल्स रॉयल में बैठी-बैठी विभा कह रही थी----“इस बात पर तब्सरा करने से कोई फायदा नहीं कि मि० चैलेंज कैसे जानता था मैं पी०सी०ओ० तक पहुंचूंगी। आप सब समझ ही गये होंगे मगर जहां अब पहुंचने वाले हैं, वहां हमारे पहुंचने की कल्पना उसने ख्याब तक में नहीं की होगी।”

सब चुप रहे। जैसे बोलने के लिए किसी के पास कुछ नहीं था।

“ये फोन नम्बर जिसका भी है! जाहिर है वह मि० चैलेंज का परिचित होगा।” पुनः विभा ने ही कहा----“तुम्हारी वर्दी के कारण वे टाइम से पहले सतर्क हो सकते हैं जैकी, अतः मेरे इशारे से पहले गाड़ी से बाहर नहीं निकलोगे।”

“ओ.के.” जैकी ने कहा।

सभी को लग रहा था अगले पड़ाव पर शायद किडनैपर से सामना हो।

फेज टू में पहुंचकर एड्रेस ढूंढने में पांच मिनट लगे।

वह एक एम०आई०जी० मकान था। बल्कि वहां मौजूद सभी मकान एम०आई०जी० थे। उन्हें एम०डी०ए० द्वारा एक बड़े पार्क के चारों तरफ बनाया गया था। उस वक्त सबके दिमागों में तरह-तरह के सवाल चकरा उठे जब उस मकान में एक फैमिली रहती पाई।

गाड़ी मकान से थोड़ी दूर रोक दी गयी।

विभा शगुन के साथ जैकी को सतर्क रहने और इशारे का इंतजार करने के लिए कहकर गाड़ी से उतरी। इच्छित मकान की तरफ बढ़ी। नेम प्लेट पर आर०के० शाडिल्स लिखा था।

विभा ने कालवेल बजाई।

खिड़की खुली। एक महिला ने पूछा----“कौन?”

“आपका फोन नम्बर 572030 है न?” विभा ने कहा।

“जी।”

“एक मिनट के लिए बाहर आयेंगी।”

दरवाजा खुला। महिला बाहर आई। विभा ने कहा----“आप पढ़ी-लिखी लगती हैं। अखबार तो जरूर पढ़ती होंगी।”

असमंजस में फंसी महिला ने कहा----“हां! पढ़ती हूं।”

“प्रसिद्ध उपन्यासकार वेद प्रकाश शर्मा के अपहरण की खबर भी जरूर पढ़ी होगी।” कहते वक्त विभा महिला के चेहरे के हर उतार-चढ़ाव को बहुत ध्यान से देख रही थी।

“हां! पढ़ी है। मगर आप कौन हैं और यह सब क्यों पूछ रही हैं?”

“क्या हम अंदर बैठकर बात नहीं कर सकते?”

“सॉरी! इस वक्त घर में केवल मैं और पिंटू हैं।”

तभी पिंटू बाहर आ गया। वह एक दस वर्षीय खूबसूरत लड़का था।

“ओ० के०।” विभा ने कहा----“मेरा सम्बन्ध पुलिस से है। शर्मा जी के किडनैपर की तलाश में हूं। समझ नहीं पा रही उनका आपसे क्या सम्बन्ध हो सकता है?”

“किडनैपर का सम्बन्ध हमसे?” वह बुरी तरह चौंकी----“ये क्या कह रही हैं आप? भला हमारा किसी क्रिमिनल से क्या लेना-देना?”

“वही तो मैं नहीं समझ पा रही। हमारे हाथ किडनैपर की डायरी लगी है। डायरी में आपका नम्बर है। जाहिर है, वो आपका परिचित होगा।”

बुरी तरह हकला गई महिला। बोली----“क-क्या कह रही हैं आप?”

“वैसे आपके हसबैंड करते क्या हैं?”

“स-सी.डी.ए. में हैं।” वह घबरा गई----“म-मगर मैं आपको विश्वास दिला सकती हूँ उनका सम्बन्ध किसी क्रिमिनल से नहीं हो सकता और फिर, वेद प्रकाश शर्मा के तो हम दोनों पति-पत्नी फैन हैं। उनके अपहरण के बारे में पढ़कर बहुत दुख हुआ। भला हमारा कोई परिचित उन्हें क्यों किडनैप करेगा?”

विभा को वह महिला हर अक्षर सच बोलती नजर आई। हर बात पर उसकी प्रतिक्रिया वैसी ही थी जैसी साधारण घरेलू महिला की होनी चाहिए थी। मगर विभा के पास जो एकमात्र सूत्र था, उसे पूरी तरह खंगालना जरूरी था। उसने महिला को थोड़ा डराने के लिए गाड़ी की तरफ इशारा किया।

जैकी के साथ प्रिंसिपल और गौतम भी बाहर निकले।

वही हुआ जो विभा चाहती थी। वर्दीधारी पुलिस वाले को देखकर महिला आतंकित नजर आने लगी। अनिष्ट की आशंका ने उसे बुरी तरह हिला डाला था। गिड़गिड़ा उठी वह----“यकीन कीजिए, मेरा और मेरे पति का किसी क्राइम से कोई सम्बन्ध नहीं है।”

“मैंने क्राइम से आपका सम्बन्ध नहीं बताया। केवल यह कहा है किडनैपर की डायरी से आपका नम्बर मिला है और फोन नम्बर केवल परिचितों के होते हैं। हमें उनकी लिस्ट बनाकर दे दें जिनके पास आपके टेलीफोन नम्बर हैं।”

“भ-भला ऐसी लिस्ट कैसे बनाई जा सकती है? जाने किस-किसके पास नम्बर होगा।”

विभा जानती थी जो वह कह रही है वह बात व्यवहारिक नहीं है लेकिन जितना सूत्र उसके पास था, फिलहाल उसी पर खेलना मजबूरी था। बोली----“अगर आप लिस्ट नहीं देंगी तो मुसीबत में पड़ सकती हैं।”

जैकी, प्रिंसिपल और गौतम उनके नजदीक पहुंच चुके थे।

महिला के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। अपनी गिरफ्तारी की आशंका उसे साफ नजर आ रही थी। बड़ी मुश्किल से कह सकी----“आप कहती हैं तो लिस्ट बनाने की कोशिश करती हूँ मगर ये काम है बहुत मुश्किल। अब देखिए न, इस कालोनी में अभी हमारे ही यहां फोन लगा है। बाकी लोगों ने भी अपने परिचितों को यही नम्बर दे रखा है। सबके फोन यहीं आते हैं। कल ही की बात लीजिए----थर्टी सिक्स बटा दू में एम०डी०ए० के लोग बिजली का काम कर रहे हैं। उन्होंने भी यहीं का नम्बर लिया। आज उनका फोन भी आया। मैंने बात करा दी। इस तरह....

विभा को ऐसी ही किसी इन्फार्मेशन की तलाश थी। महिला की बात बीच में काटकर सवाल किया----“थर्टी सिक्स बटा दू नम्बर का मकान कौन-सा है?”

“वो।” उसने अंगुली से इशारा किया----“पार्क के पार, सामने वाला।”

विभा सहित सबने उधर देखा----उसने करीब दो सौ मीटर दूर, सामने वाले मकान की तरफ इशारा किया था। उस मकान का मुख्य द्वार बंद नजर आ रहा था। विभा ने पुनः महिला से मुखातिब होते हुए पूछा----“कौन रहता है वहां?”

“कोई नहीं।”

“मतलब?”

“यहां सभी मकान एम०डी०ए० के बनवाये हुए हैं। कुछ मकानों के कब्जे आवंटि ले चुके हैं। कुछ के नहीं। सामने वाला मकान अभी खाली है। तभी तो एम०डी०ए० के बिजली वाले काम कर रहे हैं।”

“कहां कर रहे हैं?” जैकी ने कहा----“हमें तो मकान बंद नजर आ रहा है।”

“चले गये होंगे।”

“नहीं मम्मी।” पिंटू कह उठा----“सिर्फ दो अंकल गये हैं, दो वहीं होंगे।”

विभा ने महिला से पूछा----“उनके लिए कहां से फोन आया था?”

“एम०डी०ए० के ऑफिस से। कहा गया थोड़ा सिक्स बटा दू में हमारे कुछ आदमी बिजली का काम कर रहे हैं। कृपया उनमें से किसी को बुला दीजिए। मैंने पिंटू को भेजकर एक को बुला लिया।”

“और उसने आपके फोन पर बात की?”

“जी।”

“कितनी देर?”

“कह नहीं सकती। मैं किचन में चली गई थी।”

“मैं वहीं था।” पिंटू ने कहा----“बस थोड़ी-सी बात करी थी अंकल ने। हां हूं करते रहे। उसके बाद फोन रखकर चल गये। कुछ देर सामने वाले मकान के अंदर रहे, फिर एक और अंकल के साथ बाहर निकले।”

“तुम्हें कैसे पता वे चार थे?”

“जब मैं बुलाने गया था तब देखे थे।”

विभा का अगला सवाल फिर महिला से था----“उनका फोन कितनी देर पहले आया था?”

“तीन बजे के करीब।”

“वहां कब से काम कर रहे हैं वे?”

“कल दोपहर बाद से”

दस सैकिण्ड विभा ने जाने क्या सोचने में गंवाए? महिला से कहा----“ठीक है! उनसे मिल लेते हैं।”

महिला ने राहत की सांस ली।

विभा के साथ सभी सड़क पर आ गये।

महिला राम-राम जपती पिंटू को लेकर चली गयी।

शोफर राल्स रॉयल को विभा के इशारे पर उनके साथ-साथ चला रहा था। वे लोग पार्क के चारों तरफ बनी सड़क पर पैदल चल रहे थे। जैकी ने पूछा----“विभा जी, क्या जरूरी है उस मकान में वही लोग हैं जिनकी हमें तलाश है?”

“कोई जरूरी नहीं है मगर....

“मगर?”

“फिलहाल उन्हीं लोगों के वहां होने के चांस ज्यादा हैं। दावे के साथ कह सकती हूँ---महिला या उसके पति का क्रिमिनल से कोई सम्बंध नहीं है। जिस अंदाज में मि० चैलेंज ने कागज पर लिखा हमें उनका फोन नम्बर मिला है वह अपने आप बता रहा है लिखने वाले के लिए वह टेम्परेरी इस्तेमाल का था क्योंकि न तो वह पेज टेलीफोन डायरेक्टरी का है और न ही नम्बर के आगे पीछे किसी का नाम लिखा है। परिचित के नम्बर को आदमी इस तरह नहीं बल्कि वाक्यांश नाम लिखकर उसके सामने लिखता है। ऐसे अंदाज में वे नम्बर लिखे जाते हैं जिनकी हमें एकाध बार इस्तेमाल करने के बाद भविष्य में कभी जरूरत पड़ने की संभावना नहीं होती। दूसरा प्वाइंट---विजली वाले वहां कल दोपहर से काम कर रहे हैं और वेद का अपहरण, ग्यारह के आस-पास हुआ। हालांकि ये इत्तफाक भी हो सकता है मगर ऐसी हर चीज को खंगालना इस वक्त हमारी इयूटी है।”

“विभा जी।” जैकी ने पूछा----“क्यों न मैं एम०डी०ए० फोन करके पूछूं कि थर्टी सिक्स बटा दू में उनके इलेक्ट्रिक डिपार्टमेंट का काम चल रहा है या नहीं?”

“गुड आइडिया। क्या तुम्हारे पास एम०डी०ए० का नम्बर है?”

“वन नाइन सेविन से ले लेता हूँ।” कहने के साथ उसने अपनी बेल्ट से सैल्यूलर निकाला और अंगुलियां तेजी से काम करने के बाद उत्साह से भरा बोला----“उनका कहना है, फेज दू के किसी भी मकान में कोई काम बाकी नहीं बचा है। सारा काम एक महीने पहले कम्प्लीट हो चुका है।”

गौतम कह उठा----“पक्का हो गया। मामला संदिग्ध है। जरूर ये मि० चैलेंज के साथी हैं। उन्होंने एम०डी०ए० के खाली पड़े मकान का इस्तेमाल किया और कॉलोनी में जो इक्का-दुक्का परिवार रह रहे हैं, उनमें प्रचार कर दिया कि एम०डी०ए० के आदमी हैं।”

“पिटू ने बताया वे चार थे! दो चले गये! दो वहीं हैं।”

मकान के सामने पहुंच चुकी विभा ने कहा----“मुमकिन है वेद भी यहीं हो।”



मेरा जी चाह खींचकर कहूँ---“हां विभा! मैं यहीं हूँ।”

मगर!

बोल न सका।

बोलने के प्रयास में मुंह से गू-गू की आवाज निकली।

उस आवाज में बाहर मौजूद विभा या किसी अन्य के कान तक पहुंचने का दम नहीं था।

मेरे मुंह में रुई टुंसी हुई थी।

होठों पर टेप चिपका था।

मुझे एक फोल्डिंग पलंग पर लिटाकर उसके साथ बांधा गया था।

हाथ-पांव ही नहीं सारा जिस्म रेशम की डोरी से बंधा था।

बाहर से बराबर उन लोगों की आवाज आ रही थी। उन आवाजों को मेरे अलावा वे दोनों भी सुन रहे थे जो इस वक्त कमरे में मौजूद थे। विभा एण्ड कम्पनी की आवाजें उनके होश उड़ाये हुए थीं। दोनों के हाथों में रिवाल्वर थे। बंद दरवाजे के बांये-बांये दीवार से पीठ टिकाये खड़े थे वे।

किसी भी खतरे से निपटने के लिए मुस्तैद।

और मैं विभा आदि को कमरे में मौजूद खतरे का इल्म कराना चाहता था, साथ ही चाहता था----अपनी मौजूदगी का एहसास कराना! सूझ न रहा था क्या करूं?

“यहां तो ताला लगा है।” आवाज जैकी की थी।

विभा ने कहा----“वे लोग चले गये लगते हैं।”

“मगर पिंटू के मुताबिक वे चार थे! गये केवल दो।” ये शब्द प्रिंसिपल ने कहे थे----“दो यहीं होने चाहिए थे। उन्हीं के साथ वेद जी भी होंगे।”

“वेद को लेकर दो बाद में निकल गये होंगे।” विभा ने कहा----“उन्हें जाते पिंटू देख न सका होगा।”

“इसका मतलब हम देर से पहुंचेंगे?”

मुझे लगा----ये लोग निराश होकर जाने वाले हैं।

कुछ और न सूझा तो पलंग पर उछलने कूदने की कोशिश करने लगा।

फ्लोरिंग पक्के फर्श पर सरका।

आवाज पैदा हुई।

ये तो नहीं कह सकता वह आवाज बाहर पहुंची या नहीं परन्तु कमरे में मौजूद दोनों व्यक्तियों के चेहरे पर भभका दिये उसने। उनमें से एक झपटकर मेरे करीब आया। रिवाल्वर मेरी कनपटी से सटाकर सर्प की मानिन्द फुफकारा----“ज्यादा चालाकी दिखाई तो भेजा उड़ा दूंगा।”

मैं जाम हो गया।

अब बाहर से कोई आवाज नहीं आ रही थी।

हम तीनों के कान बाहर ही लगे थे।

कार स्टार्ट होने की आवाज आई। उसके बाद कार जाने की आवाज।

उनके चेहरों पर राहत के भाव उभरे। मेरे दिलो-दिमाग पर निराशा छा गई।

मुझ पर रिवाल्वर ताने शख्स गुराया----“ज्यादा स्मार्ट बनने की कोशिश कर रहा था साले! जी चाहता है तेरी खोपड़ी में हवा के आवागमन के लिए रोशनदान बना दूं।”

“बाँस की तरफ से ऐसा करने की सख्त मनाही है।” दूसरा भी मेरे नजदीक आता बोला।

“यही तो मजदूरी है।” पहला कसमसाया।

“लेकिन इसके साथी यहाँ पहुँच कैसे गये?”

“खुदा जाने।”

तभी।

धाँप-धाँप!

दो गोलियाँ एक साथ चलीं।

फिजाँ में दोनों की चीख गूँजी और दोनों के रिवाल्वर दूर जा गिरे।

मैंने पुनः चीखना चाहा-----“व-विभा!”

मगर चीख न सका।

वह फ्लैट के इस ओर अंदर वाले दरवाजे के बाँचो-बीच खड़ी थी। गुलाबी होठों पर मुस्कान और हाथ में रिवाल्वर लिये। रिवाल्वर की नाल से अभी तक धुआँ निकल रहा था।

सफेद लिवास में माँ मरियम सी नजर आई मुझे।

दोनों गुण्डे उनकी तरफ फटी-फटी आंखों से देख रहे थे।

तभी भड़ाक की जोरदार आवाज के साथ एम०डी०ए० का शानदार दरवाजा चौखट सहित कमरे में आ गिरा। ताला ज्यों का त्यों लगा था। उसे एक ही धक्के में शहीद करने वाला जैकी था।

मीका अच्छा जानकर एक गुण्डे ने फर्श पर पड़े रिवाल्वर पर जम्प लगानी चाही।

विभा के रिवाल्वर ने एक बार फिर खाँसा।

गोली उसकी पिण्डली में लगी।

चीख के साथ त्यौराकर गिरा वह।

जैकी ने झपटकर अपना जूता उसकी छाती पर रख दिया।

विभा ने दूसरे से कहा-----“तुम भी द्राई मारो।”

उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

कमरे में गौतम, प्रिंसिपल और शगुन दाखिल हुए।

“पापा!” चीखता हुआ शगुन मुझसे आ लिपटा।

गौतम ने झपटकर दोनों गुग्गों के गिवाल्वर उठा लिये।

प्रिंसिपल मुझे खोलने के लिए लपका।

“टहरो!” विभा ने कहा।

प्रिंसिपल टिडका।

फिर वह मेरी तरफ देखकर शरारती अंदाज में मुस्कराई----“अच्छे लग रहे हो?”

दोनों ने मेरा चेहरा में कसमसा गया।

“क्या पोज है?” विभा मेरे नज़दीक आई। शगुन से बोली----“क्यों वेटे! पापा स्मार्ट लग रहे हैं न?”

उसे मूड में देखकर जैकी, गौतम और प्रिंसिपल के होठों पर मुस्कान उभर आई।

शगुन ने कहा----“आप मजाक कर रही हैं आंटी?”

“मजाक? और इसमें! भला देश के ऐसे महान डिटेक्टिव से कौन मजाक कर सकता है जो दुनिया के सबसे बड़े क्रिमिनल का पीछा करता बेहोश हुआ हो। घूम तो तुं वतन के इस लाडले को।” कहने के साथ उसने सचमुच मेरे मस्तक पर एक चुम्बन अंकित कर दिया।

मैं छटपटाया।

“गाना गाने के लिए फड़फड़ा रहा है बेचारा।” वह मेरे होठों से टेप और मुंह से रुई निकालती हुई बोली----“सबसे पहले चौंच ही खोलती हूँ इसकी!”

“व-विभा!” बोलने काबिल होते ही मैं बोला----“मुझे यकीन था तुम मुझे ढूँढ लोगी।”

उसने मुझे बच्चे की तरह पुचकारते हुए कहा----“और क्या यकीन था तुम्हें?”

“विभा स्लीज! मुझे खोलो।”

“खोल दो प्रिंसिपल साहब! काफी कष्ट झेल लिया मेरे दोस्त ने।” इधर मैं पलंग से उठा उधर गौतम ने कहा----“विभा जी, फायरों की आवाज ने कॉलोनी के सभी लोगों को बाहर निकाल दिया है।”

“आगे की कार्यवाई यहां सम्भव नहीं है जैकी।” विभा बोली----“थाने चलो।”

सब यही चाहते थे।

आदेश का पालन होने लगा।

कालोनी के लोग धीरे-धीरे सरकते थर्टी सिक्स बटा टू के बाहर इकट्ठा हो गये थे। पिंटू को खुद से लिपटाये पिंटू की मां ने कहा----“हे भगवान! मैंने तो इन्हें बुलाने अपने पिंटू को भेज दिया था। घर से फोन पर भी बात करा दी। अगर ये हमें ही....

मुस्कराती हुई विभा ने उसकी बात काटी----“वह सोचकर मत घबराइए जो नहीं हुआ।”

“विभा!” मैंने उसके कान में कहा----“थाने चलकर एक ऐसी बात बताऊंगा जिसे सुनकर तुम उछल पड़ोगी।”

उसने सवालिया नजरों से मेरी तरफ देखा।

वहां कुछ भी कहने का मौका न था।



दोनों गुण्डे हवालात में थे। हम सब जैकी के ऑफिस में।

जैकी ने जिद करके विभा को अपनी कुर्सी पर बैठाया था। स्वयं हमारे साथ मेज के इस तरफ बैठा। उसने विभा से पूछा----“गुण्डों से आप अपने तरीके से पूछताज करना चाहेंगी या हवालात में जाकर मैं अपना तरीका इस्तेमाल करूं?”

मैं बोल उठा----“उसकी जरूरत नहीं है। मैं उनसे ज्यादा जानता हूं।”

“क्या आप उनके बाकी दो साथियों के नाम पते भी जानते हैं?”

“वे खुद भी नहीं जानते।”

“मतलब?”

“ये जाल बड़ा गहरा था जैकी! मि० चैलेंज ने ये दो गुण्डे कहीं और से अरेंज किये थे----वे दो गुण्डे कहीं और से। सब किराये के हैं। इन दो को उन दोनों का और उन को इन दोनों का नाम पता नहीं मालूम। उन्हें यह भी नहीं पता कि उन्हें अरेंज करने वाला मि० चैलेंज था। ये उसे ‘वॉस’ कहते थे।”

“यानी आगे बढ़ने का रास्ता मिलने की उम्मीद नहीं है?”

“रास्ता क्यों नहीं मिलेगा?” मैंने अपने होठों पर भेदभरी मुस्कान बिखेरी----“जब उन्हें अरेंज करने वाला मेन मुजरिम यानी मि० चैलेंज यहां मौजूद है तो रास्ता छोड़ो, मंजिल भी मिलेगी।”

“य-यहां?” एक साथ सब चौंके----“मि० चैलेंज यहां मौजूद है?”

“वेशक!” मेरी मुस्कराहट गहरी हो गयी।

विभा कह उठी----“भारे सस्पेंस के अब तो दिमाग फटने वाला है याड़ी! उगल ही दो नाम।”

“ये सारा खेल प्रिंसिपल साहब खेल रहे हैं।”

“ह-हम?” बंसल उछल पड़ा।

चौंके सभी थे। विभा भी।

मैं दांत पीसकर कह उठा----“हां बंसल! तुम्हीं को कह रहा हूं। हालांकि मुझसे मिलते वक्त तुमने चेहरे को नकाव के पीछे छुपाने की भरसक चेष्टा की परन्तु बेवकूफी भरी कुछ ऐसी बातें कह गये जिनसे मैं तुम्हें पहचान गया।”

“य-यकीनन आपको गलतफहमी हुई है वेद जी।” वह बुरी तरह हकला रहा था----“व-विभा जी, सोचिए तो सही! मैं

लगातार आपके साथ हूँ।”

“यही तो खेल खेल रहे थे तुम। इधर विभा के साथ मुझे खोजने का नाटक, उधर चींगे और नकाब के पीछे खुद को छुपाकर मुझसे मिलना! दोनों जगह तुम थे।”

“अगर मैं मि० चैलेंज हूँ तो मेरे सामने उसका फोन कैसे आ गया? और विभा जी, क्या पी०सी०ओ० पर मुझे केविन में कागज प्लॉट करने का टाइम मिला था?”

“इन्हें भरमाने के लिए दोनों काम तुमने किराये के वैसे ही गुण्डे से कराये जैसे हवालात में बंद हैं।”

“अब----अब इसका तो मेरे पास कोई जवाब नहीं है।”

“जवाब होगा भी कैसे? मेरे पास तुम्हारे मि० चैलेंज होने का सुवृत्त जो है।”

“स-सुवृत्त? सुवृत्त है आपके पास?”

मेरे कुछ कहने से पहले विभा बोल उठी----“मैं समझ सकती हूँ वेद! कोई न कोई कारण जरूर है जो तुम इतनी बड़ी बात इतने विश्वासपूर्वक कह रहे हो। शुरू से आखिर तक बताओ----तुम्हारे साथ क्या हुआ? कैसे इनके चंगुल में फंसे? और वो कौन-सा सुवृत्त है जिसके बेस पर बंसल मि० चैलेंज सिद्ध होते हैं?”

“इमारत की चौथी मंजिल पर पहुंचते ही मेरे सिर पर किसी कठोर वस्तु का जोरदार प्रहार हुआ। मैंने लिखा बहुत है कि फलां करेक्टर की आंखों के सामने अतिशवाजी का नजारा चकरा उठा मगर मेरे साथ पहली बार ऐसा हुआ।” मैं कहता चला गया----“आंख खुलने पर मैंने खुद को थर्टी सिक्स बटा दू के कमरे में उसी पोजीशन में पाया जिसमें तुम लोगों को मिला था। वे दोनों गुण्डे पहरे पर थे जो इस वक्त हवालात में बंद हैं। हालांकि वे एक दूसरे का नाम लेकर बातें नहीं कर रहे थे मगर मैंने उनकी बातों से अंदाजा लगाया कि मेरा अपहरण किसी ने कराया है। उसके खास निर्देश थे----यदि मैं भागने की कोशिश करूँ तो अच्छी तरह मरम्मत कर दी जाये। परन्तु किसी भी हालत में जान से नहीं मारना है। ऐसे ही निर्देश दूसरी शिफ्ट के गुण्डों को थे। इन चारों का अरेंजमेंट केवल मुझे कैद में बनाये रखने के लिए किया गया था। मि० चैलेंज के निर्देश पर इनमें से एक सामने वाले मकान का फोन नम्बर ले आया था। मि० चैलेंज ने वह नम्बर अपनी पाकेट डायरी में नोट करते हुए कहा था----प्लान के मुताबिक तुम लोगों ने यहां खुद को एम०डी०ए० के कर्मचारी प्रचारित किया है। मुझे कोई निर्देश देना होगा तो इसी नंबर पर एम०डी०ए० का अफसर वनकर दूंगा। जिस वक्त उसका फोन आया, वह दोनों ग्रुप्स की ड्यूटी चेंज का टाइम था। इसलिए चारों मौजूद थे। फोन के बाद वे दोनों चले गये।”

“फोन पर मि० चैलेंज ने क्या निर्देश दिया था?”

“जिसने सामने वाले मकान में जाकर मि० चैलेंज से बात की, उसने वापस आकर बाकी तीन से कहा----बॉस का कहना है, जिन्दलपुरम से विभा जिन्दल नामक इसकी फ्रेंड आ चुकी है। सुना है----खोजबीन करने के मामले में उसे महारत हासिल है। उम्मीद तो नहीं है कि वह यहां पहुंच सकेगी। फिर भी, एक्स्ट्रा एलर्ट रहने की जरूरत है। इनमें से एक ने कहा----“तुम्हारी शिफ्ट खत्म हो चुकी है, हमारी ड्यूटी शुरू! तुम जाओ। एक लेडी से बॉस डरता होगा! हम नहीं। वह यहां पहुंच भी गयी तो बॉस ने केवल इसे न मारने का हुक्म दिया है, इसके दोस्तों को नहीं।”

“क्या मि० चैलेंज भी वहां आया था?”

“केवल एक बार! तभी तो मुझे मालूम है कि मेरा अपहरण मि० चैलेंज ने कराया था।”

“क्या बात की उसने?”

मैने प्रिंसिपल पर नजरें गड़ाये रखकर कहा----“वह जिस्म पर ढीला-ढाला सफेद चौगा, दस्ताने और रिवाक शू पहने हुए था। चेहरा काले नकाब से ढक रखा था। बाकी दो की शिफ्ट में आया था वह। आते ही उन्हें बाहर भेज दिया ताकि हमारी बातें न सुन सके और बोला----‘कहिए लेखक महोदय, मैंने तुम्हारी पीठ पर अपना मैसेज चिपका दिया और तुम्हें इल्म तक न हो सका----मेरी कारीगरी को मानते हो या नहीं?’ बोलने के प्रयास में मैं फड़फड़ाया। अपने मुंह से टेप हटाने का इशारा किया, परन्तु उसने ऐसी कोई कोशिश नहीं की। दरअसल उसने सवाल जरूर किया मगर जवाब का इच्छुक नहीं था। अपनी कामयाबियों पर खुद ही जश्न सा मना रहा था! वह बोला----‘मैंने सत्या की हत्या की! चन्द्रमोहन को मार डाला। बाल बांका किया जाना तो दूर, मुझ पर अब तक किसी का शक भी नहीं पहुंच सका। तुम्हें तो खैर मैं कुछ समझता ही नहीं, लेखक हो----कागजों पर भले ही चाहे जितने दांव-पेंच इस्तेमाल कर लो परन्तु असल घटनाओं के हत्यारे को सूंघ तक नहीं सकते। लेकिन वो जैकी----खुद को थर्ड डिग्री का मास्टर कहने वाला बेवकूफ----सुना है, रिकार्ड बहुत शानदार है उसका। अपने तरीके से अनेक जटिल केस सॉल्व किये हैं। कम से कम मैंने तो उसे मूर्ख ही पाया।’

कहने के साथ वह मेरे पलंग की परि क्रमा कर रहा था। ठिठककर बोला----“अब मैं तुम्हें एक राज की बात बताता हूँ----चन्द्रमोहन की हत्या मैंने प्रिंसिपल के बल्लम से की! यह राज न अब तक तुम जान सके न जैकी। ऐसा मैंने उसे फंसाने के लिए किया। लेकिन सामने जब बेवकूफ इन्वेस्टिगेटर हो तो ऐसी चालें कामयाब नहीं होतीं। कामयाब तो तब होतीं जब इस राज तक पहुंचते और यही वह राज था जिसे जानने के लिए तुम मरे जा रहे थे। जो मिसेज वंसल ने वंसल के कान में कहा था। दरअसल मिसेज वंसल को उसी क्षण पता लगा था कि उनके दो पुत्रैनी बल्लमों में से एक गायब है। चन्द्रमोहन का कत्ल बल्लम से हुआ है, यह बात उन्हें पहले से मालूम थी। बल्लम का गायब होना उनके लिए इतनी विस्फोटक बात थी कि वे तुम्हारे वहां से चले जाने तक का इंतजार न कर सकीं। ड्राइंगरूम में पहुंचीं। कहते-कहते अचानक ख्याल आया----शायद इस बात का जिक्र किसी बाहरी व्यक्ति के सामने नहीं किया जाना चाहिए। और तब.... उन्होंने यह खबर वंसल के कान में कही। वंसल के होश उड़ने लगे। उड़े। इधर मारे जिज्ञासा के तुम्हारी हालत बैरंग हो गयी। तुमने पूछा----वंसल ने नहीं बताया। इतना बड़ा प्वाइंट वह उस शख्स के हाथ में दे भी कैसे सकता था जो एक सैकिण्ड पहले उसे हत्यारा कह रहा था। तुममें गर्मागर्मी हुई। उसके बाद तुमने उसका पीछा किया और भीका लगते ही मैंने तुम्हारी खोपड़ी पर चोट की।’

कहने के बाद मैं चुप हो गया।

वे सब भी चुप थे! विभा भी!

“क्या तुम अब भी नहीं समझीं विभा कि मेरे सामने नकाब पहनकर खड़ा वह शख्स सिर्फ और सिर्फ वंसल था?”

“नहीं।” विभा ने कहा।

“हद हो गयी विभा! कम से कम तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी मुझे। दावे से कह सकता हूँ इस बार तुम भी चूक रही हो।

सोचा था----जितनी बातें बता चुका हूँ उन्हें सुनते ही मेरी तरह तुम भी समझ जाओगी कि मेरे सामने मि० चैलेंज के रूप में खड़ा शख्स मि० वंसल थे।”

चौकते हुए जैकी ने पूछा----“आप मि० चैलेंज के मुंह से निकली वह बात बता चुके हैं?”

“यकीनन बता चुका हूँ।” मेरे होठों पर उन सबको छकाने वाली मुस्कान थी।

“कमाल है! मैं तो ऐसी कोई बात नहीं पकड़ पाया।” “धुमाओ दिमाग! सोचो! कबो तो वे बातें दोहराऊं जो उस वक्त मि० चैलेंज ने कही थीं?”

“मुझे हर बात याद है।” गौतम ने कहा----“मगर कोई ऐसी नहीं लग रही जिससे जाना जा सके कि उस वक्त आपके सामने खड़ा नकाबपोश वंसल साहब थे।”

“क्यों बंसल साहब?” मैंने सीधे प्रिंसिपल से कहा----“क्या आपको अब भी इल्म नहीं हो रहा, उस वक्त आप क्या लूज टॉक कर गये थे?”

“पता नहीं आप मेरे पीछे क्यों पड़ गये हैं? जितनी बातें अब तक बताई हैं, मेरे खयाल से तो उन सबसे एक ही बात ध्वनित होती है----यह कि वह जो भी था, मुझे आपके शक के दायरे में फंसाना चाहता था। वकौल आपके, उसने साफ-साफ कहा, मैंने बंसल के बल्लम से चन्द्रमोहन की हत्या इसलिए की ताकि आप और जैकी प्रिंसिपल की गर्दन पकड़ लें। इसके बावजूद यदि आप कहते हैं कि वह हम थे जो वजह समझ से बाहर है।”

“यह सब तुम कह ही इसलिए रहे थे ताकि मेरे जहन में यह भ्रम भर सको कि वह तुम नहीं कोई ऐसा शख्स है जो तुम्हें फंसाना चाहता है। परन्तु चूक होशियार से होशियार आदमी से भी आखिर हो ही जाती है। जाहिर है तुम अब तक नहीं समझ सके उस वक्त तुमसे क्या चूक हुई? आश्चर्य केवल ये है विभा कि उस चूक को तुम भी नहीं पकड़ पा रहें।”

“पता नहीं हम सब कहां चूक रहे हैं?” जैकी ने कहा----“अब तो बता ही दीजिए वेद जी।”

“नहीं! अभी नहीं।” विभा मुझसे कह रही थी----“बात पूरी करो वेद! उसके बाद मि० चैलेंज ने तुमसे क्या कहा?”

“बोला----सुना है, अखबार में तुम्हारे अपहरण की खबर पढ़कर जिन्दलपुरम से विभा जिन्दल आई है। तुम्हारी दोस्त है वो! अब वो तुम्हारी खोजबीन करेगी। ‘साढ़े तीन घंटे’ और ‘बीवी का नशा’ मैंने भी पढ़े हैं। दोनों उपन्यासों में विभा जिन्दल के बारे में काफी डींग मारी है। इस बहाने पता लग जायेगा वह कितनी ऊंची चीज है? और सच में यदि वह उतनी ही ब्रिलियन्ट है जितना तुमने दर्शाया था तो मजा आ जायेगा इस टकराव में! तुमसे और जैकी से उलझने में रस नहीं आ रहा। अगर वो विभा जिन्दल है तो मैं भी मि० चैलेंज हूँ। पता लग जायेगा उसे, कि छोटे-छोटे अपराधियों को खोज निकालने और मि० चैलेंज तक पहुंचने में कितना फर्क है? आने दो। दावा है मेरा----उस वक्त तक मुझे कोई नहीं पहचान सकता जब तक अपने हाथों से नकाब न नोच लूं।”

“उसके बाद?”

“अंत में यह कहकर चला गया कि दुनिया की कोई ताकत मुझे मेरे इरादों में कामयाब होने से नहीं रोक सकती।”

“तुम्हारे खयाल से इन बातों के पीछे उसका मकसद क्या था?”

एक बार फिर मैंने प्रिंसिपल को घूरा। कहा----“मेरे जहन में यह ठूसना कि मि० चैलेंज और भले ही चाहे जो हो, मगर प्रिंसिपल नहीं है।”

“और तुम फिर भी समझ गये वह प्रिंसिपल है?”

“इसकी चूक के कारण।”

“अब तुम्हें उस चूक के बारे में बता देना चाहिए।”

मैंने धमाका करने वाले अंदाज में कहा----“उसे कैसे मालूम था मिसेज बंसल ने बंसल के कान में क्या कहा?”

जैकी और गौतम उछल पड़े।

गौतम कह उठा----“वाकई!”

जैकी के मुंह से निकला----“सोचने वाला बात है।”

“म-मुझे नहीं पता।” बंसल की हालत वैरंग।

“वहां केवल मैं, तुम और तुम्हारी मिसेज थीं मि० बंसल!” मैं एक-एक शब्द पर जोर देता कहता चला गया----“फिर वो बात मि० चैलेंज को कैसे पता लग गयी जो वहां रहने के बावजूद मैं नहीं सुन सका था? इतना ही नहीं, मि० चैलेंज ने उस वक्त की एक-एक घटना का वर्णन चश्मदीद गवाह की तरह किया। सवाल उठता है----कैसे? जवाब साफ है----वो तुम थे। तुम्हारे अलावा वहां की घटनाओं का ज्यों का त्यों जिक्र और कर भी कौन सकता है? दरअसल उस वक्त तुम पर एक ही धुन सवार थी----यह कि खुद को मेरे शक के दायरे से कैसे दूर रखो! उसी धुन में तुमने बल्लम के बारे में बताया। तुम भूल गये बल्कि अब तक भी इल्म नहीं था कि चूक कहां हो गयी? मैं तुमसे पूछता हूँ विभा----जो बात केवल इसे और इसकी मिसेज को पता थी वह मि० चैलेंज ने कैसे कह दी? अगर वह इसके अलावा कोई और था तो यह बात कैसे पता थी उसे?”

विभा बोली----“प्वाइंट में दम है मिस्टर बंसल! जवाब दो।”

“म-मुझे नहीं पता! मुझे कुछ नहीं पता विभा जी!” बंसल बुरी तरह रो पड़ा----“बस इतना जानता हूँ मैं मि० चैलेंज नहीं हूँ।”

मैंने ऑफिस में मौजूद हर शख्स की तरफ कामयाबी से परिपूर्ण मुस्कान के साथ देखा। कुछ ऐसे अंदाज में जैसे अखाड़े में अपने प्रतिद्वन्दि को धित करने के बाद जीतने वाला पहलवान दर्शकों की तरफ देखता है। सभी मेरे तर्क से सहमत नजर आ रहे थे। पहली बार मैंने विभा पर जीत दर्ज की थी। कह उठा----“है कोई ऐसा जो बता सके, मि० चैलेंज अगर कोई और था तो वे बातें उसे कहां से पता लग गयीं?”

“जैसे मुझे पता लग गई।” विभा ने कहा।

“तुम्हें?” मैं सकपकाया।

“पूछो बंसल से! जैकी से भी पूछ सकते हो और मास्टर शगुन भी बतायेगा। बताओ बेटे, अपने पापा को बताओ वे बातें मुझे पता थीं या नहीं?”

“किससे पता लगीं तुम्हें?”

“बंसल के नौकर से?”

मैं अवाक रह गया। पूछा----“क्या मिस्टर चैलेंज को भी उसी से....

“नहीं! मि० चैलेंज को ये बातें रामदीन से पता नहीं लगी थीं।”

“फिर किससे पता लगीं?”

“मालूम नहीं।”

“मतलब?”

“जिस तरह मैंने रामदीन के रास्ते से मालूम कर लीं, मुमकिन है मि० चैलेंज ने किसी अन्य माध्यम से जान ली हों।”

“सवाल उठता है----किस माध्यम से?”

“अगर आज हमारे पास इस सवाल का जवाब नहीं है तो मतलब ये नहीं हुआ कि प्रिंसिपल को ही मि० चैलेंज मान लें। अपना उदाहरण देने के पीछे मकसद केवल यह समझाना है, वह कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे मालूम ही न किया जा सके।”

“लगता है विभा, तुम केवल वहस करने के लिए वहस कर रही हो।”

“बात वहस की नहीं वेद, गुत्थियों को समझने की है।” विभा कहती चली गयी----“हालांकि तारीफ करनी होगी। तुमने ऐसा प्वाइंट पकड़ा जिसे मैं नहीं पकड़ सकी। और यकीनन ये प्वाइंट ऐसा है जिसके बाद यह सोचने की गुंजाइश नहीं रह जाती कि मि० चैलेंज प्रिंसिपल के अलावा कोई और होगा। मैं खुले दिल से वधाई देती हूँ----उसे कुचूल करो! लेकिन....

“लेकिन?” सभी उलझ गये।

“जब उसने जैक के मोबाइल पर फोन किया तब मैंने मि० चैलेंज को कच्चा खिलाड़ी कहा था, मैं अपने शब्द वापस लेती हूँ।”

“मतलब?”

“मि० चैलेंज जो भी है, बहुत पक्का और घुटा हुआ खिलाड़ी है।”

“तुम तो उसकी तारीफ करने लगी।”

“दुश्मन भी अगर तारीफ का काम करे तो की जानी चाहिए।”

“ऐसा कौन-सा काम कर दिया उसने?”

“दिमाग घुमाकर रख दिये हैं हम सबके।” विभा कह उठी----“ये छोटा काम नहीं है। अपनी बातों के शुरू में तुमने कहा था----‘ये जाल बड़ा गहरा है।’ उस वक्त मैं तुम्हारे वाक्य से सहमत नहीं थी, परन्तु इस वक्त सहमत होना पड़ रहा है। वाकई मि० चैलेंज ने इतना गहरा जाल बुना जिसमें हम फंसकर रह गये हैं।”

“मैं समझ नहीं पा रहा विभा, तुम कहना क्या चाहती हो?”

“यह पेंच शायद तब ठीक से समझ में आयेगा जब दिमाग से यह निकाल दो कि प्रिंसिपल मि० चैलेंज था। समझ लो वह कोई और था----उसका भक्तसद था, प्रिंसिपल को तुम्हारी नजर में संदिग्ध बनाना। सोचो----यदि यह काम वह सीधे-सीधे रास्ते से करता अर्थात् ऐसी कोई हरकत या बात करता, जिससे लगता, वह प्रिंसिपल है तो तुम पर क्या प्रतिक्रिया होती?”

“मैं समझ जाता वह कोई भी है मगर प्रिंसिपल नहीं है। प्रिंसिपल होता तो ऐसी कोई हरकत करता ही नहीं जिससे उसका राज उजागर हो जाये।”

“दिमाग रखने वाले हर शख्स पर यही प्रतिक्रिया होगी----इस बात को मि० चैलेंज अच्छी तरह समझता है। उसने तुम्हारे दिमाग को रीढ़ किया और उसके अनुरूप चाल चली। वह समझ चुका था जो तुम्हें समझाने की कोशिश की जायेगी तुम उसका उल्टा समझोगे इसलिए अपनी बातों से यह समझाने की कोशिश की कि वह प्रिंसिपल नहीं वल्कि उसे फंसाने का इच्छुक कोई शख्स है और मुंह से ऐसी बात निकाल दी जिससे साबित हो कि वह प्रिंसिपल है तथा वो बात तुम्हें उसकी चूक लगे। तुम फौरन समझ गये----यह शख्स है प्रिंसिपल ही और ऐसी बातें इसलिए कर रहा है ताकि मैं इसे प्रिंसिपल न समझूँ। तुम्हें इसी नतीजे पर पहुंचाना उसका लक्ष्य था।”

“यानी मैं बुरी तरह उसके खेल में फंस गया।”

“तुम्हें बुरा न लगे तो ऐसा भी कहा जा सकता है।”

“लेकिन ऐसा तभी हो सकता है विभा जब उसे ड्राइंगरूम की बातें कहीं और से पता लगी हों। ये बात मुमकिन नहीं तो

वेइन्तिहा कठिन जरूर है। जब तक हमारे पास इस सवाल का जवाब नहीं है तब तक क्या तुम्हारी बातों से सिद्ध नहीं होता कि तुम अंधी होकर बंसल का पक्ष ले रही हो?"

"नहीं! ऐसा नहीं है। बंसल को मि० चैलेंज न मानने के मेरे पास अनेक कारण हैं।"

मैंने व्यंग सा किया----"एकत्रय का जिक्र तो करो।"

"मेरे चन्द सवालों का जवाब दो।" विभा ने कहा----"तुम्हारे ख्याल से प्रिंसिपल को अपना पीछा किये जाने के बारे में मालूम था या नहीं?"

"हैन्डरेड परसेन्ट मालूम था, तभी तो मुझे बेहोश किया।"

"क्या जरूरत थी बेहोश करने की?"

"मतलब?"

"शीशे की तरह साफ है वेद! प्रिंसिपल को तुम्हें बेहोश करने की कोई जरूरत नहीं थी। बल्कि इसे तो चाहिए था कि अंजान बनकर तुम्हें अपने पीछे आने देता। अपनी और गौतम की बातें सुनने देता। सोचता----वे बातें सुनकर तुम्हारा शक खुद ही दूर हो जायेगा। खुद सोचो, अगर तुमने गौतम और प्रिंसिपल की बातें सुन ली होतीं----जान लिया होता कि यह हत्यारा नहीं बल्कि बल्लम की वजह से घबराया हुआ है और गौतम के पास मदद के लिए आया है तो क्या उसके बाद भी इसके पीछे पड़े रहते?"

"नहीं।" मुझे कहना पड़ा।

"इति सिद्धम्।" कहकर विभा मुस्कराई।

"लेकिन विभा, क्या जरूरी है उस वक्त ये इस एंगिल से सोच पाया या नहीं?"

"अपने पक्ष में हर शख्स चौबीस घंटे उसी एंगिल से सोचता है जो उसे सूट कर सकता हो।" विभा बगैर रुके कहती चली गयी----"जैसा कि तुमने कहा----अपहरण के पीछे प्रिंसिपल का उद्देश्य तुम्हारी नजर में खुद को बेगुनाह साबित करना था। तो मेरे दोस्त, इसके लिए इसे इतना प्रपंच रचने की जरूरत नहीं थी। अंजान बना रहकर तुम्हें अपनी और गौतम की बातें सुनाता और तुम्हारी गुड़ बुक में आकर मस्ती मारता।"

"दूसरी वजह?"

"तुमने खुद बताया----किराये के गुण्डे इसे 'बॉस' कह रहे थे। उन्हें नहीं मालूम था यह वही मि० चैलेंज है जिसका जिक्र कॉलिज की घटनाओं के सिलसिले में अखबार में आ चुका है। तुमसे बात करते वक्त भी उसने दोनों गुण्डों को बाहर भेज दिया था। जो शख्स इतना पर्दा रख रहा था, वह न किसी और को मि० चैलेंज के नाम से जैकी के मोबाइल पर फोन करने का काम सौंप सकता है, न पी०सी०ओ० में संदेश छोड़ने का काम करा सकता है। तीसरी बात----सामने का नम्बर अपनी नोट बुक में नोट करके जेब में रखते मि० चैलेंज को तुमने अपनी आंखों से देखा था। पी०सी०ओ० में हमें उसी नोट बुक का नीचे वाला कागज मिला। स्पष्ट है----वह कागज वहां उसी ने छोड़ा जिसने तुमसे बात की और प्रिंसिपल साहब वह इसलिए नहीं हो सकते क्योंकि जब फोन आया तो ये हमारी बगल वाली कुर्सी पर बैठे थे। कहो तो चौथी बात भी बताऊं?"

"बता दो।"

"सीधी और सिम्पल बात! इन्हें चन्द्रमोहन की हत्या अपने बल्लम से करने की जरूरत नहीं थी। यह देवकूपी अगर इनसे हो

भी गयी थी तो बल्लम गायब होने के बारे में सुनकर उतनी बुरी तरह कभी न चौंकते जितनी बुरी तरह चौंके और यदि वह चौंकना नकली था तो मदद के लिए गीतम के ऑफिस में कभी न जाते।”

“विभा!” मुझे कहना पड़ा----“जब तुम किसी प्वाइंट की धज्जियां उड़ाती हो तो उड़ाती ही चली जाती हो। तुम्हारे पास इतने तर्क होते हैं कि सामने वाला टहर नहीं पाता।”

“ये सारे तर्क मेरे दिमाग में शुरू से थे। इसलिए तुम्हारे बार-बार कहने के बावजूद सहमत नहीं थी।”

“तो नतीजा यह निकला----वह कोई और है।”

“यकीनन।”

“कौन हो सकता है? क्या इस पर भी रोशनी डाल सकती हो?”

“सारी बातों पर यहीं रोशनी मत डलवाओ। टार्च के सैल लीक हो चुके हैं।” विभा ने मस्ती के मूड में आते हुए कहा----“घर चलो! मधु बहन का ब्लड प्रेशर बढ़ रहा होगा।”

हम उठ खड़े हुए। कम से कम उस वक्त मैंने ख्याल तक में नहीं सोचा था कि अभी हमारे घर पहुंचने का मुहूर्त नहीं आया है। कॉलिज में दिमागों का फ्यूज उड़ा देने वाली एक जबरदस्त घटना घट चुकी थी।



मेरे अपहरण को लेकर कॉलिज में भी कम हंगामा नहीं था। लगभग सभी प्रोफेसर और स्टूडेंट्स उद्वेलित थे।

राजेश, दीपा, एकता, ऐरिक और लविन्द्र जैसे लोग मेरे घर भी पहुंचे।

राजेश इस वक्त अपने बाकी दोस्तों को वहीं का हाल बता रहा था----“विभा जिन्दल मेरे सामने पहुंच गयी थी। क्या लेडी है! देखते ही मन में श्रद्धा जागती है। वेद जी की पत्नी तो उनसे लिपटकर रोने लगी। विभा ने कहा----‘कमाल है मधु बहन! मैं तुम्हारे लिए खुश-खबरी लेकर आई और तुम मुंह लटकाये खड़ी हो!’ ”

रणवीर नामक स्टूडेंट ने पूछा----“खुशखबरी कैसी?”

“कहने लगी----‘यूं समझो कि मैं वेद को ढूंढ चुकी हूं।’ ”

“क-क्या?” उसके चारों तरफ खड़े स्टूडेंट्स के मुंह खुले के खुले रह गये।

“मैं तो क्या----कोई भी उनकी बात का अर्थ नहीं समझ पाया। ऐसी बातें कर रही थीं जैसे पहेलियां बुझा रही हों।”

“कुछ देर बाद इंस्पेक्टर से उस इमारत की शॉप्स और ऑफिस की लिस्ट बनाने को कहने लगीं जिसके बाहर वेद जी की गाड़ी खड़ी मिली थी।” दीपा ने कहा----“और फिर जैकी को लेकर चली गई।”

“कहां?” मुक्ता ने पूछा।

“ये तो साथ जाने वाले इंस्पेक्टर को भी नहीं पता था।” एकता बोली।

“लुक तो ऐसा देकर गई थीं जैसे वेद जी को साथ लेकर ही घर में घुसेंगी।” दीपा कहती चली गयी----“दूसरे लोग और वेद

जी की मिसेज भी काफी आश्वस्त नजर आने लगी थीं। इन्तजार में हम काफी देर रुके भी लेकिन जब नहीं आइ तो वापस आ गये।”

संजय ने सवाल उठाया-----“कहां गये होंगे वे लोग?”

अचानक अल्लारक्खा बोला-----“मैं बता सकता हूँ।”

“तू-तू?” सवने चौककर अल्लारक्खा की तरफ देखा।

“हां... मैं।” उसने साना चौड़ा लिया।

“तू कैसे बता सकता है?”

उसने अपना कॉलर खड़ा करते हुए कहा-----“बिमा जिन्दल से बड़ा डिटेक्टिव जो हूं मैं!”

“ये आया किलो का कान पर पड़ा तो सारी जासूसी झड़ जायेगी।” रमेश ने अपना हाथ दिखाते हुए पूछा-----“जल्दी चक! कैसे पता?”

“इन चक्षुओं से देखा था।” उसने आंखें मटकाइ।

“कहां?”

“यहीं।”

“यहीं कहां?”

“अवे कालिज में! और कहां!”

“यहां? यहां आये थे वे?”

“हन्डरेड परसेन्ट।”

“किससे मिले?”

“प्रिंसिपल से।”

“प्रिंसिपल से?”

“और क्या तुझसे मिलते?”

“लेकिन प्रिंसिपल से क्यों मिले?”

“जी चाहता है न बताऊं! बहरहाल जबरदस्त इन्फार्मेशन है मेरे पास। मगर सोचता हूँ-----गैर तो हो नहीं तुम लोग। दोस्त हो अपने, क्यों न बता ही दूँ!”

“बताता है या दूँ एक हाथ?”

“बताता हूँ! बताता हूँ यार।” एकाएक वह धमाका करने वाली स्टाइल में बोला-----“तुम लोग तो वेद जी के घर गये हुए थे।

में देवदास बना ग्राउण्ड में एक पेड़ के नीचे बैठा था।”

“फिर?”

“फिर....।” कहते-कहते उसकी नजर गर्ल्स हॉस्टल की तरफ अटक गई----“शोला आ रहा है।”

एक साथ सबने उधर देखा।

गर्ल्स हॉस्टल से निकलकर हिमानी आ रही थी।

ऊंची ऐड़ी की सैंडल! सफेद टी शर्ट और जांघों तक को नुमाया करने वाली सुर्ख स्कर्ट पहने हुए थी वह। बालों की दो छोटी-छोटी चोटियां बनाये, उनमें सुर्ख रंग के रिवन लगाये हुए थी।

“शर्म नहीं आती तुझे।” एकता ने कहा----“मैडम को शोला कहता है।”

“मैडम हो या आंटी! शोला है तो शोला ही कहा जायेगा।” संजय कह उठा----“देखो तो! बालों को कैसे गुंथकर दो चोटियां बनाई हैं। कसम से----तुम सबसे छोटी लगती है।”

“ब्रा तो जैसे मैडम पर है ही नहीं।” रणवीर ने कहा।

“धुप!” दीपा ने घूंसा ताना----“सीमा से बाहर निकला तो नाक तोड़ दूंगी।”

“सीमा से बाहर मैं हूं ही कब?” उसने सीमा नाम की लड़की की तरफ देखकर आंख मारी।

“तुम! और मेरे लिए?” सीमा ने जीभ निकाल कर चिढ़ाया----“ढेंगे पर!”

संजय बोला----“सीटी वजाने को दिल कर रहा है यार।”

“वजाकर देख! वह तेरा वाजा बजा देगी।”

“अब हम भी क्या करें?” राजेश बड़बड़ाया----“वो कपड़े ही ऐसे पहनती है।”

“सत्या मैडम ने कितनी बार रोका मगर ये नहीं मानी।”

तभी, ब्याज हॉस्टल से ऐरिक निकलकर इस तरफ बढ़ता नजर आया। वह अपना परम्परागत लिबास अर्थात् धोती कुर्ता पहने हुए थे। लगभग भागने की सी अवस्था में हिमानी के पीछे लपक रहा था वह।

“लो!” दीपा कह उठी----“मैडम के आशिक भी निकल पड़े।”

“इसे पता कैसे लग जाता है कि हिमानी मैडम कब हॉस्टल से बाहर निकली?”

“तूने नहीं देखा?” संजय ने कहा----“मैंने देखा है! दोनों के कमरों की खिड़की आमने-सामने है। देवनागरी लिपि की नजर हमेशा शोले की खिड़की पर टिकी रहती है। खाने-पीने से लेकर शेष तक बनाने का काम वहीं होता है। इसका बस चले तो कपाट भी वहीं बनवा ले।”

“सुनो कोमलांगनी।” ऐरिक ने पीछे से हिमानी को आवाज लगाई----“सुनो!”

हिमानी अपनी सैंडिल्स पर धूमि।

ऐरिक पर नजर पड़ते ही मुस्कराई और फिर, थोड़ी उचकती सी, बड़ी अदा के साथ वापस पलट कर स्टूडेंट की तरफ बढ़ गई। किसी को नया कॉमेन्ट करने का मौका नहीं मिला। वह नजदीक आ गयी थी। चेहरा मेकअप से पुता पड़ा था।

होटों पर लगी थी गहरे सुर्ख रंग की लिपस्टिक।

“हेलो एवरीवडी।” वह अपनी आदतानुसार बार-बार होटों पर जीभ फेरती बोली।

सबने एक साथ कहा----“गुड आफ्टर नून मैडम।”

“यहां क्या कर रहे हैं आप लोग?” उसने इटलाते हुए पूछा।

अल्लारक्खा एकटक उसे देखे जा रहा था।

एकता ने जोर से उसकी पीठ पर चुटकी भरी।

“ऊई।” अल्लारक्खा चिहुंका।

“क्या हुआ?” हिमानी ने पूछा।

“अभी कुछ नहीं हुआ। नौ महीने बाद होगा।”

“दुष्ट!” नजदीक आ चुके ऐरिक ने डांटा----“छियालिसवीं बार बता रहा हूं तुझे। हमें सर नहीं, अध्यापक कहा कर! देवनागरी लिपी का पठन-पाठन करते हैं हम।”

“हाँय!” हिमानी ने ऐरिक की तरफ नाखून पॉलिश से पुती अंगुलियां हिलाइ ऐरिक ने भी कहा----“हाय।”

“सर!” कई लड़के कह उठे----“आपने इंग्लिश बोली?”

“अंग्रेजी? और हमने? कब? कहाँ? कैसे?”

“अभी-अभी ‘हाय’ कहा।”

“धत्त! कम्बख्तों! हमने अंग्रेजी वाला नहीं देवनागरी लिपी वाला हाय बोला है।”

“हिन्दी वाला हाय? ये क्या बोला जाता है?”

“जब कोई ऐसी वस्तु परिलक्षित हो जिसे प्राप्त करना कठिन हो तो स्वयं हिन्दी वाली हाय विस्फुटित होती है।”

“ऐसी क्या चीज देख ली आपने?”

ऐरिक ने अपने गांधी चश्मों के पीछे से लार टपकाने वाले अंदाज में हिमानी को निहारा, बोला----“छदेश्वरी! बालक नटखट हैं। शरारत की मुद्रा में प्रतीत होते हैं। वैसे भी, इनके समक्ष प्रेमालाप करना उचित नहीं। क्यों न हम अल्पभोजनालय के लिए प्रस्थान करें?”

एक लड़के ने कहा----“कैंटीन बंद है गुरु जी।”

“क्षमा करें गुरुदेव!” राजेश बोला----“हम एक आवश्यक विषय पर वार्तारत थे।”

“बहुत सन्दर! अति सुन्दर।” ऐरिक ने कहा----“हम तुमसे प्रसन्न ही इसलिए रहते हैं राजेश तुम हमेशा देवनागरी लिपी में वार्ता करते हो। बहरहाल, किस विषय पर वार्ता कर रहे थे तुम लोग?”

“हां बे।” राजेश ने अल्लारक्खा से कहा----“तू पेड़ के नीचे देवदास बना बैठा था! उसके बाद?”

“विभा जिन्दल की चमचमाती गाड़ी आई और सीधी प्रिंसिपल के बंगले की तरफ चली गई। मैंने उसमें बैठे इंस्पेक्टर को देख लिया था। लगा----कुछ गड़बड़ है। उठा, और बंगले की तरफ लपक लिया। बाकी सब अंदर जा चुके थे, शोफर गाड़ी के बाहर खड़ा था। मैंने खुद को अशोक के पेड़ के साथ चिपका लिया। अन्दर तो खुदा जाने क्या खिचड़ी पक रही थी। मगर कुछ देर बाद जो सीन देखा, उसे देखकर फरिश्ते कूच कर गये मेरे।”

“ऐसा क्या देखा तुमने?” हिमानी ने अपने होठों पर जीभ फेरी।

“चोरों की तरह चारों तरफ देखते शोफर ने डिक्की खोली। उसमें से एक वेहोश जिस्म निकालकर कंधे पर डाला।”

“माई गॉड!” हिमानी ने फिर होठों पर जीभ फेरते हुए पूछा----“किसका जिस्म था वह?”

“प्रिंसिपल के नौकर रामदीन का।”

“हे भगवान!” दीपा कह उठी----“उसके बाद क्या हुआ?”

“शोफर ने डिक्की बंद की।” अल्लारक्खा की आवाज किसी हॉरर फिल्म के करेक्टर जैसी हो गयी----“रामदीन को कंधे पर लादे गाड़ी का पिछला दरवाजा खोला। एक बल्लम बाहर निकला।”

“बल्लम?” चीख सी निकल गई सबके मुंह से।

“हां।”

ऐरिक ने पूछा----“क्या वह वही बल्लम था जिससे चन्द्रमोहन पर आघात किया गया?”

“पता नहीं वही था या कोई और लेकिन था वैसा ही। दोनों चीजें लिए शोफर दबे पांव बंगले के पीछे चला गया।”

“तुमने उसे फालो नहीं किया?”

अल्लारक्खा के जवाब से पहले हिमानी ने कहा----“उफ्फ! मुझे गर्मी लग रही है।”

“प्लीज मैडम!” राजेश झुंझला सा उठा----“अल्लारक्खा को बात पूरी करने दो।”

“अरे!” हिमानी की तरफ देखते हुए अल्लारक्खा के मुंह से निकला----“आपके होठों पर क्या हुआ मैडम?”

सबने चौंककर हिमानी की तरफ देखा और उछल पड़े।

उसके होठों पर मोटे-माटे फफोले नजर आने लगे थे। बुरी तरह बेचैन लग रही थी वह। बार-बार अपनी जीभ से अपने होठों के फफोलों को टटोलती चीखी----“ये क्या हो रहा है मुझे? इतनी गर्मी क्यों लग रही है? उफ्फ! मैं जल रही हूं....

एक मोटा फफोला उसके गाल पर उभर आया।

देखने वालों के होश फाख्ता!

ऐरिक चीखा----“क्या हुआ महोदया? ये फफोले कैसे हैं?”

हिमानी पागलों की तरफ अपने बाल नीचने लगी।

उसके चेहरे पर ही नहीं, हाथ-पैरों पर भी फफोले नजर आने लगे थे।

राजेश ने झपटकर उसके दोनों कंधे पकड़े। दहाड़ा----“क्या हुआ मैडम? क्या हुआ? बोलो! ये क्या हो रहा है आपको?”

वह अपने कपड़े फाड़ने लगी।

वक्षस्थल नग्न हो गया।

वहां भी फफोले नजर आ रहे थे।

टाक वैसे जैसे किसी के जिस्म पर खीलता पानी गिरने पर पड़ जाते हैं।

कुछ फफोले बन चुके थे। कुछ बन रहे थे।

देखने वाले अपनी आंखों से बचते हुए देख रहे थे उन्हें।

चीखती-चिल्लाती हिमानी ने स्कर्ट तक टुकड़े-टुकड़े कर डाली।

अब वह जन्मजात नग्न थी।

जिस्म का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जहां फफोला नजर न आ रहा हो।

डरे, सहमे, चकित और हतप्रभ स्टूडेन्ट्स उसके चारों तरफ वृत्त सा बनाये चीखने, चिल्लाने से ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहे थे। फफोलों की ज्यादाती के कारण चेहरा अत्यन्त वीमत्स और डरावना हो उठा।

चेहरा ही क्यों, सारा जिस्म कुरूप होता जा रहा था।

उसने दौड़कर ऐरिक को पकड़ा। चीखी----“मुझे बचाइए! मुझे बचाइए ऐरिक सर! मैं मर रही हूं! कोई मुझे अंदर से जला रहा है! फूंक रहा है!”

ऐरिक ने घबराकर खुद को छुड़ाया।

वह अल्लारक्खा से लिपट गई----“मुझे बचाओ। मुझे बचाओ बेटे.....।”

अल्लारक्खा ने उसे झंझोड़ा। दहाड़ा----“कैसे बचायें मैडम? कैसे?”

और यह सवाल सभी के सामने था।

हिमानी को बचायें भी, तो कैसे?

किसी को पता ही नहीं ये सब क्यों हो रहा है?

जो हो रहा था वह सबके सामने था। मगर क्यों हो रहा है? कैसे हो रहा है?

किसी की समझ में न आ सका।

कोई बचाता भी तो कैसे?

अज्ञात आग से जलती, तड़पती, फड़फड़ाती सी हिमानी अंततः जमीन पर गिर गई।

असंख्य फफोलों में से अनेक फट गये।

और फिर, हिमानी का मुंह खुला। यूँ डकराई जैसे भैंस हो।

मुंह के रास्ते ढेर सारा खून इस तरह बाहर उछला जैसे किसी ने अंदर से धकेला हो। और उसी के साथ बाहर आ पड़ी, हिमानी की सम्पूर्ण जीभ।

चीखें मारते हुए सब पीछे हटे।

किसी स्टूडेंट ने सोचा भी नहीं था इंसानी जीभ इतनी लंबी होती है।

लाश के चारों तरफ बहता खून यूँ उबल रहा था जैसे भट्टी पर रखी तैयार चाय उबल रही हो। हर आंख में खौफ। हर चेहरे पर दहशत और हर दिल में रूह तक की कंपकंपा देने वाले साये फनफना रहे थे।



गौतम की भूमिका इस केस में खत्म हो चुकी थी। उसे थाने से विदा कर दिया गया। बंसल को विभा ने अपनी गाड़ी में बैठा लिया और कुछ दूर चलने के बाद कहा----“गाड़ी कॉलिज की तरफ लेना।”

मैं चौंका----“कॉलिज की तरफ क्यों?”

“भगवान न करे, मगर मुझे लगता है हत्यारे की अगली शिकार हिमानी है।”

“ह-हिमानी!” मेरे और बंसल के मुंह से चीखें निकलीं। चेहरों पर आश्चर्य के भाव लिए विभा की तरफ देखते रह गये हम। वह सामान्य स्वर में कहती चली गई----“दो हत्याओं के बाद कॉलिज में होनी वाली छोटी से छोटी घटना को हम हल्के ढंग से नहीं ले सकते वेद। हिमानी को किसी के द्वारा बाथरूम में बंद किया जाना बेसबब नहीं हो सकता।”

“तुम्हारे ख्याल से क्या कारण रहा होगा?”

“शायद हत्यारे ने उसके मर्डर की भूमिका तैयार की है।”

“कैसी भूमिका?”

“वेचैन क्यों होते हो?” विभा ने कहा----“कॉलिज का गेट आ चुका है।”

तभी हवा के झोंके की तरह पुलिस जीप हमसे आगे निकली।

दायरों की घरमराहट के साथ कॉलिज के गेट की तरफ मुड़ी।

“अरे!” प्रिंसिपल कह उठा----“ये तो जैकी है।”

विभा बोली----“इतनी तेजी में क्यों है ये?”

किसी के जवाब देने से पहले जीप आनन-फानन में बैक होकर गेट से बाहर निकली।

सांप की तरह लहराती रात्स रॉयल के नजदीक आई।

जबरदस्त चीख चिल्लाहट के साथ रुकी और जीप से कूदता जैकी पागलों की मानिन्द चीखा----“कॉलेज में हिमानी की हत्या हो गयी है।”

किसी और के बारे में तो क्या कहूँ?

मेरे कानों में सन्नाटा छा गया। सांय-सांय हो रही थी चारों तरफ।



हिमानी की लाश को बड़ी ही बीभत्स अवस्था में देखा हमने।

मुझे उवकाई सी आने लगी थी। शगुन को हम शोफर के साथ गाड़ी पर ही छोड़ आये थे। शायद यह अच्छा ही किया।

याद आ रहा था----कितनी सुन्दर थी हिमानी! कितनी मस्त! टीचर होने के बावजूद स्टूडेंट सी लगती थी।

कितना ध्यान रखती थी अपने जिस्म का। इसका जो इस वक्त ऐसी अवस्था में पड़ा था जिसे देखकर दहशत और घृणा के अलावा दूसरा भाव ही उठकर नहीं दे रहा था।

किसने सोचा था इतनी जल्दी उसे इस हाल में देखना पड़ेगा?

स्टूडेंट्स और प्रोफेसर मुझे देखकर अचम्भित और खुश थे परन्तु ऐसा माहील नहीं था कोई अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकता। किसी ने यह पूछने तक की हिम्मत नहीं की कि मैं कहाँ था? किसने किडनैप किया और कैसे वापस आ गया?

एक वृत्त सा बनाये सभी लाश से दूर खड़े थे।

वृत्त के अंदर केवल तीन लोग थे।

मैं, जैकी और विभा।

उन दोनों के बारे में तो खैर कह नहीं सकता, वे क्यों तलाश कर रहे थे परन्तु अपने बारे में कह सकता हूँ----मुझे तो यह भी मालूम नहीं था कि तलाश करना क्या है?

विभाग कुंद होकर रह गया था।

जाम!

जैसे जंग लग गया हो।

पूरी भीड़ के बावजूद ऐसा सन्नाटा था जैसा आजकल कब्रिस्तान में भी नहीं पाया जाता।

“जैकी!” सन्नाटे के गाल पर विभा के शब्द रूपी हाथ का झन्नाटेदार हाथ पड़ा----“इस वारदात की सूचना तुम्हें कैसे मिली?”

“मोबाइल पर।”

“किसने फोन किया?”

“अल्लारक्खा ने।”

विभा झुककर ध्यान से लाश के होठों को देख रही थी। मेरे दिमाग में कौंध रहा, सवाल अंततः जैकी के मुंह से फूट ही पड़ा----“वात समझ में नहीं आ रही विभा जी, हत्या आखिर हुई कैसे है?”

जवाब देने की जगह विभा ने सवाल किया----“इसे बार-बार होठों पर जीम फेरने की आदत थी क्या?”

मैं और जैकी दंग!

जैकी ने कहा----“हां! मगर आपको कैसे मालूम?”

मेरे मुंह से निकला----“वात समझ में नहीं आई?”

समझाने की कोशिश विभा ने भी नहीं की। स्टूडेन्ट्स की तरफ देखते हुए ऊंची आवाज से पूछा----“ये हादसा किसके सामने हुआ?”

राजेश, दीपा और एरिक आदि एक साथ बोले ----“मेरे!”

विभा ने सभी को अपने नजदीक बुलाकर पूछा----“क्या मरने से पूर्व हिमानी ने गर्मी लगने की शिकायत की थी?”

“हां मैडम!” राजेश ने कहा----“सबसे पहले यही कहा था इन्होंने। उसके बाद जिस्म पर फफोले...

“सबसे पहला फफोला होठों पर नजर आया होगा!” कहने के बाद विभा हिमानी की मौत का वृत्तांत इस तरह सुनाने लगी जैसे मुकम्मल घटना की चश्मदीद गवाह हो। सभी चकित रह गये। इधर वह चुप हुई उधर चेहरे पर हैरानियों का सागर लिए जैकी ने कहा----“हैरत की बात है विभा जी। साधारण इन्वेस्टिगेटर जो बातें चश्मदीद गवाहों से पूछते हैं, उन्हें आप स्वयं बता रही हैं। ठीक ऐसे जैसे सब कुछ आपके सामने हुआ हो।”

“हैरत की ऐसी कोई बात नहीं है इसमें।” विभा ने कहा----“यदि गंधक, पोटेशियम में साइनाइट और सूखे सल्फ्यूरिक की एक निश्चित मात्रा किसी जीव के जिस्म में पहुंचा दी जाये तो यह सब होता है।”

“अ-आपको कैसे मालूम?”

“सचेत इन्वेस्टिगेटर को ऐसी बातें पता रखनी होती हैं। इसके लिए उसे खाली समय में पुराने केसों की फाइलों का अध्ययन करते रहना चाहिए। सन् 1826 में अमेरिका के न्यूयार्क शहर में एक वैज्ञानिक ने इसी टैक्निक से चार हत्याएं की थीं।”

“क-कमाल की नॉलिज है आपकी!”

“तीन कैम्बिकल्स से बनने वाला ये पॉयजन जैसे ही निश्चित मात्रा में जिस्म में पहुंचता है, खून को उबालना शुरू कर देता है।

धीरे-धीरे वह इस कदर उबलने लगता है जैसे आग पर रखा पानी। इसी कारण प्रभावित व्यक्ति पहले गर्मी लगने की शिकायत करता है, फिर जिस्म पर फफोले पड़ने शुरू होते हैं और अंततः लहु मुंह के रास्ते आ जाता है।”

मैंने पूछा----“लेकिन विभा, जहर इसके जिस्म में पहुंचा कैसे?”

“लिपस्टिक के जरिए।”

“लिपस्टिक?”

“हत्यारे को हिमानी की आदतों के बारे में अच्छी तरह पता था। नम्बर वन, इसे मेकअप का शौक है। नम्बर टू, इसकी लिपस्टिक पर जीभ घुमाने की आदत है। इसी का फायदा उठाया उसने। हत्यारे ने जहर इसकी लिपस्टिक पर लगा दिया और यह उसे चाटती कमरे से यहां तक आ गयी। निश्चित मात्रा मिलते ही खून उबलने लगा। अंजाम सामने है।”

उसके बाद हम हिमानी के कमरे में पहुंचे।

वहां कदम रखते ही मेरे पैर मानो जाम हो गये।

आंखे ड्रेसिंग टेबल के आइने पर चिपकी रह गयीं।

शीशे पर लिपस्टिक से बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था---- “CHALLENGE!”

“फिर वही चैलेंज!” मेरे मुंह से स्वतः शब्द फूट पड़े----“विभा, ये है वो वजह जिसने मुझे इस केस में इन्वॉल्व कर दिया। पहली समझ में नहीं आकर दे रही। आखिर मरने वाला ये शब्द क्यों लिखता है? पहले सत्या ने लिखा। फिर चन्द्रमोहन ने। और अब हिमानी ने।”

“क्या जरूरी है हिमानी ने ही लिखा है ये?”

“कमरे में कहीं न कहीं उसकी राइटिंग होगी। मिलाकर देखो! मेरा दावा है----हिमानी ने ही लिखा है ये।”

राइटिंग टेबल पर अटैंडेंस रजिस्टर रखा था। विभा ने उठाया। उसमें हिमानी की राइटिंग थी। उस राइटिंग से ड्रेसिंग टेबल पर लिखे अक्षरों का मिलान करने के बाद वह बोली----“लगती तो उसी की है।”

“लगती है से मतलब?” मैंने पूछा।

“राइटिंग के बारे में अंतिम निर्णय एक्सपर्ट की रिपोर्ट के बाद ही किया जाना चाहिए। इस दुनिया में ऐसे बहुत लोग हैं जो राइटिंग की नकल मारने में माहिर होते हैं। ऐसे लोगों की कारीगरी नंगी आंखों से नहीं पकड़ी जा सकती है। उन्हें परीक्षण के बाद एक्सपर्ट्स ही पकड़ पाते हैं।”

“सत्या ने यह शब्द सबके सामने लिखा था विभा।”

वह होठों पर मुस्कान लिए बोली----“मैंने कय कहा नहीं लिखा?”

“फिर शक की वजह?”

विभा ने मेरे सवाल का जवाब देने की जगह जैकी से कहा----

“क्या तुमने चन्द्रमोहन की जेब से निकले कागज को एक्सपर्ट के पास भेजा था?”

“ज-जी हां।”

“रिपोर्ट?”

“राइटिंग चन्द्रमोहन की ही थी।”

“इसका भी एक फोटो उतरवा लेना।” विभा ने शीशे पर लिखे अक्षरों की तरफ इशारा किया----“और एक्सपर्ट के पास भेजकर उसकी ओपिनियन जरूर ले लेना।” कहने के बाद उसने अपनी आंखें ड्रेसिंग टेबल पर रखे मेकअप के सामान पर स्थिर कीं।

सामान सलीके से रखा था।

एक-एक लिपस्टिक उठाकर उसका कलर देखती हुई विभा ने कहा----“लिपस्टिक पर पॉयजन लगाने का काम हत्यारे ने हिमानी को वाथरूम में बंद करके किया। उसकी हरकत का कारण तुममें से कोई नहीं समझ सका।”

मैं सोच रहा था कितनी तेजी से और कितना एक्ज्यूरेट सोचती है विभा? उसने गाड़ी में ही संभावना व्यक्त कर दी थी कि हत्यारे ने हिमानी की हत्या की भूमिका उसे वाथरूम में बंद करते वक्त तैयार कर ली थी। मैंने अपने दिमाग में उभरा एकमात्र सवाल उगला----“लेकिन विभा! यह घटना कल की है। यदि हत्यारे ने उस वक्त लिपस्टिक पर पॉयजन लगाया तो क्या उसे मालूम था हिमानी आज कौन-सी लिपस्टिक इस्तेमाल करेगी?”

“पॉयजन एक ही लिपस्टिक पर लगाया गया था या सब पर, इस सवाल पर जवाब मेकअप के सारे सामान को लेबोरेट्री में भेजने के बाद मिलेगा।” कहने के साथ विभा ने वह लिपस्टिक निकालकर अलग रख दी जिससे शीशे पर CHALLENGE लिखा गया था। हिमानी द्वारा इस्तेमाल की गई लिपस्टिक भी वही थी। ड्रेसिंग टेबल की दराज खोलती विभा ने आगे कहा----“वैसे मेरे ख्याल से हिमानी का आज ही मरना जरूरी नहीं था। उसे तब मरना था जब इस लिपस्टिक का इस्तेमाल करती। संयोग से वह दिन आज का हो गया। हत्यारे ने अपनी तरफ से मौत का जाल बिछाकर छोड़ दिया था। हिमानी आज मरे या कल।”

मैंने कहा----“सबसे अहम सवाल को तुम भी बार-बार गोल कर रही हो विभा।”

“कौन सा सवाल?”

“हिमानी ने शीशे पर क्या सोचकर CHALLENGE लिखा?”

“मतलब?”

“मेरे दिमाग के मुताबिक अब एक सवाल के अंदर से दूसरा सवाल भी उभर आया है। यह सवाल तो अपनी जगह अनुत्तरित है ही कि मरने वाले CHALLENGE क्यों लिख रहे हैं? चलो माना, सत्या ने किसी अज्ञात वजह से CHALLENGE लिखा। परन्तु चन्द्रमोहन ने कागज पर यही शब्द लिखकर जेब में क्यों रखा? हिमानी ने इस कमरे से बाहर निकलने से पहले क्यों लिखा? क्या इन दोनों को भी अपनी मौत का पूर्वाभास हो गया था?”

जैकी बोला----“ऐसा नहीं था। दावे से कह सकता हूं फोन पर बात करते वक्त चन्द्रमोहन को स्वप्न तक में अपनी मौत का अनुमान नहीं था। उसी तरह----चंश्मदीद गवाहों के मुताबिक मौत के चंद क्षण पहले हिमानी जितनी मस्त थी, उसे देखते हुए सोचा तक नहीं जा सकता कि उसे मौत का पूर्वाभास था, बल्कि वह तो खुद को बचाने के लिए भी चिल्लाई।”

“फिर उसने किस मानसिकता के तहत शीशे पर CHALLENGE लिखा?” एक-एक शब्द पर जोर देता मैं कहता चला गया----“क्या लिखते वक्त उसे यह ध्यान नहीं आया होगा कि सत्या और चन्द्रमोहन यह शब्द लिखने के बाद मर चुके हैं? ऐसा नहीं माना जा सकता कि यह बात उसके जहन में नहीं कौंधी होगी। यदि कौंधी थी, तो लिखते वक्त हाथ क्यों नहीं कांपे

उसके? यह ख्याल दिमाग में क्यों नहीं आया कि अब मैं भी मरने वाली हूँ? अगर आया था तो लिखा क्यों? इतनी मस्त कैसे थी वह? इसे लिखते आखिर सोच क्या रही थी हिमानी?"

विभा कह उठी----"बहुत ही गूढ़, गहरा और सार्थक सवाल उठाया है तुमने।"

"मैं अपनी तारीफ का नहीं विभा, जवाब का तलबगार हूँ।"

"मैं जादूगर नहीं वेद! इन्वेस्टिगेटर हूँ। केवल उन सवालों के जवाब दे सकती हूँ जिनके जवाब घटनास्थल का निरीक्षण करने के बाद समझ में आये।"

"अर्थात् तुम भी इस गुत्थी को नहीं सुलझा सकी?"

"दो बातें हैं जिन पर टाइम मिलने पर थोड़ा मनन करना चाहूँगी।"

"कौन-सी दो बातें?" जैकी ने उत्सुकतावश पूछा।

"सत्या द्वारा CHALLENGE लिखने तथा चन्द्रमोहन और हिमानी द्वारा लिखने में एक बारीक फर्क है। सत्या ने यह शब्द ठीक तब लिखा जब उसे अपनी मौत का इल्म हो गया। चन्द्रमोहन की तरह पहले से लिखकर जेब में नहीं रखा था। उसी तरह हिमानी ने भी मरते वक्त नहीं बल्कि मरने से काफी पहले लिख दिया था। सवाल उठता है ये फर्क क्यों? मुमकिन है मुजरिम इसी फर्क के पीछे छुपा हो।"

"दूसरी बात?"

"एक कागज पर इंग्लिश में चैलेंज लिखो।"

"म-मैं?" उसके विचित्र आदेश पर एक सेकेण्ड के लिए मैं सटपटा गया।

होटों पर गहरी मुस्कान लिए कहा विभा ने----"हां तुम! घबराओ नहीं, तुम मरने वाले नहीं हो।"

समझ नहीं सका मुझसे चैलेंज लिखवाकर वह क्या साबित करना चाहती थी? परन्तु सवाल करने की जगह एक कागज पर लिख दिया----'Challenge'।

कागज हाथ में लेते ही विभा की मुस्कान गहरी हो गयी। बोली----"तुमने यह शब्द सत्या की तरह इंग्लिश के कैपिटल लेटर्स में क्यों नहीं लिखा? पहला अक्षर कैपिटल और बाकी लेटर स्माल इंग्लिश में क्यों लिखे?"

"इंग्लिश में किसी शब्द को लिखने का यही तरीका सही है।"

"याद रहे वेद! सत्या इंग्लिश की टीचर थी। यकीनन इंग्लिश लिखने का तरीका तुमसे बेहतर जानती होगी। फिर उसने कैपिटल लेटर्स में चैलेंज क्यों लिखा? कैसे क्यों नहीं लिखा जैसे तुमने लिखा है?"

सवाल वाकई जानदार था। मुझे चुप हो जाना पड़ा।

जैकी ने कहा----"कैपिटल लेटर्स में शब्द लिखना सत्या की आदत हो सकती है।"

"नहीं!" बंसल कह उठा----"उसे यह आदत नहीं थी।"

"इसके वाकजूद मान लिया जाये आदत थी तो चन्द्रमोहन और हिमानी के बारे में क्या कहोगे?" जानदार मुस्कान के साथ विभा

ने जैकी को लाजवाब कर दिया----“क्या उन्हें भी यही आदत थी? उन्होंने वेद की तरह चैलेंज लिखने की जगह सत्या की तरह क्यों लिखा?”

मैंने पूछा----“इस फर्क को प्वाइंट आऊट करके तुम कहना क्या चाहती हो विभा?”

“सत्या को CHALLENGE लिखते अनेक लोगों ने देखा है। उस वक्त उसे खुद मालूम था कि मेरे पास टाइम बेहद कम है, किसी भी क्षण मेरे प्राण पखेरू उड़ सकते हैं। ध्यान दो----Challenge फ्लो में लिखा जाता है अर्थात् कम टाइम लेता है जबकि CHALLENGE ज्यादा टाइम लेता है। इसके बावजूद सत्या ने Challenge नहीं CHALLENGE लिखा। यकीनन इसके पीछे कोई ठोस वजह होगी। यह बात और भी पक्की तब हो जाती है जब मरने वाले अन्य दो व्यक्ति भी Challenge नहीं CHALLENGE लिखते हैं। जाहिर है मरने वाले को कहना चाहते हैं वह केवल CHALLENGE के जरिए कहा जा सकता है, Challenge के जरिए नहीं।”

“ऐसा क्या है जिसे इंग्लिश के कैपिटल लेटर्स के जरिये तो कहा जा सकता है मगर इन्हीं लेटर्स के स्माल इस्तेमाल से नहीं?”

“इस सवाल का जवाब अभी मैं भी नहीं खोज पाई हूँ।”

“इसके बावजूद तुम पहेली को हल करने के काफी नजदीक हो विभा।” उत्साह में भरा मैं कहता चला गया----“मुझे यही उम्मीद थी। आमतौर पर किसी शब्द को लिखने में कोई शख्स कैपिटल लेटर्स का इस्तेमाल नहीं करता। यह बात जानने के बावजूद इस प्वाइंट पर मेरा या जैकी का ध्यान केन्द्रित नहीं हो सका था। तुम्हारी बातें सुनने के बाद लगता है----पहेली की धावी इसी प्वाइंट में है कि मरने वाले ने यह शब्द कैपिटल लेटर्स में क्यों लिखा?”

“पहेली पर सिरखपाई बाद में भी हो सकती है।” विभा ने खुली हुई दराज में नजर मारते हुए कहा----“फिलहाल हमारी जरूरत वारीकी से कमरे की तलाशी लेनी है। इस काम में मेरी मदद करो जैकी। ध्यान रहे, किसी वस्तु से अनावश्यक छेड़छाड़ नहीं करनी है।”

उसके बाद करीब दस मिनट तक विभा और जैकी अपने-अपने तरीकों से कमरे की तलाशी लेते रहे। विभा ने बाथरूम तक को नहीं वक़्शा और जब बाहर निकली तो मैं चौंक पड़ा। चौंकने का कारण थी विभा के होठों पर चिपकी मुस्कान। दो केसों में उसके साथ रह चुका मैं उस मुस्कान का अर्थ समझता था। वह मुस्कान विभा के होठों पर केवल तब नजर आती थी जब उसके हाथ कोई तगड़ा क्लू लगा होता था। मैंने पूछने के लिए मुंह खोला, उससे पहले विभा जैकी से बोली----“और ज्यादा खंगालने की जरूरत नहीं जैकी! काम हो गया है।”

हिमानी की पर्सनल अलमारी में नजर मारता जैकी चौंककर उसकी तरफ पलटा।

मैंने उत्कंठापूर्वक पूछा----“तुम्हारे हाथ क्या लगा है विभा?”

मेरे सवाल का जवाब देने की जगह उसने अपनी आंखें भीड़ में खड़े लविन्द्र भूषण पर जमा दीं। कम से कम तीस सैकिण्ड तक उसी को देखती रही। लविन्द्र भूषण पन्द्रह सैकेण्ड उसकी नजरों का सामना कर सका। बाकी पन्द्रह सैकिण्ड बगलें झांकने में लगायीं। एकाएक विभा ने उसे नजदीक आने के लिए कहा। लविन्द्र उसकी तरफ इस तरह बढ़ा जैसे पैर कई-कई मिनट के हो गये हैं। मारे-सस्पेंस के सबका बुरा हाल था। इतने लोगों की मौजूदगी के बावजूद विभा की नजर लविन्द्र पर ही क्यों टिक गई, कोई नहीं समझ पा रहा था।

“आपका नाम?” विभा ने उससे पूछा।

उसकी आवाज मानो गहरे कुवें से उभरी----“लविन्द्र भूषण।”

“मैं आपके कमरे की तलाशी लेना चाहती हूँ।”

“म-मेरे कमरे की?” लविन्द्र के होश फाखता----“क-क्यों?”

“सवाल छोड़िए। एतराज हो तो बताईए?”

“म-मुझे क्या एतराज हो सकता है!”

“तो प्लीज! मार्गदर्शन कीजिए हमारा।” कहने के साथ वह दरवाजे की तरफ बढ़ गई। सवालिया निशानों के सागर में गोते लगाती भीड़ ने काई की तरह फटकर रास्ता दिया।



लविन्द्र भूषण के कमरे में कदम रखते ही सिगरेट की तीव्र गंध नथुनों में घुसती चली गई।

राइटिंग टेबल पर रखी एशट्रे टोटों से भरी पड़ी थी।

हमारे पीछे अन्य लोग भी अंदर आना चाहते थे, उन्हें रोकते हुए विभा ने मुझसे दरवाजा बंद करने के लिए कहा।

मैंने वैसा ही किया।

कमरे में केवल मैं, जैकी और लविन्द्र थे।

चेहरे पर हवाइयां लिए लविन्द्र ने कहा----“ल-लीजिए तलाशी।”

“ले चुकी।” विभा मुस्कराई।

“ज-जी।” लविन्द्र चिहुंका।

हालत जैकी और मेरी भी चिहुंक पड़ने जैसी थी। हम नहीं समझ सके उसने तलाशी कब ले ली?

“अब केवल एक सवाल का जवाब दीजिए मिस्टर लविन्द्र।” उसे अपलक घूरती विभा ने पूछा----“हिमानी की हत्या आपने क्यों की?”

“म-मैंने? मैंने हत्या की?” लविन्द्र इस तरह उछला जैसे हजारों बिच्छुओं ने एक साथ डंक मारे हों----“क-क्या कह रही हैं आप? भ-भला मैं हिमानी की हत्या क्यों करूंगा?”

“मैं वही पूछ रही हूँ।”

“अ-आपको किसी कारण गलतफहमी हो गयी है। मैंने उसे नहीं मारा!”

“किस वजह से गलतफहमी हो सकती मुझे?”

“म-मैं क्या जानूँ?”

विभा बहुत ध्यान से लविन्द्र के फेस पर उभरने वाले एक्सप्रेशन को रीड करती नजर आ रही थी। बोली----“क्या कल और आज के बीच आप हिमानी के कमरे में नहीं गये?”

लविन्द्र चुप।

“जवाब दीजिए मिस्टर लविन्द्र?”

बहुत मुश्किल से कह सका वह----“गया था?”

“क्यों?”

उसने हिचकते हुए पूछा----“क्या जवाब देना जरूरी है?”

“हत्या के इल्जाम से बचना चाहते हो तो जरूरी है।”

“मेरे वहां जाने का कारण ये लेटर था।” कहने के साथ उसने अपनी पैंट की जेब से एक लेटर निकाल कर विभा को दिया। विभा की पतली अंगुलियों ने उसकी तहें खोलनी शुरू कीं। जिज्ञासा के मारे मैं और जैकी उस पर झुक गये। लेटर का मजूमन तीनों ने लगभग साथ-साथ पढ़ा। लिखा था---

माई लव लविन्द्र!

बहुत दिन से तुम्हें अपने दिल की भावनाएं बताने के लिए बेचैन हूं परन्तु साहस न कर सकी। पता नहीं तुम इतने खोये-खोये क्यों रहते हो? क्या तुम्हें सचमुच मालूम नहीं कि कोई तुम्हें चोरी-चोरी देखता है! चाहता है! पूजता है! वो मैं हूं लविन्द्र! मैं! पर एक तुम हो---मैंने तुम्हें कभी अपनी तरफ नजर उठाकर देखते नहीं देखा। बहुत हिम्मत करके लेटर लिखा है। आज रात दो बजे अपने कमरे में तुम्हारा इंतजार करूंगी।

सिर्फ तुम्हारी----हिमानी

“और तुम उसके कमरे में पहुंच गये?” पत्र पूरा पढ़ते ही मैं लविन्द्र पर वरस पड़ा----“मन ही मन सत्या से मुहब्बत करने के बावजूद हिमानी का ऑफर मिलते ही फिसल गये?”

“मेरे वहां जाने का कारण वो नहीं था जो आप सोच रहे हैं।”

“और क्या कारण था?”

“हिमानी से वही सब कहना जो एक दिन सत्या ने मुझसे कहा था।”

“क्या कहा था सत्या ने?” विभा ने पूछा।

“यह कि हम जवान बच्चों के कॉलिज में टीचर हैं। आपस में प्यार मुहब्बत का रिश्ता कायम करना शोभा नहीं देता। हमारे आचरण से स्टूडेंट्स में अच्छा मैसेज जाना चाहिए।”

“और यही सब तुमने कहा?” विभा ने उसे धूरते हुए पूछा।

“यकीन मानिए! यही सब कहा था।”

“हिमानी क्या बोली?”

“मेरी बातें सुनकर वह हैरान रह गयी। कहने लगी----‘आपने सोच कैसे लिया मिस्टर लविन्द्र कि मैं आपसे मुहब्बत करती हूं? मैंने तो स्वप्न में भी कल्पना नहीं की। अब मैं चौका। जेब से निकालकर लेटर दिखाया। बुरी तरह चकित वह

बोली----‘ये लेटर मैंने नहीं लिखा। मेरी राइटिंग ही नहीं है ये।’ और ये सच था। तब हम इस नतीजे पर पहुंचे कि किसी शरारती स्टूडेंट ने हमें बेवकूफ बनाया है। मगर किसने? जो माहौल कॉलेज में है, उसमें इतनी बड़ी शरारत किसे सूझी? न जान सके। शरारत करने वाले को ढूंढने की खातिर मैंने लेटर अपने पास रख रखा है।”

“तुम झूठ बोल रहे हो।” जैकी गुंराया।

विभा ने कहा----“ये सच बोल रहे हैं जैकी। कुछ देर पहले हिमानी की राइटिंग हम सबने देखी है। लेटर की राइटिंग उससे अलग है। मि० लविन्द्र को उस वक्त झूठ बोलता माना जा सकता था जब ये कहते कि इन्होंने हिमानी को आदर्श भरी बातें समझाई और वह समझ गयी।”

“लेकिन विभा, तुम्हें कैसे पता लगा लविन्द्र हिमानी के कमरे में गया था?” मैंने बहुत देर से अपने दिमाग में घूम रहा सवाल पूछा।

“सिगरेट पीने वालों की सबसे गंदी आदत होती है कि वे कहीं नहीं चूकते।” कहने के साथ विभा मुझे सिगरेट का टोटा दिखाती बोली----“यह हिमानी के बाथरूम में मौजूद डस्टबिन से मिला।”

“मगर तुमने यह नतीजा कैसे निकाल लिया यह लविन्द्र का है? सिगरेट तो कॉलेज में और भी बहुत से लोग पीते होंगे।”

“ध्यान से देखो इसे! सिगरेट आधी पी गई है। टोटे पर सिगरेट का ब्राण्ड साफ पढ़ा जा सकता है। और अब एक नजर मि० लविन्द्र की शर्ट पर डालो। झीने कपड़े की जेब में इसी ब्राण्ड का पैकेट रखा साफ चमक रहा है।”

“क्या जरूरी है ये ब्राण्ड इस्तेमाल करने वाला कॉलेज में दूसरा नहीं होगा?”

“इसीलिए इस कमरे तक आने की जरूरत पड़ी। एशट्रे को देखते ही पुष्टि हो गयी, हिमानी के कमरे में सिगरेट पीने वाले मिस्टर लविन्द्र ही थे। ध्यान से देखो, एशट्रे में मौजूद सभी टोटे इस टोटे की तरह आधे हैं अर्थात् आधी सिगरेट पीकर कुचल देना इनकी आदत है।”

“कड़ियां जोड़ने में आपको महारत हासिल है।” जैकी कह उठा----“इस केस से पहले मैं ऐसे किसी इन्वेस्टिगेटर से नहीं मिला जो इतने छोटे-छोटे प्वाइंट्स पकड़कर इतनी दूर तक निकल जाये।”

जैकी के मुंह से विभा की तारीफ सुनकर मेरा सीना चौड़ा हो गया। कुछ इस तरह, जैसे मेरी तारीफ की गई हो। मगर विभा पर कोई असर नहीं था। बोली----“मि० लविन्द्र, मेरे ख्याल से यह लेटर आपको हिमानी के कमरे में भेजने के लिए हत्यारे ने लिखा है।”

“मगर क्यों? वह ऐसा क्यों चाहता था?”

“एक वजह आपको इन्वेस्टिगेटर की नजर में संदिग्ध बनाना भी हो सकती है।”

“म-मुझे क्यों संदिग्ध बनाना चाहता है वह?”

“यह इस केस के हत्यारे की टेंडेंसी लगती है। कुछ देर पहले तक मि० बंसल को चारा बनाकर हमारे सामने डाल रहा था। मुमकिन है आगे किसी और को डाले। यह टेक्निक उसने खुद को शक के दायरे से बाहर रखने के लिए अपनाई है।”

“यह टेक्निक तो जबरदस्त पेचीदगियां पैदा कर देगी विभा जी।” जैकी बोला----“किन्हीं कारणों से असल हत्यारे पर शक गया भी तो उस स्पॉट पर यह सोचकर चूक कर सकते हैं कि शायद वह भी हत्यारे की टेक्निक का ही शिकार है।”

“सो तो है।” विभा मुस्कराई----“वह अपनी चाल चलेगा। हमें अपने पैतरे दिखाने हैं। दिमाग की नसें इसी खेल से खुलती हैं। खैर... जैसा कि आपकी बातों से जाहिर है मि० लविन्द्र आप अभी तक इस लेटर के लेखक का पता नहीं लगा सके होंगे।”

“ज-जी!”

“कॉलिज में मुस्लिम कैंडिडेट कितने हैं?”

मैं और लविन्द्र विभा के सवाल का मतलब नहीं समझ सके। जबकि जैकी मारे खुशी के लगभग उछल पड़ा----“मैं भी यही कहने वाला था विभा जी, लेटर किसी मुस्लिम ने लिखा है।”

“किस बेस पर?” विभा ने कहा।

“प्लीज----इम्तहान मत लीजिए मेरा। आपके सवाल से जाहिर है कि कॉपी के जिस कागज पर लेटर लिखा गया है, उसके दाहिने ऊपरी कोने पर बहुत छोटे-छोटे अंकों में लिखे ‘सात सौ छियासी’ पर आपकी नजर भी पड़ चुकी होगी।”

विभा के होठों पर मुस्कान फैल गयी। बोली----“मुझे खुशी हुई कि इस प्वाइंट को तुमने भी पकड़ा।”

“मैंने कहा था, आपसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।”

“सीख आदमी तभी सकता है जब सीखना चाहे। वैसे इसमें सीखने वाली उतनी बात नहीं है। जो भी वस्तु या जीव तुम्हारे सामने आये, उसे बारीकी से देखने की आदत डालो। मुमकिन है, उसी में से रास्ता निकलता नजर आये।”

जैकी ने लविन्द्र से कहा----“हमें मुस्लिम स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स की लिस्ट चाहिए।”

मगर लविन्द्र को लिस्ट बनाने की जरूरत नहीं पड़ी।

विभा की सलाह पर कमरे का दरवाजा खोलकर जैकी ने जब ऊंची आवाज में पूछा कि अपनी कापी के पन्नों के कोनों पर बारीक लेटर्स में सात सौ छियासी लिखने की आदत किसे है तो चौंकते से राजेश ने आगे आकर कहा----“अल्लारक्खा को!”

सबकी नजरें अल्लारक्खा पर स्थिर हो गयीं।

अल्लारक्खा की अवस्था बड़ी अजीब थी। उस वक्त तो पीला ही पड़ गया जब उसे कड़ी नजर से देखती विभा ने कहा----“अब हमें तुम्हारे कमरे की तलाशी लेनी है।”

वेचारा अल्लारक्खा!

कारण तक न पूछ सका।

काफिला उसके कमरे में पहुंचा।

वह कॉपी तलाश करने में खास दिक्कत पेश नहीं आई जिसके कागज पर लविन्द्र के नाम हिमानी का लेटर लिखा गया था। कापी में फटे हुए कागज के रेशे मौजूद थे। उन्हें देखने के बाद जैकी ने अल्लारक्खा को घूरते हुए कहा----“तो तुमने हिमानी की तरफ से लविन्द्र को लेटर लिखा।”

“ल-लेटर? क-कौन सा लेटर?”

विभा ने लेटर उसके हाथ में पकड़ा दिया।

अल्लारक्खा ने उसे पढ़ा और पढ़ते-पढ़ते चेहरे की सारी चमक काफूर हो गयी। चीख सा पड़ा वह----“नहीं! ये लेटर मैंने नहीं लिखा।”

“मेरे सामने झूट नहीं टिक पाता अल्लारक्खा।” पहली बार विभा का लहजा कर्कश हुआ----“मैं लेटर की राइटिंग को इस कार्या में मौजूद तुम्हारी राइटिंग से मिला चुकी हूँ।”

“र-राइटिंग मेरी ही है विभा जी, म-मगर मैंने इसे नहीं लिखा। यकीन कीजिए मेरी राइटिंग में यह लेटर किसी और ने लिखा है।”

“बात वो कहे अल्लारक्खा जिस पर यकीन किया जा सके।”

गेने को तैयार उमने कहना चाह----“मैं कसम खाकर कहता....

“इस तरह सच नहीं उगलेंगे तू!” भन्नाये हुए जैकी ने झपटकर दोनों हाथों से उसका गिरेवान पकड़ा और दांत भीचकर कहता चला गया----“अपना तरीका इस्तेमाल करना पड़ेगा मुझे।”

“म-मुझे बचाइए विभा जी।” अल्लारक्खा गिड़गिड़ा उठा----“म-मैंने कुछ नहीं किया।”

“जब तक सच नहीं बोलोगे तक तक मैं कोई मदद नहीं कर सकती।” कहने के बाद विभा जैकी से मुखामत होती बोली----“कुछ लोगों के सिर पर सवार भूत वाकई बातों से नहीं लातों से भागता है। इसे अपने साथ ले जाओ और जैसे भी हो, सच उगलवाओ।”

और क्या चाहिए था जैकी को!

उसने तुरन्त अल्लारक्खा के हाथों में हथकड़ी डाल दी।

अल्लारक्खा चीखता रहा, चिल्लाता रहा मगर कोई उसकी मदद न कर सका।

विभा के आदेश पर जैकी उसे अपनी जीप की तरफ ले गया।

सभी अवाक् थे! हक्के-बक्के थे!

सन्नाटा हो गया वहां! बहुत कुछ कहना चाहकर कोई कुछ नहीं कह पा रहा था।

अंततः मैंने ही पूछा----“क्या इस केस का हत्यारा पकड़ा गया विभा?”

“तुम्हें शक क्यों है?” उसके होठों पर भेद भरी मुस्कान नाच रही थी।

“जाने क्यों, दिलो-दिमाग अल्लारक्खा को हत्यारा मानने को तैयार नहीं। भला सत्या, चन्द्रमोहन और हिमानी की हत्याएँ वह क्यों करेगा? और फिर, क्या इस जाहिल केस का हत्यारा इतनी आसानी से पकड़ा जा सकता है?”

“तुम ठीक सोच रहे हो।” विभा ने कहा----“अल्लारक्खा हत्यारा नहीं है।”

“फिर तुमने उसे....

“लेटर हमें काफी दूर ले जा सकता है।” विभा ने कहा----“पहली बात, अगर ये लेटर अल्टारक्खा ने लिखा है तो पता लगना चाहिए उसने ऐसा क्यों किया? और यदि उसने लेटर नहीं लिखा तो जाहिर है----हत्यारा दूसरों की राइटिंग की नकल में माहिर है। इस अवस्था में CHALLENGE वाली पहली स्वतः हल हो जायेगी।”

मुझे विभा की बात में दम लगा।

एक बार फिर वहां खामोशी छा गयी।

थोड़े अंतराल के बाद विभा ने वंसल से कहा----“प्रिंसिपल साहब, कल से कॉलिज की गतिविधियां उसी तरह चालू हो जानी चाहिएं जैसे कुछ हुआ ही न हो।”

सब चौंके। वंसल कह उठा----“य-ये आप क्या कह रही हैं?”

“वर्तमान हालात में आपको मेरी बात अजीब लग सकती है परन्तु होना यही चाहिए।” विभा एक-एक शब्द पर जोर देती कहती चली गयी----“सामान्य गतिविधियां चालू नहीं हुई तो वातावरण में आतंक छाया रहेगा। अगर हमने उसे छाये रहने दिया तो यह एक प्रकार से हत्यारे की मदद ही होगी। याद रहे----हत्यारे का मकसद कॉलिज परिसर में मौजूद हर शख्स को आतंकित रखना है क्योंकि आतंक युक्त दिमाग कभी ढंग से नहीं सोच पाते और जब तक सही दिशा में नहीं सोचेंगे, तब तक हत्यारा हमारी पकड़ से दूर रहेगा।” कहने के बाद वह एकाएक स्टूडेंट्स की तरफ मुड़ी और प्रभावशाली स्वर में बोली----“यह समझने की भूल कदापि न करना कि मेरे पास अलादीन का चिराग है। इन्वेस्टिगेटर तक नहीं हूं मैं! वेद के अपहरण की वजह से मेरठ आई हूं और जब आ ही गई हूं तो इस कॉलिज में हो रही हत्याओं के जिम्मेदार शख्स को पकड़ने की कोशिश भी करूंगी। लेकिन आप सबके सहयोग के बिना मेरी कामयाबी नामुमकिन है। सबसे पहला सहयोग आप लोग मुझे आतंकित वातावरण को बांश करके दे सकते हैं। और ये तब संभव है जब कॉलिज खुले।”

“हम सहयोग देने के लिए तैयार हैं विभा जी।” राजेश ने कहा।

“दूसरी बात, हत्यारा आप ही लोगों के बीच मौजूद है। उसे पहचानना और शायद पकड़ना भी आपके लिए मुझसे ज्यादा आसान है। माहौल खुशनुमा रहेगा तो अपनी चाल पिटती देखकर हत्यारा बौखलायेगा। बौखलाया हुआ मुजरिम हमेशा गलतियां करता है। यकीन रखो, तुम अपने बीच छुपी गलतियां करने वाले उस शख्स को पहचान सकते हो। वेद से पूछो----विभा जिन्दल आसमान से नहीं उतरी है। एक दिन मैं और वेद भी तुम्हारी तरह स्टूडेंट थे। हमारे कॉलिज में एक क्राइम हो गया था। मैंने इन्वेस्टिगेशन की और मुजरिम को पकड़ लिया। उस दिन खुद मुझे भी पहली बार पता लगा कि मेरे अंदर एक सुलझे हुए इन्वेस्टिगेटर के गुण हैं। कहने का तात्पर्य ये कि तुममें से भी कई भविष्य के विभा जिन्दल हो सकते हैं, अतः स्वयं हत्यारे को ढूँढ़ने की कोशिश करो। विश्वास रखो----यह काम ज्यादा मुश्किल नहीं है। मुजरिम का हौसला केवल तब तक बना रहता है जब तक अपने आस-पास खतरा नजर नहीं आता है। तुमने सुना होगा----चोर के पांव नहीं होते। जरा सा खटका होते ही वह भागने की कोशिश करता है। और इसी कोशिश में पकड़ा जाता है अर्थात् केवल खटका पैदा करो, वह स्वयं तुम्हारे चंगुल में होगा।”

उपरोक्त किस्म की अनेक बातें कहीं विभा ने।

उन बातों का असर मैंने सभी के वजूद पर देखा।

निराश और आतंकित हो चले स्टूडेंट्स में उसने उम्मीद और जोश भर दिया था।



वह सिर पर हेलमेट, हाथों में दस्ताने, पैरों में क्रेपसोल के जूते, जिस्म पर काले रंग का ओवरकोट और वैसे ही रंग की पैन्ट पहने हुए था। हेलमेट में लगी पारदर्शी प्लास्टिक ने उसका चेहरा तक ढक रक्खा था। अर्थात् जिस्म की त्वचा का जरा तक नजर नहीं आ रहा था।

लम्बे-लम्बे कदमों के साथ वह व्यायज हॉस्टल की गैलरी पार कर रहा था।

एक कमरे के बन्द दरवाजे पर टिठका।

कमरा अल्लारक्खा का था।

ओवरकोट की जेब से चाबी निकालकर आसानी से ताला खोला। गैलरी में दोनों तरफ निगाह मारी। कहीं कोई नजर नहीं आया।

दरवाजा खोलकर अन्दर पहुंचा।

किवाड़ वापस भिड़ाये।

कमरे में अंधेरा था।

हेलमेट वाले ने जेब से टार्च निकालकर ऑन की।

प्रकाश पूरे कमरे में गर्दिश करने लगा।

पलंग, मेज, कुर्सी और किताब-कापियों पर थिरकने के बाद दायरा एक ऐसी खूंटि पर स्थिर हो गया जिस पर कई हेंगर लटक रहे थे। हेंगर्स में लटके हुए थे----अल्लारक्खा के कपड़े।

प्रकाश का दायरा वहीं स्थिर किये हेलमेट वाला खूंटि की तरफ बढ़ा।

नजदीक पहुंचा।

फिर उसने हेलमेट में लगा प्लास्टिक का फेस कवर ऊपर उठाया। टार्च का पिछला सिरा मुंह में दबाया। दोनों हाथ ओवरकोट की जेब में डाले। हाथ जब बाहर निकले तो एक में वैसी मोटी कलम थी जिससे रेल या ट्रांसपोर्ट पर भेजे जाने वाले बंडल्स पर एट्रेस लिखा जाता है, दूसरे में चौड़े मुंह वाली ऐसी दवात जिसमें पानी जैसे रंग की स्याही भरी थी।

हेलमेट वाले ने दवात का ढक्कन खोला।

कलम की नोक दवात में डाली और हेंगर पर लटके नाइट गाऊन पर कुछ लिखने लगा।



हम घर पहुंचे।

मुझे देखकर मारे खुशी के मधु की आंखें भर आई।

करिश्मा, गरिमा और खुशबू दौड़कर लिपट गई।

विभा ने कहा----“वाह मधु बहन! अजीब चीज हो तुम भी! तब इस घोंचू के न होने की वजह से रो रही थीं, अब इसके होने की वजह से रो रही हो!”

पल्लू से आंसू पोंछती मधु हंस पड़ी।

“ये हुई न बात!” विभा ने कहा----“अब कहीं जाकर चाय का मूड बना है।”

घर का माहौल खुशनुमा हो उठा।

शगुन----करिश्मा, गरिमा और खुशबू को नमक मिर्च लगाकर मेरी रिहाई का वृतांत सुना रहा था।

मधु चाय बनाकर लाई तो विभा ने पूछा----“चीनी तो नहीं डाली इसमें?”

“नहीं।” मधु ने कहा।

“क्यों?” मैं चिहुंका----“इसे क्या शुगर है?”

मधु बोली----“मैंने चाय में मुस्कान मिलाई है।”

जोरदार ठहाका लगाकर हंस पड़ी विभा।

उस वक्त मैं समझ नहीं सका। जब विभा और मधु की पहली भेंट का वार्तालाप बताया गया तो बात समझ में आई। मधु सेन्टर टेबल पर नाश्ता सजाने लगी तो विभा ने कहा----“नाश्ते में टलने वाली नहीं हूं मधु बहन। इस नालायक की वजह से लंच की छुट्टी हो गयी। डिनर के साथ लंच भी लेना है।”

और मधु द्वारा प्यार से बनाया गया डिनर ऐसा था कि विभा अंगुलियां चाटती रह गयी। डिनर के बाद हम लोग आइस्क्रीम खा रहे थे जब जैकी आया।

उसके साथ अल्लारक्खा भी था।

मैंने ध्यान से उसकी हालत देखी----उम्मीद के विपरीत उसके जिस्म पर जख्म तो क्या, खरोंच तक नजर नहीं आई, इसके वावजूद चेहरे से जाहिर था, वह किसी जबरदस्त यातना से गुजरा है। साफ-साफ टूटा हुआ नजर आ रहा था वह।

विभा ने जैकी को ही नहीं, अल्लारक्खा को भी बेहद प्यार और सम्मान के साथ कुर्सी पर बैठाया।

विभा ने कहा----“दोनों के लिए खाना लगाओ मधु बहन!”

“न-नहीं।” अल्लारक्खा ने सहमकर जैकी की तरफ देखो----“म-मुझे भूख नहीं है।”

“मैं जान चुकी हूं।” विभा जैकी की तरफ देखकर मुस्कराती हुई बोली----“बड़ा जालिम इंस्पेक्टर है ये! खाना तो खाना एक बूंद पानी तक नहीं पिलाया होगा।”

“आपसे मिलने के बाद मैं खुद में काफी चेंज महसूस कर रहा हूं विभा जी----अब उतना जालिम नहीं रहा।” जैकी कहता चला गया----“देख तो आप रही ही हैं! पूछ भी सकती हैं! थर्ड डिग्री की तो बात ही दूर, मैंने इसे हाथ तक नहीं लगाया।”

एकाएक मधु ने कहा----“अगर अल्लारक्खा ने बता दिया मैं पिटा हूं, तो समझ लो ठीक से पिट नहीं सका।”

“यह क्या बात हुई भाभीजी?” जैकी ने पूछा।

“यही तो खूबी है इण्डियन पुलिस में!” मधु कहती चली गयी—“उसके चंगुल में फंसा शख्स उससे अलग कुछ कह ही नहीं सकता जो पुलिस चाहती है और अगर कह गया तो समझ लो—खातिर ठीक से नहीं हो सकी। इजाजत दें तो इण्डियन पुलिस पर एक लतीफा सुनाऊं।”

“मधु तुम....

विभा बोल पड़ी—“जरूर! जरूर मधु वहन! बहुत दिन से कोई लतीफा सुना भी नहीं है।”

“एक अरब शेख ने हाथी का बच्चा पाल रक्खा था।” मस्ती के मूड में मधु मेरी तरफ तिरछी नजरों से देखने के बाद शुरू हो गयी—“एक बार वह खो गया! शेख उसे बहुत प्यार करता था। उसने रिपोर्ट दर्ज कराई। अरब पुलिस ने काफी कोशिश की। महीनों गुजर गये। हाथी का बच्चा नहीं मिला। शेख परेशान। उसके किसी सलाहकार ने सलाह दी—ऐसे केस हल करने में इण्डियन पुलिस को महारत हासिल है। क्यों न उसकी सेवाएं ली जायें? शेख ने अपने स्तर पर सोर्स लड़ाई। इण्डियन गवर्नमेन्ट से बात की और छ: कांस्टेबल्स के साथ एक इंस्पेक्टर अरब पहुंच गया। उसने शेख से मिलकर हाथी के बच्चे का वजन, कद और रंग आदि पूछा। सुनने के बाद पूरे कॉन्फिडेंस के साथ बोला—“फिक्र न करें! हम एक हफ्ते के अंदर हाथी के बच्चे को वरामद कर लेंगे।” शेख खुश हो उठा। पुलिस दल को फाइव स्टार होटल में ठहराया। पुलिस वालों की शानदार दावतें शुरू हो गयीं। दावतों में वे ऐसे मस्त हुए कि होटल से निकलते ही नहीं। मस्ती मारते-मारते एक हफ्ता गुजर गया। शेख ने तलब किया। पुलिस दल एक गधे को लेकर महल में पहुंचा। इंस्पेक्टर ने गधे की तरफ इशारा करके शेख से कहा—“ये रहा आपका हाथी का बच्चा।” शेख हैरान! बोला—“क्या बात कर रहे हैं? ये तो गधा है।” इंस्पेक्टर ने कहा—“गौर से देखिए। आप ही का हाथी का बच्चा है ये। किडनैपर्स ने कुछ खाने पीने को नहीं दिया इसलिए थोड़ा कमजोर हो गया है। चाहें तो इसी से पूछ लें।” हैरान-परेशान शेख ने बार-बार और हर तरीके से गधे के बच्चे से। पूछा वह कौन है? गधा एक ही बात रटे जा रहा था—“मैं हाथी का बच्चा हूं शेख साहब! आप ही के यहां रहता था। किडनैपर्स साले मुझे बहुत टार्चर करते थे। कैद में था उनकी! खाने को भी नहीं देते थे इसीलिए मेरी ये हालत हो गयी। आपके यहां रहूंगा तो फिर पहले जैसा हो जाऊंगा।” जब मुद्दई गवाही दे रहा था तो शेख बेचारा क्या करता? उसे गधे को रखना पड़ा। इण्डियन पुलिस केस हल करके वापस लौट आई। उसके बाद भी शेख ने गधे से कई बार पूछताछ की मगर गधा हमेशा खुद को हाथी का बच्चा बताता रहा। बहुत दिन बाद, जब शेख उसे यह विश्वास दिलाने में कामयाब हो गया कि अब इण्डियन पुलिस लौटकर आने वाली नहीं है तो गधे ने कांपते लहजे में कहा—“शेख साहब! अगर मैं खुद को हाथी का बच्चा न बताता तो वे मुझे खरगोश का बच्चा बना देते।”

सब ठहाका लगाकर हंस पड़े मगर अल्लारक्खा के होठों पर मुस्कान तक नहीं उभर सकी। अभी तक हंस रहे जैकी ने कहा—“लतीफा आपने वाकई लाजवाब सुनाया भाभी जी! ये सच है। विभाजी से मिलने से पहले मैं भी ऐसा पुलिसिया था। पत्थरों तक को बोलने के लिए विवश कर देने का दावा किया करता था मैं। परन्तु अल्लारक्खा को हाथ भी नहीं लगाया। इसके बावजूद इसने हकीकत उगल दी।”

“ये चमत्कार तुमने कैसे किया?”

“भविष्य में थर्ड डिग्री का इस्तेमाल न करने का निश्चय मैं तभी कर चुका था जब आपने कहा कि हम पुलिस वालों को उससे आगे भी कुछ सोचना चाहिए। कॉलिज से थाने तक के रास्ते में सोचता रहा, बगैर थर्ड डिग्री इस्तेमाल किये अल्लारक्खा से हकीकत कैसे उगलवाऊं? थाने पहुंचा। अपने करेक्टर के विपरीत इसे डटकर खाना खिलाया। चाय पिलाई! नाश्ता कराया! बहुत ही प्यार से पेश आया। मैंने देखा मेरी हर हरकत पर यह और ज्यादा डर जाता था। ये बात सच है विभा जी, खौफ के जैसे लक्षण मैंने इसके चेहरे पर देखे, वैसे थर्ड डिग्री से गुजरते किसी मुजरिम के चेहरे पर देखने को कभी नहीं मिले। जिस शख्स को थाने पहुंचते ही अपना हवाई जहाज बनाये जाने का अंदेशा हो, उसके साथ यदि नम्रता से पेश आया जाये तो वह बेहद खौफजदा हो जाता है। यही हालत इसकी भी थी। मैंने एक बार भी नहीं पूछा कि इसने हिमानी के नाम से लविन्द्र को लेटर

क्यों लिखा। अब से कुछ देर पहले यानी रात के लगभग नौ बजे इसे एक जीप में बैठाया। बुरी तरह डरे हुए अल्लारक्खा ने पूछा-----‘अ-आप लोग मुझे कहां ले जा रहे हैं?’

मैंने ड्राइवर की बगल वाली सीट पर बैठते हुए कहा----‘कॉलिज!’

‘क-कॉलिज?’

‘हां!’ मैं हँसते से हँसा----‘मैंने तुम्हें आजाद करने का निश्चय किया है।’

‘म-मगर आपने यह तो पूछा ही नहीं कि....’

‘मुझे कुछ पूछने की जरूरत नहीं है! खुद बताना चाहते तो बता सकते हो।’

अल्लारक्खा चुप रह गया। दावे के साथ कह सकता हूँ लाख सिर पटकने के बावजूद मेरा व्यवहार इसकी समझ से बाहर था। मारे सस्पेंस के बुरी तरह आतंकित हो उठा ये और यहाँ मैं चाहता था।

जीप चल पड़ी।

मैं और एक सब-इंस्पेक्टर ड्राइवर की बगल में आगे बैठे थे। यह चार सशस्त्र पुलिसियों से घिरा पीछे। अल्लारक्खा उसी भयंकर मानसिक अवस्था से गुजर रहा था जिससे मैं गुजारना चाहता था। इससे आगे का हाल अगर यह अपने मुँह से सुनाये तो बात ज्यादा अच्छी तरह समझ में आयेगी।”

“मैं मान ही नहीं सकता था कि इंस्पेक्टर साहब वगैर पूछताछ किये मुझे छोड़ सकते हैं।”

अल्लारक्खा चालू हो गया----“खोपड़ी यह सोच-सोचकर फटी जा रही थी इंस्पेक्टर साहब आखिर कर क्या रहे हैं? उस वक्त मैं उछल पड़ा जब जीप कॉलिज की तरफ जाने वाले रास्ते को छोड़कर शहर से बाहर निकलने वाले रास्ते की तरफ मुड़ी। लगभग चिहुंककर पूछ बैठा मैं----‘य-ये आप मुझे कहां ले जा रहे हैं? यह रास्ता कॉलिज की तरफ नहीं जाता।’

इंस्पेक्टर साहब इस तरह से हँसे जैसे मेरी बौखलाहट का मजा ले रहे हों। बोले----‘डरो नहीं अल्लारक्खा, इधर थोड़ा काम है। उसे निपटाने के बाद तुम्हें कॉलिज छोड़ देंगे।’

मुझे बिल्कुल नहीं लगा ये सब बोल रहे हैं।

हन्डरेड परसेन्ट थकीन हो गया कि कोई खेल खेला जाने वाला है।

मैं बहुत कुछ जानना चाहता था।

पूछना चाहता था।

मगर।

मुँह से आवाज न निकल सकी।

जीप सौ की स्पीड पर दौड़ी चली जा रही थी।

हम रुड़की रोड पर शहर से बाहर निकल चुके थे। एकाएक सब-इंस्पेक्टर ने इंस्पेक्टर साहब से पूछा----‘बात समझ में नहीं आ रही सर। हम लोग जा कहां रहे हैं?’

यह वह सवाल था जिसका जवाब जानने के लिए मैं मरा जा रहा था। अतः मारे उत्तेजना के धड़-धाड़ की आवाज के साथ बज रहे अपने दिल को नियंत्रित करने के असफल प्रयास के साथ कान इंस्पेक्टर साहब के मुंह से निकलने वाले लफ्जों पर सटा दिये। इन्होंने बहुत आहिस्ता से फुसफुसाकर सब-इंस्पेक्टर से कहा—'समझने की कोशिश करो त्रिपाठी! कोर्ट-कचहरियां इस किस्म के खतरनाक मुजरिमों को वह सजा नहीं दे पातीं जो मिलनी चाहिए।'

चौकते हुए सब-इंस्पेक्टर ने कहा—'मैं समझा नहीं सर।'

'सत्या! चन्द्रमोहन! और हिमानी। तीन-तीन मासूमों की हत्या की है इस हरामजादे ने!' इंस्पेक्टर साहब की कोशिश बराबर यही थी कि उनकी आवाज मेरे कानों तक न पहुंच पाये—'सोचो—विभा जिन्दल के मुताबिक इस केस को हम कोर्ट में ले भी गये तो क्या होगा? पलक झपकते ही कोई खुराद वकील जमानत करा लेगा इसकी! अगले दिन फिर कोलिज में दनदनाता घूम रहा होगा। नहीं! इनने खूंखार हत्यारे की सजा ये नहीं है।'

'तो आप क्या करना चाहते हैं?' इस बार सब-इंस्पेक्टर भी फुसफुसाया था।

'दौराता और सकौती के बीच घना जंगल है। वहां इसे उतार कर कहेंगे कि जा हमने तुझे आजाद किया। यह उतरेगा। वहीं गोलियों से छलनी कर देंगे। ये होगी इस हत्यारे की सजा। यह कहानी गढ़ने में हमें कितनी देर लगेगी कि इसने पुलिस गिरफ्त से भागने की कोशिश की और मारा गया।'

सन्नाटा हो गया मेरे दिलो-दिमाग पर।

तिरपन कांप उठे मेरे।

यकीन हो गया—मेरा एनकाउन्टर होने वाला है।

मैं पुलिस की ऐसी कारगुजारियां अखबार में पढ़ा करता था।

जी चाहता—हलक फाड़कर चीख पड़ूं।

मुंह से आवाज न निकल सकी।

जुबान तालू से जा चिपकी थी।

और फिर।

एक झटके से जीप रुकी।

पहले इंस्पेक्टर, उसके बाद पुलिस वाले बाहर कूदे।

जीप मुख्य सड़क से काफी दूर, कच्ची चकरोड पर खड़ी थी। चारों तरफ घनघोर अंधेरा था।

दूर-दूर तक घना जंगल! वियावान!

सन्नाटा सांय-सांय कर रहा था। झिंगुरों की आवाजें साफ सुनाई दे रही थीं।

मुझे हथकड़ियों सहित जीप से उतारा गया।

पैरों के नीचे दबे सूख पत्ते चरमरा उठे।

इंस्पेक्टर साहव ने हथकड़ी खोल दी। कहा—‘तुफांगी मजा यही है अल्लारक्खा यहां से पैदात अपने कॉनिज जाओ। हमारा तरफ से आजाद हो।’

मैं जान चुका था कैसी आजादी मिलने वाली है? नजर इंस्पेक्टर साहव के कूत्ते पर लटके होलेस्टर पर पड़ी। अंचका के बाबजूद सर्विस रिवाल्वर की मूठ माफ नजर आ रही थी। इस एहसास ने मेरे छक्के छुड़ा दिये कि कुछ देर बाद इस रिवाल्वर की गोतियां मेरे जिस्म में घंसी होंगी।

मैं धाड़ से इंस्पेक्टर साहव के कदमों में गिर पड़ा।

इश्कत का मारा दवाड़े मार-मार कर रोता कह उठा----‘मुझे मत मारो इंस्पेक्टर साहव, मुझे मत मारो। मां कसम सत्या मैडम, चन्द्रमोहन और हिमानी की हत्याएं मैंने नहीं कीं।’

‘अरे बड़ा पागल है तू!’ इंस्पेक्टर साहव ने मुझे बहुत प्यार से ऊपर उठाने हुए कहा----‘हम तुझे आजाद कर रहे हैं और तू मरने मारने की बातें करने लगा! किमने कहा हम तुझे मारने वाले हैं?’

‘म-मैंने सब कुछ सुन लिया है इंस्पेक्टर साहव! आप... आप पृछने क्यों नहीं वो नेटर मैंने क्यों लिखा?’

‘बताना चाहता है तो बता दे। वैसे हमें जानने में कोई दिलचस्पी नहीं है।’

‘व-बहुत दिन से हिमानी मैडम पर मेरी नीयत खराब थी।’

मौत के खौफ से घिरा मैं सब उगलता चला गया----‘मैं क्या करता? वे कपड़े ही ऐसे पहनती थीं। हरकती ही ऐसी करती थीं। मैं ही क्या, कॉलिन का हर लड़का उन पर मरता था। मैं उन्हें पाना चाहता था मगर डरता था----कहीं बिदक न जाये। उस अवस्था में बेइज्जती तो होती ही, रेस्ट्रिकेशन भी पक्का था।

अपना उल्लू सोधा करने के लिए एक तरकीब सोची। हिमानी मैडम की तरफ से लविन्द्र सर को लव-नेटर लिखा। मुझे पुरा यकीन था वो नेटर लविन्द्र सर को हिमानी मैडम के कमरे में खींच ले जायेगा। मने ही दोनों की बातचीत में यह खुन जाये कि नेटर हिमानी मैडम ने नहीं लिखा लेकिन, हिमानी मैडम अगर चानू किस्म की लड़की होंगी तो लविन्द्र सर का खुतकर स्वागत करेंगी। मेरा अनुमान था----लविन्द्र सर भी खुद को गोक नहीं मर्केगे। मैं कैमरा लिए कमरे की खिड़की पर बैनात था। सोचा था----उनके फोटो खींच लूंगा। उनके बेम पर हिमानी मैडम को ब्लैकमेल करूंगा और मेरी वह इच्छा पूरी हो जायेगी जिसके लिए मरा जा रहा था। परन्तु वहां तो दृश्य ही उलटा हो गया। जो हुआ, उम्मीदों से एकदम उलटा था। लविन्द्र सर उनसे आदर्श भरी बातें करने लगे। हिमानी मैडम भी वो नहीं निक्तीं जो अपने हाव-भाव और पहनावे से नजर आती थीं। कैमरा बगल में दबाये मैं दबे पांव वहां से निकल जाने पर मजबूर हो गया।’

‘और वस!’ जैकी ने कहा----‘मेरे होटो पर कामयाबी से लवरेज मुस्कान दीड़ पड़ी। जो जानना चाहता था, जान चुका था। अल्लारक्खा को वापस जीप में बैठाया और सोधा यहां आ रहा हूं।’

‘अब मुझे यकीन हो गया जैकी! तुम वाकई पैतरे सीख रहे हो। असल में तुम कोई एनकाउंटर करने वाले नहीं थे। सब-इंस्पेक्टर और तुम मिले हुए थे। वे बातें अल्लारक्खा को उस मानसिक अवस्था तक पहुंचाने के लिए की गई जिस तक अंततः मैं पहुंचा। अंदाज ऐसा था जैसे बातें इससे छुपाकर की जा रही हों जबकि मकसद वे बातें इसे मुनाना था। यकीनन जबरदस्त टैक्निक इस्तेमाल की तुमने। इस टैक्निक से चाहे जब, चाहे जिस मुजरिम को तोड़ा जा सकता है।’

गद्गद होते जैकी ने कहा----‘तारीफ के लिए शुक्रिया विभा जी।’

मन ही मन मैं भी जैकी की तारीफ किये बगैर न रह सका।

हकलाते हुए अल्लारक्खा ने कहा----“म-मैं आप लोगों से एक रिक्वेस्ट करना चाहता हूँ।”

सबने सवालिया नजरों से उसकी तरफ देखा।

“प-प्लीज कॉलिज में किसी को न बतायें मैंने हिमानी मैडम को...”

“और क्या कहेंगे ?” मैं गुर्राया----“क्यों छोड़ दिया गया तुम्हें?”

जैकी ने राय दी----“हत्यारा दूसरों की राइटिंग की नकल मारने में माहिर है। लेटर अल्लारक्खा ने नहीं, उसी ने लिखा है।”

“इस प्रकार से तो हत्यारा समझ जायेगा हम झूठ बोल रहे हैं? वह कृत्य भी उसी पर थोप रहे हैं जो उसने नहीं किया।”

“समझ जायेगा तो समझे! फायदा क्या मिलेगा उसे?”

“उल्टा हमें ही फायदा मिलने की उम्मीद है।” विभा ने कहा----“वह समझेगा----हम इतने मूर्ख और कमजोर हैं कि अल्लारक्खा तक से सच्चाई उगलवाने की काबलियत नहीं रखते।

उसके दिमाग में हमारी ऐसी छवि, फायदा पहुंचायेगी। इन्वेस्टिगेटर को झूठी और काबलियतहीन समझने वाला मुजरिम यकीनन वैसी गलतियां करता है जैसी गलतियों की मुझे तलाश है।”

तब वही हुआ जो विभा चाहती थी। उसने कहा----“अल्लारक्खा को हॉस्टल छोड़ आओ।”

जैकी उसे लेकर चला गया।

मैं विभा से पहली के सम्बन्ध में बात करना चाहता था परन्तु उसने सोने की इच्छा जाहिर की। मधु ने उसे गेस्टरूम में पहुंचा दिया।

काश मैं जान सकता----सोने की बात उसके जहन में दूर-दूर तक नहीं थी।



जैकी कॉलिज पहुंचा।

टोलियां बनाये स्टूडेन्ट्स परिसर में पहरा दे रहे थे।

तेज रोशनी वाले बल्ब लगाकर उन्होंने पूरा कैम्पस प्रकाश-मान कर रखा था।

जैकी ने जब लेटर के बारे में वह कहा जो तब हुआ था तो स्टूडेन्ट्स में खुशी की लहर दौड़ गयी। राजेश ने अल्लारक्खा को गले लगा लिया। कहा----“मैं जानता था यार, वैसा लेटर तू नहीं लिख सकता। ऐसा गंदा मजाक तूने पहले भी कभी नहीं किया।”

अल्लारक्खा की आंखें भर आईं।

एकता बोली----“मेरे ख्याल से हत्यारा स्टूडेन्ट्स में से कोई नहीं हो सकता।”

“तो हत्यायें क्या अध्यापक कर रहे हैं?” ऐरिक धुड़का।

“एकता का मतलब यह नहीं था सर!” संजय बोला।

“और क्या अभिप्राय था?”

जैकी ने मध्यस्तता की----“आप व्यर्थ रुष्ट हो रहे हैं अध्यापक महोदय! एकता ने वह वाक्य भावुकतावश कहा है।”

जैकी के शुद्ध हिन्दी बोलने पर सभी स्टूडेंट्स टहाका लगाकर हंस पड़े।

माहौल थोड़ा सामान्य हुआ।

जैकी ने पूछा----“कैम्पस में इतनी रोशनी क्यों कर रखी है तुम लोगों ने?”

“क्योंकि रोशनी काले दिलवालों की दुश्मन होती है।” जवाब रणवीर ने दिया।

उसके कहने का स्टाइल ही ऐसा था कि जैकी सहित सभी हंस पड़े। हंसी थमने पर जैकी ने कहा----“तुम लोग कहो तो मैं पुलिस पहरें का इन्तजाम कर सकता हूँ।”

“उसकी जरूरत नहीं है इस्पैक्टर साहब।” राजेश ने कहा----“हत्यारे से खुद निपटने का फैसला कर लिया है हमने। विभा जी ने ठीक कहा----दिल से डर निकालकर एक हो जायें तो कैम्पस में पता तक नहीं खड़क सकता।”

“गुड!” जैकी कह उठा----“अब मैं चलता हूँ। होशियार रहना। और हां, शिफ्ट बनाकर पहरा दोगे तो बेहतर होगा। सबको आराम भी मिलना चाहिए।”

“वही प्रोग्राम बनाया है।” राजेश ने बताया----“जो लोग इस वक्त कैम्पस में हैं, वे दो बजे हॉस्टल में जाकर सो जायेंगे। जो सो रहे हैं, दो बजे से उनकी ड्यूटी शुरू होगी।”

संतुष्ट होने के बाद जैकी चला गया।

संजय ने अल्लारक्खा से कहा----“अब तू जाकर आराम कर।”

“नहीं। मैं तुम्हारे साथ पहरें पर रहूँगा।”

“तू पहले ही बहुत थका हुआ होगा यार।” राजेश बोला----“इस्पैक्टर ने टार्चर न किया सही, हवालात में तो रखा है। फिक्र मत कर! यहाँ हम हैं! तू जाकर सो जा।”

यह बात अल्लारक्खा से सभी ने कही मगर वह नहीं माना। कहने लगा----“कमरे में जाकर मैं लेट भी गया तो नींद नहीं आयेगी।”

लविन्द्र बोला----“इसकी इच्छा पहरें पर रहने की है तो क्यों जिद करते हो? यही सही, लेकिन अल्लारक्खा, कम से कम फ्रेश तो हो लो तुम!”

“हां! ये ठीक है। मैं अभी आता हूँ।” कहने के बाद वह हॉस्टल की तरफ बढ़ गया।

तेज कदमों के साथ, गैलरी पार करके अपने कमरे में बंद दरवाजे पर पहुंचा।

जेब से चाबी निकालकर ताला खोला।

अंदर दाखिल होते ही दरवाजे की बैक में लगा स्विच ऑन किया।

कमरा द्यूब की दूधिया रोशनी से भर गया।

कपड़े उतारकर बेड पर डाले और बाथरूम में घुस गया।

दस मिनट बाद वापस कमरे में आया। नाइट सूट पहना और उसके ऊपर वह नाइट गाऊन डाल लिया जिसकी पीठ पर हेलमेट वाले ने कुछ लिखा था।

पूर्व की भांति उस पर लिखा कोई अक्षर चमक नहीं रहा था।

नाइट गाऊन पहने कमरे से बाहर निकला। ताला लगाया और गैलरी में बढ़ गया।

पांच मिनट बाद वह राजेश, दीपा, रवीना, रणवीर और लविन्द्र सर की टुकड़ी में शामिल था।



मेरी बातें सुनकर मधु के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं।

उसकी ऐसी हालत देखकर ठहाका लगा उठा मैं! फिर बोला-----“क्या हुआ?”

“ये सब आपने ठीक नहीं किया।”

“न करता तो मेरा उल्लू कैसे सीधा होता?”

“लेकिन अब तो उन्हें हकीकत बता देनी चाहिए।”

“पहली बार विभा से मजा लेने का मौका मिला है। जमकर छकाऊंगा। तुम्हें याद है----जिन्दलपुरम में उसने कितना छकाया था? सारी इन्वेस्टिगेशन हमारी आंखों के सामने करती रही लेकिन भेद की कोई बात वक्त से पहले नहीं बताई।”

“वक्त से पहले किसी को कुछ न बताना उनकी कार्य प्रणाली है।”

“उसी कार्य-प्रणाली को देखना है इस बार। देखता हूँ कब तक क्या-क्या छुपाती है मुझसे?”

“मेरे ख्याल से आप ठीक नहीं कर रहे।”

“अब दूसरे एंगिल से सोचो। हत्यारे के दिमाग का फ्यूज उड़ा हुआ नहीं होगा क्या?”

“वो सब तो ठीक है मगर....

मधु का वाक्य पूरा होने से पहले टेलीफोन की घंटी घनघना उठी।

डेढ़ बजा रही घड़ी पर नजर डालते हुए मैंने रिसीवर उठाकर हैलो कहा।

दूसरी तरफ से हड़बड़ाहटयुक्त स्वर में कहा गया-----“लविन्द्र भूषण बोल रहा हूँ वेद जी।”

“क्या हुआ?” आइट की आशंका का मारा मैं comicsonmylife.blogspot.in

“विभा जी कहां हैं?”

“वात बोलो! हुआ क्या है?”

“अल्लारक्खा का मर्डर!”

“उफ्फ!” मैं बुदबुदा उठा।

“जल्दी से उन्हें सूचना दीजिए।” कहने के साथ फोन काट दिया गया।

मैंने रिसीवर क्रेडिट पर पटका।

मधु ने पूछा----“क्या हुआ?”

मैंने बताया तो आश्चर्य से मुंह फाड़े मेरी तरफ देखती रह गयी वह।

मैंने बेड से सीधी जम्प दरवाजे पर लगाई। फर्स्ट फ्लोर की बॉल्कनी में पहुंचा।

बगल वाला दरवाजा गेस्टरूम का था।

उसे मैंने खटखटाया नहीं बल्कि आवेशित अंदाज में बुरी तरह भड़भड़ा दिया।

चीखा----“विभा! विभा! जल्दी से दरवाजा खोलो।”

मगर।

अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं उभरी।

मैं चकित हैरान।

जानता था----विभा को जगाने के लिए हल्का सा खुटका काफी है। और इस वक्त तो मैंने इतना शोर मचा दिया था कि ग्राउन्ड फ्लोर पर अपने-अपने कमरों में सोये करिश्मा, गरिमा, खुशबू, शगुन, विनोद, बहादुर और छोटू ही नहीं, माता-पिता भी हड़बड़ाकर उठ गये।

इसके बावजूद गेस्टरूम से कोई आवाज नहीं उभरी।

मेरे लिए यह हैरानी की बात थी।

हड़बड़ाया हुआ मैं दरवाजा खोलकर फर्स्ट फ्लोर के टैरेस पर पहुंचा।

गेस्टरूम की एक खिड़की टैरेस की तरफ थी।

वह खुली पड़ी थी।

कमरे में नाइट बल्ब का प्रकाश बिखरा हुआ था।

डबल बेड पर कोई नहीं था।

मैंने आवाज लगाई-----“विभा! विभा!”

जवाब नदारद।

मैंने झाँका। नजर छोटी गैलरी में खुलने वाले दरवाजे पर पड़ी। वह खुला हुआ था।

“क्या हुआ?” तेजी से दौड़कर नजदीक आती मधु ने कहा-----“विभा वहन बोल क्यों नहीं रही?”

“वह कमरे में नहीं है।”

उछल पड़ी मधु-----“कहाँ गयी?”

“जसर कॉलिज की तरफ गई होगी।” कहने के साथ मैं अपने कमरे की तरफ लपका।



विभा कॉलिज कैम्पस में मौजूद एक ऐसे पेड़ पर बैठी थी जहाँ से काफी दूर-दूर तक निगाह रख सकती थी। हमेशा विधवा के लिये रहने वाली विभा के जिस्म पर इस वक्त टाइट जींस, टाइट शर्ट और उसके ऊपर काले चमड़े की जैकेट थी। पैरों में काले पीटो शू और सिर पर लम्बे छज्जे वाली कैप लगाये हुए थी। जगह-जगह स्टूडेंट्स के दल पहरा देते नजर आ रहे थे। उनमें प्रोफेसर्स भी थे।

विभा ने खुद को घने पत्तों के बीच एक चौड़ी डाल पर स्थापित कर रखा था। कुछ देर बाद उसे एक अंधेड़ शख्स अंधेरे में छुपता-छुपाता इसी पेड़ की तरफ बढ़ता नजर आया।

विभा की आंखें स्वतः उस पर जम गई।

हालांकि वह खुद को अंधेरे में रखने की भरपूर चेष्टा कर रहा था परन्तु रोशनी इतनी थी कि बार-बार उसके दायरे में गुजरना पड़ता।

ऐसे ही एक क्षण विभा ने उसे पहचान लिया।

वह नगेन्द्र था। कॉलिज का चपरासी।

वह चोरों की तरह छुपता-छुपाता इस तरफ क्यों आ रहा है?

यह सवाल विभा के दिमाग में अटक कर रह गया।

कुछ देर बाद वह पेड़ की जड़ में छाये अंधेरे में आकर खड़ा हो गया।

जेब से बण्डल और माचिस निकालकर एक बीड़ी सुलगाई।

वहीं खड़ा-खड़ा कश लगाने लगा।

विभा अभी कुछ समझ भी नहीं पाई थी कि एक अन्य दिशा से एक और साया उसी तरह चोरी-चोरी पेड़ की तरफ बढ़ता

नजर आया। विभा ने उसे गौर से देखा-----पलभर के लिए वह रोशनी से गुजरा।

वह गर्ल्स हास्टल की वार्डन थी----ललिता।

सस्पेंस की ज्यादाती के कारण विभा का दिल धड़-धाड़ करके बजने लगा।

उसके देखते ही देखते ललिता भी पेड़ की जड़ में पहुंच गई।

“मरवाओगे क्या? कैम्पस के चप्पे-चप्पे पर उन्होंने रोशनी कर रखी है।” कहने के साथ नगेन्द्र ने बीड़ी फैंककर ललिता को बांहों में भर लिया।

ललिता खुद को उससे आजाद करने का प्रयत्न करती बोली----“क्या कर रहे हो?”

“जिसके लिए बुलाया है।”

“कोई देख लेगा।”

“चिंता मत कर! यहां अंधेरा है, कोई नहीं आयेगा।”

“छोड़ो मुझे।” खुद को उसकी बांहों से निकालती ललिता ने कहा----“कालिज में दिन रात मर्डर हो रहे हैं, तुम्हें अपनी पड़ी है! जो हो रहा है उसके बारे में क्या सोचते हो तुम?”

“क्या हो रहा है?”

“पहले चन्द्रमोहन! उसके बाद हिमानी! किसने मारा उन्हें?”

“क्या पता?”

“सोचो। दिमाग पर जोर डालो। कल हम भी तो मर सकते हैं।”

“हम!” आवाज कांप गयी नगेन्द्र की----“हम क्यों मरेगे?”

“जिसलिए वे मरे।”

“किसलिए मरे?”

“मुझे क्या पता?”

“नहीं पता तो क्यों भेजा चाट रही है?”

“अच्छा छोड़ो तो सही।”

नगेन्द्र ने कहा----“छोड़ कैसे दूँ? मौका अच्छा है।”

“किसी ने देख लिया तो दोनों की नीकरी जायेगी। मैं चलती हूँ।” कहने के साथ उसने एक झटके से अपनी कलाई छुड़ाई। बोली----“जब तक हत्यारा पकड़ा नहीं जाता तब तक स्टूडेंट लोग इसी तरह रात-दिन हंगामा रखेंगे।” कहने के साथ वह वापस चल दी।

चार-पांच कदम लपककर नगेन्द्र ने पकड़ना चाहा परन्तु वह हाथ नहीं आई।

ज्यादा आगे बढ़ने की हिम्मत नगेन्द्र ने भी नहीं की।

पहले ललिता आंखों से ओझल हुई, फिर नगेन्द्र भी चला गया।

अचानक लाइट गुल हो गयी।

एक झटके से कैम्पस में अंधेरा छा गया।

लविन्द्र भूषण की आवाज उभरी----“ये क्या हुआ राजेश?”

“शायद लाइट चली गई सर।” राजेश की आवाज।

किसी अन्य स्टूडेंट ने कहा----“सामने वाली लेन की लाइट आ रही है।”

“केवल कॉलेज की लाइट गई है।” कोई चीखा----“कहीं कुछ गड़बड़ है!”

एक और आवाज----“मेन स्विच चैक करो।”

“अकेला कोई नहीं जायेगा उधर! मैं आ रहा हूँ....।”

पेड़ पर बैठी विभा न केवल ये आवाज सुन रही थी बल्कि अंधेरे के कारण कैम्पस में भर्ची अफरा-तफरी को देख भी रही थी। यह सच है सामने वाली लेन की लाइट आ रही थी। केवल कॉलेज की लाइट गुल हुई थी और ये संकेत था किसी गड़बड़ का!

दुर्घटना का!

विभा सतर्क होकर बैठ गई। जैकेट से निकलकर नन्हां सा रिवाल्वर हाथ में आ गया।

तभी----उसे दूर, कैम्पस में एक जुगनू सा चमकता नजर आ गया।

जुगनू काफी दूर था। कभी दाईं तरफ भागता नजर आ रहा था, कभी बाईं तरफ।

विभा ने उसे ध्यान से देखने की कोशिश की।

कुछ समझ न पाई।

तभी।

“धाय!”

वातावरण में एक गोली की आवाज गूँजी।

गोली को जुगनू में लगते विभा ने साफ देखा।

एक इंसानी चीख उभरी।

अफरा-तफरी दहशत और भगदड़ में बदल गयी।

चारों तरफ से चीखने चिल्लाने की आवाजें आने लगीं।

गोली उसके साथ वाले पेड़ से चलाई गई थी। रिवाल्वर ताने विभा उसी तरफ घूर रही थी। वह पेड़ मुश्किल से विभा वाले पेड़ से बीस मीटर दूर था।

अचानक उस पेड़ से एक इंसानी साया जमीन पर कूदा।

विभा ने उसे लक्ष्य करके ट्रेंगर दवा दिया।

एक और फायर की आवाज गूँजी। मगर चीख नहीं उभरी। अंधेरे के कारण निशाना ठीक से नहीं लग पाया था। विभा को साया तेजी से भागता नजर आया।

वह भी धम्म से जमीन पर कूदी।

साये के पीछे लपकी।

दौड़ते-दौड़ते उसे लक्ष्य करके एक आध गोली भी चलाई।

परन्तु एक तो अंधेरा! दूरी! और भागमभाग के कारण निशाना लगना कठिन था।

वह चीखी----“पकड़ो! पकड़ो! हत्यारा भाग रहा है।”

शोर चारों तरफ से उठा लेकिन किसी की समझ में नहीं आ रहा था कौन कहां है?

गहन अंधकार के बावजूद विभा आंखें अपने लक्ष्य पर गड़ाये हुए थी बल्कि बराबर पीछा कर रही थी उसका। भागते-भागते वे एक बरांडे में पहुंच गये।

और फिर----अचानक साया विभा की आंखों से ओझल हो गया।

सामने की तरफ से भागते कदमों की आवाज आनी बंद हो गयी।

ठिठक गई विभा।

अपने इर्द-गिर्द खतरा-सा नजर आने लगा।

मजबूती के साथ जमीन पर पैर जमाये चार पांच कदम आगे बढ़ी।

तभी----पीठ पर भारी बूट की ठोकर पड़ी।

मुंह से चीख! हाथ से रिवाल्वर निकला। बरांडे के फर्श पर गिरी वह।

किसी ने भागकर नजदीक से निकलना चाहा।

फर्श पर पड़े ही पड़े विभा ने दाया हाथ बढ़ाकर उसकी टांग पकड़ ली।

मुंह से चीख निकलता हुआ वह भी मुंह के बल गिरा।

विभा फूर्ती से उछलकर खड़ी हुई।

एक मजबूत हेलमेट उसके सिर से टकराया। मारे पीड़ा के वह तिलमिला उठी। दोनों हाथ बढ़ाकर प्रतिद्वन्दी का गिरवान पकड़ा। प्रतिद्वन्दी ने अपने घुटने की चोट उसके पेट में की।

विभा चीख के साथ दुहरी हो गयी।

हेलमेट वाले ने उसे रबर की गुड़िया की तरह उठाकर एक क्लासरूम में फेंक दिया।

डेस्क और कुर्सियों से उलझती विभा फर्श पर गिरी।

अपनी तरफ से काफी फूर्ती के साथ वापस उठी परन्तु तब तक धाड़ से क्लासरूम का दरवाजा बंद हो चुका था। घनघोर अंधकार के बीच वह दरवाजे की तरफ लपकी।

उसे खोलना चाहा।

दरवाजा बाहर से बंद था।

विभा ने महसूस किया----उसकी अंगुलियों में कोई लॉकेट उलझा हुआ है।



भागते दौड़ते रणवीर और संजय मेन स्विच पर पहुंचे।

हाथ में पेंसिल टाव लिए एकता भी उनके साथ थी।

“एकता इधर!” रणवीर ने कहा----“स्विच पर रोशनी डालो।”

एकता ने प्रकाश दावरा उधर घुमाया।

संजय के मुंह से निकला----“ये तो ऑफ है।”

“जरूर हत्यारे ने किया होगा।”

“जल्दी ऑन कर बेवकूफ!”

एकता ने कहा----“उसकी अंगुलियों के निशान मिट जायेंगे।”

“अंधेरा रहा तो वह भाग जायेगा।” कहने के साथ रणवीर ने एक झटके से स्विच ऑन कर दिया। कैम्पस प्रकाश से नहा गया।

जो जहां था, एक पल के लिए वहीं ठिठक गया।

आंखें चुंभिया गइ।

और जब देखने लायक हुई तो फिजिक्स लैब के बाहर मौजूद हर शख्स के हलक से चीख उबल पड़ी। अपने-अपने स्थान से दो तीन कदम पीछे हट गये सभी।

फटी-फटी आंखें औंधे मुंह पड़ी अल्लारक्खा की लाश पर स्थिर थीं।

गोली उसकी पीठ में लगी थी।

धल्ल-धल्ल करके खून वह रहा था जख्म से।

“हे प्रभु!” ऐरिक कह उठा----“अल्लारक्खा की भी हत्या कर दी गयी।”

अन्य किसी के मुंह से बोल तक न फूट सका।

इधर-उधर से दौड़कर दूसरे स्टूडेन्ट्स और प्रोफेसर्स भी वहां पहुंच गये।

उन्हीं में से रणवीर, संजय और एकता भी थे।

जिसने भी लाश देखी----अवाक सा खड़ा रह गया।

बंसल भी नाइट गाऊन की डोरी बांधता पहुंचा।

लाश पर नजर पड़ते ही पैरों तले से जमीन खिसक गई मानो! मुंह से निकला----“हे भगवान! ये हो क्या रहा है? क्यों हो रहा है?”

किसों पर जवाब हो तो दे भी!

तभी भागता हुआ लविन्द्र भूषण आया।

राजेश ने पूछा----“आप कहाँ थे सर?”

“जैकी और वेद जी को फोन करके आया हूँ।”

“क्या होगा बार-बार दुरभाष करके?” ऐरिक रोषपूर्ण स्वर में चीख पड़ा----“हत्याओं की यह शृंखला किसी के रोके नहीं रुक रही! पता नहीं किसकी हाय लगी है विद्यालय की।”

“मेरे ख्याल से विभा जी तो कॉलिज में ही कहीं थीं।” राजेश ने कहा।

“विभा जी यहाँ!” लविन्द्र ने पूछा----“यहाँ कहाँ हैं वे?”

“क्या आपने उनकी आवाज नहीं सुनी?”

“आवाज तो मैंने भी सुनी थी।” दीपा बोली----“और जानी-पहचानी भी लगी थी। मगर उस वक्त समझ नहीं पाई कि विभा जी की है। उन्होंने कहा था----पकड़ो! पकड़ो! हत्यारा भाग रहा है।”

“हां। अब मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।” रणवीर ने कहा----“आवाज उन्हीं की थी।”

“जो कुछ उन्होंने कहा, उससे जाहिर है----विभा जी ने हत्यारे को देखा है।”

“मेरे ख्याल से गोलीबारी भी हुई है उनके बीच।” लविन्द्र ने कहा----“अंधेरे के दरम्यान कई गोलियां चलीं जबकि अल्लारक्खा को सिर्फ एक लगी है।”

सवाल बंसल ने उठाया----“अगर विभा जी कैम्पस में थीं तो हैं कहा?”

जवाब किसी के पास नहीं था।

चारों तरफ सन्नाटा छा गया।

एकाएक वातावरण में किसी दरवाजे को भड़भड़ाये जाने की आवाज गूंजी और फिर यह आवाज लगातार गूंजती चली गई। हालांकि कोई कुछ समझ नहीं सका परन्तु सभी स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स आवाज की दिशा में बढ़ते चले गये।

दो मिनट बाद भीड़ उस क्लासरूम के बाहर बरांडे में थी जिसका दरवाजा अन्दर की तरफ से भड़भड़ाकर जोरदार आवाज पैदा कर रहा था।

दरवाजा बाहर से बंद था।

राजेश ने गुराकर दूर ही से पूछा----“कौन है अंदर?”

“हम हैं राजेश। दरवाजा खोली।”

किसी को भी विभा की आवाज पहचानने में दिक्कत नहीं हुई।

रणवीर ने फूली से दरवाजा खोला।

विभा लपककर बाहर निकली।

सभी चौंके।

विभा को देखकर कम, उसके लिवास को देखकर ज्यादा।

उसने पहला सवाल किया----“गोली किसे लगी?”

“अल्लारक्खा को।”

“उफफ!” दांत कटकटा उठी विभा।

“म-मगर आप? इस ड्रेस में? कमरे में किसने बंद किया आपको?”

“आओ।” कहने के साथ वह अपना रिवाल्वर उठाकर आगे बढ़ी और अल्लारक्खा की लाश के नजदीक तक पहुंचते-पहुंचते संक्षेप में हेलमेट वाले से अपने टकराव का वृत्तांत सुना दिया।

लॉकिट का कोई जिक्र नहीं किया।

चेहरे पर जलजले के से भाव लिए उस वक्त वह अल्लारक्खा की लाश को देख रही थी जब मैं पहुंचा। मेरे दो मिनट बाद जैकी भी आ गया। अल्लारक्खा की लाश पर नजर पड़ते ही वह भी इस तरह खड़ा रह गया जैसे लकवा मार गया हो। मैं कह उठा----“तुमने मुझे हैरान कर दिया विभा। गेस्टरूम से गायब पाकर तो मेरे होश ही उड़ गये।”

“हैरान तो इस केस के मुजरिम ने कर दिया है!” विभा बड़बड़ा उठी----“आज तक मैंने ऐसी कोई केस हिस्ट्री नहीं पढ़ी जिसमें इतनी जल्दी-जल्दी मर्डर हुए हों।”

“समझ में नहीं आ रहा ये हो क्या रहा है?” बंसल मानो अपने बाल नोच डालना चाहता था----“वो कौन है? और क्यों कॉलिज में लाशों के ढेर लगा रहा है।”

मैं बोला----“मेरे ख्याल से तो कोई पागल या जुनूनी किस्म का हत्यारा है।”

“इस ख्याल की वजह?”

“वजह बिल्कुल साफ है विभा जी।” लविन्द्र भूषण ने कहा----“जब गोली चली उस वक्त चारों तरफ घनघोर अंधेरा था। आपने खुद बताया, गोली उस पेड़ से चलाई गई। अंधेरे में इतनी दूर से मनचाहे व्यक्ति को निशाना नहीं बनाया जा सकता है।”

“तो?”

“ये संयोग है गोली अल्लारक्खा को लगी और ये मर गया। ऐसा हरगिज नहीं कहा जा सकता वह अल्लारक्खा को ही मारना चाहता था। गोली हममें से किसी को भी लग सकती थी। मुमकिन है अल्लारक्खा की जगह यहां मैं पड़ा होता। हत्यारे ने हम लोगों की भीड़ की तरफ रिवाल्वर का रुख करके गोली चला दी। बस! उसे मतलब नहीं था कौन मरे! अर्थात् उसका मकसद व्यक्ति विशेष की हत्या नहीं बल्कि कॉलिज के किसी भी वाशिदे की हत्या है। ऐसा मकसद किसी जुनूनी या पागल का ही हो

सकता है।”

“तको के हिसाब से तुम ठीक हो मगर सच्चाई ये नहीं है मि० लविन्द्र।”

“क्या आप यह कहना चाहती हैं उसने निशाना ताक कर अल्लारक्खा को गोली मारी?”

“यकीनन।”

“ऐसा कैसे हो सकता है?” जैकी बोला—“अंधेरा और दूरी इतनी थी कि....”

“राजेश।” विभा ने जैकी का वाक्य पूरा होने से पहले कहा----“तुम मेन स्विच पर पहुंचो।”

“ज-जी! करना क्या है?”

“उसे ऑफ कर दो।”

वह कुछ समझ न सका। मैंने कहा----“उससे क्या होगा?”

“बताती हूं निशाना कैसे लगाया गया। खड़े क्यों हो राजेश? जाओ।”

राजेश को जाना पड़ा।

एक मिनट बाद।

‘खट्ट’ से लाइट ऑफ हो गई।

विभा की आवाज गूंजी----“सब लाश की तरफ देखें।”

सभी की नजरें उस तरफ घूम गई।

कुछ के मुंह से चीखें और कुछ के मुंह से सिसकारियां निकल पड़ीं।

अल्लारक्खा की पीठ पर लिखा CHALLENGE अंधेरे में अग्निशिखा की मानिन्द चमक रहा था। गोली । को बैठती हुई अल्लारक्खा की पीठ में धंस गई थी। CH और LL तक खून की बीछरे फैली चमक रही थीं। बाकी अक्षर पूरी तरह चमचमा रहे थे।

“ये-ये सब क्या है?” बंसल के हलक से हकलाहट निकली।

“मि० लविन्द्र केमिस्ट्री के प्रोफेसर हैं।” विभा ने कहा----“मुझसे बेहतर बता सकते हैं कि ये अक्षर कौन से केमिकल से लिखे गये हैं।”

“फ-फास्फोरस से।” लविन्द्र बड़ी मुश्किल से लफ्ज निकाल पाया----“फास्फोरस रोशनी में नहीं चमकता लेकिन अंधेरे में वैसे ही चमकता है जैसे चमक रहा है।”

मेन स्विच की तरफ से राजेश ने चीखकर पूछा----“अब क्या करना है?”

“ऑन कर दो।” विभा ने ऊंचे स्वर में कहा।

खट्ट की आवाज के साथ लाइट ऑन हो गयी।

और उसके साथ ही अल्लारक्खा के गाऊन पर लिखा CHALLENGE चमकना बंद हो गया।

राजेश दीड़ता हुआ आया। वह हाँफ रहा था।

विभा ने कहा----“अब शायद बताने की जरूरत नहीं हत्यारा सिर्फ और सिर्फ अल्लारक्खा को मारना चाहता था। अंधेरा किया ही इसलिए गया क्योंकि अल्लारक्खा को निशाना बनाने के लिए उसे अंधेरे की जरूरत थी। रोशनी में वह इतने अच्छे ढंग से निशाना नहीं लगा सकता था। जाहिर है गाऊन पर काफी पहले फास्फोरस से CHALLENGE लिख दिया गया था। यह तैयारी ठीक वैसी ही थी जैसी हिमानी के मर्डर के लिए की गई। नतीजा साफ है। हत्यारा जुनूनी या पागल नहीं बल्कि बेहद चालाक है और हर मर्डर खूब सोच समझकर, बाकायदा प्लान बनाकर कर रहा है।”

“मगर क्यों?” बंसल चीख पड़ा----“एक-एक को चुन-चुनकर क्यों मार रहा है वह?”

“यह पता लग जाये तो हत्यारा शायद बेनकाब हो जाये।”

लविन्द्र ने कहा----“कमाल की बात तो ये है कि वह आपके हाथ में आकर निकल गया।”

“इसमें कमाल की कोई बात नहीं है।” विभा ने कहा----“न मैं फाइटर हूँ न ही फाइटिंग का कोई अनुभव है। मैं केवल दिमाग से इन्वेस्टिगेशन करती हूँ। इस ड्रेस में आकर उस पेड़ पर केवल इसलिए छुपी थी कि शायद कोई राज की बात मालूम कर सकूँ। हत्या की कल्पना मैंने नहीं की थी और हत्यारे ने भी नहीं सोचा होगा कि उसकी किसी से मुठभेड़ हो सकती है। उसने अंधेरे का लाभ उठाकर आराम से गायब होने के बारे में सोचा होगा।”

एक बार फिर पूरी भीड़ के बावजूद माहौल में सन्नाटा छा गया।

“बंसल साहब।” विभा ने कहा----“नये हालात में मुझे एक बार फिर कहना पड़ रहा है! कल से कॉलिज की सामान्य गतिविधियाँ हर हालत में चालू हो जानी चाहिए।”

“क-क्या कह रही हैं आप? भला कैसे....”

“इस सम्बन्ध में मैं ज्यादा तर्क-वितर्क नहीं करना चाहती। केवल इतना समझ लीजिए आज ही रात में अल्लारक्खा के मर्डर के पीछे एक वजह ये भी हो सकती है कि हत्यारा कॉलिज में सामान्य हालात नहीं चाहता। और हम वह नहीं कर सकते तो वह चाहता है।”

दयनीय भाव से बंसल ने स्टूडेन्ट्स की तरफ देखा----सब खामोश थे।



कमरे में केवल मैं, जैकी और विभा थे।

बाकी सबको बाहर निकाल दिया गया था। बाहर निकलते बंसल से विभा ने कहा था----“नगेन्द्र और ललिता को मेरे पास भेजो।”

उसका आदेश हम तीनों को चौंका देने वाला था।

चमक सी ही जल्म मगर बगैर कुछ फटे बादर घना गया।

मानव करने का मौमना है ही भी न कर सका। मैंने जल्म पूछ लिया----“क्या नगेन्द्र और ललिता इस फेस में कोई मदद कर सकते हैं?”

“फला नहीं।” विभा ने गलाट स्वर में कहा।

मुश्किल से पांच मिनट बाद नगेन्द्र और ललिता कमरे के दरवाजे पर नजर आये।

दोनों के चेहरे मुझे हुए थे।

मेरे देखने की फट्यान गया यकीनन उनसे कोई अपराध हो गया है।

मगर क्या?

मैं नहीं जान सका।

उसी को जानने के लिए दिली-दिमाग टकटकी लगाये हुए था।

वे दरवाजे पर टिडब, गये। अंदर आने के लिए मानो कदम न उठ सके।

विभा के मुंह से आवाज नहीं छोड़े की फटकार निकली----“अंदर आओ।”

मानो किसी यंत्र ने दोनों को अंदर धकेला।

“वेदा।” नजरे उन्हीं पर टिकाये हुए विभा ने मुझसे कहा----“दरवाजा बंद कर दो।”

मैंने नगेन्द्र और ललिता के पीछे पहुँचकर दरवाजा बंद किया।

“कर्मिय आओ।” हन्टर की एक और फटकार।

वे हम नज़र आगे बढ़े जैसे लॉर फिल्म का करेक्टर भूत की तरफ बढ़ता है।

मेरे को तैयार थे दोनों। चेहरों पर आतंक! दहशत!

गम-गम करके विभा के पास पहुँचे।

और फिर!

दोनों एक तरह फझड़ सी खाकर उसके कदमों में गिरे जैसे एक ही चाबी से हरकत में आने वाले खिलौने हों। दोनों के मुँह से लगभग एक जैसा लफज निकले----“हमें माफ कर दीजिए विभा जी।”

मैं और जैदा अवाक!

हमें क्या मान्य अपनी कौन सी मन्ती की माफ़ी मांग रहे थे वे।

“शुद्ध।” विभा के मुँह से पर छाई कटोस्ता ज्यों की त्यों विराजमान रही----“खड़े होकर बात करो।”

दोनों एक साथ खड़े हो गये।

वे सचमुच आंसुओं से रो रहे थे।

“इसका मतलब तुम जान गये हो कि मैं क्या जान गई हूँ?” इन शब्दों के साथ जो कुछ विभा ने कहना शुरू किया, कम से कम मेरे और जैकी के लिए वह पहली जैसा ही था----“जानोगे भी क्यों नहीं? कैम्पस में बता चुकी हूँ कि हेलमेट वाले से हुई मुठभेड़ से पहले मैं कहाँ था। समझ सकते हो, तुम्हारी सारी बकवास मैंने सुनी है।”

“हम दोनों तयार हो जायेंगे विभा जी।” नगेन्द्र ने कहा----“नौकरी चली जायेगी हमारी।”

“नर्क में गिरने से पहले नहीं सोचा था?”

दोनों चुप।

“ये तो मर्द है। मैं तुमसे पूछती हूँ ललिता। क्या सोचकर कीचड़ में गिरीं तुम? क्या दुनिया में जिस्मानी भूख ही सबकुछ है? तुम्हारे पति को पता लगेगा तो क्या होगा?”

अब जाकर मेरी और जैकी के बुद्धि के कपाट खुले।

ललिता कह रही थी----“इसने मुझे बहका लिया था मैडम।”

“शटअप!” विभा गुराई----“तुम बच्ची नहीं हो! जिसे बहका लिया।”

पुनः खामोशी।

“कब से चल रहा है ये सब?”

दोनों गर्दन झुकाये खड़े रहे।

विभा गुराई----“जवाब दो!”

“छह महीने से।” दोनों एक साथ बोले।

“सत्या मैडम जानती थीं?”

“न-नहीं।”

“अपनी बातों के दरम्यान तुमने कहा था पहले चन्द्रमोहन मरा। फिर हिमानी! कहा था न?”

“ज-जी?”

“क्यों कहा ऐसा?”

ललिता ने पहली बार चेहरा ऊपर उठाकर पूछा----“क-क्यों इसमें भी कुछ गलत था?”

“हां! गलत था।”

“इ-इसमें क्या गलत था मैडम?”

"खुद सोचो! सोचकर जवाब दो क्या गलत था इसमें?"

कुछ देर चुप रही ललिता, फिर बोली----"म-मुझे तो कुछ गलत नहीं लग रहा।"

"तुम जवाब दो नगेन्द्र। जो कहा उसमें क्या गलत था?"

"पहले चन्द्रमोहन नहीं, सत्या मैडम मरी थी।"

"आई बात समझ में! अब बोलो----सत्या मैडम को कैसे मृत गयीं तुम? ये क्यों नहीं कहा कि पहले सत्या, फिर चन्द्रमोहन और उसके बाद हिमानी का मर्डर हुआ।"

"म-मृती नहीं थी। मृतने का तो सवाल ही नहीं उठता। वस जो मुंह में आया वह कहती चली गयी। बात को इतनी गहराई तक मैं सोच भी कैसे सकती थी?"

"और कोई कारण तो नहीं है?"

"अ-और क्या कारण हो सकता है?"

इस बार विभा उसे केवल घूरती रही। बोली कुछ नहीं। थोड़े अंतराल के बाद कहा----"अब तुम जा सकते हो। मगर सुनो! यदि चाहते हो ये करतूत इस कमरे में बंद रहे तो जो कर रहे थे, उसे फौरन बंद कर दो।"

बार-बार वादा करने के बाद दोनों बाहर गये।

विभा ने फिर मुझसे दरवाजा बंद करने के लिए कहा।

मैं समझ गया। अभी उसके पास कोई और गोट भी है। अतः लपककर दरवाजा बंद किया। पलटकर उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा----"कभी-कभी तुम महत्वहीन बात को ज्यादा लम्बी नहीं कर देती विभा?"

"कौन सी बात की तरफ इशारा है तुम्हारा?"

"यह कि 'तुमने अपने सेन्टेन्स में सत्या का नाम नहीं लिया'।"

"काश तुम समझ सकते, यह महत्वहीन नहीं बल्कि अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है। यह ऐसी बात है जो स्वप्न में भी किसी के मुंह से नहीं निकलनी चाहिए। शुरू से जो शख्स कॉलिज में घटी घटनाओं का चश्मदीद गवाह है, अगर वह बगैर सोचे समझे भी मुंह से लफ्ज निकाले तो स्वाभाविक रूप से वहाँ निकालेगा जो हुआ है। उसने सत्या का नाम नहीं लिया, ये बात अस्वाभाविक है। और अस्वाभाविक बात कल के केस की इन्वेस्टिगेशन कर रहे शख्स को हर हाल में खटकनी चाहिए।"

"इसलिए तुम्हें खटकी?"

"यकीनन!"

"नतीजा क्या निकला? अस्वाभाविक बात ललिता के मुंह से क्यों निकली?"

"फिलहाल तुम उसे छोड़ो। मैं तुम्हें हत्यारे की एक चीज दिखाना चाहती हूँ।"

"हत्यारे की चीज?" मैं उछल गया।

चीकने के भाव जैकी के चेहरे पर भी थे।

विभा ने जेब से लॉकिट निकालकर मेज पर रख दिया।

सोने की चेन में सोने का ही बना दिल लगा था।

“अरे!” जैकी उछल पड़ा—“ये तो लविन्द्र का है।”

“ल-लविन्द्र का?” मैं और विभा चौंक पड़े।

“आपने नहीं देखा इसे? उस वक्त राइटिंग टेबल पर ही तो पड़ा था जब हम लोग हिमानी के कमरे से उसके कमरे में पहुँचे। इसका आधा हिस्सा मेज पर रखी बुक्स के नीचे दबा था मगर ये दिल वाला हिस्सा साफ नजर आ रहा था। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ यह वही है। आपको कहां से मिला?”

“हत्यारे के गले से।”

बुरी तरह उद्विग्न मैंने कहा—“प्लीज विभा! डिटेल् बताओ।”

“तुम तो जानते हो—मारघाड़ से मेरा कभी कोई ताल्लुक नहीं रहा। इसके बावजूद जब हेलमेट वाला सामने पड़ा तो उसका पीछा करने के अलावा कुछ नहीं सूझा। बरांडे में उससे गुत्थम-गुत्था हुई। मुकाबला तो खैर मैं क्या कर पाती? रबर की गुड़िया की तरह उसने मुझे उठाकर क्लासरूम में फेंक दिया। कदाचित उस वक्त मेरे हाथ उसके गिरेबान पर थे। वस इतना ही कह सकती हूँ थोड़ा होश आया तो इसे अपनी अंगुलियों में उलझा पाया।”

“तुम दोनों की बातों को मिला दिया जाये तो हेलमेट वाला लविन्द्र हुआ!”

“मैंने इसे देखा है। मुझे हैरत है विभा जी, हर चीज को बारीकी से देखने की आदत के बावजूद आप क्यों नहीं देख सकीं। सामने ही तो पड़ा था।”

“उस वक्त मेरी नजर सीधी एशट्रे पर गई थी।” विभा ने कहा—“और फिर लविन्द्र के चेहरे पर जम गई क्योंकि मैं समझ चुकी थी हिमानी के कमरे में वही गया था।”

“ये तो क्लियर है। हेलमेट वाला वही है। उसे फौरन गिरफ्तार कर लेना चाहिए।”

“उतावलापन मेरी कार्य-प्रणाली में नहीं है।” कहने के साथ विभा ने लॉकिट उठाया। उसका दिल वाला हिस्सा किसी डिविया जैसा था।

विभा ने उसे खोला।

दिल किसी छोटी सी किताब की मानिन्द खुल गया।

और उसमें से टपक पड़ा एक नन्हा सा फोटो।

फोटो मेज पर उल्टा गिरा था।

हम तीनों को नजरें एक दूसरे से उलझकर रह गयीं।

दिल धाड़-धाड़करके बज रहे थे। दिमागों में एक ही सवाल था।

विष्मका फोटो है ये?

क्या सस्पेंस खुलने वाला है?

विष्मा ने अपने नाखूनों से किसी सुहागिन की बिंदी जितना बड़ा वह फोटो उठाकर उलट दिया।

मेरे और जैकी के हलक से विस्मयजनक चीख निकल पड़ी।



“डर देखी है तुमने?”

“डर?” लविन्द्र बिहुंका।

“फिल्म की बात कर रहा हूं। शाहरुख खान था उसमें। जूही चावला भी थी।”

“व-बड़ा अजीब सवाल पूछ रहे हैं आप!”

“जवाब दो!” मैं गुर्गया।

“न-नहीं।”

“अंजाम?”

“ज-जी?”

“यह वैसी ही दूसरी फिल्म का नाम है।”

“मैंने नहीं देखी।”

“बाजोगर?”

“मैं फिल्म नहीं देखता।”

“मगर हरकतें तीनों फिल्मों के शाहरुख जैसी करते हो।”

“अ-आप क्या बात कर रहे हैं। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।”

“समझकर अंजान बनने की यह अदा तुम पहली बार नहीं दिखा रहे। लोग अक्सर ऐसा करते हैं।”

“विष्मा जी जी।” एकाएक उसने विष्मा की तरफ बढ़ना चाहा----“मुझे बताइए तो सही बात क्या है?”

मैंने उसका कालर पकड़कर अपनी तरफ धसीटते हुए कहा----“इधर बात करो मिस्टर लविन्द्र। इधर कमान इस वक्त मेरे हाथ में है क्योंकि वो शास्त्र मैं हूँ जो जानता है कि तुम सत्या श्रीवास्तव से कितनी गहराइयों तक मुहब्बत करते थे।”

“उस मुहब्बत का भला अब क्या जिफ़ है?”

“कुछ लोगों की फ़िरत बड़ी अजीब होती है हुज़ूर। जिस चीज़ पर उनकी नज़र पड़ जाये तो वे किसी भी कीमत पर उसे हासिल करते हैं या तोड़ देते हैं। फ़ोड़ देते हैं। ख़त्म कर देते हैं। ग़ारत कर देते हैं दुनिया से! जैसे सत्या ग़ारत हो गयी।”

“पता नहीं आप क्या पहेलियां बुझा रहे हैं? जो कहना है साफ़-साफ़ कहिए ना!”

“लॉकिट कहाँ है तुम्हारा?”

“लॉकिट?”

“सीधा-सादा सवाल भी पहेली लग रहा है क्या?”

“मेरे पास कोई लॉकिट नहीं है।”

“बेशक़ इस वक़्त नहीं है! मगर था।”

“क्या कह रहे हैं आप? मेरे पास कभी कोई लॉकिट नहीं था।”

“झूठ बोलने की कोशिश की तो भूमा भर दूंगा खाल में।” चीखते हुए जैकी ने झपटकर दोनों हाथों से गिरेबाग़ पकड़ लिया। उसके सारे वजूद को हिलाता हुआ दांत भीचकर गुराया----“मैंने इसी कमरे में लॉकिट को अपनी आंखों से देखा है। वहां मेज़ पर उन बुक्स के नजदीक था। आधा हिस्सा बुक्स के नीचे था और आधा....

“क-क्या बात कर रहे हो इंस्पेक्टर?” चेहरे पर आश्चर्य और ख़ौफ़ के भाव लिए लविन्द्र उसका वाक्य काटकर कह उठा----“मैंने पूरी ज़िन्दगी में कभी कोई लॉकिट नहीं पहना....

मारो गुम्से के जैकी मानो पागल हो उठा।

दांत किटकिटाकर हाथ छोड़ने वाला था कि विभा ने आगे बढ़कर रोका।

मैंने अपनी जेब से लॉकिट निकाला और उसे हवा में उछाल-उछालकर लपकता हुआ बोला----“हम पहले से जानते थे! कहना तुम्हें यहाँ था क्योंकि तुमसे बेहतर कौन जानता है कि गुत्थम-गुत्था के दरम्यान लॉकिट विभा के हाथ लग चुका है।”

“क-क्या बात कर रहे हैं आप? विभा जी, मेरी आपसे गुत्थम-गुत्था कब हुई?”

“जब तुम अल्लारक्खा का मडर करके भाग रहे थे।”

“हे भगवान! ये क्या कह रही हैं आप?”

“इस नाटकवाजी से कुछ नहीं होगा मिस्टर लविन्द्र। लॉकिट खुद चीख-चीखकर बता रहा है कि मैं लविन्द्र का हूँ।”

“लॉकिट बता रहा है?”

मैंने लॉकिट का दिल खोला।

उसमें बिंदी के बराबर सत्या का फोटो मौजूद था।

लविन्द्र आंखें फाड़े उसे देखता रह गया।

“कमरे में डायरी नहीं नजर आ रही है तुम्हारी। कहाँ है?”

“मैंने जला दी।”

“जला दी?” आंखें सुकड़ गई मेरी----“क्यों?”

“ताकि कोई और मेरी खामोश मुहब्बत के बारे में न जान सके।”

विभा ने पृछा----“ऐसा क्यों चाहते थे तुम?”

“जो मुहब्बत परवान न चढ़ सकी----मैं नहीं चाहता उसका जिक्र भी किसी की जुवान पर आये।”

“कब जलाई?” मैंने व्यंगपूर्वक पृछा----“अल्लारख्खा के मर्डर से पहले या बाद में?”

“आपसे बात होने के तुरन्त बाद।”

“मगर लाँकिट को दिल से लगाये धूमते रहे?”

“उफ्फ! कितनी बार कहूँ मिस्टर वेद!” लविन्द्र चीख पड़ा----“लाँकिट मेरा नहीं है।”

“और किसका है?”

“उसका क्यों नहीं हो सकता जिससे सत्या प्यार करती थी?”

“कौन है वो?” जैकी ने पृछा।

“मैं नहीं जानता।”

“जैकी।” विभा ने कहा----“लविन्द्र की बात में दम हो सकता है। क्यों न एक बार सत्या के कमरे की तलाशी ली जाये?”

“सत्या के मर्डर के बाद मैं ले चुका हूँ। वहाँ से ऐसा कुछ नहीं मिला जिसके बेस पर....

“फिर भी।” विभा ने कहा----“मैं खुद एक बार कमरा चैक करना चाहूँगी।”

“चलिए।”



सत्या के कमरे की तलाशी के दरम्यान मैंने कहा----“सत्या के प्रेमी का पता लग भी जाये तो हमें क्या फायदा होने वाला है विभा? भला प्यार करने वाला अपनी प्रेमिका को क्यों मारेगा? मेरे ख्याल से हम भटक रहे हैं। सत्या के मर्डर की सबसे मजबूत वजह लविन्द्र के पास है। सत्या उसे हासिल नहीं थी, इसलिए उसने....

“तुम्हारी बात में दम है।” उसने कहा----“इसके बावजूद यह पता लगाना जरूरी है कि सत्या का प्रेमी अगर कोई था तो कौन है?”

मैंने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि बरांडे में शोर की आवाज उभरी।

शोर ऐसा था जैसे बाहर मौजूद लोगों ने अनहोना दृश्य देखा हो।

अभी कोई कुछ समझ भी नहीं पाया था कि----- धांय-धांय।

एक साथ दो गोलियां चलने की आवाज से वातावरण धरा उठा।

बाहर से चीख पुकार उभरी।

विभा बिजली की सी गति से दरवाजे की तरफ लपकी।

हम उसके पीछे थे।

दरवाजा खोलते ही देवता कूच कर गये हमारे।

दंग रह गये।

ठीक सामने! केवल दस फुट दूर गैलरी में ललिता खड़ी थी।

चेहरे पर आग नजर आ रही थी उसके! हाथ में रिवाल्वर!

रिवाल्वर अपनी कनपटी से लगा रखा था।

सभी स्टूडेन्ट्स और प्रोफेसर डरे सहमे उससे दूर खड़े थे।

हरेक चेहरे पर खौफ था। आतंक और आश्चर्य।

ललिता हिंसक भेड़िये की तरह गुराई-----“किसी ने मेरी तरफ बढ़ने की कोशिश की तो खुद को गोली मार लूंगी।”

चारों तरफ सन्नाटा छा गया। सभी अवाक थे।

“ये क्या बेवकूफी है ललिता?” विभा चीखी-----“क्या चाहती हो तुम?”

“बेवकूफी तुम कर रही हो विभा जिन्दल। इस कॉलिज में हो रही हत्याओं को तुम नहीं रोक सकतीं। वापस लौट जाओ। हत्यारे के गिरेवान तक पहुंचना तो दूर, यहां हो रही हत्याओं का कारण तक नहीं जान सकतीं तुम। रहा तुम्हारे दूसरे सवाल का जवाब। तो सुनो मैं खुद को गोली मारने वाली हूँ।”

“ये क्या पागलपन है ललिता? मैं तुम्हारा राज... राज रखने का वचन दे चुकी हूँ।”

“हा...हा...हा।” ललिता पागलों की मानिद हंसी, बोली-----“अब मैं किसी राज को राज रखने की ख्वाहिशमंद नहीं हूँ विभा जिन्दल। सुनो-----कान खोलकर सुनो सब। नगेन्द्र से मेरे नाजायज ताल्लुकात हैं। इसके बच्चे की मां बनने वाली हूँ मैं। बस! या इसके अलावा भी कुछ कहलवाना चाहती हो?”

मैं, जैकी, विभा और वहां मौजूद हर शख्स दंग रह गया।

जैकी ने कहा-----“खुद को क्यों मारना चाहती हो तुम?”

“हत्यारे का ऐसा ही आदेश है।”

“तुम उस आदेश को मानने के लिए मजबूर क्यों हो?” चीखकर मैंने पूछा।

“सोचो राइटर महोदय! सोचो----सुना है कल्पनायें करने के मामले में मुल्क के नम्बर वन लेखक हो तुम। कल्पना करो----एक शख्स हत्यारे के हुक्म पर अपनी हत्या कैसे कर सकता है?”

“ये पागलपन छोड़ो ललिता। फेंक दो रिवाल्वर। खुद को हमारे हवाले कर दो।” विभा कहती चली गई----“मैं विश्वास दिलाती हूँ हत्यारा तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आत्महत्या पाप है।”

“ठीक कहा तुमने। कोई शख्स जब खुद को गोली मारता है तो उसे आत्महत्या कहते हैं मगर ये आत्महत्या नहीं, हत्या है विभा जिन्दल। ऐसी हत्या जो उसी हत्यारे के द्वारा तुम्हारी आंखों के सामने होगी जिसने सत्या, चन्द्रमोहन, हिमानी और अल्लारक्शा को मारा। हाथ मेरे हैं लेकिन समझ लो गोली वहीं चलायेगा। बोला----हत्यारे द्वारा की जाने वाली हत्या का ये स्टाइल कैसा लगा तुम्हें?”

मैंने महसूस किया, जैकी का हाथ धीरे-धीरे अपने होलेस्टर की तरफ बढ़ रहा था।

विभा ने ललिता को बातों में उलझाये रखने की गर्ज से कहा----“तुम्हारे शब्दों से जाहिर है इस वक्त मुझसे वह कह रही हो जो हत्यारे ने कहने के लिए कहा है। तुम उसके दबाव में हो। फिर कहूँगी ललिता----कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मुझे बताओ वह कौन....

“हाथ रोक लो इंसपेक्टर!” ललिता गुराई----“तुम इस हत्या को होने से नहीं रोक सकते और इसी को क्यों, अभी तो और हत्यायें होंगी। तुम, विभा जिन्दल और ये राइटर कोई नहीं रोक सकता।”

जैकी का हाथ जहाँ का तहाँ टिक गया।

विभा ने कहा----“नगेन्द्र, तुम समझाओ ललिता को। ये बेवकूफी करने वाली है।”

“ल-ललिता!” नगेन्द्र ने हिम्मत की----“प्लीज! ऐसा मत करो।”

ललिता हंसी।

ठीक पागल सी लगी वह। बोली----“मरेगा नगेन्द्र! तू भी मरेगा।”

“मैं-मैं!” नगेन्द्र सकपकाया----“म-मैं भी?”

“मरने से पहले इस कॉलिज में चैलेंज की प्रथा पड़ गयी है। और देखो----मैं तुम सबके सामने चैलेंज लिखूँगी।” कहने के साथ उसने रिवाल्वर दायें हाथ से बायें हाथ में ट्रान्सफर किया। दाया हाथ ब्लाऊज में डाला।

वक्ष स्थल से एक चोंक निकाला।

जहाँ खड़ी थी, वहीं बैठ गयी वह।

बायें हाथ में दबे रिवाल्वर को अपनी कनपटी से सटाये गुराई----“याद रखना, किसी ने भी इंसपेक्टर जैसी होशियारी दिखाने की कोशिश की तो वक्त से पहले खुद को गोली मार लूँगी मैं।”

सभी हकबकाये से खड़े थे।

उसने विभा, जैकी और मुझ पर नजरें गड़ाये रखकर चोंक से फर्श पर लिखा----‘C’ फिर ‘H’ लिखा।

पीछे मौजूद राजेश ने विल्ली की मानिन्द दबे पांव उसकी तरफ बढ़ना शुरू किया।

ललिता ने 'A' लिखा।

सब जानते थे वह क्या लिखना चाहती है।

सभी हैरान।

राजेश को उसकी तरफ बढ़ते दरे। सबकी धड़कनें रुक गई थीं।

अभी ललिता ने पहला रु लिखा था कि राजेश ने झपटकर उसे दबोच लिया।

ललिता छटपटाई।

राजेश का एक हाथ उसकी रिवाल्वर वाली कलाई पर था।

उसकी मदद के लिए विभा और जैकी ने जम्प लगाई।

मगर।

“घांय।”

ललिता के हाथ में दबे रिवाल्वर ने शोला उगला।

सबकी कोशिशों पर पानी फेरता ललिता की कनपटी चीर गया वह।

ललिता की चीख के साथ वातावरण में अनेक चीखें उभरीं।

उस एक पल के लिए जो जहां था वहीं ठिठककर रह गया।

ललिता की गर्दन लुढ़क चुकी थी।

रिवाल्वर हाथ से निकलकर फर्श पर गिर गया।

लाश राजेश की बांहों में झूलती रह गयी।

खून के छींटे खुद उसके चेहरे पर भी पड़े थे।

गर्म खून, धल्ल-धल्ल करके बह चला।

जैकी और विभा की मदद से राजेश ने लाश को फर्श पर लिटाया।

बहुत देर तक ऐसा सन्नाटा छाया रहा जैसे किसी के मुंह में जुबान न हो।

“हद हो गयी!” अन्ततः बंसल कह उठा----“कैसा हत्यारा है ये! जो लोगों को खुद पर गोली चलाने के लिए मजबूर कर देता है? क्यों पीछे पड़ गया है इस कॉलेज के? हम सबने क्या बिगाड़ा था उसका?”

विभा सहित किसी पर जवाब न बन पड़ा।

बंसल ने कहा----“मिस्टर वेद! आपने बड़े कसीदे पढ़े थे विभा जिन्दल की तारीफ में। कहा था इनके आते ही न सिर्फ हत्याओं का सिलसिला रुक जायेगा बल्कि हत्यारा पकड़ा भी जायेगा। चौबीस घण्टे नहीं गुजरे अभी----हिमानी, अल्लारक्खा और ललिता तीनों मारे गये। क्या कर लिया विभा जी ने?”

“किसी इन्वेस्टिगेटर के पास अलादीन का चिराग नहीं होता बंसल साहब कि वह घिसे और हत्यारा गुलाम की तरह सामने आकर खड़ा हो जाये। मैंने जो कहा, वही कहने के लिए बाध्य था----यकीन रखें, विभा से बेहतर इस केस की इन्वेस्टिगेशन कोई नहीं कर सकता।”

राजेश उत्तेजित हो उठा----“हत्यारा चैलेंज देकर सबकी आंखों के सामने मर्डर कर रहा है। इसी मर्डर को लो! कितनी अनोखी बात है? हत्यारे का शिकार खुद हत्यारे के शब्द कहता खुद को गोली मार लेता है। पहले कभी ऐसा न देखा गया, न सुना गया। पता नहीं कौन-सा जादू है उस पर?”

“फिलहाल उसी जादू के बारे में मालूम करना है।” विभा ने कहा----“आखिर उसने ललिता को इतनी मजबूर कैसे कर दिया कि इसने न सिर्फ हर वह लफ्ज बोला जो हत्यारा कहलवाना चाहता था बल्कि सबके रोकते-रोकते खुद को गोली मार ली।”

“कौन कह सकता है उसने यह चमत्कार कैसे दिखाया?” जैकी बुदबुदा उठा।

एकाएक विभा ने मुझसे पूछा----“वेद! ललिता की एक बेटी थी न?”

“च-चिन्नी।” मेरे मुंह से निकला।

“कहां है वह?”



चिन्नी ललिता के रूम में नहीं थी। सभी स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स उसे कॉलिज में तलाश करते फिर रहे थे।

किसी को नहीं मिली। अंततः बंसल के बंगले का चौकीदार कैम्पस में आया।

उसने कहा----“सर! लेडीज वार्डन की बेटी हमारे बंगले में है।”

उस वक्त मैं बंसल के साथ था। सुनकर उछल पड़ा।

पेट्रोल पर दौड़ने वाली आग के समान खबर सबके कानों तक पहुंच गयी।

लपकते-झपकते सब बंसल के कमरे में पहुंचे।

चिन्नी बेहोश थी।

बंसल की पत्नी अर्थात् निर्मला उसे होश में लाने का प्रयत्न कर रही थी।

बंसल के साथ हम सबको अंदर दाखिल होता देखकर वह उठ खड़ी हुई।

वेड पर एक तरफ रेशम की मजबूत डोरी पड़ी थी।

चिन्नी रंग-विरंगा फ्रॉक पहने हुई थी। जिसमें मैंने उसे पहली बार देखा था।

बंसल ने पूछा----“यहां कैसे पहुंच गयी ये?”

जवाब चौकीदार ने दिया----“हमने कैम्पस की तरफ से गोलियां चलने की आवाज सुनी सर, लेकिन आपने कह ही रखा है, उधर बाहे जो होता रहे, हमें यहां से नहीं हिलना है। वही किया। तब भी, जब लाइट गई----गोलियां चलीं। लेकिन जब दूसरी बार अब से थोड़ी देर पहले फायरिंग हुई तो चकराये। कॉलिज में आखिर हो क्या रहा है, यह जानने के लिए बरांडे से निकले। मेमसाहब सो रही थीं। हम बगीचे में पहुंचे। चौंके। एक झाड़ी के साये में यह बच्ची पड़ी थी। बुरी तरह बंधी हुई! वेहोश! मेरा जी चाहा कैम्पस में जाकर आपके खबर दूं। फिर सोचा----आपने बंगले के आसपास से हिलने से मना किया है। सो इसे उठाकर अंदर ले आये। मेम साहब को जगाया। इसे देखते ही मेमसाहब कह उठीं----‘ये तो चिन्नी है! वार्डन की बेटी। जल्दी कैम्पस में जाकर अपने साब को खबर कर।’ और हम दौड़े-दौड़े आपके पास पहुंचे।”

“तब से मैं इसे होश में लाने की कोशिश कर रही हूं।” निर्मला ने बताया।

“कमाल की बात है।” जैकी ने कहा----“कैम्पस में इतनी गोलियां चलीं----आप सोती रहीं?”

“मुझे अनिन्द्रा की बीमारी है। नींद की गोलियां लेकर सोती हूं। मैं तो तब उठी जब चौकीदार ने दरवाजे की तोड़ डालने वाले अंदाज से भड़भड़ाया।”

चिन्नी के चेहरे पर बार-बार पानी के छंटे मारकर अंततः होश में लाया गया।

होश में आते ही वह रोने लगी। बार-बार अपनी मम्मी को पूछने लगी।

वहला-फुसलाकर सवाल किये तो वह कहानी सामने आई जिसकी आशंका थी।

उसने बताया----“मुझे एक हेलमेट वाले ने पकड़ लिया था। जैसे ही मम्मी कमरे में

आई----उसने मेरे सिर पर रिवाल्वर रखकर कहा----‘चीखने या चिल्लाने की कोशिश की तो इसे मार डालूंगा।’ मम्मी डर गयीं----‘बोली तुम हत्यारे हो न? मुझसे क्या चाहते हो?’ हेलमेट वाले ने कहा----‘तेरे हाथों से तेरा मर्डर।’ मम्मी ने कहा----‘मैं समझी नहीं।’ वह बोला----‘समझाता हूं।’ और तभी उसने बहुत जोर से अपना रिवाल्वर मेरे सिर पर मारा। मेरे मुंह से चीख निकली मगर उसका दूसरा हाथ मेरे मुंह पर था। उसके बाद मुझे कुछ पता नहीं क्या हुआ!”

सब समझ रहे थे क्या हुआ होगा?

जाहिर था----“बेटी को बचाने के लिए ललिता ने केवल वह कहा और किया जो हत्यारा चाहता था बल्कि अपनी जान तक दे दी।”

सबकुछ बताने के बाद चिन्नी हिचकियां ले लेकर मम्मी के बारे में पूछती रही।

बेचारी को कौन क्या जवाब देता?

एकाएक विभा ने निर्मला से कहा----“आपकी नथ बहुत सुन्दर है।”

“न-नथ?” निर्मला का हाथ स्वतः अपनी नाक पर पहुंच गया।

“और शायद कीमती भी। डायमंड की है क्या?”

“ज-जी!”

विभा का टॉपिक हैरतअंगेज था।

हमें लगा----दिमाग तो नहीं फिर गया है उसका?

कहां हत्यारे द्वारा किये जा रहे मर्डर? कहां निर्मला की नथ?

इस वक्त हमें पेचीदगियों से भरी घटनाओं पर विचार करना चाहिए था या किसी के गहनों पर?

सबका नेतृत्व करते हुए अंततः मैंने कह ही दिया----‘विभा, ये वक्त किसी के गहनों की तारीफ करने का है या....’

“प्लीज वेद! मुझे अपना काम करने दो।” ये शब्द विभा ने ऐसे अंदाज में कहे कि मैं तो मैं, कोई कुछ नहीं बोल सका जबकि विभा ने निर्मला की तरफ पलटते हुए कहा----“कब खरीदी?”

“मेरिज ऐनीवर्सरी पर इन्होंने प्रजेण्ट की थी।” उसने बंसल की तरफ इशारा किया।

विभा बंसल की तरफ घूमी।

आंखें, उसके चेहरे पर गड़ा दीं उसने।

हकबकाकर बंसल को पूछना पड़ा----“प-पत्नी को प्रजेण्ट देना गुनाह है क्या?”

“कोई गुनाह नहीं है।” कहने के साथ एकाएक विभा मुस्कराकर बोली----“मैं आपके कमरे की तलाशी लेना चाहती हूँ।”

“त-तलाशी?” बंसल उछल पड़ा----“क-क्यों?”

“बताऊंगी, लेकिन तलाशी के बाद।”

“म-मगर।”

“ऑब्जेक्शन हो तो बताइए।”

बंसल हकला उठा----“म-मुझे क्या ऑब्जेक्शन हो सकता है।

किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। मैं भी सब में शामिल था मगर तलाशी में जुट गया।

जैकी ने भी सामान को इधर-उधर करना शुरू कर दिया।

बंसल और निर्मला सहित सब हकबकाये से खड़े थे।

विभा एक तिजोरी पर ठिठकी।

वह वार्डरोब पर रखी थी।

लगभग वैसी ही थी जैसी सर्राफों के यहां होती है।

निर्मला से पूछा----“इसकी चाबी?”

“इन्हीं के पास रहती है, मैं इसे हाथ नहीं लगाती।”

“क्यों?”

“मैंने मना कर रखा है।” बंसल ने कहा।

“वजह?”

निर्मला बोली----“इसमें ये कॉलिज से सम्बन्धित जरूरी कागजात रखते हैं।”

“ऐसा आपने कहा होगा इनसे?” विभा ने बंसल से पूछा।

“हां।”

“क्या ये सच है?”

बंसल अचकचाया। जवाब न दे सका वह।

मैं और जैकी अपना अपना काम भूलकर उनकी तरफ देखने लगे थे।

विभा, बंसल और निर्मला के बीच संवाद ही कुछ ऐसे थे कि सभी को गड़बड़ नजर आने लगी। कुछ चुप रहने के बाद विभा ने एक-एक शब्द पर जोर डालते हुए कहा----“आपने जवाब नहीं दिया बंसल साहब। क्या ये सच है? कॉलिज से सम्बन्धित कागजात ही हैं इसमें?”

“मेरी समझ में नहीं आ रहा----इस सबका हथ्याओं से क्या सम्बन्ध?”

“मुझे चारों चाहिए।”

“विभा जी प्लीज।” बंसल गिड़गिड़ा उठा----“रहने दीजिए।”

“कारण?”

“व-वाद में बता दूंगा।”

“वाद से क्या मतलब?” राजेश भड़क उठा----“यानि हम ही लोगों से छुपाया जायेगा सबकुछ! हम ऐसा हरगिज नहीं होने देंगे। क्यों दोस्तो----क्या कहते हो?”

“हमारे दोस्तों के मर्डर हो रहे हैं। हमारी मैडम मारी गई हैं।” एकाएक कई स्टूडेंट भड़क उठे----“जिसे प्रिंसिपल साहब छुपाना चाहते हैं----उसे देखने का सबसे पहला हक हमारा है!”

“आगे बढ़ो।” रणवीर चीखा----“तोड़ दो तिजोरी को।”

हुजूम बाढ़ग्रस्त नदी वाले अंदाज में आगे बढ़ा।

“विभा जी प्लीज, रोकिए इन्हें।” बंसल ने कहा।

“ये युवा शक्ति है बंसल साहब। एक हद के बाद इसे नहीं रोका जा सकता। ये देश के वे पागल बेटे हैं जो प्रधानमंत्री के एक गलत फैसले के जवाब में खुद को जलाकर खाक करने पर आमादा हो जाते हैं। इन्हें रोकना मेरे नहीं, आपके हाथ में है। चारों दीजिए----वे रुक जायेंगे।”

“लॉज! इनके सामने रहने दीजिए।”

“आखिर ऐसा क्या है तिजोरी में जिसे आप छुपाना चाहते हैं?” उत्कंठा का मारा मैं चीख पड़ा----“राजेश! आगे बढ़ो---तोड़ दो तिजोरी को!”

राजेश लपकने ही वाला था, जैकी ने उसे रोकते हुए कहा----“बंसल साहब को आखिरी मौका दिया जाना चाहिए।”

कहने के बाद वह बंसल की तरफ पलटकर बोला----“चाबी दे रहे हैं या नहीं?”

बंसल के चेहरे पर ऐसे भाव उभरे जैसे बदन से कपड़े नोचने का प्रयास किया जा रहा हो।

दायां हाथ हिला।

गाऊन और शर्ट को पार करके बनियान की जेब में पहुंचा।

वापस आया तो उसमें चाबी थी।

चाबी उसने विभा की तरफ इस तरह बढ़ाई जैसे जान निकालकर दे रहा हो।

विभा तिजोरी की तरफ बढ़ी।

सबके दिल धड़-धाड़ करके बज रहे थे।

ऐसा केवल बंसल के व्यवहार के कारण था।

विभा ने चाबी घुमाई। हैंडिल गिराया।

दरवाजा खुला।

उसमें पांच-पांच सौ के नोटों की गड़्डियां पड़ी नजर आईं।

सबके चेहरों पर ‘खोदा पहाड़ निकली चुहिया’ वाले भाव उभरे।

विभा ने दो गड़्डियां उठाई। कहा----“ये आपके कितने दिनों की तनख्वाह है?”

“यकीन मानिए विभा जी। यह किसी फंड से बचाया गया पैसा नहीं है। ये तो केवल वे हैं जो विभिन्न टेंडर्स के पास होने पर टेकेदारों द्वारा दिया ही दिया जाता है।”

“ओह!” दीपा कह उठी----“प्रिंसिपल साहब कमीशनखोर हैं।”

“कमीशन खाना” अब अपराध कहां है?” राजेश व्यंग्य कर उठा----“रक्षा सौदों तक में कमीशन खाया जाता है। मंत्रियों के घर से सूटकेस बरामद होते हैं। प्रिंसिपल साहब ने ही लाख-दो लाख खा लिये तो कौन सा इनका हाजमा बिगड़ गया?”

बंसल सिर झुकाये खड़ा रहा।

इधर टीका-टिप्पणी चल रही थी---उधर विभा ने एक नजर और तिजोरी के अंदर डाली।

इस बार उसके हाथ एक कार्ड लगा।

एक ऐसा कार्ड जो किसी के वर्धडे पर दिया जाता है।

विभा ने उसे खोला।

टिप्पणियां बंद हो गयी थीं। सबकी नजर उसी पर थी।

मैं और जैकी विभा के नजदीक पहुंचे।

उस पर लिखा मैटर पड़ा।

बुरी तरह चौंके हम!

दिमाग के कपाट तेज आंधी से खुलकर पट्ट-पट्ट की आवाज के साथ खड़खड़ाने लगे।

सबसे ऊपर लिखा था----“स्वीट हार्ट!”

बीच में वधाई का ऐसा प्रिन्टिड मैटर था जो केवल प्रेमिका द्वारा प्रेमी को लिखा जाना चाहिए।

और सबसे नीचे थे----सत्या श्रीवास्तव के साइन।

विजलियां-सी कौंध रही थीं मेरे दिमाग में।

तो क्या सत्या का प्रेमी बंसल था? मेरे दिमाग में, गाड़ी में विभा द्वारा कही गई बातें चकरा रही थीं।

जैकी कह उठा----“शायद वह मिल गया विभा जी, जिसकी हमें तलाश थी।”

“क्या बात कर रहे हैं आप?” बंसल लपककर हमारे नजदीक आता हुआ बोला----“क्या है ये?”

विभा ने कार्ड उसे पकड़ा दिया।

बंसल ने देखा। बुरी तरह चौंकता नजर आया वह। लगभग चीख पड़ा----“य-ये क्या बकवास है? ये कार्ड मेरी तिजोरी में कहां से आया?”

“वैरी गुड।” जैकी कह उठा----“तिजोरी आपकी! चाबी आपके पास। और जवाब हमें देना है!”

“म-मगर मैं कसम खाकर कहता हूं! मुझे कार्ड के बारे में कुछ नहीं पता। नहीं जानता इसे तिजोरी में किसने रक्खा। मैं तो रुपयों की वजह से चाबी देने से इंकार कर रहा था।”

सभी स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स को कार्ड के बारे में पता लग गया।

चारों तरफ सन्नाटा छ गया। सभी अवाक रह गये थे।

“जरूर कोई घोटाला है।” अचानक राजेश पूरी ताकत के साथ चीख पड़ा----“हमारी सत्या मैडम हरगिज-हरगिज ऐसी नहीं हो सकती। प्यार करना गुनाह नहीं। हम नहीं कहते सत्या मैडम प्यार नहीं करती होंगी परन्तु प्रिंसिपल साहब से? हरगिज नहीं! शादीशुदा आदमी से मुहब्बत करने वाला चरित्र नहीं था उनका।”

सभी स्टूडेंट्स ने समुत्तेज स्वर में उसका समर्थन किया।

ऐरिक बोला----“इस सम्बन्ध में तो हम भी यही कहेंगे। सत्या के सम्बन्ध में ऐसा विचार नहीं किया जा सकता। विद्यालय में एक वही तो था जिसके सिद्धान्तों के कारण विद्यालय विद्यालय था।”

“मैं भी यही कहूँगा विभा जी।” लविन्द्र ने कहा----“हम सब वंसल साहब और सत्या के सम्बन्धों के चश्मदीद गवाह हैं। कभी, एक सेकिण्ड के लिए भी नहीं पटी दोनों में। हमेशा छत्तीस का आकड़ा रहता था। नहीं----वो शख्स वंसल नहीं हो सकता जिसका जिक्र सत्या ने मुझसे किया था।”

विभा ने गंभीर स्वर में कहा----“आप सबकी भावनाएं अपनी जगह हैं और उनकी मैं कद्र करती हूँ। परन्तु सुवृत्त जो बोलेंगे----वह हमें कहना ही पड़ेगा। और फिर, यहां किसी के करेक्टर पर लांछन नहीं लगाया जा रहा। केवल ये बातें डिस्कस की जा रही हैं जो हो सकती हैं। अगर इसमें आपकी भावनाएं आहत होती हैं तो बाहर जा सकते हैं। हमें अकेले में डिस्कस करना होगा।”

एक पल के लिए सन्नाटा छा गया कमरे में। फिर दीपा ने कहा----“सारी विभा जी, आप डिस्कस जारी रखें।”

विभा ने वंसल की तरफ घूमकर सवाल किया----“अगर आप इस रकम को अपनी पत्नी से छुपाकर रखते थे मिस्टर वंसल तो खर्च कहां करते थे?”

“किसी अन्य बहाने से निर्मला को दे देते थे।”

“या सत्या पर खर्च होती थी।”

“क-कैसी बातें कर रही हैं आप? भला हम....

“मैं कोई बात बगैर बेस के नहीं कहती वंसल साहब।” इस बार विभा उसकी बात काटकर कठोर स्वयं में कहती चली गयी----“जैसी नथ आपकी बीबी ने पहन रखी थी वैसी ही नथ मेरे पास भी है।” कहने के साथ विभा ने जींस की जेब से एक नथ निकालकर मेज पर डाल दी।

अकेला वंसल नहीं बल्कि सब हक्के-बक्के रह गये।

मैं भी! जैकी भी!

हर नजर कभी मेज पर पड़ी नथ को देख रही थी, कभी निर्मला की नाक में मौजूद नथ को!

जुड़वां बहनें सी लग रही थीं दोनों।

“ये नथ मुझे सत्या के कमरे से मिली है।” विभा एक-एक शब्द को चबाती कहती चली गई----“और ऐसी नथ निर्मला जी की नाक में देखकर मैं चौंक पड़ी। आपके कमरे की तलाशी लेने का ख्याल नहीं आया था मुझे। इन नथों के एक जैसी होने ने मुझे प्रेरित किया। और अब तिजोरी से इस कार्ड के मिलने ने स्टोरी पूरी कर दी। मुझे दुख है मिस्टर वंसल। नथ और कार्ड मिलकर उसी कहानी की पुष्टि कर रहे हैं जिस पर कॉलिज के किसी शख्स को विश्वास नहीं आ रहा। बोलिए----अब आपको कुछ कहना है इस बारे में? सत्या पर ये नथ कहां से आई?”

“म-मैं कुछ नहीं कह सकता।”

विभा द्वारा किये रहस्योद्घाटन ने सभी को हैरान कर दिया।

ताले पड़ गये जुवानों पर।

सारे तथ्य अकाट्य होने के बावजूद जाने क्यों स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स की तरह मेरा दिल भी उस सबको सच मानने के लिए तैयार नहीं था जो कार्ड और नथ कह रहे थे। एकाएक विभा ने वहां छाई लम्बी खामोशी को तोड़ा----“मानना पड़ेगा जैकी!

एक बार फिर मानना पड़ेगा हत्यारा बेहद चालाक है। अपनी अंगुलियों पर नचाने की कोशिश कर रहा है हमें!”

सभी चौंक पड़े। कोई विभा के उपरोक्त शब्दों का अर्थ न समझ सका।

जैकी ने पूछा----“आप कहना क्या चाहती हैं?”

“वह हमारे दिमागों में वही स्टोरी दूंसनी चाहता है जो कार्ड मिलने पर हमने शुरू की और नथ दिखाकर खत्म मैंने।” विभा कहती चली गई----“बहुत ही बड़ा शातिर है कोई! पहले मेरे हाथ सत्या के कमरे से नथ लगवाता है। उसके बाद चिन्नी के जरिए यहां भेजता है। वह जानता है----निर्मला की नथ मेरी नजरों से छुप नहीं सकेगी और मैं कमरे की तलाशी लेने का निश्चय करूंगी। तिजोरी में क्योंकि नम्बर दो की रकम है इसलिए वंसल साहब चार्ज देने में आनाकानी करेंगे। शक के दायरे में आयेंगे। वह जानता है वंसल साहब आनाकानी चाहे जितनी करें मगर हम लोग मानने वाले नहीं हैं। अंततः कार्ड तक पहुंचकर ही दम लेंगे और स्टोरी पूरी हो जायेगी।”

वंसल खुश! प्रोफेसर्स खुश। स्टूडेंट्स खुश!

एकता बोली----“मैं भी यही कहना चाहती थी विभा जी।”

जैकी ने कहा----“आखिर आप किस बेस पर इस सबको हत्यारे की साजिश बता रही हैं?”

“कार्ड को ध्यान से देखो।”

“देख चुका हूं।”

“केवल देखा है। ध्यान से नहीं देखा। अब देखो!” जैकी ने कार्ड देखते हुए कहा----“क्या देखूं?”

“इसमें कुछ कमी है।”

“मुझे नजर नहीं आ रही है।”

“वंसल साहब का नाम नहीं है इसमें।”

“ये कमी नहीं, फैशन है विभा जी। आजकल ऐसे काडो पर नाम नहीं लिखे जाते।”

“उस अवस्था में डेट ऑफ बर्थ लिखी जाती है।”

“सो तो है।”

“क्यों नहीं लिखी गई?”

“कहना क्या चाहती हैं आप?”

“और गौर से देखो----स्वीट हार्ट और प्रिन्टिड मैटर में एक स्थान पर इंक रिमूवर का इस्तेमाल किया गया है। स्पष्ट है----कुछ मिटाया गया है वहां से! ये काम बारीकी से किया गया। परन्तु ध्यान से देखो, कारस्तानी नजर आ जायेगी।”

कार्ड पर जमी जैकी की आंखें चमक उठीं। मुंह से निकला----“वाकई।”

“क्या लिखा गया होगा वहां?”

“श-शायद डेट ऑफ बर्थ।”

“मिटाने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि वह बंसल साहब की डेट नहीं होगी।”

“मेरा ख्याल है सत्या के प्रेमी की।”

“तो क्या हत्यारा सत्या का प्रेमी ही है? उसी ने बंसल को फंसाने के लिए सत्या द्वारा खुद को दिया गया कार्ड तिजोरी में रख दिया?”

“इस बारे में अभी विश्वासपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।”

एकाएक दीपा ने कहा----“मेरे दिमाग में एक बात कौंध रही है विभा जी।”

“बोलो।”

“क्या जरूरी है सत्या मैडम का कोई प्रेमी हो?”

सब चौंक पड़े। विभा भी! बोली----“क्या कहना चाहती हो?”

“केवल लविन्द्र भूषण सर के बयान के बेस पर हम यह मान बैठे हैं कि सत्या मैडम किसी से प्यार करती थीं। एक आदमी----एक अकेले आदमी के कहने मात्र से हमें किसी अस्तित्व को स्वीकार कर लेना चाहिए? क्या ऐसा करके हम समझदारी कर रहे हैं?”

“क्या कहना चाहती हो तुम?” लविन्द्र भड़क उठा----“क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ?”

“सारी सर।” दीपा ने कहा----“ये मतलब नहीं था मेरा। मैं ये कहना चाहती हूँ मुमकिन है, सत्या मैडम ने आपसे पीछा छुड़ाने के लिये कह दिया था कि वे पहले ही किसी से मुहब्बत करती हैं।”

“मुझे नहीं मालूम उसने झूठ कहा था या सच----मगर कहा जरूर था।”

“बात में दम है विभा जी।” जैकी कह उठा----“केवल एक आदमी, वह भी ऐसा----जो यह दावा नहीं कर सकता कि सत्या ने उससे सच ही बोला था, के बेस पर हम किसी अस्तित्व को कैसे स्वीकार कर सकते हैं? क्या पता ऐसे किसी शख्स का अस्तित्व हो ही नहीं?”

“यह बात कार्ड मिलने से पहले उठती तो दमदार थी।” विभा ने कहा----“कार्ड गवाह है----किसी न किसी से सत्या मुहब्बत जरूर करती थी। वह वो है जिसकी डेट ऑफ बर्थ इस पर से मिटा दी गई है।”

एक बार फिर कमरे में खामोशी छा गयी।

अब मैं जिस घटना का जिक्र करने वाला हूँ----उसने CHALLENGE वाली पहेली एक झटके से खोलकर रख दी।

जो हुआ उसे घटना कहना भी शायद गलत है।

मैं सोच भी नहीं सकता था इस पहेली को खुशबू हल कर देगी।

मेरी सबसे छोटी बेटी।

उसने एक ही झटके में विभा के दिमाग के समस्त तार झनझना दिये।

रात भर कॉलेज में रहने के बाद हम सुबह घर पहुंचे थे।

करिश्मा, गरिमा कॉलेज और खुशबू, शगुन स्कूल गये हुए थे।

मधु को संक्षेप में सब कुछ बताकर उसकी जिज्ञासा शांत की। उसके बाद विभा गेस्टरूम में और मैं अपने कमरे में आराम करने चला गया।

दोपहर एक बजे सोकर उठा। मधु से विभा के बारे में पूछा तो उसने कहा----“विभा बहन कुछ देर पहले उठी हैं। बेड टी ले रही हैं।”

मैं चाय गेस्टरूम में भेजने के लिए कहकर वहां पहुंचा।

विभा एक सोफे पर बैठी चाय पी रही थी।

कुछ देर बाद मधु मेरे साथ अपनी चाय लेकर वहीं आ गयी।

केस पर चर्चा शुरू हो गयी।

चर्चा चल ही रही थी कि खुशबू स्कूल से आ गयी।

विभा हौले से मुस्कराकर कह उठी----“अभी तक तुमने हथेली पर अपना नाम लिखना नहीं छोड़ा खुशबू रानी!”

“कहां आंटी!” उसने अपनी हथेली देखते हुए कहा----“सिर्फ K ही लिखती हूं।”

“बात एक ही है----ज का खुशबू।” और कहते-कहते विभा उछल पड़ी। अचानक मेरी तरफ पलटकर बोली----“C फार चन्द्रमोहन! H फार हिमानी! A फार अल्लारक्खा और L फार ललिता!”

मैं और मधु चकरा गये। समझ नहीं सके वह क्या कह रही है। एक सैकिण्ड को तो ऐसा लगा जैसे विभा पागल हो गयी हो। वह कहती चली गई----“इसी क्रम में मर्डर हो रहे हैं वेद। गौर करो! चन्द्रमोहन, हिमानी, अल्लारक्खा और ललिता।”

“सत्या को भूल रही हो तुम। सबसे पहले उसी की हत्या हुई?”

“और मरने से पहले उसने CHALLENGE लिखा। नहीं----वह चैलेंज नहीं था। बल्कि अपने हत्यारों के नाम लिखे थे उसने। हर अक्षर से एक नाम शुरू होता है। कुल मिलाकर नौ अक्षर हैं अर्थात् नौ लोगों ने हत्या की। ये इत्तफाक है वे नौ अक्षर मिलाकर चैलेंज की स्पेलिंग बन गयी। अगर वह चैलेंज लिखना चाहती तो जैसा कि मैंने पहले कहा----स्मॉल इंग्लिश में लिखना चाहिए था। उस वक्त हमारे दिमाग में सवाल अटका था कि उसने चैलेंज कैपिटल लेटर्स में क्यों लिखा? जवाब स्पष्ट है----उसने चैलेंज नहीं----बल्कि अपने नौ हत्यारों के नाम के पहले लेटर्स लिखे थे। जो वह कहना चाहती थी वह इन्हीं लेटर्स के स्माल इस्तेमाल से नहीं कहा जा सकता था।”

हालांकि मुझे उसकी बात जंची लेकिन क्रॉस किया----“सत्या ही क्यों, हर मरने वाले ने यही लेटर्स लिखे हैं।”

“यही!” एक-एक शब्द पर जोर देती चली गयी विभा----“यही भ्रम फैलाना चाहता था हत्यारा। यह कि बाकी सब हत्याएं भी सत्या की हत्या की शृंखला हैं। और हम फंसे रहे। अब बात मेरी समझ में आ गयी है। सबसे बड़ी भूल हम अन्य हत्याओं को सत्या की हत्या की शृंखला समझकर कर रहे हैं वेद। हकीकत यह है कि बाकी हत्याएं सत्या की हत्या के बदले में किये मर्डर हैं।”

“मेरी समझ में नहीं आ रहा तुम कहना क्या चाहती हो?”

“पहेली हल हो चुकी है दोस्त। इस छोटी सी लड़की की बचकानी हरकत ने मेरे दिमाग में सबकुछ क्लियर कर दिया है।” उत्साह से भरी विभा कहती चली गयी----“अब पूरा किस्सा सुनो। मुहब्बत करने वालों के बीच अक्सर हर भाषाओं का आविष्कार और चलन प्रचलित हो जाता है। कदाचित वैसे ही सत्या और उसके प्रेमी के बीच हुआ। यकीनन वे एक-दूसरे को लेटर लिखने या किसी भी मैसेज का आदान-प्रदान करने के लिए अंग्रेजी के किसी नाऊन को पूरा लिखने की जगह शब्द का पहला अक्षर लिखने लगे थे। हालांकि सत्या के मर्डर की वजह अभी अज्ञात है। परन्तु ये तय है, जो वह लिख गई वह हम सबके लिए भले ही पहेली थी परन्तु उसके प्रेमी के लिए पहेली नहीं थी। वह उन अक्षरों को देखते ही समझ गया सत्या के हत्यारे कौन हैं? वस! उसने रिवेंज लेना शुरू कर दिया। पहले G मरा, फिर H, रात । और L, इस हिसाब से अभी पांच और कत्ल होंगे। और ये पांच कत्ल वे होंगे जिसके नाम L, E, N, G, E से शुरू होते हैं।”

“तुम्हारी थ्योरी दमदार है विभा मगर....

“मगर....

“कॉलिज में एक अक्षर के अनेक नाम होते हैं। फॉर एग्जाम्पल ६ वित चन्द्रमोहन था तो चक्रेश भी है।”

“यह कोई ऐसी बात नहीं, जो सत्या के प्रेमी के लिए दुविधा का कारण बनी होगी। उसने नी में से किसी भी एक तो पकड़ा होगा। उसे टार्चर किया होगा। और बाकी आठ के स्पष्ट नाम जान लिए होंगे।”

“ओह!”

“याद करो.... ललिता ने कहा था----पहले चन्द्रमोहन, उसके बाद हिमानी! सत्या का नाम नहीं लिया था उसने। यह असामान्य बात मुझे खटकी थी। अब तुम भी समझ सकते हो, उसने ऐसा क्यों कहा? अपनी तरफ से उसने असामान्य नहीं बल्कि सामान्य और सच्ची बात कही थी। सत्या की हत्या से चन्द्रमोहन, हिमानी और दूसरे लोगों के साथ वह खुद शामिल थी। फिर भला यह कैसे कहती कि सत्या की हत्या किसने की? उसने उन्हीं का जिक्र किया जो दो हत्याएं खुद उसके लिए रहस्य थीं। और फिर अल्लारक्खा के बाद उसी हत्यारे द्वारा खुद भी मार डाली गयी।”

“यानी तुम श्योर हो हत्यारा सत्या का प्रेमी है?”

“और उसका अगला शिकार वह है जिसका नाम L से शुरू होता है।”

“वह तो लविन्द्र भी हो सकता है।” मैंने कहा।

“ऐसे लोग कॉलेज में और होंगे जिनके नाम L से शुरू होते हों?”

“लेकिन विभा, भला नौ लोग मिलकर सत्या की हत्या क्यों करेंगे? चन्द्रमोहन, हिमानी और ललिता के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन अल्लारक्खा उन स्टूडेंट्स में से था जो सत्या को बहुत पसन्द करते थे। मुझे नहीं लगता वह सत्या की हत्या में शामिल होगा।”

“क्योंकि अभी कारण अज्ञात है इसलिए दावे के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता।” विभा कहती चली गई----“हत्यारे का अगला शिकार L है और इस अक्षर से शुरू होने वाले जिस शख्स को हम जानते हैं वह लविन्द्र है। लविन्द्र के मन में सत्या के लिए जो भावनाएं थीं उनसे तुम वाकिफ हो। उनकी रोशनी में क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि लविन्द्र सत्या के हत्यारों में शामिल होगा?”

“अगर वह डर, बार्जागर और अंजाम का शाहरुख नहीं है तो हरगिज नहीं।” मैंने कहा----“हां, पहेली के हल की रोशनी में इस बात को दूसरे एंगिल से देखा जा सकता है।”

“दूसरा एंगिल?”

“यदि उसे पता लग जाये कि फलों-फलों नौ व्यक्ति सत्या के कातिल हैं जो एक-एक को चुन-चुनकर मार डालेगा वो।”

“जैसा कि हत्यारा कर रहा है।”

“म-मतलब?” मैं चौंक पड़ा।

“तुम्हारे ही शब्दों को आगे बढ़ाया है मैंने----बाकी लोगों का हत्यारा लविन्द्र भी हो सकता है।”

“अभी तो तुम कह रही थीं----हत्यारा सत्या का प्रेमी है!”

“लविन्द्र प्रेमी नहीं था क्या?”

“मगर उसने बताया....

“अब दीपा द्वारा प्रस्तुत किये गये विचारों पर गौर करो।” मेरी बात काटकर विभा कहती चली गयी----“सत्या के प्रेमी का अस्तित्व हमारे दिमागों में केवल लविन्द्र के बयान से बना है। उसके अलावा ऐसे किसी शख्स के बारे में न कभी किसी ने सुना न देखा। मजे की बात ये है कि लविन्द्र ने भी केवल कहा है! यह कि सत्या ने उससे अपने प्रेमी का जिक्र किया था। यह सच ही है...इस बात का वह कोई प्रमाण पेश नहीं कर सका।”

“मतलब क्या हुआ?”

“लॉकिट को मत भूलो। वह पुख्ता तौर पर लविन्द्र को हत्यारा कहता है। बात को यूँ समझो----जब तुम उससे मिले और डायरी को देखकर ताड़ गये कि वह सत्या का प्रेमी है तो वह अंदर ही अंदर यह सोचकर घबरा गया कि हालांकि मैं सभी हत्याओं को सत्या की शृंखला में होने वाले मर्डर साबित करने का प्रयत्न कर रहा हूँ परन्तु इस केस की इन्वेस्टिगेशन पर

निकले इस शख्स को मुमकिन है, किसी स्पॉट पर इल्म हो जाये कि चन्द्रमोहन से शुरू होने वाली हत्याएं सत्या की हत्या का रिबेज हैं। तो इसका शक सत्या का प्रेमी होने के नाते सीधा मुझ पर जायेगा। ऐसे हालात से बचने के लिए उसने तुमसे बात करते वक़्त हाथों हाथ ऐसी कहानी गढ़ दी जिससे तुम्हारे दिमाग में यह बैठ जाये कि वह सत्या से एकतरफ़ा प्रेम करता था, वह कोई और है जिससे सत्या प्यार करती थी।”

“अर्थात् उसकी कहानी झूठी थी? मेरे दिमाग में सत्या का काल्पनिक प्रेमी खड़ा कर दिया था उसने?”

“क्यों नहीं हो सकता?”

“वंसल की तिजोरी से निकला कार्ड?”

“उसी का रक्ख़ा हो सकता है।”

विभा की कहानी में कहीं कोई छेद नजर नहीं आया मुझे।

सुबूत और हालात चीख-चीखकर लविन्द्र को हत्यारा बता रहे थे।

मैं कह उठा----“कितनी अजीब बात है? पहेली का हल बता रहा है कि हत्यारे का अगला शिकार वो है जिसका नाम L से शुरू होता है। वह लविन्द्र भी हो सकता है और लविन्द्र ही हत्यारा भी लग रहा है हमें।”

“मेरे ख्याल से तो आपका केस काफी हद तक हल हो चुका है।” काफी देर से खामोश मधु ने कहा----“आगे होने वाली हत्याओं को भी रोक सकते हैं आप। L, E, N, G, E से शुरू होने वाले नामों वाले व्यक्तियों को पकड़िए। उनसे पूछिए कि सत्या की हत्या क्यों की? मेरे ख्याल से एक घण्टे में सच्चाई उगल देंगे।”

“मधु ठीक कह रही है। हमें अगला कत्ल होने से पहले कालिज पहुंच जाना चाहिए।”

“देर मैं कहाँ, तुम कर रहे हो।” विभा ने सोफे से सीधी छलांग बाथरूम के दरवाजे पर लगाई।

एक पल के लिए टिठकी वह।

पलटी! और नजदीक खड़ी खुशबू को बाहों में भरकर प्यार करती हुई बोली----“थैंक्यू मेरी नन्हीं बेटी। थैंक्यू! तेरी छोटी-सी शरारत ने मेरे दिमाग के सभी खिड़की दरवाजे खोल दिये।”

खुशबू नहीं समझ पाई उसने कितना बड़ा काम कर दिया है।

जो पहेली किसी के सुलझाये न सुलझ रही थी, वह पल भर में सुलझ गयी।

खुशबू को यूँ ही खड़ी छोड़कर विभा बाथरूम में समा गयी।

मैं अपने कमरे के साथ अटैच्ड बाथरूम में पहुंचा।

फ्रेश होकर निकला तो विभा को हॉल में बैठी पाया।

मुझे देखते ही वह खड़ी होती हुई बोली----“घलो।”

कुछ देर बाद गल्ल-रायल कालिज की तरफ उड़ी चली जा रही थी। विभा का शोफर उसे ड्राइव कर रहा था। हम पिछली सीट पर बैठे थे और विभा कह रही थी----“अभी हम पहेली का हल किसी को नहीं बतायेंगे। यह रहस्योद्घाटन मैं खुद

करूंगी----तब जब मुनासिब मौका देखूंगी।”

मेरी तरह शायद उसे भी गुमान न था कि कॉलेज में दिमाग को चकरा देने वाली एक और दुर्घटना इन्तजार कर रही है।



राजेश, एकता, रणवीर और रवीना आदि का पेरियड केमेस्ट्री के प्रैक्टिकल का था। पढ़ाई तो खैर कहीं कुछ नहीं हो रही है---पेरियड्स की औपचारिकता-सी निभाई जा रही थी। सब जगह एक ही चर्चा थी---अगला नम्बर किसका है?

कुछ ऐसी ही बातें करते राजेश आदि केमेस्ट्री लैब में पहुंचे।

लैब खाली पड़ी थी।

जाने क्यों, वहां का वातावरण रहस्यमय सा लगा।

अन्य स्टूडेंट्स भी लैब में आ चुके थे।

प्रैक्टिकल डेस्क पर अनेक कैमिकल्स रखे थे।

हालांकि स्वाभाविक रूप से लैब में उनकी गंध फैली रहती थी। परन्तु इस वक्त स्टूडेंट्स एक ऐसी गन्ध भी महसूस कर रहे थे जैसी पहले कभी नहीं की थी।

अजीब सा घुटन थी उस गंध में।

“कहां गये लविन्द्र सर?” एक स्टूडेंट के मुंह से वह सवाल निकला जो सबके दिमाग में था।

दूसरे ने कहा----“वे तो हम लोगों से पहले यहां पहुंच जाते थे।”

कोई कुछ नहीं बोला। राजेश ने ऊंची आवाज में पुकारा----“आप कहां हैं सर?”

किसी तरफ से कोई जवाब नहीं उभरा।

लगभग सभी स्टूडेंट्स बार-बार लविन्द्र को पुकारने लगे।

और फिर, कुछ देर बाद चौकती हुई दीपा ने कहा----“धुवां! राजेश, ये धुवां कैसा?”

सभी उसकी तरफ मुखातिब हुए।

बल्कि चारों दिशाओं से लपककर नजदीक आये और जो दीपा दिखाना चाहती थी उसे देखकर दंग रह गये। वह लेबोरेट्री के अंदर बना टीचर्स रूम था। रूम का दरवाजा बाहर से बंद था। फर्श और दरवाजे के बीच वाली दरार से निकलता धुवां साफ नजर आ रहा था।

हैरानी का कारण वह धुवां ही था।

“अंदर शायद आग लग गयी है!” श्वेता के मुंह से निकला।

रणवीर ने झपटकर दरवाजा खोला।

कमरा धुवे से भरा था।

बदबूझार धुवों का भभका बाहर निकला तो चीखते स्टूडेंट्स पीछे हट गये।

हालांकि धुवां बहुत गाढ़ा नहीं था। परन्तु इतना ज्यादा जरूर था कि पहली नजर में कुछ नजर नहीं आया।

न आग न वह स्रोत जहां से धुवां निकल रहा था।

कुछ स्टूडेंट्स डर गये थे। कुछ सहमे हुए थे।

अनिष्ट की आशंका से तो लगभग सभी ग्रस्त हो चुके थे।

माहौल ही ऐसा था कि जरा सी घटना सबके दिलों-दिमाग को हिला डालती थी।

धुवां लैब में आया तो कमरे का दृश्य धुंधला सा नजर आने लगा।

राजेश और उसके साथी हिम्मत करके अंदर घुसे।

और उसके बाद तो चीखों का बाजार गर्म हो उठा। 'लाश-लाश' चिल्लाते हुए कई स्टूडेंट्स कमरे से कूदकर लैब में आये। लैब में मौजूद स्टूडेंट्स यही शब्द चीखते बाहर की तरफ दौड़े।

सारा कॉलिज लैब और उसके बाहर इकट्ठा हो चुका था।

हम कमरे में थे।

और हमारे सामने थी----लविन्द्र भूषण की लाश!

उसे लविन्द्र भूषण की लाश कपड़ों के कारण कह सकते थे।

कपड़े भी वे जो जल और गल जाने के कारण पूरी तरह जर-जर हो चुके थे।

चेहरा पूरी तरह वीमत्स, विकृत और डरावना हो चुका था।

चेहरा ही क्यों, समूचा जिस्म जल गया था उसका।

और वह सब आग में नहीं जला था।

लाश एक मेज पर पड़ी थी।

पड़ी क्या थी----मेज पर बाकायदा बांधा गया था उसे।

रेशम की ठीक वैसी ही मजबूत डोरी से जैसी से चिन्नी को बांधा गया था। इस वक्त वह डोरी भी कई जगह से जल और गल जाने के कारण टूट गयी थी। लाश का मुंह खुला हुआ था। उसमें ठूँसी ढेर सारी रूई में से इस वक्त धुवां निकल रहा था।

मेज के नीचे प्लास्टिक का एक खाली मग तथा दो बोतलें लुढ़की पड़ी थीं।

एक बोतल पर चिपके लेबल पर सल्फ्यूरिक एसिड लिखा था, दूसरी पर नाईट्रिक एसिड।

मेरी खोपड़ी----यह सोच-सोचकर फटी जा रही थी कि जिस कोस को घर से चलते वक्त हम लगभग हल हुआ समझ रहे थे

उसमें यह नया मोड़ आने पर आखिर हम खड़े कहां हैं?

हालांकि मर्डर, विभा द्वारा व्यक्ति की गई संभावना के मुताबिक, L से शुरू होने वाले नाम के व्यक्ति का हुआ था, परन्तु वह शख्स भी तो यही था जिसे मैं हत्यारा मान चुका था।

मेरे दिमाग में अनेक सवाल रेंग रहे थे। खुलकर विभा से इसलिए बात नहीं कर सकता था क्योंकि उसने किसी के सामने पहेली के हल की चर्चा करने से इंकार किया था।

“हत्यारे के हौसले बुलन्द होते जा रहे हैं।” मेज की परिक्रमा सी करती विभा कह उठी----“यह मर्डर उसने बगैर किसी जल्दवाजी के, तसल्ली से किया है। जैसे जानता हो उसकी कार्यवाही के दरम्यान कोई आने वाला नहीं है। उसने चीखने-चिल्लाने का मौका दिये बगैर लविन्द्र को पकड़ा। मुंह में खूई ठंसी। रेशम की डोरी की मदद से मेज पर बांधा। लैब से सल्फ्यूरिड एसिड और नाइट्रिक एसिड की बोतलें लाया। दोनों को मग्ने में डालकर अम्लराज तैयार किया और इसके सारे जिस्म पर डालकर कमरा बाहर से बंद करने के बाद निकल गया।”

“हौसले बुलन्द क्यों नहीं होंगे हत्यारे के? रोक कौन पा रहा है उसे?”

बंसल ने एक दीवार की तरफ इशारा किया----“ये देखिए! मरने से पूर्व लविन्द्र ने भी CHALLENGE लिखा है। इस पहेली तक को तो सुलझा नहीं सका कोई।”

मेरा जी चाहा----चीख-चीखकर बताऊं विभा पहेली को हल कर चुकी है।

मगर मैं कुछ न कह सकता था, न विभा ने कहा।

मगर, उसके गुलाबी होठों पर हल्की सी मुस्कान जरूर उभरी। बोली----“इस वक्त केवल इतना कह सकती हूं----हत्यारा हमें किसी भ्रमजाल में फंसाने के लिए मक्तूल को मजबूर करके उसके हाथ से यह लफ्ज लिखवाता है।”

“मुझे तो नहीं लगता ऐसा।” राजेश ने कहा----“सत्या मैडम ने सबके सामने अपनी मर्जी से ये शब्द लिखा! कम से कम हमें तो नहीं लगा वे किसी के द्वारा मजबूर की गई थीं।”

“बहुत से सवालों के जवाब विभा के पास हैं राजेश।” मैं खुद को इतना कहने से न रोक सका----“मगर वक्त से पहले बताना ठीक नहीं समझती।”

“पता नहीं कब आयेगा वक्त!” राजेश बड़बड़ाकर चुप हो गया।

“आयेगा राजेश। तुम जैसे ब्रिलियन्ट लड़के को निराश नहीं होना चाहिए।” विभा ने कहा----“एक हद तक मुजरिम इन्वेस्टिगेटर को जरूर छकाता है मगर हमेशा नहीं छकाता रह सकता। इन्वेस्टिगेटर को रास्ते मुजरिम की भूल चूक और गलतियों से मिलते हैं। और हो सकता है जब सारे रहस्य खुलें तो तुम खुद कहो, जो हो रहा था, ठीक हो रहा था। यही होना चाहिए था।”

“य-ये क्या कह रही हैं आप? मेरी कुछ समझ में नहीं आया।”

“सारी बातों को अभी समझने की कोशिश मत करो।”

राजेश से कहे गये विभा के अंतिम शब्द मेरे लिए भी पहेली बन गये।

समझ न सका----आखिर वह कहना क्या चाहती है?

CHALLENGE वाली पहेली हल करने के बाद विभा मुझे एक पहेली में तब्दील होती नजर आई। तभी वहां जैकी पहुंच गया। विभा के कहने पर उसे फोन कर दिया गया था।

कमरे में घुसते ही उस पर भी वही प्रतिक्रिया हुई जो हम पर हुई थी। लाश का निरीक्षण करने के बाद सारे कमरे का निरीक्षण करती उसकी नजर दीवार पर चौक से लिखे गये अक्षरों पर पड़ी। वह बड़बड़ा उठा----“फिर वही चैलेंज!”

“उतरवाओ इसका फोटो। भेजो एक्सपर्ट के पास।” बंसल ने कहा----“इसके अलावा हम कर क्या रहे हैं?”

“वाकई।” जैकी कह उठा----“बंसल साहब ठीक कह रहे हैं। विभा जी! ऐसा लगता है जैसे हमारे करने के लिए कुछ रह ही नहीं गया। मैंने लॉकिट के बारे में जितना सोचा, हत्यारा लविन्द्र ही लगा और अब तोहफे की शक्त में हत्यारे की तरफ से उसी की लाश पेश है। सारे रास्ते पुनः ब्लॉक।”

“बंसल साहब!” विभा ने जैकी की बात पर ध्यान दिये बगैर प्रिंसिपल से कहा----“मुझे कॉलिज के एक-एक स्टूडेंट, प्रोफेसर्स और अन्य स्टाफ के नामों की सूची चाहिए।”

“मैं हर चीज देने को तैयार हूं मगर प्लीज किसी तरह हत्याओं के इस सिलसिले को रोकिए। ये सब होता रहा तो मैं तो शायद हार्ट अटैक से ही मर जाऊंगा।”

“आओ जैकी!” कहने के साथ वह कमरे से बाहर निकल गयी।



पहेली का हल सुनते ही जैकी उछल पड़ा। मुंह से निकला----“हद हो गयी! हर अक्षर का मतलब अलग था। और हम उन्हें मिलाकर वने शब्द अर्थात् चैलेंज पर अटके रहे। हल समझ में आने के बाद आपकी थ्योरी एकदम सही है विभा जी! कहीं लोच नजर नहीं आ रहा मुझे। यकीनन CHALLENGE के जरिए सत्या अपने प्रेमी को अपने कातिलों का नाम बता गयी और उसके बाद हुए सारे मर्डर सत्या की हत्या का रिवेंज है। ये तय है हत्यारा उसका प्रेमी ही है। अब केवल यह पता लगाना रह जाता है कि वह कौन है?”

“तुम्हारे ख्याल से इन नौ लोगों ने सत्या ही हत्या क्यों की?”

“आप शायद चन्द्रमोहन की जेब से बरामद खून सने पेपर को भूल रही हैं। उस वक्त भी मेरी धारणा यही बनी थी कि उसकी हत्या का कारण वही था और अब तो वह धारणा मजबूत होती नजर आ रही है। यकीनन इन नौ लोगों का रैकेट पेपर आऊट कर रहा था। सत्या ने उन्हें पकड़ लिया। इसी वजह से मारी गयी।”

“अगर चन्द्रमोहन अन्य आठ लोगों के साथ सत्या का कातिल था तो मरने से पूर्व तुम से बात करते समय वो किस मानसिक अवस्था में था? क्या वह सचमुच अपने साथियों को पकड़वाने के फेर में था अथवा तुम्हें धोखा देना चाहता था?”

“मुझे आश्चर्य है। वेद जी ने हवालात में उसकी हालत देखी थी। जितना टॉर्चर मैंने किया था इसके बाद उसे टूट जाना चाहिए था। कुबूल कर लेना चाहिए था कि उसने फलां-फलां आठ व्यक्तियों के साथ सत्या की हत्या की है। मगर नहीं टूटा। मुझे भी लगा वह कातिल नहीं है। इसलिए छोड़ दिया मगर मेरा ख्याल है टॉर्चर ने उसे हिला डाला था। वह सोचने पर मजबूर हो गया कि देर सवेर सत्या के हत्यारे का मैं पता लगा लूंगा। उस वक्त जब इंस्पेक्टर को पता लगेगा कि मैं भी कातिलों में एक हूं तो शायद इंस्पेक्टर इस बात पर क्रुद्ध होकर सबसे ज्यादा बुरी गत मेरी ही बनाये कि मैं उसके टॉर्चर के बावजूद नहीं हांगा था। अब हम अपनी थ्योरी को सच मानकर उस वक्त की कल्पना करते हैं जब मैंने चन्द्रमोहन को छोड़ा। उससे पहले उसके आठ साथियों के दिलो-दिमाग यह सोच-सोचकर कांप रहे होंगे कि हवालात में चन्द्रमोहन टूट गया और हकीकत बता दी तो क्या होगा? उन्होंने राहत की सांस तब ली होगी जब चन्द्रमोहन ने बताया होगा कि इंस्पेक्टर उससे कुछ नहीं उगलवा सका।

इधर चन्द्रमोहन के दिमाग में खुद को बचाने का द्वन्द्व चल रहा होगा। और फिर, उसने खुद को बचाने की तरकीब निकाल ली! मारे जाने से पूर्व मेरे ख्याल से वह उसी तरकीब पर अमल कर रहा था।”

“मतलब?”

“उसने वह पेपर हासिल किया जो मरते वक्त सत्या की मुट्ठी में था। उसे मुझे सौंपकर शायद वह ये कहने वाला था कि इसकी खातिर फ्लां-फ्लां आठ लोगों ने सत्या की हत्या की।”

मैंने कहा----“वे आठों पकड़े जाने पर बताते कि चन्द्रमोहन भी उनका साथी है।”

“उस वक्त चन्द्रमोहन कहता----वे झूठ बोल रहे हैं। मेरा नाम केवल इसलिए ले रहे हैं क्योंकि मैंने इन सबकी पोल खोली है। पकड़वाया है। इस अवस्था में हमें वही सच्चा नजर आता।”

“बात तो जंचने वाली है।” कहने के साथ मैंने विभा की तरफ देखा----“फोन करते वक्त शायद वह इसी फिराक में था।”

“और उसी समय मारा गया! यानी हत्यारे को मालूम था वह सत्या के हत्यारों का भेद पुलिस पर खोलने वाला है। वह उन्हें कानून के हवाले नहीं करना चाहता। खुद सजा देने का तलबगार है।”

“जाहिर है।”

“C, H, A, L और L मारे जा चुके हैं। बाकी बचे E, N, H, E को क्यों न हम गिरफ्तार कर लें?”

“ये वो लिस्ट है जो मेरे मांगने पर बंसल ने दी।” विभा ने लिस्ट दिखाते हुए कहा----“कॉलिज में ऐसे चालीस लोग हैं जिनके नाम E, N, G, E से शुरू होते हैं। क्या हमें सबको गिरफ्तार कर लेना चाहिए?”

“यह पता लगाना शायद मुश्किल नहीं होगा कि इन चालीस में से वे चार कौन से हैं, जो सत्या के मर्डर में शामिल रहे।” मैंने कहा----“दरअसल अभी वे समझ नहीं रहे होंगे कि मर केवल वे रहे हैं जिन्होंने सत्या की हत्या की और हत्यारे के अगले शिकार वे हैं। यह बात समझ में आते ही वे कदमों में गिर जायेंगे हमारे।”

“समझाये कौन?”

“हम!”

“सोचना यही है वेद।” विभा ने कहा----“यह बात उन्हें समझाई जाये या नहीं? सोच लो----चालीस में से चार छंटे तो जा सकते हैं, परन्तु खुलना सभी के साथ पड़ेगा और सबके साथ खुलने का मतलब है वह बात सारे कॉलिज में फैल जाना जो इस वक्त केवल हमें मालूम है। पहले ही आतंक छाया हुआ है। यह बात खुलने के बाद तो दहशत फैल जायेगी चारों तरफ! साथ ही हत्यारा भी जान जायेगा कि हम क्या जान गये हैं!”

“तो करें क्या?”

जैकी बोला----“मेरा एक सजेशन है विभा जी!”

“बोलो!”

“अगर उसी क्रम में चला जाये जिस क्रम से हत्याएं हो रही हैं तो हत्यारे का अगला शिकार * है। लिस्ट में ऐसे कितने नाम हैं जिनके नाम E से शुरू होते हैं?”

“पन्द्रह!”

“क्यों न फिलहाल इन पन्द्रह को ही अपने सुरक्षा-जाल में रखें?”

विभा ने कहा-----“लविन्द्र की हत्या ने साबित कर दिया है-----हत्यारे के लिए दिन और रात में कोई फर्क नहीं है। वह किसी भी समय वारदात कर सकता है। इन पन्द्रह को अभी से अपने सुरक्षा चक्र में ले लेना चाहिए।”

“इसके लिए मुझे फोर्स बुलानी होगी।”

“इसी वक्त जाकर एस.एस.पी. से बात करो।” विभा ने कहा।



कैंटीन वाला कैंटीन बंद करने की प्रक्रिया की तरफ बढ़ रहा था।

मैं और विभा वहां पहुंचे। विभा ने उसे कैंटीन बंद करने से रोका। कॉफी बनाने के लिए कहा।

ज्यादा भीड़ नहीं थी वहां। इक्का दुक्का मेजों पर स्टूडेंट्स बैठे थे।

मैं और विभा उस वक्त कॉफी पी रहे थे जय गुल्लू वहां पहुंचा। रूल बगल में दवाये उसने कैंटीन वाले से चाय बनाने के लिए कहा। और हमसे दूर, एक कुर्सी पर बैठ गया।

कहर उस वक्त बरपा जब चाय पीने के बाद गुल्लू पेमेन्ट करने लगा।

विभा की आंखों में मैंने बड़ी जबरदस्त चमक देखी। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता वह झटके से उठी। बाज की मानिंद झपटी और गुल्लू के नजदीक पहुंचकर उसकी कलाई थाम ली।

गुल्लू के हाथ में सौ का करारा नोट था।

उस नोट को लेने के लिए कैंटीन वाले का हाथ बढ़ा का बढ़ा रह गया।

विभा की अजीब हरकत पर कैंटीन में मौजूद हर व्यक्ति चकित रह गया था।

“जब चन्द्रमोहन की हत्या हुई उस वक्त तुम कहां थे?” पूछने के साथ विभा ने उसके हाथ से नोट खींच लिया।

“इंस्पेक्टर साहब को बता चुके हैं।” गुल्लू ने रटे रटाये शब्द बोलने शुरू किए-----“हम गेट पर स्टैंड थे। चन्द्रमोहन बाबा की चीख सुनी। स्टॉफ रूम की तरफ रन किया। वहां पहुंचे तो देखा...”

उसकी बात काटकर विभा गुराई-----“झूट बोलने की कोशिश की तो जिन्दा गाड़ दूंगी जमीन में।”

सकपका गया गुल्लू। हकवकाया सा विभा की तरफ देखता रह गया।

तब तक कैंटीन में मौजूद हर शख्स उनके समीप पहुंच चुका था।

किसी को समझ में नहीं आ रहा था अचानक विभा ने गुल्लू को क्यों पकड़ा?

अगर उसे कोई शक था तो काफी पहले यह हरकत क्यों नहीं की? इसी वक्त गुल्लू की ऐसी क्या असामान्य हरकत देखी जिसके कारण हरकत में आई? मैंने पूछा----“क्या हुआ विभा? क्या किया है इसने?”

“इस नोट को देखो।” गुल्लू पर नजरें चिपकाये विभा ने नोट मेरी तरफ बढ़ाया----“कितना करारा है? एकदम नया! ऐसे ही नोट तुम्हें और जैकी को चन्द्रमोहन की जेब से मिले थे। देखकर बताओ----ये नोट उनके साथ का है या नहीं?”

दंग रह गया मैं।

चन्द्रमोहन की जेब से बरामद जिन नोटों को पूरी तरह भूल चुका था, वे केवल मेरे बताने मात्र से विभा के जहन में थे। न केवल जहन में थे बल्कि इस नोट को देखते ही उन नोटों की याद आ गयी उसे! आखिर क्या लिंक जुड़ रहा था उसकी करामाती खोपड़ी में? कुछ भी न समझते हुए मैंने कहा----“है तो वैसा ही कोरा मगर उसके साथ का है या नहीं----गारंटी से नहीं कह सकता। असल में खून सने पेपर के कारण मैं उन पर ध्यान नहीं दे सका था।”

“कहां है वे नोट?”

“जैकी के पास।”

“मोबाइल पर फोन करो उसके। नोटों के नम्बर पूछो।”

“ओ.के.।” कहने के साथ मैंने कैटीन से निकलने के लिए कदम बढ़ाया ही था कि विभा ने कहा----“या ठहरो!”

मैं टिठका।

“पहले इसी से पूछते हैं।” विभा ने गुल्लू से सवाल किया----“बोलो---- ये नोट उन्हीं के साथ का है या नहीं?”

गुल्लू चुप।

“सच बोलोगे तो माफ कर सकती हूं। जैकी से बात करने के बाद हकीकत सामने आई तो तुम्हारे लिए मुश्किलें खड़ी हो जायेंगी।”

टूट गया गुल्लू। बोला----“उन्हीं के साथ का इज!”

“और कितने हैं?”

“वन।”

“निकालो।”

गुल्लू ने अपने साफे के नीचे से वैसा ही एक और नोट निकालकर दिया।

दोनों के नम्बर आगे पीछे के थे।

विभा ने पूछा----“तुम पर कैसे आ गये ये?”

“चन्द्रमोहन बाबा ने दिये थे।”

“कब? कहां? और क्यों?”

“बात उसी नाइट की है जिस नाइट उनका मर्डर हुआ। हम राऊन्ड पर थे। देखा----वन साया व्यायज हॉस्टल की बाऊंड्री वॉल से कैम्पस में कूदा। हमने खुद को अंधेरे में छुपा लिया।”

“छुपा क्यों लिया? चौकीदार होने के नाते तुम्हारा कर्तव्य उसे ललकारना था या खुद को छुपा लेना?”

“क्योंकि हम साये को पहचान गये थे। चन्द्रमोहन बाबा थे तो हमारी आसामी!”

“आसामी से मतलब?”

“ये मनी फर्स्ट बार नहीं दी थी उन्होंने।”

“अक्सर देता रहता था?”

“यस!”

“क्यों?”

“क्योंकि वे नाइट में कॉलिज से बाहर जाते थे।”

“किसलिए?”

“स्मैक लेने।”

“ओह!”

“उस नाइट हम कड़के थे। सो सोचा चलो, अच्छी मुर्गी बनेगी। चन्द्रमोहन बाबा खुद को डार्क में रखने का प्रयत्न करते आगे बढ़ रहे थे। हमने सोचा टूडे ऐसा व्हाई कर रहे हैं? वे तो सीना तानकर गेट की तरफ बढ़ते थे। हमारी मुट्ठी गर्म करते थे और निकल जाते थे। लगा आज वे चकमा देकर नाइन टू इलेविन होने के फेर में हैं। मगर हम भला कब चूकने वाले थे? दबे पांव उनके नजदीक पहुंचे। अपना हैण्ड उनके सोल्डर पर रखा। बुरी तरह चौंक उठे वे। उछलकर घूमते हुए पूछा----“क-कौन?”

“हम हैं चन्द्रमोहन बाबा!” हमने ही-ही करके टीथ दिखा दिये।

“ओह! गुल्लू?” उन्होंने राहत की सांस ली----“तुमने तो मुझे डरा ही दिया यार।”

“डरता तो मैं तभी है चन्द्रमोहन बाबा जब खुद के हार्ट में थीफ हो। तुम चोरी-चोरी निकलना चाहते थे! हमने दबोच लिया। गार्ड हैं यहां के! ड्यूटी पर मुस्तैद रहते हैं। बगैर फीस दिये कोई आऊट नहीं जा सकता।”

“मैं बाहर नहीं जा रहा।”

“तो क्या कम्पनी गार्डन समझकर नाइट वॉक पर निकले थे?”

“स्टॉफ रूम की तरफ जा रहा था। मुझे एक फोन करना है।”

“फोन किसे?”

“तू इस लफड़े में मत पड़।” कहने के साथ उन्होंने एक नोट निकालकर हमारे हैण्ड पर रखा----हमने गेट की तरफ देखते

हुए उनसे कहा----“रिट घटा दिये हैं क्या? मालूम नहीं----महंगाई कुतुबमीनार पर चढ़कर चिल्ला रही है। वन और झटको।”

उन्होंने एक और नोट निकालकर हमारे हैंड पर रखा।

विभा ने पूछा----“क्या तुमने उसके पास खून से सना पेपर भी देखा था?”

“नो। उन्होंने दोनों वार जेब से एक-एक नोट ही निकाला था।”

“खैर! उसके बाद?”

हमने कहा----“फोन करने के टू हन्डरेड! कोई खास चिड़िया है क्या?”

“तू इस चक्कर में मत पड़। गेट की तरफ जा।”

उन्हें धिस्सा देने के लिए हमने गेट की तरफ बढ़ने का ड्रामा जरूर किया पर असल में उधर गये नहीं। बीच ही से कन्नी काटकर रुख बदला और बरांडे के धम्बों के पीछे छुपते-छुपाते फॉलो करने लगे। सोचा था----अगर यह पता लग जाये वे किस गर्ल को फोन कर रहे हैं तो अच्छी-खासी पुड़िया बन जाये। जिस वक्त वे स्टाफ रूम में दाखिल हुए उस वक्त हम सामने वाले बरांडे में थे। वट आपने देखा ही होगा----दोनों के बीच करीब टू हन्डरेड फुट चौड़ा ग्राऊन्ड है। उन्हें स्टाफ रूम में गये ज्यादा टाइम नहीं गुजरा था कि एक हेलमेट वाला डार्क से निकलकर चांदनी में आया। उसके हैंड में वन बल्लम था। इससे पहले कि हम कुछ समझ पाते, वह बढ़बड़ाता सा स्टाफ रूम के दरवाजे पर पहुंचा। हम यह जानने की कोशिश कर ही रहे थे कि वे टू है एण्ड क्या चाहता है कि उसका बल्लम वाला हैंड इलेक्ट्रिक स्पॉड से चला। अगले पल उसके हैंड में बल्लम नहीं था। चन्द्रमोहन बाबा की चीख गूंजी। डेंजर का आभास होते ही हम बरांडे से ग्राऊन्ड में कूदे। स्टाफ रूम की तरफ रन किया। हेलमेट वाला भी भागा। हम चीखते हुए उसकी तरफ दौड़े। उसके बाद का सच-सच हाल आपके फ्रेंड और इंस्पेक्टर साहब को बता ही चुके हैं। हमारे देखते ही देखते वह कॉलिज की बाऊन्ड्री वॉल से बाहर कूद गया।”

“ये बातें तुमने पहले क्यों नहीं बताईं?”

“सर्विस से किसे लव नहीं होता, मैडम जी? प्रिंसिपल साहब को पता लग जाता हम करेंसी लेकर चन्द्रमोहन बाबा को बाहर जाने देते थे तो वोरिया बिस्तर राऊन्ड न हो जाता?”

उसे धूरती हुई विभा ने कहा----“क्या जरूरी है इस वक्त सच बोल रहे हो?”

“आपके सामने किसी की लाई चल ही नहीं सकता मैडम जी वट....

“क्या कहना चाहते हो?”

“हैंड जोड़ता हूं आपके! फुट पड़ता हूं। जो मैंने बताया या बताना पड़ा----उसके बारे में प्रिंसिपल साहब से कुछ न कहना। बड़े स्ट्रिक हैं वे। हमारी सर्विस चट्ट कर जायेंगे।”

“नहीं कहूंगी। मगर तुम्हें सच बोलना होगा।”

“सच ही तो बोला है मैडम जी।”

“अभी आधा सच बोला है तुमने। आधे सच को छुपा रहे हो।”

“ह-हम तो कुछ भी नहीं छुपा रहे, मैडम जी।”

“आओ।” कहने के साथ विभा उसे घसीटती सी कैदीन के कमरे में ले गयी।

मैं साथ था।

उसके निर्देश पर कमरे का दरवाजा अंदर से बंद किया।

बाहर रह गये स्टूडेंट सर्पैस से घिरे वही खड़े रह गये। आतंक की ज्यादाती के कारण गुल्लू का बुरा हाल था। वह समझ चुका था किसी मुसीबत में फँसने वाला है। हालांकि यह बात मेरे जहन में थी कि गुल्लू का नाम भी उन अक्षरों में से एक से शुरू होता है जो हत्यारे के भावी शिकार हैं, परन्तु यह न जान सका----वह गुल्लू से चाहती क्या है?

इस वक्त वह गुल्लू के अत्यन्त नजदीक खड़ी उसे घूर रही थी।

गुल्लू को काटो तो खून नहीं!

नजर ही नहीं चेहरा झुकाकर कहा उसने----“अ-आप हमें ऐसे काई देख रही हैं?”

“चन्द्रमोहन के साथ किसी क्राइम में शामिल नहीं थे तुम?” विभा के हलक से गुराहट निकली।

“ह-हम?” गुल्लू ने एक झटके से चेहरा उठाया----“हम भला किस क्राइम में शामिल होते?”

“तुमने अभी-अभी कहा----मेरे सामने झूठ नहीं चल सकता। मैं जान चुकी हूँ बेवकूफ। तुम पेपर आऊट करने वाले रैकेट के मेम्बर हो। तुमने चन्द्रमोहन, हिमानी, अल्लारक्खा, ललिता, लविन्द्र और दूसरे साथियों के साथ मिलकर सत्या की हत्या की।”

चेहरा निचुड़ गया गुल्लू का।

क्षण मात्र में अपराधी सा नजर आने लगा वह।

विभा उस पर प्रेशर बढ़ाने के लिए गुराई----“हकीकत जानते हुए भी मैंने किसी से कुछ नहीं कहा है! सोचो----इस बार मैंने इंस्पेक्टर को बता दिया तो क्या हाल करेगा तुम्हारा?”

“न-नो नो मैडम जी।” वह पछाड़ सी खाकर विभा के कदमों में गिर गया----“उसके हवाले मत करना। चन्द्रमोहन ने बताया था बड़ा जालिम इंस्पेक्टर है वो। बहुत बुरी तरह टार्चर करता है तो सुनकर ही कांप गये। सोचने लगे उसकी जगह हम इंस्पेक्टर के चंगुल में फँस जाते तो हकीकत को छुपाये नहीं रख सकते थे।”

“कौन सी हकीकत को?”

“ज-जब आप सब कुछ जानती ही हैं तो....

“मेरा जानना अलग है। तुम्हारा बताना अलग! मैं ये देखना चाहती हूँ----तुम अब भी कुछ छुपाने की फिराक में हो या सब कुछ सच-सच बताते हो? बोलो----सत्या की हत्या क्यों और किस तरह की तुमने? सारी बातें विस्तार से बताओ। कुछ भी छुपाया तो मुझसे बुरा कोई न होगा।”

“हम नौ लोग पेपर आऊट करने का धंधा करते थे।”

“नाम बताओ सबके।”

“आप जानती तो हैं....।”

“तुम्हारे मुंह से सुनने की तलबगार हूं।”

मैं समझ गया----विभा बाकी के तीन नाम जानना चाहती है। उन नामों को सुनने के लिए मैं भी बेचैन था।

“मैं!” गुल्लू ने बताना शुरू किया----“चन्द्रमोहन, हिमानी, अल्लारक्खा, ललिता, लविन्द्र, एकता, नगेन्द्र और ऐरिक।”

“गुड!” विभा ने कहा----“कब से चल रहा था ये धंधा?”

“पांच साल से। शुरू में केवल ऐरिक, नगेन्द्र और चन्द्रमोहन ने शुरू किया था। अगले साल हिमानी और अल्लारक्खा जुड़ गये। उससे अगले साल ललिता और एकता रैकेट की मेम्बर बनीं। हमें और लविन्द्र सर को उनके फेर में आये ओनली टू ईयर हुए हैं।”

“नये-नये लोग किस तरह जुड़ते थे?”

“जो किसी भी जरिए से रैकेट का राज जान जाता। ओल्ड लोग उसे शेयर देने का लालच देकर शामिल कर लेते थे।”

“कितनी कमाई होती थी इसमें?”

“असली कमाई के बारे में तो ऐरिक सर और चन्द्रमोहन जानते हैं। हम जैसे छोटे प्यादे को तो वन ईयर में ओनली फाइव लाख मिल जाते थे।”

“पांच लाख?” विभा दंग रह गयी।

“यह केवल इसका शेयर था।” मैं बोला----“अब मेरी समझ में आया। पेपर आऊट करने वाला यह वह रैकेट है जिसकी सक्रियता की चर्चा किसी न किसी स्तर पर हर साल होती रही है। मगर इधर एग्जाम खत्म होते उधर चर्चा भी आई गई हो जाती। ये पेपर यूनिवर्सिटी से कनेक्टिड सभी कॉलिजों में ऊंचे दामों में बेचे जाते थे।”

“खैर!” विभा ने गुल्लू से कहा----“सत्या तुम्हारे हथ्थे कैसे चढ़ी?”

“उन्होंने कैम्पस में वंसल साहब और चन्द्रमोहन के खिलाफ मीटिंग बुलाई हुई थी। क्लाइमेट तो कॉलिज का गर्म था ही मगर हमें उस गर्मी से कुछ लेना देना नहीं था। हमारे दिमागों पर तो यह गर्मी सवार थी कि एग्जाम आने वाले हैं----इस बार मिशन को किस तरह अंजाम दिया जाये? सत्या मैडम को ढूँढने के बहाने हम सब हिमानी मैडम के कमरे में इकट्ठे हुए। उन्हीं के द्वारा बनाये गये पेपर की कापियां थीं हमारे हाथों में। तभी चन्द्रमोहन ने कॉलिज में अपने खिलाफ चल रहे माहौल का जिक्र छेड़ दिया! कहने लगा----हम सबको सत्या के खिलाफ उसकी मदद करनी चाहिए। ऐरिक सर ने कहा----‘हम लोग सिर्फ इस धंधे के हिस्सेदार हैं। किसी की अन्य गतिविधियों से कुछ लेना-देना नहीं है। जो तुमने किया है, तुम्हीं को भुगतना होगा। हममें से कोई साथ देने के लिए बाध्य नहीं है।’ यह सुनकर चन्द्रमोहन भड़क उठा। धंधे का भेद खोलने की धमकी देने लगा। तब एकता और अल्लारक्खा ने कहा----‘इस तरह तुम्हारा साथ देने लगे तो हम लोगों की उस पॉलिसी पर भी पानी फिर जायेगा जिस पर आज तक अमल करते रहे हैं। सब यही जानते हैं तुम और हम अलग-अलग ग्रुप के हैं। यह सावधानी हमने इसीलिए तो अपना रखी है कि नौ लोगों का रैकेट कभी किसी की समझ में न आ सके।’ परन्तु चन्द्रमोहन किसी की सुनने को तैयार नहीं था। वह लड़ने-झगड़ने लगा। ऊंची आवाज में बोलने लगा। उसी का अंजाम था सत्या मैडम रूम में आ गयीं।”

“उसके बाद?” मैंने धड़कते दिल से पूछा।

“सब अवाक रह गये। उनका फेस कठोर संगेमरमर जैसा लग रहा था। हिमानी के हैण्ड में दबा पेपर छीनती हुई बोलीं----“दरवाजे के बाहर खड़ी पन्द्रह मिनट से तुम्हारी बकवास सुन रही हूँ। जान चुकी हूँ वह रैकेट तुम हो जिसकी

कानून को पांच साल से तलाश है। और लविन्द्र तुम? तुम भी इन लोगों में शामिल हो? मैं सोच तक नहीं सकती थी तुम इस धृष्टित धंधे का हिस्सा होगे।”

लविन्द्र सर सहित सबने उन्हें समझाने की कोशिश की।

कोशिश वही थी जो किसी भी नये आदमी को राज पता लगने पर की जाती थी।

उसे रैकेट में शामिल कर लेना।

शेयर का लालच देना।

मगर सत्या मैडम पर किसी चीज का असर नहीं हुआ।

उन्हें सबसे ज्यादा शिकायत लविन्द्र सर से थी।

जब वे हम सबका भेद कैम्पस में जाकर खोलने की धमकी देने लगीं तो चन्द्रमोहन ने चाकू खोल दिया। बोला----“तेरा इलाज केवल ये है!”

सब समझ चुके थे सत्या मैडम को शामिल करना तो दूर, पोल खोलने तक से नहीं रोका जा सकता। अतः सबको वही रास्ता नजर आया जो चन्द्रमोहन कह रहा था। केवल लविन्द्र सर ने विरोध किया। कहा----“वे सत्या को समझा लेंगे।” ऐसी कोशिश उन्होंने की भी किन्तु सत्या मैडम खतरा भांप चुकी थीं। लविन्द्र सर समझाने-बुझाने की कोशिश कर ही रहे थे कि उन्होंने दरवाजे की तरफ जम्प लगाई।

सैंडिल वहीं रह गई।

हम हकबकाये।

उनके पीछे लपके।

भेद खुलने पर फांसी का फंदा साफ-साफ नजर आ रहा था। पेपर मुट्ठी में दबाये सत्या मैडम को जिधर जगह मिली भागती चली गयीं।

हम उनके पीछे थे।

चाकू ऐरिक सर के हाथ में आ चुका था।

भागम-भाग के बाद टैरेस पर पहुंचे। ऐरिक सर ने चाकू भौंका। सत्या मैडम के हलक से चीख निकली। जखम से खून का फव्वारा! पेपर उनके अपने खून से सन गया। हिमानी मैडम ने झपटकर उसे छीना। सत्या मैडम चीखती हुई टैरेस के सिरे की तरफ भागीं। चाकू सम्भाले ऐरिक सर पुनः उन पर झपटे मगर हममें से कोई भी टैरेस के सिरे पर नहीं जा सकता था। जानते थे वहां कैम्पस में मौजूद लोगों द्वारा देख लिये जायेंगे। और फिर हमसे बचने के प्रयास में वे टैरेस से गिर गईं” बताने के बाद गुल्लू चुप हो गया। गहरी-गहरी सांसें ले रहा था वह।

“आगे बको।”

“सब अवाक रह गये। जो हुआ, आनन-फानन में हो गया था। लविन्द्र सर तो ऐरिक पर गुरा भी उठे----‘ये क्या किया तुमने?’ ऐरिक सर दहाड़े----‘और क्या करता?’ अल्लाखवा बोला----‘जो हो गया सो गया, इस पर बाद में सोचेंगे। फिलहाल हमारा कैम्पस की भीड़ में शामिल होना जरूरी है। बात सबको जंची। ऐरिक सर ने चाकू चन्द्रमोहन को देने के साथ

कहा----'इसे कहीं छुपा दे।' एकता ने हिमानी से कहा----'ये पेपर या पेपर के टुकड़े भी किसी के हाथ नहीं लगने चाहिए।' हिमानी ने पेपर अपने वक्षस्थल में दूंस लिया। चन्द्रमोहन टैरेस से टैरेस पर कूदकर ब्यायज़ हॉस्टल में पहुंचा। जल्दी ही हम सब भी कैम्पस की भीड़ में शामिल हो गये।"

"उसके बाद?" मेरे मुंह से निकला।

"डैथ से पूर्व कैम्पस की अर्थ पर सत्या मैडम द्वारा लिखा गया CHALLENGE जैसे अन्य सबके लिए पहेली था वैसे ही हमारे लिए भी था। आज तक है! हम लोग आपस में कई बार विचार-विमर्श के बावजूद नहीं समझ सके कि सत्या मैडम ने CHALLENGE क्यों लिखा?"

"चन्द्रमोहन की गिरफ्तारी की तुम लोगों पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी?"

"चन्द्रमोहन के खिलाफ शोर-शराबा राजेश आदि ने शुरू किया। ज्यादातर स्टूडेंट्स ने उनका साथ दिया। इंस्पेक्टर ने उसके कमरे की तलाशी लेने का फैसला किया। खून से सना चाकू बेवकूफ ने वहीं छुपा रखा था! मरना तो था ही! पकड़ा गया। इंस्पेक्टर के जाते ही ऐरिक सर के कमरे में आठों की मीटिंग हुई। ज्यादातर की हवा यह सोच-सोचकर शंत हुई जा रही थी कि चन्द्रमोहन टूट गया तो क्या होगा?"

"लविन्द्र की क्या प्रतिक्रिया थी उस वक्त?"

"वे खामोश थे। एक लफ्ज नहीं बोले। वार्ता में हिस्सा भी नहीं लिया। सबने पूछा भी वे क्या सोच रहे हैं? केवल इतना कहा----जो हुआ, अच्छा नहीं हुआ। ऐरिक सर बोले----हम कब कह रहे हैं अच्छा हुआ मगर यह न होता तो उससे भी बुरा होता। लविन्द्र सर पुनः खामोश हो गये। सब चन्द्रमोहन के टूट जाने से डरे हुए थे। केवल ऐरिक सर को विश्वास था चन्द्रमोहन टूटने वाला नहीं है। और फिर उस वक्त मैं गेट पर खड़ा था जब इंस्पेक्टर साहब और ये!" गुल्लू ने मेरी तरफ इशारा करके कहना जारी रखा----"उसे लेकर आये। चन्द्रमोहन ने एक ही इशारे में मुझे बता दिया कि उसने इंस्पेक्टर को कुछ नहीं बताया है। मेरी बांछें खिल गईं। यही हाल पता लगने पर बाकी सबका हुआ है।"

"लविन्द्र का भी?"

"उनका एटीट्यूट किसी की समझ में नहीं आ रहा था। चुप-चुप से थे। वेद जी के जाने के बाद पुनः मीटिंग हुई जिसमें चन्द्रमोहन ने बताया उसे इंस्पेक्टर ने किस-किस तरह कितना टॉर्चर किया मगर उसने हकीकत उगलकर नहीं दी।"

सुनकर मैंने और विभा ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

जाहिर था----चन्द्रमोहन ने अपने साथियों को यह नहीं बताया कि जैकी ने उसे अपना मुखबिर बनाकर छोड़ा है। विभा ने अगला सवाल किया----"उसके बाद चन्द्रमोहन तुम्हें कब और कहां मिला?"

"रात के वक्त! मर्डर से पूर्व कैम्पस में।"

"अब पूरा सच बताओ। क्या बातें हुई तुम्हारी?"

"हमने कहा था----तुम वैसे ही सबके शक के दायरे में हो चन्द्रमोहन! एकाध रात स्मैक की तलब को दवा लो तो ठीक रहेगा।" उसने कहा----मैं स्मैक लेने नहीं, एक जरूरी फोन करने स्टॉफ रुम तक जा रहा हूं। हमने काफी पूछा किसे फोन करना है? उसने नहीं बताया। दो नोट दिये। गेट पर जाकर ड्यूटी देने के लिए कहा। उस वक्त हमने कल्पना तक नहीं की थी वह इंस्पेक्टर को फोन करेगा। जहन में यही था शायद किसी लड़की को फोन करने वाला है। इसीलिए फालो किया। उसके बाद वही सब हुआ जो बता चुके हैं।"

“उसकी जेब से सत्या के खून से सने पेपर की बरामदगी और यह जानने के बाद तुम लोगों पर क्या प्रतिक्रिया हुई कि वह जैकी को सारा भेद बताने वाला था?”

“सबके सामने तो कोई किसी किस्म की प्रतिक्रिया व्यक्त कर ही नहीं सकता था।” गुल्लू ने कहा----“बाद में मीटिंग हुई। हिमानी मैडम के कमरे से सत्या मैडम के खून से सना पेपर गायब पाया गया। सब समझ गये----उसे चन्द्रमोहन ने चुराया होगा। इंस्पेक्टर बता ही चुका था कि चन्द्रमोहन ने फोन पर उससे क्या और कितनी बातें कीं। उनसे जाहिर था----चन्द्रमोहन खुद को बचाकर हमें फंसाने के फेर में था। सबकी एक ही राय बनी----अच्छा हुआ मारा गया।”

“यह सवाल नहीं उठा----मारा किसने?”

“उठा क्यों नहीं? काफी जिद्दो-जहद हुई। मगर नतीजा किसी की समझ में नहीं आया उसे किसने और क्यों मारा?”

“लविन्द्र की प्रतिक्रिया क्या थी?”

मैंने चौंकर विभा की तरफ देखा।

समझ नहीं पाया----वह बात-बात पर लविन्द्र की ही प्रतिक्रिया जानने के लिए उत्सुक क्यों है?

सवाल करने का मौका नहीं था क्योंकि गुल्लू ने बोलना शुरू कर दिया था----“जिद्दो-जहद में कोई खास हिस्सा नहीं लिया उन्होंने। मुनासिब शायद यही कहना होगा वे चुप-चुप से थे।”

“उसके बाद हिमानी, अल्लारक्खा, ललिता और अब लविन्द्र की हत्या पर तुम्हारे ग्रुप की क्या प्रतिक्रिया रही?”

“लविन्द्र सर की हत्या के बाद तो हम लोग अभी मिल नहीं पाये हैं लेकिन हर हत्या के बाद मीटिंग होती रही। हर बार यही विचार-विमर्श हुआ कि यह सब हो क्या रहा है? कौन और क्यों कर रहा है हत्याएं? किसी की समझ में कुछ नहीं आया।”

“यह सवाल नहीं उठा हत्याएं तुम्हारे ही ग्रुप की क्यों हो रही हैं?”

“उठा था। अल्लारक्खा और ललिता की हत्या के बाद लविन्द्र सर ने उठाया था। उन्होंने कहा----पहले चन्द्रमोहन, उसके बाद हिमानी और अब अल्लारक्खा तथा ललिता। हमारे ही ग्रुप के लोग क्यों मर रहे हैं? मुझे लगता है कोई पेपर आऊट करने वाले रैकेट के पीछे पड़ गया है। एक-एक करके सबको खत्म करता जा रहा है वह।” ऐरिक सर ने विरोध किया।

बोले----“अपने वे सिर पैर के ख्याल से दहशत मत फैलाओ। जो मरे वे हमारे ग्रुप के थे, यह केवल इत्फाक है। सत्या मैडम के अलावा हमारा राज जानता ही कौन है? और वह अब इस दुनिया में नहीं है। लविन्द्र सर ने कहा----‘मुझे लगता है, कोई हमसे सत्या की हत्या का बदला ले रहा है।’ ऐरिक सर भड़क उठे----‘चोर की दाढ़ी में तिनका वाली बात मत करो! किसी को पता नहीं सत्या की हत्या हमने की है। फिर भला कौन बदला लेगा? ये कुछ और चक्कर चल रहा है। व्यर्थ ही उसे अपने गुनाह से जोड़कर सबका दिमाग खराब मत करो।’ लविन्द्र सर यह बड़बड़ाने के बाद चुप हो गये कि अगर ये इत्फाक है तो बड़ा अजीब है। ऐरिक सर ने कहा----‘लविन्द्र की बातों से डरकर कोई अपना मुंह फाड़ने की बेवकूफी न करे। हम लोग केवल तभी तक सुरक्षित हैं जब तक इंस्पेक्टर, विभा और वो लेखक यह सोच रहे हैं कि सत्या का मर्डर भी इन्हीं मर्डर्स की शृंखला है। जैसे ही उन्हें पता लगा सत्या की हत्या हमने की है.... हमारी गर्दन में फांसी के फंदे पड़े होंगे।’

मैंने कहा----‘लेकिन सर! पता तो लगना चाहिए----मर्डर्स कर कौन रहा है?’

‘तीन-तीन इन्वेस्टिगेटर जुटे पड़े हैं। अपना दिमाग खराब करने की जरूरत नहीं हमें। हमारी पॉलिसी वही रहनी चाहिए जो अब तक है। चुपचा! और वैसा एटीट्यूट जैसा दूसरे स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स का है। दूसरे लोगों से जरा भी ज्यादा सक्रियता दिखाने या एग्सेसिव होने की कोशिश की तो इन्वेस्टिगेटर्स की नजरों में आ जायेंगे। वह हमारे हित में नहीं होगा। देर-सवेर हत्यारे को पकड़ ही लेंगे वे। तब सत्या की हत्या भी उसी के मध्ये मढ़ जायेगी। हमारी तरफ ध्यान तक नहीं जायेगा किसी

का।”

विभा ने कहा----“तुम्हीं में से एक और मारा गया। अब क्या सोचते हो तुम?”

“अब तो हमें भी लविन्द्र सर की बात ही ठीक लगती है। कोई हमारे रैकिट को, सत्या मैडम के हत्यारों को एक-एक करके खत्म कर रहा है। शायद अगला नम्बर मेरा ही है।”

“CHALLENGE का मतलब तुम लोगों की समझ में अब तक नहीं आया?”

“न-नहीं! क्या आपकी समझ में आ गया है?”

“शटअप!” विभा गुराई।

गुल्लू सकपका उठा।

कुछ देर विभा जाने क्या सोचती रही। फिर बोली----“सत्या की हत्या करने और पेपर आऊट करने की सजा से खुद को बचाना चाहते हो तो जो बातें हुई हैं उनका एक लफ्ज भी एकता, नगेन्द्र और ऐरिक को नहीं बताओगे।”

“विल्कुल नहीं बताऊंगा मैडम जी! आप नहीं चाहेंगी तो क्यों बताऊंगा?”

“अगर वे तुम्हें मीटिंग में कॉल करते हैं तो उसे उसी तरह अटैण्ड करोगे जैसे हमसे बातें होने से पहले करते रहे हो।”

“विल्कुल ऐसा ही होगा बट----”

“बको!”

“आप सेफ तो कर लेंगी हमें?”

“हमारा साथ दोगे तो फायदा होगा।”

कैटीन के बाहर अजीब सा शोर उभरा।

जैसे स्टूडेन्ट्स का हुज्जूम वहां पहुंचा हो।

हम तीनों का ध्यान उस तरफ गया। कैटीन के दरवाजे पर जोर से दस्तक दी गई।

स्टूडेन्ट्स भन्नाये हुए और गुस्से में नजर आ रहे थे।

उनका नेतृत्व राजेश कर रहा था।

भीड़ में एकता, ऐरिक और नगेन्द्र भी थे।

मैंने नोट किया गुल्लू की तरफ खास नजरों से देखा उन्होंने।

जैसे जानना चाहते हों कि अंदर क्या बातें हो रही थीं, और उसने हमें क्या बताया है?

उनकी इन नजरों को मैं इसलिए नोट कर सका क्योंकि जान चुका था वे एक ही थाली के चटूटे-बटूटे हैं। ऐसा न होता तो शायद उनकी गतिविधियों पर ध्यान तक नहीं जाता। मैंने यह सोचकर नजरें हटा लीं कि कहीं वे भी न ताड़ जायें कि मैं उनके

बारों में कुछ जान गया हूँ।

“आप यहां बंद कैदीन में गुल्लू से जाने क्या बातें कर रही हैं विभा जी! और वहां, हमें लगता है एक मर्डर और हो चुका है।” राजेश के लहजे में हल्का सा रोष था।

“ए-एक और मर्डर?” मेरे हलक से चीख भी निकल गइ---“किसका?”

“लोकेश नहीं मिल रहा।”

“कौन लोकेश?”

“मेरी क्लास का स्टूडेंट है।” दीपा ने आगे बढ़कर कहा।

“बर्ग लाश मिले किसी को मरा नहीं मानना चाहिए बेटे।”

राजेश ने पृथ्वा----“क्या हम जान सकते हैं कि बंद कैदीन में आप गुल्लू से क्या बातें कर रही थीं?”

“बंसल साहब इसे माफ कर दें तो जरूर बता सकती हूँ।”

“ह-हम? हमसे क्या मतलब?”

“आप ही से मतलब है। आप इसकी नौकरी छीन सकते हैं। इस डर से डरकर इसने उस रात की एक महत्वपूर्ण घटना का जिक्र नहीं किया जिस रात चन्द्रमोहन की हत्या हुई।”

“ऐसी कौन सी घटना थी?”

“आप इसे सजा न देने का वादा करें तो बताऊं?”

“वादा करते हैं।”

तब विभा ने वह सब बता दिया जो गुल्लू ने नोट पकड़े जाने के बाद कैदीन के बाहर ही बता दिया था। मैं समझ सकता था वह सब विभा ने एकता, नगेन्द्र और ऐरिक के मनो से यह शंका मिटाने के लिए किया था कि बंद कैदीन में गुल्लू ने वही सब कुछ उगल तो नहीं दिया है। विभा के चुप होने पर एक स्टूडेंट ने कहा----“यह सब तो गुल्लू बाहर ही बता चुका था। हमें वे बातें जाननी हैं जो कैदीन के अंदर हुई।”

मैंने और विभा ने उसे एक साथ गौर से देखा। वह उन स्टूडेंट्स में से एक था जिनके सामने गुल्लू को घसीटकर कैदीन के अंदर ले जाया गया था। विभा ने सभी शंकाओं पर पानी फेरने की मंशा से कहा----“उसी सबकी डिटेल जानने के लिए कैदीन के अंदर ले जाया गया था उसे। जानना ही चाहते हो तो सुनो!” कहने के बाद वह एक पल के लिए चुप हुई, अगले पल इस तरह बोली जैसे बहुत बड़ा रहस्योद्घाटन कर रही हो----“जिस रात चन्द्रमोहन कैम्पस की दीवारों पर अपने द्वारा तैयार किये गये नृश्यों के नंगे फोटो लगा रहा था, उस रात भी इसने उससे पांच सौ रुपये लेकर अपना मुंह बंद रखा।”

सभी घृणित नजरों से गुल्लू को घूरने लगे।

बंसल ने कहा----“वादा न किया होता तो हम इसी वक्त नौकरी से निकाल देते इसे। उस काण्ड में जितना गुनेहगार चन्द्रमोहन था, उतना ही ये भी है। रात ही में शोर मचाकर उसे पकड़वा देता तो....

“उस बात को छोड़िए बंसल साहब! फिलहाल हमारे लिए लोकेश को ढूंढना ज्यादा जरूरी है।” कहने के बाद विभा ने सवाल

किया----“क्या आपके पास लोकेश का फोटो होगा?”

“हम उसका एडमिशन फार्म निकलवा देते हैं।”

“वह तो निकलवाइए ही मगर.... क्या एक ऐसा फोटो नहीं मिल सकता जिसमें लोकेश की पूरी कद-काठी हो?”

“पिछले साल का ग्रुप फोटो मिल सकता है।”

“गुड! वह भी निकलवा दीजिए।” हुक्म सा देने के बाद उसने स्टूडेन्ट्स से कहा----“तुम्हारे साथ लोकेश को हम भी तलाश करते हैं।”

सारी बातें सुनने के बाद जैकी कह उठा----“केस तो हल हो चुका है।”

“हत्यारे के पकड़े जाने से पहले कैसे हल हुआ माना जा सकता है?”

“वो बात ठीक है मगर गुल्लू के बयान के बाद स्पष्ट हो गया----हमारी सम्भावनाएं ठीक थीं। यह केस दो हिस्सों में बंटा हुआ था। पहला सत्या का मर्डर! दूसरा अन्य मर्डर्स! हम भूल ही यह कर रहे थे कि अन्य मर्डरों को भी सत्या के मर्डर की शृंखला मानते रहे।”

“ऐसे ही नहीं मानते रहे। इसे हत्यारे की चालाकी भरी वह चाल कही जायेगी जिसमें हम फंसे रहे। उसने हर मक्तूल से CHALLENGE लिखवाकर न केवल सभी मर्डरों को सत्या के मर्डर की शृंखला बना दिया बल्कि पहेली को और ज्यादा उलझा दिया।”

“मगर तुम उलझने वाली कहां हो जानेमन!” मैंने मस्ती के मूड में कहा----“पहले पहेली हल की! उसके बाद गुल्लू को पकड़ा। केस के एक हिस्से यानी सत्या के मर्डर की बखिया तो उधेड़ ही चुकी हो। कातिल सामने है! हम कत्ल का कारण जान चुके हैं!”

“मैंने पहले भी कहा, फिर कहूंगी----मुजरिम कुछ देर के लिए इन्वेस्टिगेटर्स को भले ही छका ले मगर हमेशा नहीं छकाये रख सकता। वही बात अन्य कत्ल के कातिल पर लागू है। जैकी, जितनी जानकारियां इस वक्त हमारे पास हैं, उनके आधार पर तुम्हारे ख्याल से हमारा अगला कदम क्या होना चाहिए?”

“गुल्लू, एकता, ऐरिक और नगेन्द्र को सत्या की हत्या के इल्जाम में गिरफ्तार करके फौरन जेल में ठूस देना चाहिए।”

“फायदा?”

“कॉलिज में कत्ल होने रुक जायेंगे।”

“और जेल में शुरू।”

“मतलब?”

“ये बात अच्छी तरह दिमाग में उतार लो जैकी! हत्यारा भावुकता के तहत सत्या के हत्यारों की हत्याएं कर रहा है। ऐसा हत्यारा जब तक पकड़ा नहीं जाता, तब तक जेल तो क्या पाताल तक अपने शिकारों का पीछा नहीं छोड़ता। जो स्टोरी यहां चल रही है वह जेल में चल पड़ेगी।”

“जेल में किसी को कत्ल करना इतना आसान नहीं होता। वहां पहुंचना और कत्ल करने के बाद निकल जाना अपने आप में....

“मेरे ख्याल से तुम पूरी तरह गलत हो। जेल में घुसना क्या मुश्किल है? चलते को थप्पड़ मारो और जेल पहुंच जाओ। कत्ल करने के बाद निकलने की क्या जरूरत है वहां से? हत्यारा उतनी ही आसानी से खुद को कैदियों की भीड़ में छुपा सकता है जितनी आसानी से कॉलिज की भीड़ में छुपा हुआ है।”

“आप कहना क्या चाहती हैं?”

“हम हत्यारे के लिए मजबूत जाल बिछा सकते हैं। नये हालात में पन्द्रह व्यक्तियों की सुरक्षा करने की जरूरत नहीं है। जानते हैं---हत्यारे का अगला शिकार एकता या ऐरिक है। हत्यारा यह नहीं जानता कि हम यह जानते हैं। वह पूरी निश्चिन्तता के साथ जल्द ही अपने अगले शिकार पर हाथ डालेगा। ऐरिक और एकता हमारे पूर्ण पहर में होंगे। हत्यारे को पकड़ने के लिए इससे आदर्श स्थिति और क्या हो सकती है?”

“मैं आपसे सहमत हूँ।”

“हालांकि सुरक्षा व्यवस्था का मेन जाल एकता और ऐरिक के इर्द-गिर्द होगा परन्तु ऐसा नजर नहीं आना चाहिए। नजर आना चाहिए जैसे आम पहरा बैठाया गया हो। हत्यारे को अगर यह इल्म हो गया----हमें उसके अगले शिकार की भनक है तो वह अपना पैतरा बदल सकता है।”

“ये बात मेरे जहन में थी।”

“मैं ऐरिक की निगरानी करूंगी। तुम एकता की। और तुम!” विभा ने मुझसे कहा----“तुम्हारा काम गुल्लू पर नजर रखना होगा----जो कुछ उसने कैदीन में बका यदि वह वो सब एकता, ऐरिक और नगेन्द्र को बताता है तो तुम्हारी गैरजानकारी में न बता पाये।”

“वो तो मैं कर लूंगा लेकिन----

“तुम लेकिन! किन्तु! वट! परन्तु बहुत करते हो! बको।”

“कुछ सवालों के जवाब चाहता हूँ मैं।”

“जानती हूँ तुम्हें सवालों के जवाब न मिले तो पेट में दर्द शुरू हो जाता है।”

“लोकेश अब तक नहीं मिला है।”

“मिल जायेगा।” विभा ने पूरी निश्चितता के साथ कहा----“उसके लिए तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।”

विभा का जवाब ही ऐसा था कि मैं और जैकी, दोनों चौंक पड़े। मैंने कहा----“बात समझ में नहीं आई विभा! तुम तो इस तरह कह रही हो जैसे जानती हो लोकेश कहां है?”

“सारे सवालों के जवाब अभी लोंगे तो हाजमा बिगड़ जायेगा तुम्हारा।” मुझे टालने के बाद उसने जैकी से कहा----“हमें बगैर टाइम गंवाए एकता और ऐरिक की सुरक्षा का जाल बिछा देना चाहिए।”

मैं समझ सकता था----महामाया अब अपनी फुल फॉर्म में थी।



घंघे-घंघे पर पुलिस का सख्त पहरा था।

कैम्पस से हास्टल और हास्टल से मैस तक। उधर, कॉलिज के मुख्य द्वार से बंसल के बंगले तक।

हर कोना रोशनी से जगमगा रहा था। पेड़ों पर भी बल्ब टांग दिये गये थे।

चार पुलिस मैन मेन स्विच पर तैनात थे।

एक ऐसे जनरेटर का इन्तजाम किया गया था जो लाइट जाते ही ऐटोमेटिक रूप से चालू हो जाने वाला था। कुल पुलिस वालों की संख्या एक सौ पच्चीस थी। छात्रों और प्रोफेसर्स से कहा गया वे अपने अपने रूम में जाकर चैन से सो सकते हैं परन्तु स्टूडेन्ट्स नहीं माने।

विभा तक के समझाने के बावजूद उन्होंने गुट में बंटकर पहरा देने का निश्चय किया।

मैं, जैकी और विभा अपनी-अपनी इयूटी पर मुस्तैद थे।

रात के बारह बजे वह वक्त आया जब तीनों एक जगह एकत्रित हुए।

वह जगह थी---ऐरिक के रूम के पीछे बनी सर्विस लेन।

हम तीनों के एक जगह इकट्ठा होने का कारण था----तीनों के शिकारों का एक जगह इकट्ठा होना।

मैं वहां गुल्लू पर नजर रखता पहुंचा था। जैकी, एकता को फालो करता और विभा ऐरिक का पीछा करती। कमरे में इस वक्त नगेन्द्र भी था। हम सब सर्विस लेन की तरफ खुलने वाली वंद खिड़की की दरारों पर कान सटाये हुए थे। अंदर से एकता की आवाज आ रही थी----“लविन्द्र सर के बाद मुझे तो उन्हीं की बात सच लगने लगी है सर! ऐसा लगता है जैसे कोई हमारे ही ग्रुप के पीछे पड़ा है। चुन-चुनकर मार रहा है हमारे साथियों को।”

नगेन्द्र बोला----“अब तो लगता है, अगला नम्बर हम ही में से किसी का होगा।”

“भोला शंकर हमारी मदद करें।” गुल्लू की आवाज।

“बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है तुम सबकी।” क्रोधित ऐरिक ने कहा----“क्या लोकेश भी हमारे ही दल का सदस्य था?”

“नहीं!”

“वह क्यों लापता हो गया?”

“गायब ही तो हुआ है! मरा तो नहीं?”

“मर भी जायेगा। क्या पता----मर चुका हो! केवल शव ही तो नहीं मिला है उसका?”

“आप कहना क्या चाहते हैं?”

“केवल इतना----अपराधी ने अचार डालने के लिए नहीं किया होगा उसे! निश्चय ही मार डाला होगा। तात्पर्य ये कि आप लोगों की शंका निर्मूल है। अपराधी केवल हमारे ही दल के लोगों को नहीं मार रहा अपितु जो जहां हाथ लग रहा है, मार रहा है। यह संयोग है कि मरने वाले पांच हमारे साथी थे। हमें अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए।”

“सामने मर्डर नजर आ रहा हो तो कौन धैर्य रख सकता है?”

“धैर्य रखने के अतिरिक्त चारा भी क्या है? एक पल को स्वीकार भी कर लें हमारे ही साथियों की हत्याएं हो रही हैं, तब भी कर क्या सकते हैं हम? क्या लोगों को बता दें हम प्रश्न पत्र प्रकाशित करते थे? सत्या की हत्या हमने की है? वैसे ही सूली पर लटक जायेंगे।”

“हत्यारे का पता लगाने की कोशिश तो करनी चाहिए।”

“तीन-तीन गुप्तचर लगे पड़े हैं! अब तो छावनी बन गया है विद्यालय! वे ही पता नहीं लगा पा रहे हैं तो हम किस खेत की मूली हैं?”

“ये मीटिंग क्यों बुलाई गई है?” गुल्लू ने पूछा।

“विशेष रूप से तुमसे वार्ता करने हेतु।” ऐरिक ने कहा----“बंद अल्प भोजनालय में विभा देवी ने तुम्हारे मुखारविन्द से कुछ ऐसा तो नहीं उगलवा लिया जैसा नहीं उगलना चाहिए था?”

“भला हमसे क्या उगलवा सकती थी वो?”

“क्या पूछ रही थी?”

“दरवाजा खुलने पर उसने बताया तो था।”

“वही सब या अन्य कुछ?”

बंद खिड़की की दरारों से कान लगाने के पीछे हमारा उद्देश्य यह जानना था कि गुल्लू बंद कैटीन में हुई बातें उन्हें बताता है या नहीं? सो, उनका जिक्र उसने नहीं किया।

करीब पन्द्रह मिनट बाद मीटिंग बर्खास्त हुई।

ऐरिक वहीं रह गया। सो विभा भी वहीं रह गयी।

जैकी ने एकता को फालो किया। मैंने गुल्लू को।

एक बार फिर हम अलग हो गये।

जैकी तो एकाध बार टकराया भी क्योंकि इधर गुल्लू तो अपनी इयूटी पर मुस्तैद था ही, उधर एकता भी राजेश वाले ग्रुप के साथ पहरे पर थी। मगर विभा नहीं टकराई। मैं समझ गया----ऐरिक शायद अपने कमरे ही में है और विभा एक पल के लिए भी उससे दूर नहीं होना चाहती।

दो बजे के बाद जैकी भी नहीं मिला।

मैं जानता था----राजेश वाला ग्रुप दो के बाद अपने-अपने कमरों में जाकर सो चुका है।

समझ सकता था----जैकी एकता के कमरे के इर्द-गिर्द होगा।

सख्त पहरे के कारण जैसी कि उम्मीद थी----रात बगैर किसी दुर्घटना के गुजर गयी।

मगर यह मेरी कितनी बड़ी गलतफहमी थी इसका एहसास सुबह के आठ बजे हुआ।

तब जब सारे कॉलिज में एक दरवाजा पीटने की आवाज गूंज उठी।

सब चौंके।

बल्कि जो जहां था वहीं उछल पड़ा।

पुलिस वाले तो खैर ट्रेंड थे। उन्हें हुकम था कि अन्य कहीं चाहे जो होता रहे, जिसकी इयूटी जहां है वहां से नहीं हिलना है। अतः वे सतर्क जरूर हुए मगर मुस्तैद रहे।

स्टूडेन्ट्स और प्रोफेसर्स आवाज की दिशा में दौड़े।

दौड़ने वालों में गुल्लू भी शामिल था। उसके पीछे मैं भी दौड़ा।

भगदड़ सी मची हुई थी चारों तरफ। लक्ष्य था----गर्ल्स हॉस्टल!

हॉस्टल का फर्स्ट फ्लोर।

जब मैं पहुंचा तब जैकी वहां तैनात पुलिस वाले और स्टूडेन्ट्स जुनूनी अवस्था में एकता के कमरे के बंद दरवाजे पर पिले पड़े थे। उसे तोड़ डालने पर आमादा थे वे।

वातावरण में उस पर होती चोटों की आवाज गूंज रही थी।

जो सामने पड़ा मैंने उससे चीखकर पूछा----“हुआ क्या है?”

“अनेक आवाजें लगाई जा चुकी हैं। पता नहीं एकता दरवाजा क्यों नहीं खोल रही? कोई आवाज तक नहीं है अंदर। सबसे पहले संजय आया था उसे जगाने! जब नहीं उठी तो----

“भड़क!” की जोरदार आवाज के साथ दरवाजा टूटा।

एक साथ अनेक चीखें उभरीं।

मैं दरवाजे की तरफ लपका।

उसी समय एरिक और विभा भी नजर आये।

“लाश-लाश!” चीखती हुई ढेर सारी लड़कियों का रेला गैलरी में इधर-उधर भागा। मेरा और विभा का रुख अलग-अलग दिशाओं से कमरे की तरफ था।

टूटा हुआ दरवाजा कमरे के अंदर फर्श पर पड़ा था।

चौखट पार करके उधर से विभा ने, इधर से मैंने दरवाजे पर कदम रखे ही थे कि जहां के तहां जाम होकर रह गये। जैकी आदि पहले ही मूर्ति बने खड़े थे।

दृश्य ही ऐसा था।

औरों की तो क्या कहें? अपने सम्पूर्ण जिस्म में मैंने चींटियां सी रेंगती महसूस कीं।

जहन सांय-सांय कर रहा था।

क्या इतने पहरे के बावजूद वह सब हो सकता था?

हुआ था! हमारे सामने हुआ पड़ा था।

मगर कैसे?

मुझे लगा—हत्यारा, हत्यारा नहीं जादूगर है।

एकता के जिस्म पर झीनी नाइटी थी। डबल वेड पर चित अवस्था में लेटी हुई थी वह।

आंखें बंद! चेहरे पर शान्ति।

होटों से नीले झाग न निकल रहे होते तो कोई नहीं कह सकता था वह मरी हुई है।

वेड ही पर एक छोटी सी शीशी लुढ़की पड़ी थी।

उस पर घिपके लेबल पर लिखा था CHALLENGE।

तो क्या आत्महत्या कर ली थी एकता ने?

मगर क्यों? क्या हो रहा था ये? आत्महत्या ललिता ने भी की थी। उसके पीछे वजह थी चिन्नी।

एकता ने ऐसा क्यों किया? उसकी क्या मजबूरी थी?

वही बात जैकी ने कही भी----“दो बजे के बाद मेरे सामने कमरे में सोने आई थी ये! पूरी तरह स्वस्थ मानसिक अवस्था में थी। मैं सोच तक नहीं सकता था सुसाइड कर लेगी!”

विभा ने आगे बढ़कर गंभीर स्वर में कहा----“तुमसे किसने कहा ये सुसाइड है?”

“सुसाइड नहीं तो क्या हत्या है?”

“हन्डरेड परसेन्ट।”

“क-क्या बात कर रही हैं आप? कमरे का एकमात्र दरवाजा अंदर से बंद था। सर्विस लेन की तरफ खुलने वाली खिड़की अब तक बंद है। जहर की वह शीशी वेड पर पड़ी है जिससे मौत हुई। हत्या तब कही जा सकती थी जब कोई और आकर मार जाता।”

“एकता को किसी और ही ने कत्ल किया है।”

“नामुमकिन! हरगिज नहीं मान सकता विभा जी!” पागलों की मानिन्द चीख पड़ा जैकी----“भला कैसे हो सकता है ऐसा? सारी रात मैं खुद पांच पुलिस वालों के साथ कमरे में बंद दरवाजे के बाहर गैलरी में तैनात रहा हूँ। गैलरी में बीसों पुलिस वाले और थे। इस खिड़की के पार, नीचे पांच पुलिस वालों की झूटी है। इस वक्त भी वहीं मुस्तैद खड़े होंगे ये। आदमी तो आदमी----सारी रात परिन्दे तक ने पर नहीं मारा है कमरे में! और आप कह रही हैं कोई जहर दे गया? कैसे मान लूँ?”

“उस रोशनदान की तरफ देखो!” विभा ने बेड के टीक ऊपर छत में बने एक छोटे से रोशनदान की तरफ इशारा किया।

“क्या बात कर रही हैं आप? सारा रोशनदान ही छः इंच बाई छः इंच का है। उस पर ग्रिल भी लगी है? क्या ग्रिल को उखाड़े वगैर वहां से कोई व्यक्ति कमरे में आ सकता है?”

मैं कह उठा----“ग्रिल को उखाड़कर भी नहीं आ सकता।”

“ग्रिल अपनी जगह मजबूती से लगी है।” ऐरिक ने कहा।

“जहर की वह वृंद तो आ सकती है----जिसने एकता की जान ली।”

“कमाल की बात कर रही हैं आप? रोशनदान से जहर की वृंद आई और सीधी एकता के मुंह में जा गिरी! ऐसा कहीं हो सकता है?”

“हो सकता है जैकी!” विभा ने भेद भरी मुस्कान के साथ कहा----“मैं भी कर सकती हूं।”

“अ-आप कर सकती हैं? द-दिखाइए करके।”

“दिखाती हूं। पहले ये बताओ ढक्कन कहाँ गया शीशी का?”

“यहीं कहीं होगा। लाश के नीचे भी दबा हो सकता है।”

“कोशिश करो ढूँढने की! याद रहे लाश ज्यादा हिलनी-डुलनी नहीं चाहिए।”

जैकी ने ही क्यों, सबने ढक्कन ढूँढने की कोशिश की मगर नहीं मिला। जब सब हार मान चुके तो विभा ने कहा----“ढक्कन का न मिलना इस बात का सुचूत है कि ये सुसाइड नहीं है। होती तो ढक्कन कहाँ चला जाता? तुम लोग यहीं रहना! मैं बताती हूं कैसे हुआ?” कहने के बाद वह घूमी और कमरे से बाहर नकल गयी।

हम सब हकबकाए से खड़े सोच रहे थे कि पता नहीं वह क्या दिखाना चाहती है?

करीब पांच मिनट बाद रोशनदान से विभा की आवाज उभरी----“ढक्कन यहाँ! रोशनदान के नजदीक छत पर पड़ा है।”

सबकी नजर एक झटके से रोशनदान की तरफ उठ गई।

विभा ने वहाँ से एक धागा लटकाना शुरू किया।

सब सांस रोके उसकी कार्यवाई देख रहे थे।

देखते ही देखते धागे का निचला सिरा इतना नीचे आ गया कि एकता के होठों के मध्य को चूमने लगा। अब विभा ने धागे के ऊपरी सिर पर पानी की वृंद डाली।

वृंद ने धागे पर नीचे की तरफ सफर शुरू किया।

विभा ने कहा----“इसे तुम जहर की वृंद समझ सकते हो।”

सबके दिल धड़-धाड़ कर रहे थे। नजरें धागे पर सफर कर रही वृंद पर जमी थीं।

और अंततः वृंद 'टप्प' से एकता के होठों के मध्य गिर गई।

“खेल खत्म!” कहने के साथ विभा ने धागा वापस खींचना शुरू करते हुए कहा----“अब आप ऊपर आ सकते हैं। यहाँ हत्यारे के फुट स्टेप्स तक मौजूद हैं।”

हत्या की इस टैक्निक पर मैं ही क्या, सब हैरान थे।



हम छत पर पहुँचे।

भरपूर भाड़ के बावजूद कब्रिस्तान जैसी खामोशी छाई हुई थी।

सब डरे और सहमे हुए थे। किसी के मुँह से बोल न फूट रहा था।

छत पर बड़े स्पष्ट, सफेद रंग के फुट स्टेप्स बने हुए थे।

ये निशान छत के एक कोने में पड़ी ढेर सारी कली से शुरू हुए थे। यह कली वह थी जो 'पुताई' से बचने के बाद अक्सर छतों को चूने से बचाने के लिए डाल दी जाती है।

रात भर पड़ी ओस के कारण कली में नमी थी।

उसी नमी के कारण हत्यारे के जूतों के तले में लगी थी।

कली पर जूतों के बड़े ही स्पष्ट निशान थे।

वहाँ से निशान 'कदमों' की शक्ति में रोशनदान की तरफ आये थे।

और रोशनदान से गये थे पानी की टंकी की सीढ़ी तक।

वहाँ के बाद----अर्थात् टंकी से नीचे उतरने का कोई चिन्ह नहीं था।

मैं क्या उन निशानों द्वारा कही जा रही कहानी सभी समझ सकते थे।

विभा ने वही कहानी कही----“अंधेरे के कारण हत्यारा शायद कली के ढेर को देख न सका। वहाँ से कली उसके जूतों में लगी! रोशनदान पर आया। वह किया जो कुछ देर पहले मैंने करके दिखाया। उसके बाद पानी की टंकी की तरफ गया।”

“टंकी की तरफ क्यों गया वह?” जैकी ने पूछा----“और टंकी पर चढ़ने के निशान तो हैं, उतरने के नहीं! क्या मतलब हुआ इसका?”

“मेरे ख्याल से काम निपटाने के बाद उसे अपने जूतों में लगी कली का एहसास हो गया था इसलिए रोशनदान से सीधा टंकी पर पहुँचा। जूते धोये! इसलिए नीचे उतरने के निशान नहीं हैं।”

बंसल कह उठा----“समझ में नहीं आ रहा सांप निकल जाने के बाद लकीर पीटने से फायदा क्या होता है?”

“विभा जी!” जैकी ने पूछा----“वो ढक्कन कहाँ है?”

“ये रहा।” विभा अपने हाथों में मौजूद एक हरा ढक्कन उसे देती बोली।

ढक्कन लेते हुए जैकी ने पूछा----“आपने इसे उठा क्यों लिया?”

“इतनी बारदातों के बाद जान चुके हैं। हत्यारा ग्लक्स पहने हुए होता है। किसी वस्तु पर उसकी अंगुलियों के निशान होने का सवाल ही नहीं उठता।”

“मगर विभा जी!” ढक्कन को बहुत गौर से देखते जैकी ने कहा----“मुझे यह ढक्कन एकता के बेड पर पड़ी शीशी का नहीं लगता।”

“यही देखना चाहती थी मैं----यह कि तुम्हें भी वहीं डाकूट होता है या नहीं जो मुझे हुआ है। शीशी के मुकाबले ढक्कन थोड़ा बड़ा है। यदि उसका नहीं है तो बड़ी विचित्र बात है। कौन-सी शीशी का ढक्कन है ये और यहां क्यों डाला गया? साथ ही सवाल उठता है उस शीशी का ढक्कन कहां गया?”

जैकी ने रोशनदन के जरिए कमरे में झांका।

बेड पर लेटी एकता की लाश और बगल में पड़ी शीशी साफ नजर आ रही थी।

विभा ने कहा----“शुरु में, जब मुझे यह लग रहा था, ढक्कन उसी शीशी का है तब मेरे दिमाग में यह सवाल था कि हत्यारे ने अपना काम करके शीशी बेड पर और ढक्कन यहां क्यों डाला? धागे की तरह अपने साथ ले क्यों नहीं गया? या दोनों को एक जगह क्यों नहीं डाला? लगता था हत्यारा अपना काम करने के साथ हमसे खिलवाड़ भी कर रहा है मगर यदि ये ढक्कन उस शीशी का नहीं है तो खिलवाड़ भी ऊंचे दर्जे का है।”

“क्या मैं शीशी को यहां मंगा सकता हूं विभा जी?”

“जो शक हुआ है, उसकी पुष्टि के लिए जरूरी है।”

जैकी ने इधर-उधर देखा। गुल्लू नजर आया। उसी से कहा----“एकता के बेड से शीशी उठा लाओ।”

गुल्लू तुरन्त जीने की तरफ बढ़ गया।

“हत्यारा हर मर्डर एक अलग और नई टैक्निक से कर रहा है विभा।” मैं कह उठा----“सबसे पहले चन्द्रमोहन! मैंने उससे पहले जिन्दगी में कभी खड़ी हुई लाश नहीं देखी थी। उसके बाद हिमानी----सबके देखते-देखते मर गयी वह! अल्लारक्खा को अंधेरे में निशाना बनाया गया है। ललिता की हत्या उसी के हाथों कराई। लविन्द्र भूषण को अम्लराज से जला दिया गया और अब ये----कोई सोच तक नहीं सकता। एक व्यक्ति इतने पहरे के बावजूद कमरे के अंदर गये बगैर, बिना कोई आवाज पैदा किये इतनी आसानी से किसी की हत्या कर सकता है।”

ऐरिक बोला----“आप सत्या मैडम की हत्या का जिक्र करना भूल गये वेद जी!”

मैं सकपका गया।

फ्लो में वही भूल कर बैठा जो ललिता ने की थी।

ऐरिक कह रहा था----“उन्हें टैरेस से गिराकर मार डाला गया।”

मेरा जी चाह----चीखकर कहूं----‘उसे तो तुम्हीं लोगों ने मारा है हरामजादे और अब..... ये बात इसलिए कह रहा है कि ताकि उसे भी इन्हीं हत्याओं की कड़ी समझते रहे!’ मगर विभा की इजाजत के बगैर मैं ऐसा एक भी लफ्ज नहीं कह सकता

था। हां, अपनी बात सम्भालने को जरूर कहा----“उसका जिक्र मैंने इसलिए नहीं किया क्योंकि सत्या के मर्डर में ऐसी कोई खास बात नहीं थी। हत्यारे से बचने की कोशिश में छत से गिरकर मरी थी वह।”

ऐरिक चुप रह गया।

शायद इस बात को ‘आई-गर्ड’ करने के लिए विभा ने जैकी से कहा----“आओ।”

कहने के साथ वह टंकी की तरफ बढ़ गयी।

जैकी के साथ मैं भी उसके पीछे लपका।

टंकी सीमेन्ट की बनी, पांच फुट ऊंची। पांच बाई पांच की थी।

उस पर चढ़ने के लिए लोहे की सीढ़ी थी।

छत पर टंकी का होल था। होल पर लोहे का बना सीवर के ढक्कन जैसा ढक्कन था।

होल दो बाई दो का था यानी इतना जिसमें से आदमी आसानी से अंदर उतरकर टंकी की सफाई कर सके। जैकी ने कहा----“यहां तो ऐसा कोई निशान नजर नहीं आ रहा जिससे लगे जूते धोये गये हैं।”

“ढक्कन हटवाओ।” विभा ने कहा।

टंकी पर खड़े ही खड़े जैकी ने एक नजर स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स पर डाली।

उन्हीं के बीच नगेन्द्र खड़ा नजर आया उसे।

“इधर आओ।” जैकी ने उसी से कहा।

वह लपककर टंकी की तरफ आया।

जिस वक्त नगेन्द्र सीढ़ियां चढ़ रहा था उस वक्त बड़ा अजीब ख्याल आया मेरे दिमाग में।

हत्यारे का अगला शिकार यही है।

भरपूर सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद क्या हम इसे बचा पायेंगे?

या एकता जैसा ही अंजाम होगा इसका?

छत पर पहुंच चुके नगेन्द्र से विभा ने कहा----“ढक्कन उठाओ।”

ढक्कन भारी था।

नगेन्द्र ने उसे उठाकर एक तरफ रख दिया।

“ओह!” टंकी के अंदर झांकती विभा के मुंह से निकला----“वह तो जूते ही टंकी में डाल गया।”

मैं या जैकी कुछ बोले नहीं।

दोनों की नजरें टंकी के अंदर थीं।

टंकी आधी के करीब भरी हुई थी। पानी साफ था। तली में पड़े दो जूते साफ नजर आ रहे थे।

हमारे साथ नगेन्द्र ने भी उन्हें देखा।

जैकी ने कहा----“जूते बाहर निकालो।”

नगेन्द्र ने अपनी खार्की पैन्ट के दोनों पांयचे मोड़-मोड़कर घुटनों से ऊपर चढ़ा लिये।

हम तीनों टंकी के होल के तीन तरफ खड़े थे।

चौथी तरफ से नगेन्द्र टंकी में उतरा।

उसी क्षण मानो कयामत आ गयी।

“बचाओ! बचाओ!” दोनों हाथ होल से बाहर निकाले

नगेन्द्र चीख पड़ा।

बुरी तरह छटपटा रहा था वह। सारा जिस्म जूड़ी के मरीज की मानिन्द धरधरा रहा था।

आवाज तक स्पष्ट नहीं निकल रही थी उसके मुंह से।

वह सारा खेल क्षण भर का था। जब हम ही टीक से कुछ नहीं समझ पाये तो टैरेस पर खड़े अन्य लोग क्या समझ सकते थे? मैंने और जैकी ने झपटकर नगेन्द्र के हाथ पकड़ने चाहे।

एक साथ विजली का जबरदस्त झटका लगा दोनों को।

मैं टंकी के दाइ तरफ टैरेस पर जाकर गिरा। जैकी बाइ तरफ।

नगेन्द्र की चीखें दूबने लगी थीं।

विभा चिल्लाई----“मैन स्विच ऑफ करो।”

मगर।

कहां हम? कहां मैन स्विच?

स्विच के पास तैनात पुलिसियों तक विभा का आदेश पहुंचते-पहुंचते टंकी में खामोशी छा गयी थी।

मैन स्विच ऑफ जरूर हुआ मगर नगेन्द्र मर चुका था।

विभा आंखें फाड़े पानी पर झूलती उसकी लाश को देख रही थी।

मैं और जैकी अपनी चोटें भूलकर सीढ़ी की तरफ लपके। हम ही क्यों, कई स्टूडेन्ट्स भी टंकी पर चढ़ने के लिए लपके थे। छोटी सी सीढ़ी पर सब एक-दूसरे से उलझकर रह गये।



घटनाएं इतनी तेजी से घट रही थीं कि दिमाग कुंठ होकर रह गये।

एक बारदान पर टीक में डिस्कस नहीं कर पाते थे, दूसरा हीतनाक हादसा हो जाता।

विभा और जैकी की धानधान में सामने आया----विजनों के दो मोटे तार बाहर पाइप के अंदर से होते हुए टंकी तक आये थे। ऊपर से इन्होंने नहीं चमके क्योंकि दो में से एक जूते ने उन्हें ढक रखा था। तारों के अंतिम सिरे सत्या के कमरे में मौजूद एक शवर जग में लगे पड़े गये।

सत्या का कमरा टंकी के टीक नीचे वाली छत के नीचे था।

किंगों को किंगों में कुछ कहने की जरूरत नहीं थी।

सब समझ चुके थे----टंकी के पानी में कूट था। नगेन्द्र जगमें उतर्गते ही मारा गया।

लाश और जूते, टंकी से निकालकर टेम्स पर डाल दिये गये थे।

चेहरों पर आतंक और खौफ लिए सब उनकी को देख रहे थे।

“कमाल हो गया विभाजी!” जैकी बड़बड़ाया----“ऐसी बारदान न पहले कभी देखी, न सुनी। हत्यारा पहले ही से अपने शिकार के लिए जाल बिछा देता है।”

विभा चुप रही। अजीब सी शांति थी उसके चेहरे पर।

“अब तो मुझे यह भी शक हो रहा है कि अपने जूतों में क्ली उसने जान बूझकर लगाई थी।” जैकी कहता चला गया----“तबकि हम फुट स्टेप्स का पीछा करते टंकी तक पहुंचें।”

“वाकई ऐसे हत्यारे से मेरा पाला भी पहली बार पड़ा है।”

कहने के बाद वह बगैर किसी की तरफ देखे जीने की तरफ बढ़ गया।

सब के साथ मैं भी टगा सा खड़ा रह गया।

“समझ में नहीं आ रहा ये बारदातें कैसे रुकेंगी?” वंसल कह उठा----“इतने पहरे के बावजूद, हम सबकी आंखों के सामने हत्या हो जाती है और कोई कुछ नहीं कर पाता।”

“करना तो दूर आट हत्याएं हो चुकी हैं।” राजेश के अंदर का लावा फूट पड़ा----“और कोई इतना तक नहीं पता लगा सका----ये मर्डर आखिर क्यों हो रहे हैं?”

सभी से फिसलती मेरी नजर ऐरिक और गुल्लू पर पड़ी। ऐरिक का चेहरा बता रहा था----वह अन्य सभी के मुकाबले ज्यादा डरा हुआ है। और गुल्लू----उसके चेहरे पर तो साक्षात मौत नाचती नजर आई।

दिमाग में वहीं विचार कौंधा जो कुछ देर पहले नगेन्द्र के लिए कौंधा था।

हत्यारे का अगला शिकार ये है।

क्या गुल्लू भी इसी तरह मर जायेगा या हम उसे बचाने में कामयाब हो पायेंगे?

उसी शाम।

मैं और विभा दो कुर्सियों पर कैम्पस में बैठे थे।

हर तरफ पुलिस वाले तैनात थे। स्टूडेन्ट्स की दुकड़ियां छितराइ-छितराइ सी इधर-उधर घूम रही थीं। कोई बरांडे में बैठा था। कोई पेड़ के नीचे।

सभी उदास थे! खामोश!

हत्यारे और कॉलिज में हो रहीं वारदातों के बारे में सब एक-दूसरे से इतनी बातें कर चुके थे कि कहने सुनने के लिए बाकी कुछ बचा ही नहीं था। घूम-फिर कर वही बातें दिमाग में आतीं और उन्हें दोहराने से हरेक को एलर्जी हो चली थी।

“विभा!” मैंने उसे पुकारा।

“हूं!” वह जैसे नींद से जागी।

“मैं स्वप्न तक में नहीं सोच सकता था तुम्हारी मौजूदगी में, तुम्हारी आंखों के सामने एक के बाद एक मर्डर हो सकते हैं और तुम....

“रुक क्यों गये?” वह मुस्कराई----“कहो!”

“और तुम इतनी असहाय बनी रहोगी।” मैं कहता चला गया----“एकता और नगेन्द्र के मर्डर से पहले तुमने कहा था----हत्यारे को पहचान चुकी हो। क्या वह गप्प थी?”

“मेरे मुंह से पहले कभी कोई गप्प सुनी है तुमने?”

“तो आखिर कर क्या रही हो तुम? गिरफ्तार क्यों नहीं करती हत्यारे को? रोक क्यों नहीं देती कॉलिज में हो रहीं हत्याएं?

अजीब बात है.... तुम्हें मालूम है हत्यारा कौन है! ये भी जानती हो उसके शिकार कौन-कौन हैं! इसके बावजूद हाथ पर हाथ रखे बैठी हो! आखिर क्यों? क्यों विभा?”

एक बार फिर उसके होठों पर मुस्कान उभरी। यह वह मुस्कान थी जो केवल तब उभरती थी जब किसी भेद को छुपाये रखना चाहती थी।

मैं खीझ उठा। कुछ कहना ही चाहता था कि---- गर्ल्स हॉस्टल की तरफ से जैकी आता नजर आया।

उसके दाये हाथ में एक एयर बैग था। बांये हाथ की गोद में चिन्नी।

चाल में अजीब सा उत्साह देखकर मैं चौंका। सीधा हमारी ही तरफ आया वह। बोला----“क्या आप कल्पना कर सकती हैं विभा जी कि मैंने बाजी मार ली है?”

“मतलब?” विभा ने पूछा।

“मैंने हत्यारे को पहचान लिया है।”

“प-पहचान लिया?” मैंने एक झटके से कुर्सी छोड़ दी----“कौन है? कहाँ है?”

“बात इस नहीं लड़की से शुरू करता हूँ।” कहने के साथ उसने चिन्नी को गोद से उतारा। उसके नजदीक बैठता बोला----“तुमने हेलमेट वाले अंकल को देखा था न चिन्नी?”

“हां!”

“हेलमेट को भी?”

“हां, पुलिस अंकल!”

जैकी के होठों पर सफलता भरी मुस्कान उभरी। एयर बैग जमीन पर रखा। तब तक काफी स्टूडेंट्स, प्रोफेसर्स और पुलिस वाले हमारे इर्द-गिर्द इकट्ठा हो चुके थे।

सभी के चेहरों पर उत्सुकता के भाव थे।

मैंने विभा की तरफ देखा----उसके मुखड़े पर ऐसे चिन्ह थे जैसे किसी दिलचस्प खेल को देख रही हो। जैकी ने एयर बैग की चेन खोली भी कुछ ऐसे ही अंदाज में जैसे बाजीगर पिटारा खोलता है।

एयर बैग से एक हेलमेट निकाला उसने।

“हां-हां पुलिस अंकल।” चिन्नी कह उठी----“यह उसी का हेलमेट है।”

फिर जैकी ने ओवरकोट और पैन्ट निकालने के साथ पूछा----“ये?”

“ये भी उसी के हैं।” चिन्नी उछल पड़ी----“क्या आप उसे जानते हैं?”

होठों पर कामयाबी से परिपूर्ण मुस्कान लिए जैकी अपने स्थान से खड़ा हुआ। नजरें स्टूडेंट्स और प्रोफेसर्स की भीड़ पर स्थिर कीं। वंसल, गुल्लू और एरिक भी भीड़ में शामिल थे। एक-एक शख्स को घूरता जैकी कॉन्फिडेंस भरे स्वर में कहता चला गया----“मैं जानता हूँ तुम इसी भीड़ में खड़े हो। ये भी जानता हूँ हेलमेट और अपने कपड़े देखकर समझ गये होंगे कि मैं तुम्हें पहचान चुका हूँ। वजह साफ है----इन्हें मैंने तुम्हारे कमरे से बरामद किया है। बोलो! खुद सामने आ रहे हो या अपने मुंह से नाम लेकर पुकारूँ?”

सन्नाटा छा गया।

ऐसा सन्नाटा कि सुई भी गिरे तो आवाज बम के धमाके जैसी लगे।

सभी एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे।

मारे सस्पेंस के सबका चुरा हाल था।

कोई न समझ सका जैकी मुख्यातिब किससे है?

“इसका मतलब तुम्हारे दिमाग में यह भ्रम है कि मैं तिगड़म मार रहा हूँ। पहचान नहीं सका हूँ तुम्हें! इस भ्रम को दूर करने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है।” कहने के साथ वह झुका, एयर बैग से एक बटन निकाला। उसे मुझे दिखाता बोला----“माफी चाहूंगा वेद जी, मैंने शुरू से इस बटन को आपसे छुपाये रखा! आपसे भी माफी चाहूंगा विभा जी----बटन के बारे में आपको भी कुछ नहीं बताया। चन्द्रमोहन के मर्डर के बाद इन्वेस्टिगेशन करते वक्त यह मुझे स्टॉफ रूम के दरवाजे

पर पड़ा मिला था और बटन बता रहा है, टूटने से पहले मैं वहां लगा हुआ था।" कहने के साथ उसने ओवरकोट का वह स्थान दिखाया जहां से एक बटन टूटा हुआ था। वैसे ही बाकी बटन ओवरकोट में टंके हुए थे। जैकी ने आगे कहा----“चिन्नी के बयान को आप एक बच्ची का बयान कहकर टाल सकते हैं। परन्तु स्टाफ रूम से इस बटन की बरामदगी साबित कर देती है ओवरकोट चन्द्रमोहन के हत्यारे का है।”

“मगर वो है कौन?” ऐरिक ने सबके दिमागों में घुमड़ रहा सवाल पूछा।

“खुद सामने आना होगा उसे।” कहने के साथ जैकी ने एयर बैग से कुछ और चीजें निकालीं। उन सभी को एक-एक करके भीड़ को दिखाता कहता चला गया----“ये उस जहर की शीशी है जिसे हिमानी की लिफ्टिक पर लगाया गया। इस दवात में फॉस्फोरस भरा है, ये वो कलम है जिससे अल्लारक्खा के ग्राऊन पर CHALLENGE लिखा गया। ये वो धागा है जिस पर एकता की जान लेने वाली जहर की बूंद ने मफर किया। सरकारों लैब में इसकी जांच करा चुका हूं। और ये है उस शीशी का डककन जो एकता के बेड पर पड़ी पाई गई। कोई और जानता हो या न जानता हो मगर भीड़ में खड़े ‘तुम’ जरूर जानते हो यह सामान तुमने कहां छुपा रखा था? समझ सकते हो----यदि मैंने इस सबको बरामद कर लिया है तो जान गया हूं तुम कौन हो? बेहतर होगा----खुद सामने आकर गुनाह कुबूल कर लो।”

एक बार फिर सभी ने उस शख्स की खोज में एक-दूसरे की तरफ देखा जिससे जैकी मुख्यातिव था।

मैंने भीड़ में मौजूद एक-एक फेस को रीड करने की कोशिश की।

सबसे ज्यादा हवाइयां गुल्लू के चेहरे पर उड़ती नजर आई।

विभा के चेहरे पर नजर पड़ते ही मेरा दिमाग धूम गया।

उसके गुलाबी होठों पर ऐसी मुस्कान थी जैसे जानती हो जैकी किससे मुख्यातिव है।

कुर्सी से एक इंच नहीं हिली थी वह। पोज तक नहीं बदला। जैकी ने पलटकर उसकी तरफ देखा। कहा----

“हर बारदात के बाद हमारी धारणा यह बनी थी विभा जी कि हत्यारा बेहद चालाक और सुलझे हुए दिमाग का मालिक है मगर, इस वक्त मेरे पास इतने सुबूत देखकर भी अगर वह चुप है, सोच रहा है मैं केवल तिगड़म मार रहा हूं----उसे नहीं पहचानता तो उससे बड़ा मूर्ख इस दुनिया में दूसरा नहीं हो सकता।”

“सब लोग नाम जानने के लिए उत्सुक हैं जैकी।”

“मैं नहीं समझता था वह इतना बेवकूफ है। यदि ऐसा है तो यहां से भाग निकलने की बेवकूफी भरी कोशिश भी कर सकता है। मेरे नाम लेने के बाद हत्यारा ऐसा करे तो तुम सुनो!” जैकी ने पुलिस वालों से मुख्यातिव होकर ऊंची आवाज में कहा----“कोई उसे रोकने की कोशिश नहीं करेगा। कोई गोली नहीं चलायेगा। जो करना होगा मैं करूंगा।”

एक बार फिर हर तरफ सन्नाटा छा गया।

भीड़ पर दृष्टिपात करते जैकी ने कहा----“एक मौका और देता हूं। आखिरी मौका! या तो खुद आगे बढ़कर अपना गुनाह कुबूल कर लो अन्यथा मुझे गिरेवान पकड़कर खींचना होगा।”

भीड़ में तब भी खामोशी छाई रही।

“शायद तुम सोच रहे हो जब मैं नाम लूंगा तो यह कहकर बच जाओगे कि असल हत्यारे ने यह सारा सामान तुम्हारे कमरे में रख दिया होगा। मगर नहीं, इस बार कच्चा हाथ नहीं डाला है मैंने। मेरे पास इतना पुख्ता सुबूत है कि दुनिया की कोई ताकत

तुम्हें नहीं बचा सकता। दे देओ!" कहने के साथ जैकी ने एयर डैंग से एक नेट निकालकर हवा में लहराते हुए कहा----"ये नद नेट भी तुम्हारे ही कम्प्रे में मिला है। मन्दा का नेट है ये! तुम्हारे नाम! तुम्हारा नाम भी है इसमें! कहीं तो पड़कर....

"घाय! घाय!"

एक साथ दो ठवाई फायर हुए।

जैकी का वाक्य अगुग रह गया।

सबने पलटकर गुल्लू की तरफ देखा।

उम्हरे हाथ में रिवाल्वर था। चेहरे पर आग! मुँह में अंगारे बरमे----"हां! हां मैंने मारा है चन्द्रमोहन, हिमानी, अन्तारक्षत्र, नविला, लविन्द्र, एकटा और नरोन्ड को। मुझमें प्यार करना था मन्दा! मेरा नाम है उस नेट में। किसी ने भी मेरी तरफ बढ़ने की कोशिश की, तो झुककर रख दूंगा। इन सब मालों ने मेरी मन्दा को मार डाला। किसी को नहीं छोड़ूंगा! नहीं इस्पेक्टर, तुम मुझे आखरी कत्ल करने से पहले गिरफ्तार नहीं कर सकते।"

"रिवाल्वर फेंक दो गुल्लू!" जैकी मुग्धगवा----"उसमें भरी गोलियां नकली हैं।"

गुल्लू ने बीखलाकर अपने रिवाल्वर की तरफ देखा।

"असली गोलियां इसमें हैं।" कहने के साथ जैकी ने अपने होलेस्टर से रिवाल्वर निकालकर उस पर तान दिया----"और तुम मेरे निशाने पर हो। मेरे लफ्जों पर शौर नहीं किया तुमने। पहले ही कहा था----कच्चा हाथ नहीं डाला मैंने। जानता था पूरी तरह फंस जाने के बाद आखरी कत्ल करने की कोशिश करोगे मगर अफसोस... मैं तुम्हारे रिवाल्वर की गोलियां बदल चुका हूँ।"

"ये झूठ है! बकवास है!" कहने के साथ बीखलाये हुए गुल्लू ने अंधाधुंध ट्रेगर दवाना शुरू किया।

"घाय!घाय! घाय! घाय!"

चार धमाके हुए।

निशाना जैकी था।

टहाका लगाकर हंसा वह। बोला----"नकली गोलियां भी खत्म!"

बुरी तरह हड़बड़ा गया गुल्लू।

झुंझलाकर जैकी पर रिवाल्वर खींच मारा।

जैकी ने फुर्ती से खुद को बचाया।

गुल्लू पलटकर अपनी कोठरी की तरफ भागा।

"कोई गोली नहीं चलायेगा।" बीखता हुआ जैकी उसके पीछे लपका।

गुल्लू तेजी से भागा चला जा रहा था।

जैकी उसका पीछा करता चिल्लाया----“रुक जाओ गुल्लू! भागने की कोशिश बेकार है।”

भगर गुल्लू पर तो मानो जुनून सवार था। एक नहीं सुनी उसने! लगातार पीछा कर रहे जैकी ने अनेक चेतावनियां दीं। और फिर..... गुल्लू ने अपनी कोटरी के नजदीक खड़े पुलिसिए के जवड़े पर अप्रत्याशित ढंग से घूसे का प्रहार किया।

सिपाही चीख के साथ दूर जा गिरा।

गुल्लू ने झपटकर उसकी रायफल उठाई।

पलटकर उसका रुख जैकी की तरफ करना ही चाहता था कि----

“धांय!”

जैकी का रिवाल्वर गर्जा।

गुल्लू के हलक से चीख निकली।

गोली उसका सीना चीरती निकल गई। रायफल हाथ से छिटककर दूर जा गिरी। लहुलुहान हुआ वह कई बोतल पी गये शराबी की मानिन्द लड़खड़ाता चीखा----“ये क्या किया इंस्पेक्टर साहब? ये क्या किया आपने?”

जैकी बुरी तरह चौंका। चौंककर अपने रिवाल्वर की तरफ देखा।

उधर गुल्लू जमीन पर गिर पड़ा।

“गुल्लू!” चीखता हुआ जैकी उसकी तरफ लपका।

हम सब उसकी तरफ!

जैकी पागलों की मानिन्द गुल्लू की लाश को झंझोड़ता हुआ चीख रहा था----“गुल्लू! क्या हुआ तुम्हें? उठो! उठो! नहीं तुम नहीं मर सकते! कैसे मर सकते हो तुम? मेरे रिवाल्वर में नकली गोलियां थीं। उठो गुल्लू! उठो!”

उसके मुंह से निकले शब्दों को सुनकर सभी हैरान रह गये।

मतलब नहीं समझ पाये उनका।

जैकी मानो पागल हो चुका था। गुल्लू की लाश को झंझोड़ता वह बार-बार उसे जगाने की कोशिश कर रहा था। विभा ने उसे झंझोड़ते हुए कहा----“ये क्या पागलपन है जैकी? होश में आओ! गुल्लू मर चुका है।”

“क-कैसे मर गया? ये कैसे मर गया विभा जी?” जैकी दहाड़ा----“मेरे रिवाल्वर में नकली गोलियां थीं।”

“अच्छा हुआ मर गया कम्बखत!” एरिक कह उठा----“बहुत हत्याएं कीं इसने।”

“नहीं!” जैकी एक झटके से खड़ा होता हुआ अर्धविशिष्ट अंदाज में दहाड़ा----“यह हत्यारा नहीं था! ये तो हत्यारे को पकड़ने के लिए साथ दे रहा था मेरा। मेरी समझ में नहीं आ रहा कैसे मर गया?”

“जैकी!” मैं चीख पड़ा----“पागल तो नहीं हो गये तुम? तुमने खुद उसके खिलाफ ढेर सारे सबूत पेश किए। गुल्लू ने कुबूल किया वह हत्यारा है, इसके बावजूद तुम....

"वह झूठ था। सारे सुबूत झूठे हैं। स्टाफ रूम से कोई बटन नहीं मिला मुझे। ओवरकोट, पैट, हेलमेट एक भी चीज हत्यारे की नहीं है। जहर की शीशी, फॉस्फोरस, क्लम, धागा, लेटर तक नकली है।"

"मेरी समझ में नहीं आ रहा क्या बक रहे हो? सब नकली है तो तुमने हम सबके सामने गुल्लू को हत्यारा क्यों साबित किया? और फिर, गुल्लू ने खुद को हत्यारा क्यों कुबूला?"

"मेरे कहने पर! वो सब हमारी चाल थी! मेरी और गुल्लू की! गुल्लू बेचारा तो इस खेल के लिए तैयार भी नहीं था। मैंने ही समझा-बुझाकर तैयार किया।"

"कैसी चाल? क्या खेल खेल रहे थे तुम?"

"मैंने गुल्लू से कहा था... नकली सुबूतों के बेस पर मैं तुम्हें सबके सामने हत्यारा साबित करूंगा। एक हद के बाद तुम रिवाल्वर निकालकर खुद को हत्यारा कुबूल करोगे। मुझ पर गोलियां चलाओगे। वे नकली होंगी। मैं कहूंगा कि उन्हें मैंने घेंज किया है। वो सब नाटक था। हमारा मिला जुला खेल! गुल्लू का भागने की कोशिश करना! पुलिस वाले से रायफल छीनकर मुझ पर तानना। और मेरा उस पर गोली चलाना। गुल्लू के रिवाल्वर की तरह अपने रिवाल्वर में भी मैंने नकली गोलियां भरी थीं। इसीलिए सब पुलिस वालों को हिदायत दी थी कि कोई गुल्लू पर गोली नहीं चलायेगा। तुम सबको दिखाने के लिए उस पर मुझे नकली गोलियां चलानी थीं। गुल्लू को मरने का नाटक करना था। इसके कपड़ों के नीचे बकरे के खून से भरे गुब्बारे छुपे थे।" कहने के साथ जैकी पागलों की मानिन्द गुल्लू की लाश पर झपटा। उसके पेट और कमीज के बीच से टटोलकर दो फूटे हुए गुब्बारों के अवशेष निकालकर दिखाता चीखा----"देखो! देखो! ये फूट चुके हैं। इनमें भरा बकरे का खून गुल्लू के अपने खून के साथ वह रहा है। प्लान के मुताबिक मुझे गुल्लू पर नकली गोलियां चलानी थीं। गुब्बारे फोड़ते हुए इसे मर जाने का नाटक करना था। सोचा था----दूसरे लोगों की तरह इसे हत्यारा भी मर चुका समझेगा। जबकि असल में यह अन्डरग्राउन्ड रहकर हत्यारे की खोज करेगा। मुझे अपने इस प्लान से कामयाबी मिलने की उम्मीद थी।"

"फिर तुम्हारे रिवाल्वर में असली गोलियां कहाँ से आ गई?" विभा ने पूछा----"मर कैसे गया गुल्लू?"

"य-यही तो? मैं तो तब चौंका जब खून का फव्वारा गुल्लू के पेट की जगह सीने से उछला। सचमुच की गोली लगी थी वहां! यह देखकर मेरे होश उड़ गये। मुझे मारो! गिरफ्तार कर लो विभा जी! बाकी लोगों का हत्यारा चाहे जो हो मगर गुल्लू का हत्यारा मैं हूँ। मैंने मारा है इसे। इन हाथों से! इस रिवाल्वर से! आप सबके सामने गुल्लू की हत्या की है मैंने। मेरी बेवकूफी भरी चाल की भेंट चढ़ गया ये। नहीं...नहीं इस गुनाह की सजा मुझे मिलनी ही चाहिए।" कहने के साथ जुनूनी अवरथा में उसने रिवाल्वर वाला हाथ अपनी कनपटी की तरफ बढ़ाया। मैंने झपटकर रिवाल्वर छीना, चीखा----"ये क्या पागलपन है जैकी?"

"मैं हत्यारा हूँ! मैं हत्यारा हूँ!" गुल्लू की लाश के नजदीक धुटनों के बल गिरकर वह बार-बार अपने हाथों से माथा पीटता कहता चला गया----"गुल्लू की हत्या मैंने की है! मुझे मार डालो!"

दिल को हिला देने वाला रुदन था उसका।

सब हकबकाये से खड़े थे।

"हा...हा....हा...।"

एकाएक वातावरण में किसी के जोर-जोर से ठहाका लगाने की आवाज गूँजी।

सबने चौंकर एक-दूसरे की तरफ देखा।

रोना भूलकर जैकी ने भी चेहरा ऊपर उठा लिया था।

हंसने वाला नजर नहीं आया।

भीड़ में से कोई नहीं था वहां।

सभी के रोंगटे खड़े हो गये।

ठहाकों के बाद आवाज गुंजी----“देखा इंस्पेक्टर! देखा? इसे कहते हैं चमत्कार! अपने अगले शिकार की हत्या मैंने तेरे हाथों से करा दी। सबके सामने करा दी। और करना क्या पड़ा मुझे? सिर्फ तेरे रिवाल्वर से छेड़छाड़! उसमें तेरे द्वारा डाली गयीं नकली गोलियां निकालकर असली गोलियां डालना कितना आसान था। मुझे पकड़ने के लिए साजिश रचने चला था। मुझे पकड़ने के लिए गुल्लू को मृत घोषित करके उसे मेरी खोज में लगाना चाहता था। चाल तो अच्छी सोची तूने! आदमी खुद को जिन्दा लोगों की नजरों से छुपाने का प्रयत्न करता है। मरे हुए लोगों की नजरों से नहीं! तेरी चाल कामयाब हो जाती तो मुमकिन है गुल्लू के हाथ मेरी नकाब तक पहुंच जाते मगर देख----वो बेचारा तो खुद मरा पड़ा है। सचमुच मर गया वह।”

सनसनी फैल गई चारों तरफ।

आवाज गुल्लू की कोठरी से आ रही थी।

क्षणिक अंतराल के बाद पुनः कहा गया----“आठ हत्यारे कर चुका हूं! अब केवल नौवां हरामजाद बाकी है! मेरा आखरी शिकार! बाबा है इंस्पेक्टर और तुम भी सुनो विभा जिन्दल!

दुनिया की कोई ताकत उसे नहीं बचा सकती। उसका भी वही हथ होगा जो आठों का हुआ। तुम सबकी आंखों के सामने मौत के घाट उतार दूंगा मैं उसे। हा...हा...हा...!”

आवाज पुनः ठहाकों में तब्दील हो गयी।

विभा रिवाल्वर निकालकर गुल्लू की कोठरी की तरफ लपकी। जैकी मेरे हाथ से रिवाल्वर छीनकर उस तरफ दौड़ा।

मैंने उसके पीछे जम्प लगाई।

मेरे पीछे पूरी भीड़ थी।

ठहाकों की आवाज लगातार गुंज रही थी।

गुल्लू की कोठरी में कदम रखते ही मैंने देखा----विभा और जैकी पहले से जाम हुए खड़े थे।

नजरें एक स्टूल पर रखे ऑन टेपरिकार्डर पर स्थिर थीं।

अपनी चक्रियों पर घूमता टेप साफ नजर आ रहा था।

ठहाकों की आवाज उसी से निकल रही थी।

“धाय! धाय!”

उत्तेजना की ज्यादाती के कारण कांप रहे जैकी ने दो बार ट्रेंगर दबाया।

ठहाकों की आवाज शान्त।

टेपरिकार्डर खील-खील होकर कोटरी में बिखर गया।



“मेरी रक्षा करो! मुझे बचा लो इंस्पेक्टर साहब! बिभा जी वो मुझे मार डालेगा! बचा लो मुझे।” जैकी और बिभा के कदमों में गिरकर ऐरिक जब बार-बार यह कहने लगा तो सब दंग रह गये। जाने क्यों मेरे मन में उसके लिए घृणा का भाव उभरा। शायद यह सोचकर कि वह सत्या का हत्यारा था।

“क्या हुआ?” जैकी उसके कंधे पकड़कर ऊपर उठाता बोला----“आपको अचानक क्या हुआ ऐरिक सर?”

“मेरे सारे साथी मारे गये।” बुरी तरह डरा हुआ वह कहता चला गया----“अब मुझे यकीन हो गया है, हत्यारे का अगला शिकार मैं हूँ। वह मुझे नहीं छोड़ेगा। मार डालेगा मुझे भी। परन्तु मैं उसके हाथों नहीं मरना चाहता। गिरफ्तार कर लो मुझे! हथकड़ियाँ पहना दो! कारागार भेज दो!”

“मगर क्यों? तुम्हें किस जुर्म में गिरफ्तार कर सकते हैं हम?”

“मैंने सत्या की हत्या की है। मैं प्रश्न पत्र प्रकाशित कराता था। मैं और मेरे साथी! चन्द्रमोहन, हिमानी, अल्लारक्खा, ललिता, लविन्द्र, एकता, नगेन्द्र और गुल्लू मेरे साथ थे। हम सब प्रश्न पत्र प्रकाशित करते थे। सत्या ने यह रहस्य जान लिया। हमने उसे हिस्सा देकर अपने में मिलाना चाहा। वह नहीं मानी। हम सबने मिलकर उसकी हत्या कर दी और फिर कोई एक-एक करके हम सबको मारने लगा। सब मर गये! केवल मैं बचा हूँ। मैं मरना नहीं चाहता। गिरफ्तार कर लो मुझे! भले ही सूली पर लटका देना मगर हत्यारे के हवाले मत करना। वो मुझे....

“तो तुम हो सत्या मैडम के हत्यारे?” ऐरिक का सेन्टेन्स पूरा होने से पहले राजेश दहाड़ उठा----“तुमने मारा था हमारी सत्या मैडम को? अरे हत्यारा क्या मारेगा तुझे? हम ही बोटी-बोटी नोच डालेंगे। क्यों दोस्तो----क्या कहते हो?”

“मारो! मारो! मार डालो इसे।” चारों तरफ से आवाजें आई।

सभी स्टूडेन्ट्स उत्तेजित हो उठे थे।

जैकी माहील को ठीक से समझ भी नहीं पाया था कि राजेश ने बाज की तरह झपटकर ऐरिक को उनके हाथों से छीन लिया। खींचकर स्टूडेन्ट्स की भीड़ के बीच ले गया उसे।

फिर क्या था?

हरेक की जुबान पर एक ही लफ्ज था----“मारो! मारो!”

स्टूडेन्ट्स टिड्डी दल की तरह उस पर टूट पड़े।

ऐरिक की चीखें गूँजने लगीं।

जिस्म पर पूरी बेरहमी से लात, धूँसे और ठोकरें पड़ रही थीं। जुनूनी स्टूडेन्ट्स की भीड़ से पूरी तरह घिर चुका था ऐरिक। जैकी को जब लगा वे लोग उसे लात, धूँसों से ही मार डालेंगे तो रिवाल्वर का रुख आकाश की तरफ करके फायर किया।

स्टूडेन्ट्स चौंके।

पलटकर उसकी तरफ देखा।

“छोड़ दो उसे।” जैकी गर्जा।

“हरगिज नहीं!” राजेश दहाड़ा----“हम इसे अपने हाथों से सजा देंगे।”

“पागलपन मत करो राजेश! मैं कानून अपने हाथ में लेने की इजाजत किसी को नहीं दे सकता।”

“कहां का कानून इंस्पेक्टर? कौन सा कानून?” राजेश पर जुनून सवार था----“उस वक्त कहां था तुम्हारा कानून जब इस हरामजादे ने हमारी सत्या मैडम को मारा? हम किसी कानून को नहीं जानते। अपने हाथों से सजा देंगे इसे! रुक क्यों गये दोस्तो----मारो साले को! इंस्पेक्टर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।”

स्टूडेन्ट्स ने पुनः ऐरिक पर लपकना चाहा।

“खबरदार!” जैकी उनकी तरफ लपकता गर्जा----“आगे बढ़े तो गोली मार दूंगा।”

स्टूडेन्ट्स ठिठक गये।

रिवाल्वर हाथ में लिए जैकी ने राजेश के नजदीक से गुजरना चाहा था कि----

राजेश ने ऐसी हरकत की जिसकी स्वप्न तक में किसी ने कल्पना नहीं की थी।

विजली की सी गति से उसका घुंसा, जैकी के चेहरे पर पड़ा।

जैकी के हलक से चीख निकली।

राजेश ने झपटकर उसका रिवाल्वर कब्जाया। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता, रिवाल्वर की नात्त ऐरिक की कनपटी से सटाता गुर्गया वह----“किसी ने भी आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं इसे यहीं इसी वक्त गोली मार दूंगा।”

“ये क्या पागलपन है राजेश?” जैकी चकित स्वर में कह उठा----“छोड़ दो उसे! जिसे कानून खुद फांसी पर लटकाने वाला है उसके खून से तुम अपने हाथ क्यों रंगते हो?”

जिस पर जुनून सवार हो भला उसकी समझ में ऐसी बातें कहां आती हैं? चेहरे पर गम लिए उसने कहा----“जो होगा देखा जायेगा इंस्पेक्टर! मगर ये तुम्हारा नहीं, तुम्हारे कानून का नहीं, हमारा, हम सबका शिकार है! क्यों दास्तो? खामोश क्यों खड़े हो?”

“तुमने ठीक कहा राजेश।” रणवीर कह उठा----“सत्या मैडम के हत्यारे को हमारे अलावा कोई सजा नहीं दे सकता।”

“चले आओ मेरे साथ।” कहने के साथ राजेश ने ऐरिक को पुलिस जीप की तरफ घसीटा।

उसके ग्रुप के स्टूडेन्ट्स ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया था।

ऐरिक हलाल होते बकरे की तरह मिमिया रहा था----“बचाओ! बचाओ!”

जैकी चौखलाकर विभा की तरफ घूमा। बोला----“कुछ कीजिए विभा जी! रोकिए उन्हें!”

“बगैर उनका खून बहाये इस वक्त उन्हें कोई नहीं रोक सकता और एक हत्यारे के लिए उनका खून बहाना किसी नजरिए से

ठीक नहीं होगा। अपने पुलिस वालों से कहो----कोई उन पर गोली न चलाये। वे मरने को तैयार हैं! मर जायेंगे मगर ऐरिक को नहीं छोड़ेंगे।”

मैं विभा से सहमत था।

जैकी भी सहमत हुआ। तभी तो उसने चीखकर किंसी को स्टूडेन्ट्स पर गोली न चलाने का हुक्म दिया। चीखते-चिल्लाते और वचाओ-वचाओ की गुहार करते ऐरिक को घसीटकर वे जीप तक ले गये। जैकी ने पुनः पलटकर विभा से कहा----“जो हो रहा है, वह भी तो ठीक नहीं है विभा जी! उन्होंने ऐरिक को मार डाला तो कानून उन्हें नहीं छोड़ेगा।”

बड़ी ही गहरी मुस्कान उभरी थी विभा के होठों पर! बोली----“वे उसे नहीं मार सकेंगे।”

“क-क्या मतलब?” जैकी बुरी तरह चौंका।

“मैं जानती हूँ----हत्यारा उन्हें ऐसा नहीं करने देगा।”

“क-कहना क्या चाहती हैं आप?”

विभा के जवाब देने से पहले जीप स्टार्ट होने की आवाज उभरी।

मैंने और जैकी ने चौंककर उधर देखा।

ऐरिक को लिए जीप गोली की तरह गेट की तरफ लपकी।

जैकी आधी तूफान की तरह दूसरी जीप की तरफ दौड़ा। तब तक पहली जीप गेट पार करके कॉलिज से बाहर निकल चुकी थी। जैकी की जीप उसके पीछे लपकी।

“कम ऑन!” मेरा हाथ पकड़कर विभा गेट के नजदीक खड़ी अपनी राल्स रॉयल की तरफ बढ़ी।

हम दोनों फुर्ती से पिछली सीट पर बैठे।

शोफर ने गाड़ी स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी। गेट पार करने के बाद वह गाड़ी को बाईं तरफ वाली सड़क पर मोड़ना चाहता था कि विभा ने कहा----“दाईं तरफ चलो।”

मैंने जल्दी से कहा----“वे बाईं तरफ गये हैं।”

“जाने दो! हम उनके पीछे नहीं जा रहे।”

हकला उठा मैं----“त-तो कहां जा रहे हैं?”

“हत्यारे की एक और करतूत दिखाना चाहती हूँ तुम्हें।” मुझसे कहने के बाद विभा ने शोफर को हुक्म दिया----“वहां चलो, जहां ‘वह’ है।”

मेरी खोपड़ी अंतरिक्ष में तैर गयी।

समझ न सका----खेल क्या खेल रही थी महामाया?



रॉल्स रॉयल पल्लवपुरम में दाखिल हुई।

मेरा दिल खर की गैद की मानिन्द उछलने लगा।

उस वक्त तो मानो धड़कनें ही रुक गई जब रॉल्स रॉयल टीक उस मकान के सामने रुकी जिससे विभा ने मुझे बरामद किया था। मुंह से बेसावता निकला----“यहां क्यों लाई हो तुम मुझे?”

“सारे रहस्यों से पर्दा उठाने।” वह गाड़ी का दरवाजा खोलकर बाहर निकलती बोली----“आओ।”

धाड़-धाड़ करके बज रहे अपने दिल को मैं भरपूर कोशिश के बावजूद न रोक सका।

थर्टी सिक्स बटा दू का मुख्य द्वार ज्यों का त्यों टूटा पड़ा था। शोफर को अपने साथ आने का इशारा करके वह मकान में दाखिल हो गयी। यह वही कमरा था जहां से उसने मुझे बरामद किया था।

इस वक्त वह विल्कुल खाली था। पलंग तक नहीं था वहां। इस और अंदर वाले कमरे के बीच के दरवाजे पर ताला लटका हुआ था।

विभा के इशारे पर शोफर ने अपनी जेब से ‘मास्टर की’ निकाली और थोड़ी सी कोशिश के बाद खोल दिया। कमरे में कदम रखते ही मुझे ठिठक जाना पड़ा।

लोकेश फोर्सिंग पलंग के साथ रस्सियों से बंधा हुआ था। मुंह पर टेप लगा था।

हमें देखते ही उसकी आंखों में याचना उभर आई।

विभा ने आगे बढ़कर उसके मुंह से टेप हटा दिया। मुंह के अंदर ढेर सारी रूई दुंसी हुई थी।

वह कसमसाया। बोलने की कोशिश में मुंह से गूं-गूं की आवाज निकली।

विभा ने उसके मुंह से रूई निकाल ली।

बोलने लायक होते ही उसने कहा----“मुझे खोलिए विभा जी।”

“पहले बताओ----तुम्हें यहां कौन लाया?”

“बता तो चुका हूं आपके शोफर को।”

“फिर एक बार बताओ।” विभा ने मेरी तरफ इशारा किया----“इसके सामने।”

“मैं उसे पहचान नहीं सका। उसने हेलमेट, दस्ताने, ओवरकोट, पैट और जूते पहन रखे थे।”

“शुरू से बताओ क्या हुआ था?”

“ललिता की मौत के बाद प्रिंसिपल साहब के बंगले तक मैं आपके साथ ही था। उसके बाद अपने दोस्तों के साथ कॉलेज में पढ़ने पर रहा। सुबह के वक्त थोड़ा आराम करने अपने कमरे में पहुंचा। विस्तर पर लेटते ही नींद आ गयी। आंख खुली तो

खुद को यहां, इस हालत में पाया। जहां आप खड़ी हैं वहां हेलमेट वाला खड़ा था। उसे देखते ही तिरपन कांप गये मेरे। तब तक अच्छी तरह प्रचारित हो चुका था कि हत्यारा हेलमेट वाला है। यह सोचकर होश उड़ गये कि अब शायद मेरा नम्बर है। बड़ी मुश्किल से पूछ सका मैं----'अ-आप हम लोगों की हत्याएं क्यों कर रहे हैं? हमने क्या बिगाड़ा है आपका?' उसने कहा----'डरो नहीं लोकेश! मैंने तुम्हें मारने के लिए अगुवा नहीं किया है। मारना होता तो यहां क्यों लाता? दूसरों की तरह कॉलिज में ही मार डालता। मगर एक भी वेगुनाह को मारना तो दूर, खरोंच तक नहीं पहुंचाना चाहता। मैं सिर्फ उन्हें मारूंगा जो पैदा ही मेरे हाथ से मरने के लिए हुए हैं।' मैंने पूछा----'फिर मुझे अगुवा क्यों किया? उसने कहा----'क्योंकि तुम्हारी कद काटी लविन्द्र से मिलती है और मेरा अगला शिकार वही है। विभा जिन्दल जरूरत से ज्यादा चालाक है। लगता है----मैंने नया खेल नहीं खेला तो वह मुझे पहचान जायेगी। खेल ये होगा----मैं लविन्द्र को इस तरह मारूंगा कि उसकी लाश पहचानी न जा सके। तुम सारे कॉलिज को गायब मिलोगे। मैं जानता हूँ----विभा जिन्दल इतनी ब्रिलियेन्ट है----उसके दिमाग में फौरन यह बात आयेगी कि लाश लविन्द्र की जगह लोकेश की हो सकती है। उसका दिमाग लविन्द्र पर अटक जायेगा, जितना सोचेगी लविन्द्र उसे उतना ही हत्यारा नजर आयेगा। एक ही कहानी बनेगी उसके दिमाग में----यह कि लविन्द्र ने खुद को सबके शक के दायरे से बाहर रखने की खातिर लोकेश को अपनी लाश दर्शाया है! बस! यही मेरा उद्देश्य है। खुद से ध्यान हटाने के लिए मैं विभा जिन्दल को लविन्द्र में अटकाना चाहता हूँ।'

'इसका मतलब जैकी और विभा जी सही ताड़े।' मैंने कहा----'खुद को बचाये रखने के लिए तुम्हारी टेंडेन्सी दूसरों की शक के दायरे में फंसाये रखना है।'

'तभी तो कहा दोस्त विभा जिन्दल जरूरत से ज्यादा ब्रिलियेन्ट है।' वह कहता चला गया----'मुझे डर है, कहीं वह मुझे मेरा मकसद पूरा होने से पहले न दबोच ले। किसी चाल में नहीं फंसेगी वह! यहां तक कि जो चाल बंसल की तिजोरी में सत्या का कार्ड रखकर चली थी, उसे भी समझ गयी! मगर इस चाल में जरूर फंसेगी। यकीनन लविन्द्र की मौत को नकली मानेगी।'

'तुम ये सब कर क्यों रहे हो?' मैंने पूछा मगर इस सवाल का जवाब नहीं दिया उसने। मेरे हलक में रूई दूसी। मुंह पर टेप लगाया और चला गया।'

“उसके बाद?”

“दोपहर के वक़्त फिर आया। मेरे लिए खाना लाया था। मुझे खोला। रिवाल्वर की नोक पर खिलाया और पुनः इसी तरह बांधकर चला गया। इस मुलाकात में उसने बताया----वह लविन्द्र सर की हत्या कर चुका है। उसके जाने के मुश्किल से पन्द्रह मिनट बाद आपका ये शोफर आया! मेरे मुंह से टेप और हलक से रूई निकालकर बयान लिया। वही सब बताने के बाद मैंने इससे खुद को खोलने की रिक्वेस्ट की, जो अब बताया है। मगर एक भी लफ़्ज बोले वगैर इसने मेरा मुंह बंद किया और हेलमेट वाले की तरह कमरे का ताला लगाकर चला गया।'

मैंने हैरान होकर शोफर से पूछा----“तुमने ऐसा क्यों किया?”

“मेरे हुक्म के वगैर ये लोकेश को आजाद नहीं कर सकता था।” विभा ने कहा।

“मगर तुमने लोकेश को, यहां से निकलवाया क्यों नहीं?”

“ताकि हत्यारे के इरादों पर पानी न फिरे।”

“म-मतलब?”

“वह खुली किताब की तरह मेरे सामने आ चुका था।”

“क-कौन है वो?” मैंने घड़कते दिल से पूछा।

विभा ने कहा----“मैं!”

“त-तुम?” चीख निकल गई मेरे हलक से----“य-ये क्या कह रही हो विभा?”

आकर्षक मुस्कान के साथ विभा ने----“मैं चाहती तो उसे रोक सकती थी। गिरफ्तार कर सकती थी लेकिन नहीं किया! क्या तुम इसे मेरा उसे सहयोग देना नहीं कहोगे?”

“जस्सर कहूंगा।”

“और मुजरिम हत्यारे को सहयोग देने वाला भी होता है।”

“मगर क्यों? क्यों विभा? तुमने ऐसा क्यों किया?”

“क्योंकि जो मरे थे इसी लायक थे। जो मर रहे थे वे मरने ही चाहिए थे।” कहती हुई विभा के जबड़े भिंच गए। उसके दूध से गोरे मुखड़े पर आग ही आग नजर आने लगी। पूरी कठोरता के साथ वह कहती चली गयी----“मेरी सहानुभूति मरने वालों के साथ नहीं हत्यारे के साथ थी वेद। पेपर आऊट करके छात्रों का भविष्य बिगाड़ रहे थे वे। बेगुनाह... एक सिरे से दूसरे सिरे तक पूरी तरह बेगुनाह सत्या को मार डाला इन्होंने। ऐसे वहशी दरिन्दों की वही सजा है जो उन्हें मिली। क्या तुम्हें याद नहीं मैंने खुद अपने पति के एक-एक हत्यारे को चुन-चुनकर मारा था? फिर इस केस के हत्यारे को कैसे गलत कह सकती थी? उसने अपनी सत्या के हत्यारों को सजा दी है। इस तरह के लोगों को हत्यारा कहा जाने लगा तो राम भी रावण और उसके सारे परिवार के हत्यारे कहलायेंगे। नहीं! ये हत्याएं नहीं थीं। यह इंसाफ था। वह इंसाफ जो, किसी के दिल से दिल की आवाज बनकर निकलता है! इसे तुम चाहे जो कहो मगर मैं ये कहूंगी----मैंने इंसाफ होने दिया।”

“मैं तुम्हें पहली बार जज्वालों की आंधी में उड़ती देख रहा हूँ। विभा! आखिर कानून भी तो कोई चीज है! माना उन्होंने जुर्म किया था----कानून के हवाले भी तो किया जा सकता था उन्हें।”

“अगर मैं चन्द्रमोहन का कत्ल होने से पहले मेरठ आ जाती तो जस्सर ऐसा करती।”

“मतलब?”

“चन्द्रमोहन के मर्डर के साथ हत्यारा अपना काम शुरू कर चुका था। मेरे कॉलेज पहुंचने से पहले हिमानी भी मर गयी। अल्लारक्खा और ललिता के मर्डर के बाद मैंने हत्यारे को पहचाना। वह वजह जानी जिसके कारण वह हत्याएं कर रहा था। लविन्द्र की हत्या को भी मैं चाहती तो नहीं रोक सकती थी। बाकी बचे एकता, नगेन्द्र, गुल्लू और ऐरिक। इन चारों की हत्या से पहले मैं हत्यारे को जस्सर गिरफ्तार कर सकती थी, मगर नहीं किया। दो कारण थे----पहला, मैं दिल से मानती थी हत्यारा ठीक कर रहा है। दूसरा, उस स्पॉट पर हत्यारे को पकड़ने से लाभ क्या था? उसे चन्द्रमोहन, हिमानी, अल्लारक्खा, ललिता और लविन्द्र की हत्याओं के इल्जाम में फांसी होती और एकता, नगेन्द्र, गुल्लू तथा ऐरिक को सत्या की हत्या के जुर्म में! मरना उन सभी को था तो सोचा----हत्यारे को अगर फांसी होनी ही है तो उन सबको मारने के बाद क्यों न हो जो कानून के हिसाब से भी मौत के हकदार हैं।”

“वो है कौन विभा? किसने बदला लिया सत्या की हत्या का?”



“मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा हरामजादे!” राजेश जुनूनी अवस्था में ऐरिक के बाल पकड़े उसे झंझोड़ता हुआ दहाड़ा----“कच्चा चवा जाऊंगा तुझे।”

“राजेश!” जीप की ड्राइविंग सीट पर बैठे रणवीर ने कहा----“इंस्पेक्टर पीछा कर रहा है।”

“करने दे।” संजय ने कहा----“तू तेज दौड़ा। आज ड्राइविंग देखनी है तेरी।”

रफ्तार पहले ही अस्सी से ऊपर थी।

रणवीर का पैर एक्सीलेटर पर दबाव बढ़ाता चला गया।

जीप हवा से बातें करने लगी। पिछली जीप की रफ्तार भी उसी अनुपात में बढ़ गई थी।

दोनों जीपें गड़ गेड पर शहर से बाहर निकल चुकी थीं।

ऐरिक हलाल होते बकरे की तरह डकटा रहा था। गुरसे से पागल हुए जा रहे संजय ने अपने सिर की भरपूर टक्कर उसकी नाक पर मारी।

ऐरिक फड़फड़ा उठा।

नाक से खून का फव्वारा छूट पड़ा।

“कर्मने! कुने!” असलम दहाड़ा----“हमें पहले पता लग जाता तुमने सत्या मैडम की हत्या की है तो किसी को तुम्हारे खून से अपने हाथ रंगने की जरूरत नहीं पड़ती। हम ही तुम्हारे जिस्मों के चीथड़े करके चाल-कव्यों के सामने डाल देते।”

तभी जीप जोर से उछली।

संजय ने कहा----“क्या कर रहा है रणवीर?”

“क्या करूं? सड़क में गड़टे ही इतने हैं!”

“इंस्पेक्टर नजदीक आता जा रहा है।” शेखर ने पिछली जीप पर नजरें गड़ाये कहा।

“ऐरिक को मार डाल राजेश! इंस्पेक्टर नजदीक आ गया तो बचा लेगा इसे! गोली मार दे साले को।”

“नहीं! इतनी आसान और सीधी-सादी मौत नहीं मरेगा ये!” राजेश ने कहा----“इसकी मौत भी कुछ वैसी ही नई टेक्निक लिए होगी जैसे इसके साथी मरे हैं।”

“क्या करना चाहता है?” संजय ने पूछा।

“सब अपनी अपनी कमीज उतारो।” राजेश मानो पागल हो चुका था----“हम इसे बांधकर जीप के पिछले कुदे में लटका देंगे। इंस्पेक्टर के देखते-देखते सड़क पर घिसटता हुआ मर जायेगा साला!”

उनका भयानक ईसादा सुनकर ऐरिक के छक्के छूट गये।

तिरपन कांप गये।

बार-बार वैसा न करने के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

मगर सुनने का होश किसे था? शेखर ने कहा----“इंस्पेक्टर और नजदीक आ गया है।”

“तू कर्माज उतार।” राजेश बोला।

रणवीर के अलावा सबने पल भर में कर्माजें उतार दीं।

राजेश ने एक कर्माज का सिरा ऐरिक की दोनों कलाईयां जोड़कर उसमें बांधा। संजय ने बाकी कर्माजों में गांठ लगाकर रस्सी बना दी। उधर दांतों पर दांत जमाये जैकी अपनी जीप की रफ्तार बढ़ाये चला जा रहा था। देखते ही देखते उसका धीनट अगली जीप के पिछले भाग से टच करने लगा। शेखर चिल्लाया----“तेज चला रणवीर।”

राजेश ऐरिक को सड़क पर लटकाने की प्रक्रिया में जुटा।

संजय ने कहा----“रिवाल्वर दे! मैं देखता हूँ इंस्पेक्टर को!”

राजेश ने रिवाल्वर उसे दिया।

संजय पिछली जीप पर फायर करने के लिए उसे संभाल ही

रहा था कि दोनों जीपें ‘घाड़’ से टकराई।

स्टूडेन्ट्स की जीप खिलौने की तरह हवा में उछल गई।

फिजां में अनेक चीखें गुंजीं।

हवा में उछलने के बाद जीप ढलान पर गिरी और लुढ़कती चली गयी।

जैकी ने जोर से ब्रेक लगाकर अपनी जीप सड़क पर रोकी।

कूदकर ढलान की तरफ भागा।

उधर जीप जब ढलान तय करने के बाद खेत में रुकी तो उलटी खड़ी थी।

छत जमीन पर! पहिये हवा में।

ऐरिक के अलावा राजेश, रणवीर, संजय, शेखर और असलम आदि सभी जख्मी हो चुके थे। इसके बावजूद न केवल बाहर निकले, बल्कि बंधे हुए ऐरिक को भी घसीटकर निकाला।

तब तक दौड़ता हुआ जैकी उनके नजदीक पहुंच चुका था।

राजेश ने झपटकर जीप के नजदीक पड़ा रिवाल्वर उठाया।

रणवीर, संजय और शेखर आदि उन्हें अपने पीछे लेकर जैकी के सामने अड़ गये।

ऐरिक चीखने वाला मशीन की मानिन्द चीख रहा था। राजेश रिवाल्वर की नाल उसकी कनपटी से सटाता चीखा----“आगे मत बढ़ना इंस्पेक्टर! मैं इसे गोली मार दूंगा।”

ठिठकते हुए जैकी ने कहा----“नहीं राजेश। तुम ये बेवकूफी नहीं कर सकते।”

“करना तो नहीं चाहता इंस्पेक्टर लेकिन तुमने मजबूर किया तो करनी पड़ेगी।”

“और बीच में खड़े हैं हम!” रणवीर गुर्गया----“हिम्मत है तो आगे बढ़ो इंस्पेक्टर! सत्या मैडम की कसम! हमें पार करके राजेश तक नहीं पहुंच सकते तुम।”

“ये हमारा शिकार है। हमारी सत्या मैडम का खून किया है हरामजादे ने।” संजय कहता चला गया----“तुम जाओ यहां से! वाद में आकर ताश उठा लेना।”

“नहीं संजय! ऐसा हरगिज नहीं कर सकता मैं।” पगलाया सा जैकी कह उठा----“जिस शख्स ने कानून के रक्षक होने के वावजूद इन दरिन्दों को कानून के हवाले नहीं किया, वह तुम्हारे हवाले करके कैसे जा सकता है? इनकी बोटी-बोटी नोचने का हक केवल मुझे है। केवल मुझे! सत्या मेरी जान थी, मेरी जिन्दगी थी, मेरी होने वाली पत्नी थी वो! और इन राक्षसों ने उसे मार डाला। बोलो! अब बोलो इसकी बोटियां नोचने का हक किसे है?”

ऐरिक सहित सभी अवाक रह गये।

राजेश कह उठा----“य-ये क्या कह रहे हो इंस्पेक्टर? तुम? तुमसे मुहब्बत करती थीं सत्या मैडम?”

“हां राजेश! जाने कितने सतरंगी सपने देखे थे दोनों ने मिलकर? हमारा घर होगा! बच्चे होंगे! खुशियों से भर जायेगी हमारी जिन्दगी! मगर इन कमीनों ने एक ही क्षण में सारे सपनों की धमियां उड़ा दीं। इसीलिए भी मैंने खुद एक-एक को चुन-चुनकर मारा। अब ऐरिक बचा है! और बचा है ये चाकू!” जुनूनी अवस्था में कहने के साथ जैकी ने जेब से चाकू निकाल कर खोला। कहा----“पहचानो इसे! यह वही चाकू है जिससे इसने मेरे रंगीन सपनों का खून किया। ये चाकू इसके खून का प्यासा है राजेश! क्या अब भी तुम इसे मेरे हवाले नहीं करोगे?”

राजेश, रणवीर, संजय, शेखर और असलम ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

ऐरिक की धिम्धी बंध चुकी थी। रो-रोकर खुद को उसके हवाले न करने के लिए कहने लगा वह। जज्बातों की आंखों में घिरा जैकी कहता चला गया----“इस केस के दरम्यान मैंने कदम कदम पर महसूस किया और इस वक्त अपनी आंखों से देख रहा हूं कि तुम सत्या को कितना चाहते थे। कितना प्यार करते थे उससे। इसका एक ही कारण है----वह भी तुमसे बेइन्तहा प्यार करती थी। तुम्हारे किसी नुकसान को तो बरदाश्त कर ही नहीं सकती थी सत्या। फिर भला मैं तुम्हें कैसे तवाह होने दे सकता हूं। इसे तुमने अपने हाथों से मारा तो कानून तुम्हारे पीछे पड़ जायेगा मेरे बच्चो। भविष्य विगड़ जायेगा तुम्हारा। मेरी सजा मुकर्रर हो चुकी है। इसके कल के बाद भी फांसी होगी, पहले भी फांसी। जिस सत्या को प्यार करते थे उसी सत्या की कसम है तुम्हें, अपना कैरियर तवाह मत करो। सत्या की आत्मा को दुख होगा। मेरे हवाले कर दो इसे।”

“लो जैकी भैया! लो।” कहने के साथ राजेश ने ऐरिक को इतना तेज धक्का दिया कि बुरी तरह चीखता लड़खड़ाता वह जैकी के कदमों में जाकर गिरा।

संजय दहाड़ा----“हलाल कर दो हरामजादे को!”

“बोटी-बोटी नोच डालो।” रणवीर ने कहा।

असलम बोला----“खुदा भी ऐसे जालिमों का यही अंजाम चाहता है।”

“इसका खून सत्या मैडम के लिए सच्ची श्रद्धांजली होगी।” शेखर बोला।

जैकी के चेहरे पर तो पहले ही आग थी। अपने कदमों में पड़े ऐरिक का कुर्ता पकड़कर उसे ऊपर उठाया। ऐरिक मिमिया रहा था। जैकी के दांत भिंचते चले गये। दाहिने हाथ की मुट्ठी चाकू के फल में गड़ी जा रही थी। गुरसे और जुनून के कारण जैकी के जिस्म की हर नसें उभर आई। आग में लिपटे लफज निकलते उसके मुंह से----“यही चाकू है न यो! यही चाकू है न जिससे

दूने में ग मन्दा को भाग? देख----मन्दा का खून तक साफ नहीं किया मैंने इसमें। उस दिन मे, इस दिन तक के लिए संभालकर रखा था। तेरा अंत इसी में होना था! ऐरिक! तेरा खेल इसी में खत्म होना है।" कहने के साथ चाकू 'खच्च' से ऐरिक के पेट में धंस गया।

ऐरिक के हलक में चीख, जख्म से खून का फव्वारा उठना।

उसके खून में लहलुहान हो उठा जैकी।

मगर रुका नहीं----दांतों पर दांत जमाये चाकू का फल बाहर खींचा।

उसके दाढ़।

बलाघरण में 'खच्च-खच्च' की आवाज़ें गुंजनी चली गयीं।

मानो घागल हो गया था जैकी।

बिजली में चलने वाले हाथ की तरह चल रहा था उसका हाथ।

यहां तक कि ऐरिक के हलक में आवाज़ें निकलनी बंद हो गयीं।

वह मर चुका था। मगर जैकी को होश कहाँ?

लाश पर ही चाकू बरमाता रहा वह।

अंततः राजेश आदि ने झपटकर पकड़ा। संजय ने झंझोड़ते हुए कहा----"होश में आओ जैकी भैया! होश में आओ! ऐरिक मर चुका है।"

जैकी का हाथ जहाँ का तहाँ रुका।

बाँये हाथ से फिसलकर लाश धम्म से जमीन पर गिरा।

रणवीर ने हाथ बढ़ाकर जैकी से चाकू लेना चाहा।

"नहीं!" चीखता हुआ जैकी पीछे हटा----"इस चाकू का काम अभी खत्म नहीं हुआ।"

"क-क्या मतलब?"

मगर!

मतलब समझने का मौका किसी को नहीं मिला।

जैकी के हाथ में दबे चाकू का समूचा फल पलक झपकते ही उसके अपने दिल में जा गड़ा।

"नहीं! नहीं जैकी भैया।" राजेश आदि घबराकर उसकी तरफ लपके।

चाकू अपना काम कर चुका था। जैकी के सीने में गड़ा रह गया वह। राजेश ने जैकी को जमीन पर गिरने से पहले लपका। दृढ़ता सांसों के साथ जैकी ने कहा----"लोकेश मोदीपुरम के मकान नम्बर थर्टी सिक्स बटा दू में है, उसे वहाँ से निकाल

लेना।”

“जैकी भैया।” रणवीर रो पड़ा----“ये क्या किया तुमने?”

“जो प्यार करता है, वो अपनी भुलबुल के बगैर जिन्दगी की कल्पना नहीं कर सकता मेरे बच्ची! अपनी सत्या के पास जा रहा हूँ मैं। उसे तुम्हारे बारे में जरूर बताऊंगा.....।” इन शब्दों के साथ जैकी की गर्दन लुढ़क गई।

“जैकी?” मैं उछल पड़ा----“जैकी हत्यारा है?”

“वह किसी कीमत पर अपने आखिरी शिकार यानी ऐरिक को नहीं छोड़ेगा।”

“जिस पर महामाया की कृपा हो गयी, भला उसका मिशन कैसे अधूरा रह सकता है।”

“सत्या ने कैम्पस की जमीन पर जो कुछ लिखा, वह बाकी सारे जमाने के लिए भले ही पहली था----परन्तु जैकी के लिए खुली किताब से कम नहीं था। लव-लेटर्स में किसी का भी पूरा नाम लिखने की जगह नाम का पहला अक्षर कैपिटल लेटर्स में लिखना उनकी प्रैक्टिस में था। घटना स्थल पर पहुंचते ही वह समझ गया कि सत्या की हत्या नौ लोगों ने की है और उनके नाम फलों-फलों लेटर्स से शुरू होते हैं।”

“उन लेटर्स के तो कॉलिज में अनेक लोग थे।”

“इस समस्या को उसने चुटकी बजाकर हल कर लिया।”

“कैसे?”

“सबका शक चन्द्रमोहन पर था। तलाशी के दरम्यान उसके कमरे से चाकू मिला। साथ ही उसका नाम भी ८ से शुरू होता था। जैकी उसे थाने ले गया। हवालात में चन्द्रमोहन को सत्या द्वारा लिखे लेटर्स का सही-सही मतलब बताया और कहा कि वह सभी हत्यारों के नाम का पहला लेटर जानता है। पहले तुम हो क्योंकि ८ फॉर चन्द्रमोहन होता है। बात क्योंकि सच थी, सचमुच सत्या के हत्यारों के नाम उन्हीं लेटर्स से शुरू होते थे। अतः चन्द्रमोहन को दूटते देर न लगी और वह तोते की तरह सारे नाम और क्रिस्ता बताता चला गया।”

“यानी पहले ही झटके में जैकी न केवल हत्यारों के नाम जान गया था बल्कि यह भी जान गया कि सत्या की हत्या क्यों हुई?”

“वह सब कुछ जान गया जो चन्द्रमोहन जानता था।”

“उसके बाद?”

“जैकी ने चन्द्रमोहन से कहा----अगर तुम सुवृत्त के साथ बाकी आठों को पकड़वाने में मेरी मदद करो तो मैं तुम्हें सरकारी गवाह बनाकर कोर्ट से बरी करा सकता हूँ। चन्द्रमोहन ने वहीं किया जो उन हालात में फंसा कोई भी शख्स करता। तैयार हो गया वह! तब जैकी ने कहा----तुम अपने साथियों को या किसी और को नहीं बताओगे कि तुम सरकारी गवाह बन चुके हो। तुम्हारा काम होगा सुवृत्त हासिल करना और सुवृत्त मिलते ही स्टॉफ रूम से मेरे मोबाइल पर फोन करना। तुम्हारे थाने पहुंचने से पहले उन दोनों के बीच यह सेटिंग हो चुकी थी। उसके बाद जैकी ने तुम्हें दिखाने के लिए चन्द्रमोहन को ‘बेकसूर’ का परमिट देकर ‘मुखबिर’ के रूप में कॉलिज पहुंचाया। रात के वक्त तुम घर आ गये मगर जैकी का मकसद चन्द्रमोहन की मदद से हत्यारों को पकड़ना नहीं बल्कि उनकी हत्या करना था। अतः बराबर उस पर नजर रखी। बेवकूफ बने चन्द्रमोहन ने खुद को बचाने की धुन में अपने साथियों को हकीकत नहीं बताई बल्कि गुपचुप तरीके से हिमानी के कमरे से सत्या के खून से सना पेपर हासिल किया। जैकी के निर्देश के मुताबिक स्टॉफ रूम से उसे फोन किया। जैकी ने वहीं उसकी हत्या कर दी।”

“जब चन्द्रमोहन उससे फोन पर बात कर रहा था तो हत्यारा जैकी कैसे हो सकता है?”

“मत भूलो! जैकी के मोबाइल पर बात कर रहा था वह।

गुल्लू के बयान पर गौर करो। उसने हत्यारे को वड़वड़ाते हुए स्टाफ रूम की तरफ जाते देखा था। उसके एक हाथ में बल्लम था। जाहिर है----मोबाइल पर चन्द्रमोहन से बातें कर रहा था वह। दूर होने के कारण गुल्लू मोबाइल को नहीं देख सका। उसे केवल यह लगा कि वह वड़वड़ा रहा था।”

“ओह!”

“उस वक्त जैकी के एक हाथ में मोबाइल था। दूसरे में बल्लम। बात करता करता वह चन्द्रमोहन के सामने स्टाफ रूम के दरवाजे पर पहुंचा। चन्द्रमोहन चौंका। जैकी ने बल्लम खींच मारा! काम खत्म।”

“तो क्या चन्द्रमोहन ने अपनी जेब में CHALLENGE लिखा कागज भी उसी के निर्देश पर रखा था?”

“नहीं! वह कागज चन्द्रमोहन के मरने से पूर्व उसकी जेब में नहीं था।”

“फिर?”

“असल में जैकी वह कागज चन्द्रमोहन की हत्या करने के बाद उसकी जेब में रखना चाहता था। परन्तु तत्काल गुल्लू के आने और शोर मचाने के कारण ऐसा न कर सका। वहां से फौरन भागना पड़ा उसे।”

“लेकिन तलाशी के दरम्यान तो कागज निकला था।”

विभा मुझसे मजा लेती बोली----“वह तलाशी में नहीं निकला मेरे मुन्ना बल्कि तुम्हें लल्लू बनाया था जैकी ने।

चन्द्रमोहन की लाश की जेब में हाथ डालने से पूर्व ही वह उसके हाथ में था और फिर ठीक ऐसे उसकी जेब से निकालकर दिखा दिया, जैसे जादूगर झुर्रेट-झुर्रेट करता है।”

“इसका मतलब वह चन्द्रमोहन का लिखा नहीं था?”

“बिल्कुल नहीं था।”

“तो किसने लिखा?”

“जैकी ने! वह राइटिंग्स की नकल मारने में माहिर है।”

“तुमने खुद कहा था ऐसा शख्स नंगी आंखों को धोखा देने में भले ही कामयाब हो जाये मगर एक्सपर्ट को धोखा नहीं दे सकता। जैकी ने कहा था----वह एक्सपर्ट की ऑपिनियन ले चुका है। राइटिंग चन्द्रमोहन की ही है।”

“जैकी ने ही कहा था न! मत भूलो----वह हत्यारा है।”

“यानी झूठ बोला था उसने?”

“स्टायम पेपर पर लिखकर देना पड़ेगा क्या?”

“यह झूठ उसने बोला क्यों?”

“पहेली को उलझाने के लिए! बाकी हत्याओं को भी सत्या की हत्या की शृंखला दर्शाने के लिए।”

“इसका मतलब सत्या के अलावा किसी मकतूल ने CHALLENGE नहीं लिखा। जहां लिखा----मकतूल की राइटिंग की नकल मारकर जैकी ने लिखा?”

“सत्या के साथ ललिता का नाम और जोड़ लो। चिन्नी के कारण वह वही करने के लिए मजबूर थी जो जैकी ने कहा।”

“हिमानी की ड्रेसिंग टेबल पर भी उसी ने लिखा था?”

“वह वो वक्त था जब हिमानी अपनी मौत से पूर्व कैम्पस में लिपस्टिक चाट रही थी। याद करो----उस वक्त जैकी हमारे साथ नहीं था। थाने से कॉलिज की तरफ आ रहे थे हम। उसने हिमानी के कमरे में जाकर अपना काम किया! लौटकर थाने की तरफ जा रहा था कि मोबाइल पर हिमानी की मौत की खबर मिली। रास्ते ही में से पुनः कॉलिज की तरफ लौटा और गेट पर हमें मिला।”

“बड़ा शांतिर था जैकी। मर्डर भी वही कर रहा था, इन्वेस्टिगेशन भी वही!”

“अब हम अल्लारक्खा के नाइट गाऊन पर लिखे हुए CHALLENGE पर आते हैं।” विभा ने कहा----“वह तब लिखा गया जब अल्लारक्खा हवालात में था। सोचो----सब कुछ कितना आसान था जैकी के लिए। अल्लारक्खा की चाबी से ही उसके कमरे का लॉक खोलकर उसके कमरे में पहुंचा।”

“माई गॉड!”

“ललिता और लविन्द्र की हत्या में ऐसा कुछ नहीं है जिसे जैकी के प्वाइंट ऑफ व्यू से क्लियर करने की जरूरत हो। तुम समझ सकते हो----एकता का मर्डर उसके लिए कितना आसान था। पहले पर वही था! दूसरे पुलिस वालों को भनक दिये वगैर उसने खामोशी से हत्या कर दी। उसके बाद नगेन्द्र को मारा! तुम्हें याद होगा----नगेन्द्र को टंकी में उतारने के लिए उसी ने कहा था। हत्यारा कोई और होता तो भला कैसे जान सकता था करेंटयुक्त पानी में कौन उतरेगा? नम्बर क्योंकि नगेन्द्र का था अंतः जैकी ने टंकी में उसी को उतारा। गुल्लू का मर्डर तो पट्टे ने सारे कॉलिज के सामने खुल्लम खुल्ला कर दिया, इसके बावजूद तुम जैसा धुरंधर राइटर नहीं ताड़ सका हत्यारा वही है?”

“उसने एक्टिंग ही ऐसी की।”

“वाकई!” विभा कह उठी----“अमिताभ तक तो मात कर दिया जैकी ने। जो कुछ उसने गुल्लू को पढ़ाकर खुद उसी के मुंह से उसे हत्यारा कहलवाया, वह तो जैकी की जुबानी सुन ही चुके हो। सबके सामने अपने शिकार की हत्या करने के बावजूद खुद को शक के दायरे से दूर रखने के लिए न सिर्फ लाजवाब एक्टिंग करके यह दर्शाया कि जाने किसने गोतियां बदल दीं, बल्कि गुल्लू की कोठरी में रखा वह टेप भी पहले ही आन कर चुका था जिससे आवाज ही सब कुछ होने के बाद निकलनी थी। उसके बाद तो सबको यकीन हो गया कि जैकी के हाथों गुल्लू की हत्या हत्यारे की साजिश के कारण हुई है।”

“मगर तुम उस वक्त जैकी के हर पैतरे को समझ रही थीं?”

“वह तो पहले ही बता चुकी हूँ।”

“लेकिन कब?” मैंने पूछा----“तुम्हें कब और कैसे पता लगा हत्यारा जैकी है?”

“पहेली हल होते ही मेरा ध्यान उस पर चला गया था।”

“वजह?”

“ललिता की हत्या तक मैं भी इसी भ्रम का शिकार था कि हत्यारा वहीं है जिसने सत्या की हत्या की। इस कारण हत्याओं की कोई दोस वजह नहीं मिल रही थी। सत्या की हत्या का कारण पेपर नजर आता था। परन्तु बाकी हत्याओं का कारण किसी एंगिल से पेपर नहीं बैठता था। यह तुम भी जानते हो----पहेली हल होते ही यह बात स्पष्ट हो गयी कि बाकी हत्याएं सत्या की हत्या का रिजेंज हैं। अर्थात् सत्या का पहला हत्यारा चन्द्रमोहन था। वहीं मेरे दिमाग में यह खटका----अगर वह सत्या का हत्यारा था तो उस शख्स के सामने दूटा क्यों नहीं, जो हवालात में पत्थर तक को बोलने पर मजबूर कर देने का दावा करता था? मुझे लगा----जैकी ने झूठ बोला है। यकीनन वह चन्द्रमोहन को तोड़ने में कामयाब हो गया होगा। यदि ये अनुमान दुरुस्त है तो उसने चन्द्रमोहन को 'वेकपूर' का परमिट देकर छोड़ा क्यों? छुपाव का मतलब है----मन में चोर होना। तभी मुझे जैकी की एक और बात याद आई। तुम भी याद करो। उसने तुमसे कहा था----‘इस केस में अपने उपन्यास के लिए आपके हाथ भरपूर मसाला लगाने वाला है।’----कहा था न?”

“हां----कहा तो था।”

“किस चेस पर कहा उसने ऐसा? उस वक्त तक केवल सत्या की हत्या हुई थी। कोई कैसे दावा कर सकता था कि आगे का घटनाक्रम कुछ ऐसा चलने वाला है जिस पर उपन्यास लिखा जा सके?”

“वाकई! सोचने वाली बात है।”

“सोचने वाली इसी बात ने मुझे सोचने पर मजबूर किया। फिर एक और बात याद आई। उसे भी याद करो! जब जैकी तुम्हें हवालात में ले गया तो चन्द्रमोहन ने कहा था----‘मुझे और मत मारना इंस्पेक्टर साहब... जो जानता था----बता चुका हूं।’ कह चुका हूं----वहीं कहेगा जो आपने कहा है।’ सोचो----क्या कहा था जैकी ने? जो तुम्हारे सामने कहा गया वह वाद में कहा गया था। उस वक्त कौन सी बात के लिए कह रहा था चन्द्रमोहन? क्या बता चुका था वह? हमारे सामने वैसा कुछ नहीं आया। शायद सच्चाई यही है कि जैकी उससे हकीकत उगलवाने में कामयाब हो चुका था। मगर छुपा रहा था। क्यों? इस क्यों का जवाब हासिल करने के लिए या यूं भी कह सकते हैं कि अपना शक दूर करने के लिए मैंने जैकी को चौक करने का मन बनाया।”

“और चौक किया?”

“वेशक!”

“कब?”

“पहेली हल होते ही हम कॉलिज पहुंचे। वहां लविन्द्र की हत्या हो चुकी थी। जैकी के खिलाफ उपरोक्त बातें मेरे जहन में बराबर खटक रही थीं। यह बात मैंने जानबूझकर जैकी को बताई कि हम पहेली हल कर चुके हैं ताकि अगर वह कातिल है तो अपने इर्द-गिर्द खतरा महसूस करे और खुद को शक के दायरे से दूर रखने का कोई गेम खेले। ‘गेम’ खेलने का मौका देने के लिए ही मैंने उसे ‘पहरे’ के लिए एस.एस.पी. के पास जाने के लिए कहा और अपने शोफर को उसके पीछे लगा दिया। गोट विल्कुल फिट बैठी। जैकी लोकेश का खाना लेकर सीधा यहां आया। बाहर वाले कमरे में उसने ओवरकोट, हेलमेट आदि पहने। इस कमरे में आकर लोकेश को खाना खिलाया और पुनः बाहर वाले कमरे में कपड़े चेंज करके चला गया। उसके बाद शोफर ने लोकेश से बात की। वापस कॉलिज पहुंचा। रिपोर्ट दी! अब हत्यारा मेरे सामने बेनकाब था।”

“दूसरी बातें तुम्हें इतनी डिटेल् में कैसे मालूम हैं?” मैंने पूछा----“जैसे----जैकी ने मेरे थाने पहुंचने से पहले हवालात में चन्द्रमोहन को कैसे तोड़ा या क्या कहा? हर कल्ल की डिटेल् कैसे पता लग गई तुम्हें?”

“दिककत केवल सिरा मिलने में होती है दोस्त। एक बार सिरा मिल जाये तो गुथियां खुद ब खुद सुलझती चली जाती हैं। शोफर की रिपोर्ट मिलते ही मैंने इसे जैकी के फ्लैट पर जाकर वहां की तलाशी लेने का हुक्म दिया। इसने वैसा ही किया और वहां से एक डायरी लाकर दी।”

“डायरी?”

विभा ने शोफर को इशारा किया।

शोफर ने अपनी जेब से डायरी निकालकर मुझे दी।

विभा ने कहा----“यह वह डायरी है जिसे पढ़ने के बाद मैंने फैसला किया कि जो हो रहा है उसे होने दिया जाये। जैकी को रोकना या उसे पकड़ना अन्याय होगा। बहुत ही भावुक होकर ये डायरी लिखी है जैकी ने! पढ़ने से पता लगता है कि वह कितना टूट-टूटकर सत्या से प्यार करता था। और सत्या के बगैर कितना अधूरा रह गया वह। पढ़ते वक़्त कई जगह आंसू आ जायेंगे तुम्हारे आंखों में। इसे पढ़ने के बाद ही जान सकोगे कि अपनी सत्या के हत्यारों से बदले लेने की कैसी आग थी उसके दिल में। अपने हर कार्य की----हर मर्डर की डिटेल् लिखी है उसने! अपना पूरा प्लान उसने पहले ही दिन बना लिया था। साफ-साफ लिखा है कि वह किसका मर्डर कैसे करेगा? मेरा ख्याल है----केवल ऐरिक का मर्डर वह उस ढंग से नहीं कर सकेगा जैसा डायरी में लिखा है। शायद यह कल्पना वह भी नहीं कर पाया था कि ऐरिक का भेद खुलते ही स्टूडेन्ट्स पर वह प्रतिक्रिया होगी, जो हुई। मगर मुझे यकीन है----जैसे भी हो, ऐरिक का कत्ल वह अपने हाथों से करेगा और उसके बाद... डायरी में लिखा है----ऐरिक को खत्म करने के बाद मैं अपनी सत्या से मिलने सितारों की दुनिया में चला जाऊंगा। यह डायरी लिखकर अपनी मेज की दराज में रख ही इसलिए रहा हूँ ताकि मेरी मौत के बाद दुनिया जान सके कि मैंने क्या किया? क्यों किया? वो ठीक था या गलत----आप कुछ भी सोचते रहें, मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ता।”

“यानी इस डायरी ने तुम्हें सब कुछ बता दिया?”

“केवल एक बात को छोड़कर।” विभा ने कहा----“और वो ऐसी बात है जिसके बारे में जैकी को भी कुछ नहीं पता था।”

“ऐसी कौन सी बात है?”

“उसने लिखा है----मैं केवल हत्यारा हूँ! मि० चैलेंज नहीं। मि० चैलेंज मेरे लिए भी एक रहस्य बन गया है। पता नहीं उसने वेदजी की पीठ पर कागज कब? कैसे? और क्यों चिपकाया? उनका अपहरण क्यों किया? क्या फायदा हुआ उसे? क्या वह मेरे जुर्म को और संगीन बनाना चाहता है? इससे क्या फायदा है उसे?”

“यानी सारा केस खुलने के बावजूद मि० चैलेंज तुम्हारे लिए अब भी एक पहेली है?”

“वाकई!”

मैंने रहस्यमय मुस्कान के साथ कहा----“अगर इस पहेली को मैं हल कर दूँ?”

“तुम?”

“बहुत पहेलियां हल करती हो तुम। सोचता हूँ----एक पहेली मैं भी सुलझा लूँ।”

“सुलझाओ।”

“मैं हूँ मि० चैलेंज!”

उछल पड़ी विभा----“क-क्या बक रहे हो?”

“बक नहीं रहा जानेमन, फरमा रहा हूँ।” मैंने उसकी हैरानगी का पूरा मजा लेते हुए कहा----“मधु इस खेल की राजदार है। उसे मैंने उस रात सब कुछ बताया जिस रात तुम गेस्टरूम से फुर्र होकर कॉलिज के पेड़ पर जा बैठी थीं। मधु ने कहा

भी----विभा वहन को सब कुछ बता देना चाहिए। मैं बोला----महामाया बहुत छकाती है मुझे! थोड़ा मैं भी छका लूं।”

“इतने लफंगे हो तुम?”

“सोचो----अब थोड़ा सा जोर तुम भी अपने दिमाग पर डालो। अपनी पीठ पर कागज चिपकाना। अपना अपहरण करना और फिर फोन आदि द्वारा एक के बाद दूसरा सुवृत्त छोड़कर तुम्हें उस मकान तक पहुंचाना कितना आसान था?”

“मगर तुमने ये सब किया क्यों?”

“इस केस की इन्वेस्टिगेशन के लिए बुलाना चाहता था तुम्हें! जानता था----मैं चाहे हाथ जोड़ू या पैर पूजूं। तुम जिन्दलपुरम से बाहर निकलने वाली नहीं हो। सो, बंसल का पीछा करता गौतम के ऑफिस में पहुंचा। छुपकर उनकी बातें सुनीं। बंसल पर जो शक हुआ था वो टांव-टांव फिरस हो गया। उसी समय दिमाग में ख्याल आया----अखबार में मेरे अपहरण की खबर छप जाये तो सारे धंधे छोड़कर तुम दौड़ी चली आओगी। छोड़ूंगा!

और तुम आ गयीं!”

“और वो बातें जो तुमने बंसल को मि० चैलेंज बताते हुए कही थीं?”

“सब गप्प थीं। कोरी गप्प! मनघड़न्त! घड़नी इसलिए पड़ी, नहीं घड़ता तो तुम्हें शक हो जाता! जानता था----मेरे कहने मात्र से बंसल की गर्दन पकड़ने वाली नहीं हो तुम! अपने तक़ो से धमियां उड़ा दोगी! वही हुआ!”

“वे गुण्डे?”

“अपना परिचय देकर! करारे-करारे नोट देकर अरेज किये थे। साथ ही समझाया था----यह खेल एक दोस्त का दूसरे दोस्त से मजाक है। कोई आंच नहीं आने दूंगा तुम पर।”

“उनसे किया गया वादा भी तुमने निभाया।” विभा ने कहा----“थाने में जब पूछताछ की बात आई तो उन्हें साफ बचा गये।”

“जिनका कुसूर न हो उन्हें बचाना पड़ता है।”

“बदमाश कहीं के! मुझसे खेल खेला? अभी बताती हूं तुझे!” कहने के साथ वह धूँसा तानकर मेरी तरफ लपकी। मैं उछलकर हंसता हुआ पलंग के दूसरी तरफ पहुंचकर बोला----“छुआ-छाई खेलने का इरादा है? मैं तैयार हूं।”

समाप्त